

प्रकाशकः—
पं० दीनबन्धु झा
ग्राम इसहपुर
पो० सरिसव-पाही
(दरभंगा)

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रकः—
श्री रामभजन प्रेस
ब्रजकिशोर पथ
पटना १

शुद्धिपत्र

(पुस्तकमें यत्र-तत्र अमर्षणोय अशुद्धि बहुत अधिक रहि
गेल; अतः सभक शुद्धिपत्र देब कठिन जानि केवल
मूल-शब्दक देल जाइत अछि ।)

शुद्ध मूलशब्द अशुद्ध छपल

अधकचू-----अघकचू
अपनाएब-----अपनाएव
अवधि -----अबधि
अमावास्या-----अमावास्या
अरघब -----अरजब
आम सरही-----आम सराही
उमेदवार-----उमेदवार
उनटा सरिसओ-----उनटा सरिसव
एकतालोसम-----एकतालिसम
ओठग(ङ)न करब-----ओठग(ङ)न करब
कनमाही-----कनम ही
कन्ना -----कन्न
कुहेस फाटब-----कुहेस फाटव
कौआ ठुठ्ठी-----कौआ ठुठ्ठी
खट्कर्मी -----खटकर्मी
खड़ाओ -----खड़ाओ
खनखनाएब-----खनखनाएव
खर्चोटा -----खर्चोटा
खिड़हरि-----खिड़हरि

शुद्ध मूलशब्द अशुद्ध छपल

खुडुरबट्टी -----खुरबट्टी
गड़ब -----गड़व
गँहिड़का -----गँहिड़का
गँहिड़ाइ -----गँहिड़ाइ
गाँथनि -----गाथनि
गुडूम बाजा-----गुडम बाजा
घुठ्ठी सोहार-----घुठ्ठी सोहार
चिकनाइ -----चिकन इ
चिचौड़ि पारब-----चिचोड़ि पारब
चित्तीमार-----चित्तीमा
चिन्हब -----चिह्नब
चिन्हार -----चिह्नार
चेन्ह -----चेह्न
चोन्हराएब-----चोह्नराएब
चौगोला -----चौगोला
चौचङ्ग -----चौचङ्ग
छक्का -----छक्का
जूड़ब -----जूड़ा
झटसन-----झोटसन

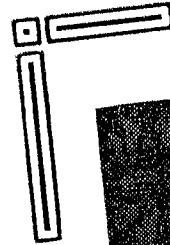
शुद्ध मूलशब्द अशुद्ध छपल
 टोँटिआ ----- टोँमिआ
 टोना टापर-----टोना डापर
 टोप टहंकार-----टोप डहंकार
 टोल -----टल
 टोलाटोली-----टलाटोली
 ढङ्गर -----ढङ्ग
 ढोंग -----ढेग
 तरदुत-----तरदत
 तितपड़ली-----तितपटली
 तितब -----तिनब
 तृणकुङ्कुमा-----तृणकुङ्कुमा
 दगदगाएब-----दगदगाएब
 दलिपिट्ठी-----दलिपिट्ठी
 दोष लगाएब-----दोष लगाएब
 निर्धिन -----निर्धिन
 पित्तड़ि (रि)-----पित्तिड़ि (रि)
 फट्ठी-----फठ्ठी
 फाँफ -----फोंफ
 बजरा-बजरी-----जरा-बजरी
 बजाएब -----जाएब
 बजाँड़ी -----जाँड़ी
 बड़का -----बड़का
 बरब -----रब
 बालि -----बाल
 बासट्ठिम-----बासठुम
 बासि -----बा स

शुद्ध मूलशब्द अशुद्ध छपल
 बाँहि -----बाँह
 बाह्लू -----बाह्लू
 बिअरि -----बअरि
 बिअहिआएब-----बअहिआएब
 बिगाड़ -----बगाड़
 बिगुल -----बगुल
 बिघटन-----बघटन
 बिझो -----बिभो
 बुझब -----बु ब
 बंदिक -----बंदिक
 भेंडुआ -----भेंडुआ
 भोड़ -----भोड़
 भुड़कबा -----भुड़कबा
 भेंटी -----मेटी
 भोकसर -----भोकसर
 मस्तकतोड़-----कस्तकतोड़
 मुक्को सूगा-----मुक्की सूगी
 मुहदुब (बब) र-----मुहदु (बब) र
 मोकनि -----मोकब
 म्यान -----यान
 सन्तानबे-----सन्तानबे
 सूही -----सूहा
 सेठ -----सेठि
 हँकरा-पथिआ-----करा-पथिआ
 हरिअरका-----हरिअरका
 हरदुङ्गी-----हरदुङ्गी

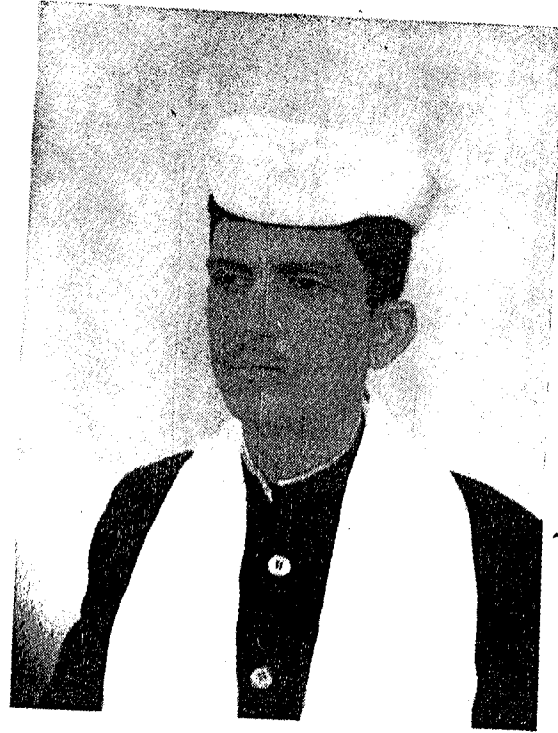
भूमिकाविषयसूची

कोषक निर्माण तथा प्रकाशन.....	१५०	वर्गचतुर्थवर्णविचार.....	३३५०
कोषमे त्रुटि.....	३"	शब्दक अर्थ त्रिविध.....	३४"
गुरुलघुच्चारणविवेक.....	६"	लेखापेक्षया वज्रामे भेद.....	३५"
लिङ्ग निर्णय.....	८"	वर्णक स्थान.....	३५"
संकेतविवरण.....	११"	वर्णक प्रयत्न.....	३८"
अ० संकेतविवरण.....	११"	मिथिलाभाषा अनुनासिकप्रचुर.....	४०"
पुं० ".....	१२"	संस्कृतसँ मैथिलीमे भेद.....	४१"
स्त्री० ".....	१३"	संस्कृतसँ साम्य.....	४२"
उ० ".....	१४"	हिन्दीसँ भेद.....	४२"
अलि० ".....	१४"	हिन्दीसँ साम्य.....	४५"
क्रि० ".....	१४"	शब्दक विभाग.....	४६"
ना० ".....	१६"	जातिक परिचय.....	४७"
सं०, हि०, वि० ".....	१६"	कतोक संस्कृत शब्द अर्थान्तरमे प्रसिद्ध	४९"
वानरादिशब्दो वर्गीयवकारादिश्रेणीमे.....	१६"	संस्कृतानुरूपमे 'व' इत्यादि अविकृत.....	४९"
व्याकरणसिद्ध अल्पे कोषमे.....	१७"	संस्कृतभव.....	५०"
देशभाषामे एक अर्थक एके शब्द.....	१९"	देशीशब्द.....	५४"
इ र उभय वर्णयुत शब्दविचार.....	२०"	देशीमे द्विरुच्चारण.....	५४"
मेघोनशब्दादिविचार.....	२२"	विदेशी शब्द.....	५४"
फूल फड़ गाछ तीनूक एके नाम.....	२२"	मैथिली कोष कीदृश चाही.....	५६"
कतोक संस्कृत शब्द अप्राप्त.....	२४"	कोषक निर्माणमे साहाय्य.....	५८"
ओकरान्त-वान्त.....	२४"	द्रष्टक निर्माण.....	५८"
ऐ औ वर्णविचार.....	२५"	द्रष्टसँ पूर्व पुरस्कार.....	५९"
ड ढ द्विविध.....	३०"	द्रष्टक संक्षिप्त परिचय.....	५९"
यकारव्यकारविचार.....	३१"		

मिथिलाभाषाकोष



महावेयाकरण
पं० श्री दीनबन्धु झा



मैथिली साहित्यक अनन्य उन्नायक
बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह
(राघवपुर डेओढ़ी)

भूमिका

मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बन प्रवृत्त भेलापर मिथिलाभाषाकोषहुक अभाव देखि निर्माणमे उत्साह कएल । किन्तु यादश कोष हमर अ छल, तादश नहि भय सकल । तथापि “निरस्तपादपे देशे एर द्रुमायते” एहि न्यायक पूर्ति अवश्य भेल ।

चिरकालेँ कोषक पूर्ति भेलापर छापाक चिन्ता भेल । द्रव्याभावप्रयुक्त छपएबामे असमर्थ छलहुँ । अनुत्साहिता कोनो लक्ष्मीषात्रक ओतए प्रस्तुत होएबाक साहस नहि हो ततःपर महोदारचरित मैथिलीसमुन्नतिक परम उत्साही दर राजवंशोद्भव राघवपुरक बाबू साहेब श्री कृष्णनन्दन सिंह दय स्मरणपथारुढ भेलाह ।

दिनक उदारता मैथिलगणसँ अविदित नहि । कोनो उन्नति गौरवान्वित उत्कृष्ट अनेक ग्रन्थक विना नहि सकैछ ई विचारि उक्त बाबूसाहेब मैथिलीउन्नत्यर्थः उत्कृष्ट ग्रन्थनिर्माताकेँ पारितोषिक देबाक हेतु अढाय स टाका मैथिलीसाहित्यपरिषद् संस्थामे देल । ओ टाका प्रवर्तित मैथिलीसाहित्यपरिषदक अधिवेशनमध्य ओक बाबू श्री चन्द्रधारी सिंह महोदयक हाथसँ मैथिलीग्रन्थ

कर्षविवेचनानिपुण महामहोपाध्याय श्री उमेशमिश्रप्रभृतिसें सर्वग्रन्थोत्कृष्टतया निर्णीत मिथिलाभाषाविद्योतनग्रन्थक निर्माणक पारितोषिक आदरपूर्वक हमरा देल गेल ।

पुनः ततः परो महामहोपाध्याय कर्मकाण्डोद्धारक महावैयाकरण पं० श्रीपरमेश्वरभाक निर्मित परमोत्कृष्ट मिथिला तत्वविमर्शनामक पुस्तकक प्रकाशनक उपलक्ष्यमे उक्तवाक्यसाहेब हुनक सम्बन्धिकर्ता २५०) अद्दाए सए रुपैया परितोषिक देल ।

हिनक पिता संस्कृतसाहित्यक पूर्णविद्वन् बाबू श्रीहरिनन्दनसिंहमहोदय तथा पितामह बाबूश्रीयदुनन्दनसिंहमहोदय नितान्तकोमलमधुरभाषी ओ सदाचारसँ लेशतोऽपि अच्युत छलाह ।

उक्त महानुभाव बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयक ओतय उपस्थित भय एहि कोषक छापाक प्रसङ्ग निवेदन कयलापर तत्काले ओ अपन असीम कृपा देखओलन्हि; सोत्साह कहलैन्हि जे छापा अवश्य हो किन्तु काग ओ अक्षर सुन्दर होएबाक चाही ।

हम नरक महोदयचरित श्री बाबूसाहेबक मदैव कृतज्ञ रहय जनिक अनुपम कृपासँ ई कोष मुद्रित भेल । एहि प्रसङ्ग विशेष विवरण भूमिकाक अन्तभागमे द्रष्टव्य ।

मैथिलीक अनुरागी मैथिलगण किंवा मिथिलावास्तव्य बन्धुवर्ग तथा प्रवासी मैथिलसंघमहोदय लोकनिक ओतए ई निवेदन करैत अत्यन्त आनन्द होइछ जे मिथिलाभाषाकोष निर्मित भए प्रकाशित भए गेल जकर अद्यावधि अभाव छल । आशा जे ई विषय बूझि हुनका लोकनिक अन्तःकरणमे प्रसन्नता होएत तथा अतिचिरकाले गवेषणपूर्वकनिर्द्धारित हमर लेखप्रणालीक अनुमोदन अवश्य होयत ।

मैथिलीसाहित्यपरिषदक स्थापना तथा मैथिलीसाहित्यपत्रक प्रकाशनसँ आष विज्ञ व्यक्तिक लेखमे परिपाटीक भेदो अल्पे रहि गेल अछि ।

कोषमे त्रुटि

एहि कोषमे साधारणव्यवहारोपयुक्त यथोपलब्ध शब्द संग्रहित कयलगेल अछि । किन्तु बहुत शब्द छूटल अछि । सवारीक नाम हाथो घोड़ा बग्गी एक्का इत्यादि लिखल किन्तु ओकर साज (उपकरण) अलंकरणप्रभृति नाम अल्पे लिखल अछि । एवम् मिथिलादेशक शिल्पीक नाम कमार लोहार सोनार मल्लाह इत्यादि उल्लिखित अछि किन्तु ओहिस-बहिक कर्षवाही सामग्रीमे कम्मे वस्तुक नाम पड़ल अछि इत्यादि त्रुटि हम मानैत छी । आशा जे उत्साही निविष्ट एक विद्वान किंवा अनेक विद्वान् मीलि अन्वेषणपूर्वक ओहि शब्द-समूहिक संग्रह कए प्रकाशित करताह जकर संग्रह हम नहि कए सकलहुँ अछि तथा प्रसिद्धो बहुत शब्द जे छूटि गेल ओ तकरो संग्रह करताह एवम् प्रमादबश अथवा विपरीत धारणाबश अर्थनिवेशमे जे अन्यथा भेल हो तकरो संशोधन कय कोषके सुचारु बनओताह ।

हमरा कोष बनयबाक साहस करब उचित नहि छल हेतु जे हम आबालतःसंस्कृतशास्त्रमात्रक व्यवसायमे छी, अतः अप्रसिद्ध वस्तुक नाम कल्पे जनैत छी । तखन अनकासँ बूझि २ नामसंग्रह करब सेहो आइकाल्हि कठिन अछि, कारण जे तादृश लोकक अभ व भेल जाइछ ।

पूर्व कालमे विद्वान्लोकनि शरयन्त्र लानहार छलाह ।
अर्थात् यावन्तो वस्तुक परिचेता ओ निखिलशिल्पवेत्ता, जाहि
विषयक जे प्रश्न हो सभक समीचीन उत्तरदाता होइत छलाह,
जनिक कथा मिथिलामे प्रसिद्ध अछि । यदि हुनका लोकनिक
प्रवृत्ति मिथिलाभाषाक रक्षा दिस होइतैन्हि तँ सर्वांशें
मिथिलाक शब्दपुञ्ज सुरक्षित रहि सकैत । पूर्वक एक विद्वान्
ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्णनरत्नाकर नामें किछु शब्दसंग्रह
करबो कयलैन्हि तँ अर्थनिर्देशक अभावसँ कोष कहबाक योग्य
नहि । अधिकांश ओकर अर्थ संप्रति अज्ञेय भए गेल अछि ।
अस्तु, एमहर आबि नाना प्रकारें मैथिलीशब्दक दुरवस्था
भए गेलाक स्थितिपर कोष बनाओल गेल अछि से जेहन
होयबाक योग्य तेहने भेल अछि । तस्मात् एहिमे उपजात त्रुटिक
हम क्षमाप्रार्थी छी ।

एहि कोषमे बहुत प्रसिद्धो शब्द छूटि गेल अछि जे पूर्वह
कहि आएल छी । तकरा प्रमाणित करबाक हेतु नीचाँ किछु शब्द
अकारादिक्रमहि देखबैत छी जे द्वितीय संस्करणमे इहो शब्दसभ
तथा एतदभिन्नो छूटल शब्दसभ यथातथ्य सन्निवेशित
करबाक उद्योग हो ।

अतिकाल—अतिप्रसन्न समय ।

अथरा—पैघ गहीं ड मटकूर ।

अमेढ़ी—अमेढ़व १ कडामक

योजनार्थ मेहमे पैसा-

ओल गोलाकार तृण २ ।

अम्हार बिक्रियुक्त तप्त

छाउर ।

अलकतरा पाथरक कोइलाक

तेल ।

आमोद करब—क्रि० आनन्द-

क्रिया करब १ सुगन्ध-
प्रसारण करब २ ।

उपजाहु—अधिक उपजाक
(खेत) ।

कनेमने—अ० अत्यल्प ।

करीनछे कब—क्रि० पटएबाक
रस्सं मे करीन बान्हव ।

कुहूमा—अबीरसँ भरल कोढ़िला
वा लाह (दूरसँ अबीर
फेकबाक हेतु) ।

केसर—किञ्जल्क ।

खुर्ची—कबाड़क डारिमे पैसए-
बाक कपाटाङ्ग ।

खुटबन—धोबिनिकेँ एवमुकुम्हैन
प्रभृतिकेँ नूआ एवम्
बासनप्रभृति अनवाक
हेतु देय किछु मात्र
अन्न ।

खोँछि—स्त्रीक डाँड़मे बद्ध वस्तु
रखबाक वस्त्रप्रान्त ।

गढ़नि—गढ़ाइ, नखासीप्रभृति ।

गन्ध करब—क्रि० दुष्ट गन्धक
प्रसारण ।

गरी—मनुष्यक मुण्ड ।

गुञ्ज दाए उठब—क्रि० आक-
स्मिक अति कोमल
स्पर्शक अनुभवविषय

होएब ।

गेलह—कौआक बच्चा ।

गोंज गोंजा—संकीर्णताबश
अयथावत् स्थित ।

घाँटो—स्त्रीपूज्य मृत्प्रतिमा-
विशेष ।

घोंघोउज (जि)—निर्हेतुक अश्रव्य
विवाद ।

छरपटि छोड़ाएब—क्रि० अशान्त
करब ।

भर पड़ब—क्रि० कानमे जीरसँ
अप्रिय शब्दक आपतन ।

दुस्सा } —ठारिक अगिला

दूसा } पत्राङ्कुर ।

डकब—क्रि० कौआक प्रातः-
कालिक वाजब १ उत्कट-
गन्धप्रसारण २ ।

डारि—कबाड़क अङ्गविशेष ।

तीखर—तीक्ष्ण (आतपादि) ।

दँतब—ना० दाँतसँ युक्त
होएब ।

पैँचाड़ (ड़ी)—पैचक व्यवहार

बरोबर—धान्यविशेष ।

मचकी—आन्दोलनमण्डप ।

महमह करब—क्रि० अत्यन्त
सौरभप्रकाश करब ।

लाम - सभसँ नीच खेत १ सं० प्राप्ति २।

गुरुलघुच्चारणविवेक

संस्कृतमे ह्रस्ववर्ण लघु कहवैत अछि, तथा दीर्घवर्ण गुरु। एवम् संयोगसँ पूर्व ह्रस्वो गुरु भए जाइछ, उदाहरण, 'स्वगेहस्थ' एहिमे प्रथम स्वर ह्रस्व लघु, द्वितीय दीर्घ गुरु, तृतीय ह्रस्व गुरु, चारिम ह्रस्व लघु। तस्मात् ओ सबटा छओमात्राक भेल।

एह रीति मैथिलीभाषाहुमे अछि। विशेष ई जे मिथिला-भाषामे निर्विभक्तिक वा सविभक्तिक सकल पदमे एकोटा गुरुच्चारण अवश्य रहय ई नियम अछि। तँ जाहि द्वयक्षर नाममे दुहु ह्रस्वे अछि ताहिमे उपान्त्य अर्थात् अन्त्यसँ पूर्व ह्रस्वो गुरुच्चारण भए जाइछ, यथा 'मधु नहि अछि'। एवं ह्रस्वद्वयान्त दीर्घादिवर्णत्रिक 'भावहु भाभठ' इत्यादिअहुमे उपान्त्य गुरुच्चारण होइछ। 'मधुक आवश्यकता' एहिठाम 'मधुक' एहि सविभक्तिकपदमे उकार गुरुच्चारण, मकाराकार लघुच्चारण। एवम् एकाक्षर पदमे तथा सविभक्तिमे अकार गुरुच्चारण, यथा 'त तँ ह हँ रामसँ' इत्यादि। अतः जे लोकनि 'कय' 'भय' क स्थान 'क' 'भ' लिखैत छथि हुनका मतें 'क' 'भ' इत्यादि एकाक्षर पद भेल, तँ 'जा क देख, पण्डित भ जाउ', इत्यादिमे 'क' 'भ' इत्यादि गुरुच्चारण भेल। अपर विशेष ई जे लौकिक संस्कृतमे एकारादि सन्ध्यक्षर दीर्घ अछि ह्रस्व नहि, किन्तु मिथिलाभाषामे ह्रस्वो अछि, तस्मात् ह्रस्वभूत एए ओ औ लघुच्चारण होइछ, यथा 'देखनिहार' 'एँठलाह' 'पओने' 'बौनिहार' इत्यादिमे। कतय २ सन्ध्यक्षरकें ह्रस्वता होइछ से

किछु कहि चुकल छी, अन्यान्य भाषाविद्योतनसँ बोद्धव्य। एवम् कोन २ शब्दमे लघुकें गुरुता सेहो सविस्तर भाषाविद्योतनमे प्रतिपादित अछि। एक विषय ई जे अकारेतर स्वर कें गुरुता भेलापर दीर्घो लिखल जाय तँ क्षति नहि, यथा 'बहीनि बहीर थीक'। ह्रस्वोपान्त्यक लिखी तँ से उचिते। तस्मात् 'बहिनि बहीनि' इत्यादि दुहु लेख संगत। केवल ह्रस्व अकारकें गुरुता भेलहुपर ह्रस्वे लिखल जाय दीर्घ नहि।

ई विचार जे गुरुच्चारणीभूत ह्रस्व अकारादिक तर बिन्दु रूप चिह्न देल जाय, एवम् लघुभूत एकारादिलिपिक नीचों बिन्दु चिन्ह देल जाय से उत्तम यथा; 'भत्ता अद्धी मधु मधुक पुतहु भाबहु एकठा ऐँठलाह पओना चौकिभाएव जँ त. ह. हँ' इत्यादि।

एएओऔ सामान्यतः दीर्घताक कारण गुरुच्चारण थीक किन्तु स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वर ह्रस्व भय जाइत अछि। अतः ओहिमे एकारादिओ ह्रस्वताप्रयुक्त लघुच्चारण थीक; यथा 'देखनाइ देखनुक देखताह ऐँठलाह पओलैन्हि बौ' सनिहार' इत्यादिमे

एकर अपवाद—एकस्वर प्रत्यय तथा अत अव अल एहिसँ पूर्व ह्रस्वता नहि, तँ लघुत्वाभाव—यथा देख देखि देखी देखत घेरब पौरल। तथा का बा मा गर इत्यादि कतोक्क व्यञ्जनादिभो प्रत्ययसँ पूर्व ह्रस्वता होएवाक कारणेँ एकारप्रभृति लघु होइछ, यथा 'मैलका सौँ सका गेनबा सोनमा भोरगर'।

लाभ - सभसँ नीच खेत १ सं० प्राप्ति २।

गुरुलघूच्चारणविवेक

संस्कृतमे ह्रस्ववर्ण लघु कहवैत अछि, तथा दीर्घवर्ण गुरु। एवम् संयोगसँ पूर्व ह्रस्वो गुरु भए जाइछ, उदाहरण, 'स्वगेहस्थ' एहिमे प्रथम स्वर ह्रस्व लघु, द्वितीय दीर्घ गुरु, तृतीय ह्रस्व गुरु, चारिम ह्रस्व लघु। तस्मात् ओ सबटा छओमात्राक भेल।

इएह रीति मैथिलीभाषाहुमे अछि। विशेष ई जे मिथिला-भाषामे निर्विभक्तिक वा सविभक्तिक सकल पदमे एकोटा गुरुच्चारण अवश्य रहय ई नियम अछि। तँ जाहि द्व्यक्षर नाममे दुहू ह्रस्वे अछि ताहिमे उपान्त्य अर्थात् अन्त्यसँ पूर्व ह्रस्वो गुरुच्चारण भएजाइछ, यथा 'मधु' नहि अछि। एवं ह्रस्वद्वयान्त दीर्घादिवर्णत्रिक 'भावहु भाभठ' इत्यादिअहुमे उपान्त्य गुरुच्चारण होइछ। 'मधुक आवश्यकता' एहिठाम 'मधुक' एहि सावेभक्तिकपदमे उकार गुरुच्चारण, मकाराकार लघूच्चारण। एवम् एकाक्षर पदमे तथा सविभक्तिमे अकार गुरुच्चारण, यथा 'त तँ ह हँ रामसँ' इत्यादि। अतः जे लोकनि 'कय' 'भय' क स्थान 'क' 'भ' लिखैत छथि हुनका मतें 'क' 'भ' इत्यादि एकाक्षर पद भेल, तँ 'जा क देख, पण्डित भ जाउ', इत्यादिमे 'क' 'भ' इत्यादि गुरुच्चारण भेल। अपर विशेष ई जे लौकिक संस्कृतमे एकारादि सन्ध्यक्षर दीर्घ अछि ह्रस्व नहि, किन्तु मिथिलाभाषामे ह्रस्वो अछि, तस्मात् ह्रस्वभूत एए ओ ओ लघूच्चारण होइछ, यथा 'देखनिहार' 'एँठलाह' 'पओने' 'बौसनिहार' इत्यादिमे। कतय २ सन्ध्यक्षरकें ह्रस्वता होइछ से

किछु कहि चुकल छी, अन्यान्य भाषाविद्योतनसँ बोद्धव्य। एवम् कोन २ शब्दमे लघुकें गुरुता सेहो सविस्तर भाषाविद्योतनमे प्रतिपादित अछि। एक विषय ई जे अकारेतर स्वर कें गुरुता भेलापर दीर्घो लिखल जाय तँ क्षति नहि, यथा 'बहीनि बहीर थीक'। ह्रस्वोपान्त्यक लिखी तँ से उचिते। तस्मात् 'बहिनि बहीनि' इत्यादि दुहू लेख संगत। केवल ह्रस्व अकारकें गुरुता भेलहुपर ह्रस्वे लिखल जाय दीर्घ नहि।

ई विचार जे गुरुच्चारणीभूत ह्रस्व अकारादिक तर बिन्दु रूप चिह्न देल जाय, एवम् लघुभूत एकारादिलिपिक नीचो बिन्दु चिन्ह देल जाय से उत्तम यथा; 'भत्ता अद्री मधु मधुक पुतहु भावहु एकठा ऐँठलाह पओना चौकिआएव जँ त ह हँ' इत्यादि।

एएओओ सामान्यतः दीर्घताक कारण गुरुच्चारण थीक किन्तु स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वर ह्रस्व भय जाइत अछि। अतः ओहिमे एकारादिओ ह्रस्वताप्रयुक्त लघूच्चारण थीक; यथा 'देखनाइ देखनुक देखताह ऐँठलाह पओलैन्हि बौसनिहार' इत्यादिमे

एकर अपवाद—एकस्वर प्रत्यय तथा अत अब अल एहिसँ पूर्व ह्रस्वता नहि, तँ लघुत्वाभाव-यथा देख देखि देखी देखत घैरब पौरल। तथा का बा मा गर इत्यादि कतोक्क व्यञ्जनादिओ प्रत्ययसँ पूर्व ह्रस्वता होएवाक कारणेँ एकारप्रभृति लघु होइछ, यथा 'मैलका सौँ सका गेनवा सोनमा भोरगर'।

एवम् समासमे पूर्वक सकल स्वर ह्रस्व भय जयवाक
कारण एकारादि लघूच्चारण होइछ, यथा 'एकबट्टी मैलछन
गोअरगमा रौदमुहाँ' ।

एवअपिस्थानीय 'अहि' 'अहु'क योजनामे तदन्त
वा तन्मध्यक एके पद मन्तव्य, तस्मात् 'घरदि घरहुँ घरहिक
इत्यादिमे उपान्त्ये गुरुच्चारण ।

मिथिलाभाषा सिखनिहारकाँ गुरुलघुभावज्ञाने
विशेष यत्न देवाक चाही अन्यथा लेखशुद्धि भेलहुपर बजबा
अपाटव प्रकाश होयत । प्रत्येक भाषाक ध्वनि विभिन्न
विलक्षण होइछ । तस्मात् परिशुद्ध बजनिहार केन्द्रस्थ व्यक्त
सबहिसँ किलुओ दिन संलाप करब आवश्यक ।

लिङ्गनिर्णय

मैथिलीभाषामे शब्दक लौकिके पुंस्त्वादि लिङ्ग अर्थ ओ
शास्त्रीय नहि । सेहो प्राणीक बोधक जे शब्द अछि त
टा । अप्राणिबोधक बाट घाट इत्यादि शब्द लिङ्गबोधक
होइत अछि । तँ ओकरा अलिङ्ग कहबाक चाही । अलि
सङ्गत हम एहि कारणं नहि कयल अछि जे ओ अनुगत
स्वतः बुझबाक योग्य होएत ।

लिङ्गबोधक शब्द तीन प्रकारक अछि, पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग
यलिङ्ग । क्रमशः उदाहरण, पुंलिङ्ग 'बाप भाय जमाय' इ
स्त्रीलिङ्ग 'माय बहीनि सतधी' आदि, उभयलिङ्ग 'घोड़ा
बाभन' आदि । उभयलिङ्गक आकारान्त शब्द जँ स्त्रीक

हेतु बाजल जाय तँ ओकरासँ स्त्रीबोधक ईकार आवय, तस्मात्
घोड़ी इत्यादि रूप, एवम् बाभन आदिसँ ह्रस्व इकार अबैत
अछि, यथा बाभनि कुमारी । इत्यादि व्याकरणसँ बुझावाक
योग्य नाना प्रत्यय हाइछ, तँ हम कोषमे प्रायः दुहु लिङ्गक रूप
लिखल अछि, बहुतेमे छुटिओ गेल होएत ।

एहि ठाम इहो भय सकैत अछि जे स्वतन्त्रे घोड़ा घोड़ी
आदि भिन्ने भिन्ने मानल जाय, प्रथम पुंलिङ्ग, द्वितीय
स्त्रीलिङ्ग, अतएव कोनो वैयाकरणक मत अछि जे अर्थभेदसँ
शब्द भिन्न होइत अछि ।

संस्कृतमे शास्त्रीयो पुंस्त्वादि लिङ्ग शब्दक अर्थ होइत
अछि । तथा हिन्दुअहुमे । किन्तु मैथिलीमे लौकिकमात्रे,
से कहिए आएल छी ।

आब शास्त्रीय लिङ्ग ओ लौकिक लिङ्गक परिचय
लिखैत छी । शास्त्रीय पुंस्त्वादि लिङ्ग ओ थीक जे प्रवृत्ति
निवृत्तिमे कोनो उपकार नहि करैत अछि, केवल शब्द-
स्वरूपविशेषनिष्पादकमात्र होइछ । यथा माला शब्दक
शास्त्रीय स्त्रीत्व लिङ्ग अर्थ थीक, ओकर ज्ञान हो वा नहि हो
प्रवृत्ति तुल्य, 'मालम् आनय' 'माला लाओ' इत्यादिसँ होइत,
अछि, केवल 'माला शोभना' 'माला अच्छी है' इत्यादि शब्द-
विशेषसम्पादने फल होइछ । यदि मालाशब्द पुंलिङ्ग रहैत
तँ 'माला शोभनः, माला अच्छा है' इत्यादि शुद्ध रूप होइत,
कारण जे विशेषणक स्वरूप विशेष्यलिङ्गाधीने रहैत अछि ।

शास्त्रीयलिङ्ग कोन वस्तु थीक एहि प्रसङ्ग अनेक मत अछि । वाक्यपदीयनामक भर्तृहरिक ग्रन्थमे छओ सात मत कहल अछि । ओकर प्रतिपादन विस्तारक भयसँ तथा विशेष उपकारक अभाव जानि नहि कयल । मोटा-मोटो ई बुझबाक चाही जे शब्दवाच्य कोनो विलक्षण पुंस्त्वादि शास्त्रैकसमधिगम्य शब्दमे वा अर्थमे रहनिहार अछि, यत्प्रयुक्त रूपमे विलक्षण्य होइछ ।

आब लौकिक लिङ्गक परिचय दत छी । प्राणी जाह अवयवसँ पुरुष वा स्त्री कहबैत अछि तदवयवशालित्व पुंस्त्व ओ स्त्रीत्व थीक अतः जाहि प्राणीमे ओ अवयव उपलब्ध नहि होइछ ताहि प्राणीक बोधक शब्द अलिङ्ग रहैत अछि । यथा चूटी मोस मा काछु । यद्यपि पक्षीमे नर मादोक चिह्न पक्ष-विशेषादि होइछ तथापि जे अवयव सत्तानोत्पादक होइछ तदवयवयुक्तत्व विवक्षित अछि । तस्मात् मनुष्यप्रत्यक्ष-योग्यमेढ रूपवयवशालित्व पुंस्त्व भेल, तथा तादृशयोनि-शालित्व स्त्रीत्व । क्षुद्रजन्तु सपनौर मूस मोस लीख इत्यादि शब्दवाच्य जन्तुमे तथा माछ काछु गोहि घरिआर आदिमे दोषधारणार्थ मनुष्यप्रत्यक्षयोग्यत्व विशेषण देल अछि । लक्षणमे मनुष्यपदक उपादान नहि कयने क्षुद्र जन्तुप्रभृतिक स्वकीय प्रत्यक्षयोग्यता स्वावयवमे रहबाक कारण अतिव्याप्ति दोष रहिए जाइत तद्वारणार्थ मनुष्य पद देल गेल अछि । एतादृशे पुंस्त्वादिलिङ्ग लोकविदित अछि, तेँ लौकिक भेल । एतद्युक्त शब्दक रूपमे विलक्षण्य ओ व्यवहारहुमे थया ।

बाभन अयलाह, बाभनि अयलीह, एवंप्रकारक पुरुष ओ स्त्रीमे भिन्न-भिन्न रूप, तथा प्रथमसँ पुरुषक बोध, दोसर सँ स्त्रीव्यक्तिक । आवाद-इआप्रत्ययान्त, भनसिआ जिरतिआ तिरहुतिआ इत्यादि तथा ऐआप्रत्ययान्त, बनैआ गमैआ इत्यादि अलिङ्ग थीक । एवम् कोन कतोक इत्यादि । एवंविध प्राणीमे प्रयोगार्ह शब्दमे अलिङ्ग लिखब आवश्यक छल किन्तु ओहि दिस विशेष ध्यान नहि देबाक कारण कोषमे त्रुटि रहल, तकर आब पूर्ति द्वितीयावृत्तिअहिमे होएबाक संभव ।

अ० संकेत विवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ अ० ई संकेत देल अछि तकरा अव्यय बुझव । अव्यय ओ थीक जाहिसँ आगाँ कोन विभक्तिक श्रवण नहि हो । यथा नहू नहू (शमैः शनैः) ।

यद्यपि कुत्र इत्यादिक स्थानापन्न कहाँ इत्यादि अव्यय सँपर द्वितीया पञ्चमी तथा षष्ठी श्रूयमाण रहैत अछि यथा, कहाँकेँ बिदा भेलहुँ, कहाँसँ अयलहुँ, कहाँक वासी थिकहुँ । एवम् कुत्र इत्यादिक तयप्रत्ययान्त 'कतय जतय' इत्यादि, एहूसँ उक्त तीन विभक्ति आगाँ रहैछ; तथापि एहि शब्दसबहिमे अव्ययत्व अवश्य मानबाक चाही, अन्यथा 'कहाँमे' 'कतयमे' इत्यादिओ प्रयोग होअय लागत । परन्तु तखन 'कहाँसँ' 'कतयसँ' इत्यादिक उपपत्ति कोन ? एहि शङ्काक समाधान ई जे जेना संस्कृतमे दिवाशब्द 'दिनमे' एतदर्थक अधिकरण प्रधाक थीक से 'दिवाकर' हिठाम दिनमात्र बोधकभय -

जाइछ, तहिना 'कहाँ' 'कतय' 'कोमहर' इत्यादि शब्द प्रथमा सप्तमीभिन्न विभक्तिक लग 'कोन देश' एतन्मात्रबोधक भय जाइत अछि, अधिकरण अर्थक त्याग कए दैत अछि, ओहि सबहिक्के अधिकरणत्वबोधकत्वावस्थहिमे अव्ययत्व थीक। तस्मात् 'कहाँसँ' इत्यादि उपपन्न भेल।

ई विषय केवल अधिकरणार्थक अव्ययमे अछि, से अव्यय हांप्रत्ययान्त 'कहाँ' 'जहाँ' 'तहाँ' तयप्रत्ययान्त 'कतय' 'जतय' 'तयय' 'एतए' 'ओतय' महरप्रत्ययान्त कोमहर जेमहर तेमहर एमहर ओमहर प्रायः एतवे होयत।

एतद्धिन्न 'आइकाल्हिमे' इहो शब्द सप्रति बाजल जाइत अछि परन्तु हमरा विचारें ओ परिशुद्ध नहि थीक। यद्वत् हिन्दीमे एमहर आबि 'उनमेसे' केओ लिखलक, से प्रचलित भय गेल। वस्तुतः 'उनमे' इएह होयवाक चाही, अति प्राचीन लेख ताटशे उपलब्ध होएत, 'अमीपु ब्राह्मणःश्रेष्ठः' एकर अपभ्रंश ताटशे उचित। एक शब्दसँ दू विभक्ति असंगत। तद्वत् 'आइकाल्हि' शब्दसँपर सप्तमीक प्रयोग वैकल्पिक चलल अछि। यदि 'आइकाल्हिमे' इहो शुद्ध मानल जायत ओकरासँ पर "सप्तमीक लोप वैकल्पिक" एहन एक विशेष अनुशासन मानल जाय।

अव्ययमे कौनो २ पदान्तरानपेक्षो प्रयुक्त होइत अछि यथा हँ हौ इत्यादि।

पुं० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ पुं० ई संकेत देल अछि तकरा

पुंलिङ्गमात्रबोधक जानब। पुंस्त्व की थोक से लिङ्गविचारमे कहि चुकल छी। जे शब्द प्राणिबोधक भय केवल पुंस्त्व लिङ्गक बोध करवैत अछि, यथा बाप भाय जमाय छागर, ताहि शब्दसँ आगाँ ई संकेत देल अछि।

यद्यपि मैथिलीमे पुंस्त्वलिङ्गप्रयुक्त कोनो विशेष कार्य नहि होइत अछि तथापि पुरुषक बोध करवैत अछि। तथा पुंस्त्वमात्रलिङ्गज्ञानसँ स्त्रीबोधकत्वाभावक निर्णय सन्तत तद्विशेषणमे स्त्रीत्वप्रयुक्त प्रत्यय नहि से बुझल गेल। तँ 'छोट छागर' एहने प्रयोग भेल 'छोटि छागर' एहन नहि। गुणबोधककेँ प्रायः विशेष्यलिङ्गप्रयुक्ते कार्य से कहि आयल छी।

स्त्री० संकेतविवरण

जाहिसँ आगाँ 'म्त्री०' ई संकेत देल अछि तकरा स्त्रीलिङ्गमात्रबोधक जानब। स्त्रीत्वलिङ्गक परिचय लिङ्गविचारमे कहि आयल छी। माय बहीनि पुतहु इत्यादि केवल स्त्रीबोधक थीक, ओकर गुणविशेषणवाचकमे स्त्रीत्वप्रयुक्त रूपविशेष होइत अछि, यथा 'हमरा माय बड़ बूढ़ि छथि' इत्याकारक प्रयोग भेल 'बूढ़ छथि' इत्याकारक नहि। 'बड़' शब्द अलिङ्ग थीक तँ ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय नहि भेल। बड़ी राति, बड़ी खन, बड़ी काल, इत्यादिस्थलमे 'बड़ी' शब्द दोसरे थीक, सेहो अलिङ्ग थीक। हिन्दीवत् बड़शब्दसिद्ध स्त्रीलिङ्ग नहि। अतः खनकालादि-विशेषणो होइछ। मैथिलीमे एहि शब्दक प्रयोग प्रायः कालविशेषणतामे होइछ, जेना 'कती काल' 'कती राति' इत्यादिमे 'कती' शब्द।

उ० संकेतविवरण

उ० एहि संकेतक अर्थ उभयलिङ्ग (पुंस्त्वस्त्रीत्वोभयलिङ्ग-बोधक) जानब । 'घोड़ा' 'बाभन' इत्यादिशब्द उभयलिङ्ग थीक ते जखन स्त्रीमे प्रयुक्त होइत अछि तखन ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय ईकार इकार आदि आवि जाइत अछि, यथा 'घोड़ी' 'बाभनि' इत्यादि । यदि 'बाभन' 'बाभनि' इत्यादि सिद्धवत् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भिन्ने-भिन्न मानल जायत कोनो विशेष क्षति नहि छल किन्तु से मानने बुझ-बामे असौकर्य । हमरा तँ स्त्रीमे बाभन आदिसँ इकार, आकारान्तसँ ईकार आवए एहि सामान्य नियमसँ 'बाभनि' 'कुमारि' 'सुकु-मारि' 'घोड़ी' 'भेड़ी' 'बेटी' इत्यादि अनुगतरूपे बुझल गेल, ई लाघव अछि । एहि हेतु स्त्रीप्रत्ययक अनुशासन अछि । तदनु-सार ओकर प्रकृतिभागहिक अर्थ लिङ्ग मानल अछि ।

अलि० संकेतविवरण

अलि० एहि संकेतक अर्थ अलिङ्ग (लिङ्गाबोधक) थीक । जाहि गिनचकत पुरुष ओ स्त्री दुहुक बोध हो से अलिङ्ग भेल, यथा 'लोक' 'पठरू' 'बच्चा' 'नेना' प्रभृति । तथा जाहि प्राणीक सन्तानो-त्पादक इन्द्रिय मनुष्यदृष्टिगोचर योग्य नहि अछि, यथा 'मोस' 'गोहि' 'माछ' इत्यादि, सेहो सभ अलिङ्ग थीक । बहुत शब्दमे विशेष ध्यान नहि देबाक कारण अलिङ्ग लिखब छूटि गेल अछि ।

क्रि० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ पर 'क्रि०' ई संकेत लिखल अछि तकरा क्रिया-बोधक नाम जानब, अर्थात् क्रियाक बोधक अवप्रत्ययान्त कृदन्तन

बुझब, यथा 'छकब' 'ताकब' 'बिकाएब' । जेना संस्कृतमे दशन श्रवण इत्यादि भावप्रत्ययान्त कृदन्त अछि तेना मैथिलीमे देखब सुनब इत्यादि थीक । उदाहरण, 'पुस्तक देखब आवश्यक' 'गीत सुनब आनन्ददायक' ।

'देखब' आदिसँ पर विभक्ति श्रूयमाण रहलासँ 'देखबा' 'सुनबा' इत्यादि वैकल्पिक रूप भय जाइत अछि, यथा, 'देखबास' वा 'देखबसँ' इत्यादि भाषाविद्योत्तममे स्पष्ट अछि । तस्मात् 'देख-बासँ' इत्यादि प्रयोग देखि ह्रस्वान्त 'देखब' 'सुनब' शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे करब । एवम् 'बिकाएब' प्रभृतिशब्दक रूप 'बिकएबाक' 'बिकएबासँ' इत्यादि ह्रस्वमध्यक दीर्घान्त भय जाइछ । अतः 'बिकएबाक' इत्यादि देखि 'बिकाएब' शब्दक अन्वे-षण कर्तव्य ।

अवप्रत्ययान्त तीन प्रकारक अछि, प्रथम 'छक्' आदि धातु प्रकृतिक, द्वितीय 'तक्' आदि प्रकृतिक, तृतीय बिकादि प्रकृतिक । प्रथममे अवप्रत्यय अयलासँ कोनो विकार (लोप आगम अदेश) नहि होइत अछि । यथा 'छक्+अब=छकब', 'ठक्+अब=ठकब' । द्वितीयमे अब अणलापर धातुक स्वर दीर्घ भय जाइत अछि, यथा 'तक्+अब=ताकब', 'जग्+अब=जागब' । तृतीयमे 'अब' प्रत्ययक स्वरूप 'आयब' वा 'आएब' भय जाइत अछि, यथा 'बिक्+अब=बिकायब' वा 'बिकाएब' । एतद्बोधार्थ कोषमे प्रायः प्रकृतिप्रत्यय-विभाग 'छक्+अब' 'तक्+अब' 'बिक्+अब' एवं रूपे कयल अछि जे व्याकरणमे ओकर साधनप्रकार भेटि जाय ।

कसोक अवप्रत्ययान्त 'नुकाएव' 'छिरिआएव' इत्यादि दू धातु सँ बनैत अछि, श्रूयमाणधातुसँ ओ श्रूयमाणधातुप्रकृतिक अवप्रत्ययान्त धातुसँ, यथा 'नुक्+अव - नुकाएव', 'नुकब्+अव - नुकाएव' एवम् 'छिरि+अव - छिरिआएव' 'छिरिअब्+अव - छिरिआएव' । प्रथमक तिङन्तरूप 'छिरिआइत अछि' 'छिरिआएत' इत्यादि । द्वितीयक 'छिरिअबैत अछि' 'छिरिआओत' 'छिरिआआलक' इत्यादि । एहिमे प्रथम अकर्मक, दोसर सकर्मक जानब । किन्तु कोषमे प्रायः एकेटा अर्थ लिखल अछि, कचित् सकर्मक कचित् अकर्मक ।

यद्यपि 'छकब' इत्यदिशब्द व्याकरणहिस बुझबायोग्य होयत तथापि धात्वर्थज्ञानार्थ कोषहुमे देल ।

ना० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ ना० ई संकेत देलअछि ओकरा नामधातु-प्रकृतिक अवप्रत्ययान्त जानब, यथा 'लठिआएव'—लाठीसँ मारब, 'टलिआएव'—टाल लगाएब । एकर तिङन्तरूप 'लठिअबैतअछि' 'लठिआओत' इत्यादि । ई सभ नामसँ जे बनैत अछि तेँ नामधातु कहबैत अछि ।

सं० हि० वि० संकेतविवरण

सं०, हि०, वि०, ई 'केत'वाला क्रमशः संस्कृत, हिन्दी तथा दिशी बुझब ।

वानरादिशब्दो वर्गीयवकारादिश्रेणीमे

मिथिलाभाषामे अन्तस्था वकार नहि अछि, किन्तु जे संस्कृत

अनुरूप गृहीत अछि 'वानर' आदि, ताहिमे संस्कृतानुरूपे वकार उचित । तस्मात् अनुरूपमे अन्तस्थे वकार कोषमे उल्लिखित कयल अछि । किन्तु अन्तस्थवकारवाला थोड़ शब्द अछि, तथा मैथिलोमे 'व' 'व' क उच्चारणमे प्रायः भेद नहि अछि, अतः उभयक ऐक्य मानि अन्तस्थवकारादिको वर्गीयवकारादिशब्दश्रेणीमे लिखल अछि । किन्तु 'व' 'व' यथोचिते लिखल अछि ।

व्याकरणसिद्ध अल्पे कोषमे

हम मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बनाओल ओकर अङ्गभूत धातुपाठखण्डमे लगभग १२०० धातु पठित अछि, ओहिसँ प्रायः ४०००० कृदन्त ओ तद्धितान्त नाम सिद्ध होइत अछि; से सभ एहि कोषमे नहि देल अछि । हेतु जे ओहिसबहिक अवगम उक्त व्याकरणहुसँ भय सकैत अछि । तखन कोषकेँ अति विस्तृत बनाएब व्यर्थ तथा अधिक प्रयत्नसाध्य, एवम् ओकर प्रकाशनो बहुव्ययसाध्य होइत । व्याकरणक प्रयोजनो तेँ इएह थीक जे अल्पप्रयत्नेँ महान्सँ महान् शब्दपुञ्ज अवगत भय जाय । तथापि धातुक अर्थ बुझबाक हेतु उपदिष्ट धातु सबहिक केवल अवप्रत्ययान्त 'छकब', 'ताकब', 'बिकायब' इत्यादि शब्द एहिमे देल अछि ।

व्याकरणसँ ओतेक नाम कोना बहराइत अछि तकर दिग्दर्शन आब करबैत छी ।

एक 'देख' धातुसँ ३० गोटा कृदन्त रूप बनैत अछि । कारण जे धातुमात्रसँ प्रेरणामे अवप्रत्यय अबैत अछि; तथा ओहि अवप्रत्ययान्तसँ पुनः द्वितीय प्रेरणामे 'अव' प्रत्ययसंस्कृतानुस

प्रत्ययस्थानीय, अबल्ल; एवंप्रकारेँ एक धातुसँ तीनधातु सिद्ध होइछ यथा, 'देख्' 'देखब', 'देखबब', जकर तिङन्त रूप क्रमशः 'देखैत अछि', 'देखबैत अछि', 'देखबबैत अछि' इत्यादि होइत अछि। ओ धातुमात्रसँ दशविध कृत्प्रत्यय, 'अनिहार' आदि, अबैतअछि; तस्मात् दशक त्रिगुण तीस रूप, एक 'देख्' धातुक होयत। तद्विन्न नामधातुक 'अखिअओनिहार' इत्यादि कृदन्त रूप, तथा तद्धितान्त सेहो संभवतः तीन चार हजार रूप हो। सर्वैकत्वेँ ४०००० सेँ तदधिके शब्द व्याकरणसिद्ध होएत। ताहिसँ प्रायः डेढ़ हजार व्याकरणसाधित शब्दक समावेश एहि कोषमे अछि। आव 'अनिहार' प्रभृति दश गोठ कृत्प्रत्यय देखू:—

अनिहार	देखनिहार	देखओनिहार	देखबओनिहार
अल	देखल	देखाओल	देखबाओल
अब	देखब	देखाएब	देखबाएब
अनाइ	देखनाइ	देखओनाइ	देखबओनाइ
ऐत	देखैत	देखबैत	देखबबैत
अने	देखने	देखओने	देखबओने
अना	देखना	देखओना	देखबओना
इ	देखि	देखाए	देखबाए
अय	देखय	देखबय	देखबावय
ऐक	देखैक	देखबैक	देखबबैक

यद्यपि एहिमे अल ऐक प्रत्ययान्त तिङन्त थीक, तथापि कृदन्तो मन्तव्य, अन्यथा 'पुस्तक देखब आवश्यक' 'देखल अछि', 'देखैक पड़त' इत्यादि प्रयोगक अनुपपत्ति होयत, ई विषय

व्याकरणमे स्पष्ट अछि। एहि तीसहुसँ अतिरिक्त वैकल्पिक रूप सभ, यथा 'देखए' इत्यादि, तथा 'ओबलि' प्रत्ययान्त 'देखौबलि'।

देशभाषामे एक अथक एके शब्द, पर्याय नाह

देशभाषानिर्माणमे लाघवो एक कारण छल। अतएव घटा-दिबोधक 'घैल' इत्यादि एकके शब्द मैथिलीमे राखल गेल, संस्कृतवत् अनेक नहि। 'कलसधारी' 'कलसस्थापन', 'घटस्थापन' इत्यादि अनुरूपसंस्कृते थीक। एहिसँ इहो स्पष्ट होइछ जे जूता ईटा इत्यादि शुद्ध मैथिली नहि थीक; कारण जे तद्वोधक पनही पजेवा इत्यादि मैथिली शब्द राखल अछि। यद्यपि जूता मैथिलीमे चिरप्रसिद्ध अछि तथा व्याकरणानुसार लठिआएब इत्यादिवत् जुति-आएब इत्यादिओ बनि चुकल अछि, तथापि ओ मैथिली भाषा नहि थीक, किन्तु हिन्दी तथा हिन्दीभव। यदि चिरप्रसिद्धत्वमात्रसँ शुद्ध मिथिलाभाषा मानल जाय तँ हजूर इत्यादिओ मैथिली कहाय सकत।

बूढ़ि, बुढ़िबक, बकलेल, ढहलेल, बुढ़िभतन इत्यादि जे समानार्थक जेकाँ बुझल जाइत अछि सेहो सभ किछु-किछु भेदापन्ने अर्थकेँ बुझबैत अछि, अतः पर्यायवाची नहि थीक। 'बूढ़ि' भेल सामान्य अछि; 'बुढ़िबक' भेल बकसन बूढ़ि अर्थात् उपस्थित विपत्तिकेँ अनुमानसँ शीघ्र नहि बुझनिहार। काकादिपक्षी दूरहुसँ हाथ उठओलापर शीघ्र आपत्तिक अनुमान कए उड़ि जाइत अछि, बक बेभारा अनभिज्ञ बैसेले रहैत अछि, मनुष्यादि असि निकल आयलापर उड़ैत अछि। अतएव सरनरवाला बकमारकेँ बक मारब

सुकर होइत छैक। एवं 'बकलेल' ओ थीक जकरा नीक जेकाँ धोतिओ पहिरबाक ठङ्ग नहि। एहि रीतिसँ आनो-आनो भिन्नार्थके थीक से सूक्ष्मदृष्टिसँ विचार कयलापर बुझबाक योग्य भए जाएत। एवम् उपरसँ नीचाँ आघातबोधक अनेक धातु अछि, यथा, 'हूरब' 'थूरब' 'थकुचब' 'चूरब' 'कूटब' 'ठोकब' 'तामब' इत्यादि। ओहो सब भिन्ने-भिन्न आघातविशेषक्रियाबोधक थीक। यथा-'हूरब' थीक स्तम्भादिक जड़िक माटिपर ओकर स्थैर्यार्थ मुसलादिसँ आघात। 'थूरब' थीक आघातसँ अनेक खण्ड नहि भेनिहार सर्पमुखदन्त-धोवनकाष्ठमुखादिपर यष्ट्यादिक अग्रभागसँ आघात। एहि रीति आनो सब विभिन्नार्थके थीक।

‘ड’ ‘र’-उभयवर्णयुतशब्दविचार

उत्तमकल्प—जाहि शब्दमे स्वरसँ आगाँ ‘ड’ ‘र’ उभय वर्ण अछि, ताहिमे प्रथम ‘ड’ ततः पर ‘र’ चाही, से हमरा ठीक लगैत अछि। हम एहि कोषमे लिखबाक परिपाटिओ ओएह राखल अछि। यथा, ‘कड़रा’ ‘खड़रा’ ‘गड़रा’ ‘बड़रा’ ‘पाँड़रि’ एहि सबहिक स्थानमे ‘करड़ा’ इत्यादि नहि लिखल अछि। तादृश शब्दक औचित्यसम्बन्धक युक्ति प्रथम ई जे अनेक शब्दमे तादृश क्रम सयुक्तिक अछि; यथा, ‘पटोल’क अपभ्रंश ‘पड़ोर’ थीक, मैथिलीमे टकारक स्थान डकार बहुधा दृष्ट अछि, यथा ‘बीटी-बीड़ी’, ‘घटी-घड़ी’, ‘घोटक-घोड़ा’, ‘मोटक-मोड़ा’। एवम् संस्कृतशब्दक लकारक स्थानमे रेफ सेहो बहुत शब्दमे दृष्ट होइछ; यथा, ‘हल-हर’, ‘गल-गर’, ‘फाल-फार’, ‘गाली-गारि’, ‘श्याल-सार’। तस्मात् ‘पटोल’ शब्दक अपभ्रंश ‘पड़ोर’ होयबाक चाही, ‘परोड़’ नहि। एवम् मण्डलशब्दक अभट

‘भड़रा’ शब्द उचित, ‘भरड़ा’ नहि; कारण जे लकारकेँ रेफ तथा संयुक्तणकारक लोप बहुधा होइछ, यथा ‘मण्ड-माँड़’ ‘दण्ड-डाँड़’ ‘शुण्डा-सूँड़’, ‘मुण्ड-मूँड़’। तथा ‘पाटला’ शब्दक अभट उक्तप्रकारेँ ‘पाँड़रि’ शब्दे उचित। एवंप्रकारक अनेक दृष्टान्तसँ देशीशब्दहुमे तदनुसारे स्थिति मन्तव्य। दोसर हेतु जे ‘कड़रा’ ‘करड़ा’, ‘कोड़रा’ ‘कोड़ा’ इत्यादि द्विविधशब्दमे पहिलशब्दक उच्चारण मुखसुखावह अछि; तस्मात् ‘कड़रा’ इत्यादि देशी शब्द मुखसुखोच्चार्येँ राखल गेल होएत, तेँ सन्देहदशामे तादृशेँ रखबाक चाही ई उत्तम कल्प।

मध्यम कल्प—पूर्वोक्त विषयमे मध्यम कल्प ई जे संस्कृतभव ‘पड़ोर’ इत्यादिमे पूर्वोक्त व्यवस्था रहओ, तथा जाहि एकपदक सार्थक पूर्वखण्डमे डकार निर्णीत अछि तथा उत्तरखण्डमे रेफ, यथा ‘भँड़-हर’, ताहुमे औचित्य त पूर्वोक्त क्रम मन्तव्य। परन्तु जाहि एक पदक पूर्वखण्डमे रेफ उत्तरखण्डमे डकारे निर्णीत अछि, यथा ‘मुरबड़’, ताहिमे तदनुसारे मन्तव्य होएत। कथ्य जे प्रमाण-सिद्ध ‘ड’ ‘र’ बालामे तदनुकूले क्रम आवश्यक। किन्तु देशीशब्द जाहिमे क्रम प्रमाणित नहि अछि, यथा ‘खड़रा’ आदि, ताहिमे विपर्यस्तो बेजाए नहि; यथा ‘खरड़ा’ इत्यादि। तेँ देशीशब्द वृक्ष प्रकारक राखल जाए—ई मध्यम कल्प। परन्तु स्वरव्यवहित दू ‘ड’ किंवा दू ‘र’ सर्वथा हेय, यथा ‘खड़ड़ा’ ‘खररा’। एहि मध्यम कल्पमे कोषोक्त ‘खड़रा’ इत्यादिक वैकल्पिक रूप ‘खरड़ा’ इत्यादि बोद्धव्य।

‘मघोन’शब्दादिविचार

किञ्चिन्मेघयुतसमयसदृशसमयक तात्पर्ये अनेक शब्द उप-स्थित होइछ—‘मेघोन’ ‘मेघओन’ ‘मेघाओन’ ‘मेघौन’, एहिमे उत्तम कल्प जे ‘ललोन’ शब्दसादृश्यात् ‘मेघोन’ मात्र राखल जाए। मध्यम कल्प जे आदितः तीन गोट राखल जाए, केवल अन्तिम संस्कृतविरुद्ध औकारक प्रवेशस त्याज्य। एवम् ‘जड़ोन’ ‘जड़ओन’ ‘जड़ाओन’ ‘जड़ौन’ इत्यादिअहुमे। तथा ‘अमताइनि’ ‘अमतानि’ ‘अमतैनि’ इत्यादि त्रिविधरूपमध्य प्रथममात्र किंवा आदितः उभय ग्राह्य, अन्तिम पूर्वोक्तकारणे सर्वथा हेय।

फूल, फड़, गाछ, तीनूक एके नाम

जे नाम जाहि फड़क कोषमे लिखल अछि से नाम ओकर गाछहुक बुझवाक चाही; यथा, ‘आम—अम्र, फलविशेष’ एवं समुल्लिखित अछि, से आमसंज्ञा ओकर गाछहुक; उदाहरण, ‘आम खाएल’, ‘आमक जारन’। एवं जे फूलक नाम से ओकर गाछहुक; यथा, ‘सोनहुल फूल’ ‘सोनहुलक सोर’। जे गाछमे फड़ए से फड़ थीक, अतः धान्यादिको फड़ भेल, तेँ गछ ओ फड़ दुहूक नाम धान; उदाहरण, ‘ढाढ़मे धान अछि’, ‘धान काटल’।

कोषमे फलविशेष पुष्पविशेष वृक्षविशेष एना अर्थ लिखल अछि से उपलक्षण थीक। जकार फुले उपयुक्त या फड़े, या वृक्षे, या जे स्मृतिपधान्तर भेल, सकारे, इत्येव फल। अतः कदम्बादिमे पुष्पविशेष अर्थ लिखल, वस्तुतः ओकर पुष्पविशेषो अर्थ लिखि-

सको फलविशेषो एवं वृक्षविशेषो; हेतु जे कदम्बादिसंज्ञा तीनूक थीक।

यद्यपि ‘आम’ आदि फलमात्रक नाम मानी, ‘आमक जारन’ इत्यादि व्यवहारमे ‘आम’ आदि ओकर गाछमे लाक्षणिक मानी से संभव थीक, किन्तु ‘आम’ आदि गाछहिक नाम रहओ, ‘आम खाएल’ इत्यादि स्थलमे ‘आम’ आदि फलमे लाक्षणिक रहओ सेहो कहि सकैतछी। तस्मात् विनिगमनाविरहसँ दुहू अर्थ ओकर वाच्ये मन्तव्य। किञ्च, दुहू अर्थमे मुख्यव्यवहारे बुझल जाइछ, गौणव्यवहार नहि।

कतहु कतहु एकर अपवाद अछि। यथा, ‘कमल’ संज्ञा फूल-मात्रक थीक, छोकर गाछक नहि; गाछक नाम ‘पुरैनि’ थीक। अतएव ‘पुरैनिक पात’ व्यवहृत अछि, ‘कमलक पात’ नहि। तथा फलक नाम ‘बजरवटू’ गाछक नाम ‘ताड़ी’, अतएव ओकर पात ‘तड़िपत’ कहबैत अछि जाहिमे पहिने ग्रन्थ लिखल जाइत छल। आम्रादिक मजर यद्यपि फूले थीक, किन्तु वैजात्यक कारणेँ ओ फूल नहि कहबैत अछि। संस्कृतहुमे ओ ‘पुष्प’ नहि कहाए ‘मञ्जरी’ कहबैत अछि।

पुष्प फल वृक्ष नामक प्रसङ्ग संस्कृतहुमे तुल्ये सिद्धान्त अछि; विशेष ई जे आम्रादिशब्द फलमे नपुंसक लिङ्ग, वृक्षमे पुंलिङ्ग ओ पुष्पमे लिङ्गभेद नहि।

रङ्गबोधक नाम ओहि रङ्गसँ रँगलहुक

‘लाल’ ‘पीअर’ इत्यादि रङ्गबोधक फलहु अछि, से ओहि रङ्ग-सँ रँगल वस्तुअहुमे प्रयोक्तव्य, यथा ‘लाल रङ्ग’ ‘लालबस्त्र’।

रँगल ई उपलक्षण थीक ओहिरङ्गक वस्तुक, अतः 'लाल फूल',
इत्यादिओ व्यवहार उपपन्न भेल ।

कतोक संस्कृतशब्द अग्राह्य

संस्कृतमूलक मिथिलाभाषामे संस्कृत शब्द लेल जाइछ ताहिसँ
संकीर्णतादोष नहि । किन्तु कतिपय भाषाशब्दक मूलभूत संस्कृत
शब्द नहि व्यवहृत होइछ, यथा 'सब' शब्दक मूल 'सर्व' शब्द
थीक, ओकर व्यवहार मैथिलीमे नहि होइछ । एवम् 'तत्' 'यत्'
इत्यादिओ अग्राह्य । एवम् ऋकारन्त 'पितृ' 'मातृ' इत्यादिओ ।
ओकरा स्थान पिता माता इत्यादि प्रथमैकवचनान्ते बाजल जाइछ,
तथा राजन् दानिन् इत्यादि प्रातिपादिक राजा दानी इत्यादि-
रूपहि व्यवहृत होइछ, से सभ 'मिथिलाभाषाविद्योतन'मे स्पष्ट
अछि ।

ओकारान्त, बान्त

ओकारान्त 'जओ' 'बाओ' इत्यादि जे शब्द कोषमे लिखल
अछि से सभ पूर्ण अन्तस्थावकारान्त छल किन्तु संप्रति ओकारान्ते
व्यवहृत भए रहल अछि । केवल एव 'अपि'क योजनामे बान्ते
व्यवहृत होइत अछि । यथा, 'जओ बाग कएल', 'आब जबे नहि,
'जबो लागल' 'नावे नहि' 'नाबो फूटल' । नाबदिसँ पार होएब,
'जओ गोत्र' 'जबोना' 'जबोटा' ।

ओकारान्त व्यवहारक कारण अछि ओकारक ध्वनि-
ध्वनिकृत तुल्यता । अतएव हमरा लोकनि 'पठाओल' लिखैत
भजैत छी, केओ केओ 'पठावल' लिखैत छथि । तस्मात् 'नाव'
'भाव' इत्यादि लेख असंगत नहि ।

ऐ औ वर्णविचार

ऐकार तथा औकार सन्ध्यक्षर कहबैत अछि; कारण जे
'अइ' एतदुभय वर्ण मीलि ऐकार एवम् 'अउ' एतद्वर्णद्वय मीलि
औकार नृसिंहवत् विलक्षणजातिक वर्ण बनैत अछि । अतएव
ऐकारक स्थान कण्ठतालु, औकारक कण्ठओष्ठ पाणिनीय-
शिक्षादिमे प्रतिपादित अछि । जे 'अइ' एतदुभयावयवक ऐकार
तथा 'अउ' एतदुभयावयवक औकार थीक ते 'मिथिलाभाषामे
संस्कृतभिन्न शब्दमे 'ऐ' 'औ' क स्थानमे 'अइ' 'अउ' लिखब असं-
गत नहि । यथा 'कहैत' 'कहइत', 'कोड़ो' 'कउड़ो' ।

हिन्दीमे 'अए'-'अओ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' म्लेच्छ-
भाषावत् मानल अछि । म्लेच्छ-भाषामे एकाकारक लिपि
अनेक वर्णक अभिव्यञ्जक होइत अछि । परन्तु ओकर बहुत
दिनसँ संघर्ष भेलहुपर संस्कृतविरुद्ध खकार-गकारादिक
प्रवेश शुद्ध हिन्दीमे नहि भेल । तथा म्लेच्छभाषाक संपर्कवश
'कहिस' 'कहिन' इत्यादि जे हिन्दीमे व्यवहृत होअय लागल
छल तकरा हिन्दी व्याकरणकार हटओलैन्हि । किन्तु संस्कृत-
विरुद्ध 'ऐ' 'औ' हिन्दीमे रहिए गेल । हमरा अनुमाने अति-
पूर्व 'जाते हौ' इत्यादिक स्थान 'जाते हओ' इत्यादि लिखल
जाइत छल । यदि म्लेच्छभाषासंपर्कसँ पूर्वक लेख भेटैत तँ
एकर स्पष्टीकरण भय जाइत । लोचनकृत 'रागतरङ्गिणी'मे
'है' एकरा स्थान 'हए' एतादृश लेख पाओलो जाइत अछि ।
अस्तु, संप्रति हिन्दीमध्य संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ'क लेख सिद्ध-
वत् भय गेल अछि । प्रत्युत सन्वेष्ट जनु हो जे कीदृश ध्वनि-

व्यञ्जकतया 'ऐ' 'औ' लिपि कयल गेल अछि एहिहेतु एहनसन हिन्दीमे नियम भय गेल अछि जे अनुरूपसंस्कृतभिन्न शब्दमे संस्कृतविरुद्धे 'ऐ' 'औ' क उच्चारण हो ।

मिथिलाभाषामे 'ऐला', 'धैल', 'मैल', 'पैली', 'औलबोल', 'चौठि', 'बौसब', इत्यादि अनेकशतसंख्यक सकल नाममे संस्कृतानुरूपे 'ऐ' 'औ' इदानींपर्यन्त सकल मिथिला देशमे व्यवहृत अछि । ताहिमे कृत्रिम कय दुष्ट ऐकारादि चलाएब नितराम् अनुचित ओ असंभव थोक । तस्मात् मिथिलाभाषामे सर्वत्र 'अइ' एतादृशध्वनिके ऐकार एवम् 'अउ' एतादृशध्वनिके औकार मन्तव्य ।

अतः हिन्दीक वासनासँ चलाओल 'ऐलाह' 'जैब' 'औताह' 'पौल' इत्यादिक स्थान 'अएलाह' 'जाएब' 'अओताह' 'पाओल' इत्यादिए परिशुद्ध मानबाक चाही । विद्यापति, मनबोध, गोविन्द प्रभृतिक लेखमे 'गाओल' 'पाओल' इत्यादिए शब्द अछि 'गौल' 'पौल' इत्यादि नहि; अन्यथा 'उचित वर पाओल' इत्यादिमे छन्दोभङ्ग दोष आपतित होयत ।

कतोक व्यक्ति हिन्दीक अनुकरण कय 'अए' 'अओ' एहि दुहूक स्थान 'ऐ' 'औ' लिखय लागल छथि । यथा 'अएना' एकरास्थान 'ऐना', 'पओताह'क स्थान 'पौताह' इत्यादि । कतोक व्यक्ति तँ 'आए' तथा 'आओ' एकरो स्थान 'ऐ' तथा 'औ' लिखैत छथि । यथा 'आएल' एकरा स्थान 'ऐल' 'पाओल'क स्थानमे 'पौल' इत्यादि । किन्तु ई लेख सर्वथा अनुचित थोक ताहिमे अनेक कारण ।

(क) मैथिली संस्कृतसँ उत्पन्न भेल अछि । अतः एकर वर्ण ओ लेख संस्कृतहिक अनुसार उचित ।

(ख) व्याकरणक अनुसार मैथिलीमे भूतकालमे धातुसँ पर'अल' प्रत्यय अवैतअछि; यथा, 'देखल' 'पढ़ल' । अतः 'धर' धातुमे 'अल' लगओलापर 'धरल' रूप बनल; ताहिमे 'र' क स्थान 'य' आदेश भेलापर 'धयल' रूप भेल; ततः पर 'य'-केँ वैकल्पिक 'ए' आदेश (जे सार्वत्रिक अछि) कयलापर 'धएल' बनैतअछि । एवं 'पब' धातुसँ 'अलक' प्रत्यय अयलापर 'पबलक' ई बनल; ताहिमे 'ब'केँ ओकार आदेश (जे 'नाब' 'नाओ', 'यब' 'जओ' इत्यादिमे दृष्टअछि) कयलापर 'पओलक' एतादृश रूप बनल; 'पौलक' एहन नहि । एहि प्रकारेँ साधन-प्रक्रिया देखलासँ स्पष्ट होइछ जे 'अए' 'अओ' इएह शुद्ध थोक ।

(ग) शब्दक मूल देखलासँ ई आओरो स्पष्ट भय जाइत अछि; यथा 'कओर' शब्द 'कवल' शब्दसँ सिद्ध भेल अछि, अतः 'व' क स्थान ओकार भेलापर 'कओर' शब्द सिद्ध भेल, 'कौर' नहि ।

(घ) ककरो मत अछि जे उच्चारणक अनुरोधेँ 'धएल' क स्थान 'धैल' लिखबाक चाही । परन्तु इहो उचित नहि, कारण जे विलम्बित वृत्त्या उच्चारण कयलासँ 'धएल' इत्यादिए उच्चरित होइछ । किन्तु शीघ्रतया उच्चारणमे किछु ध्वनिक अन्तर होइछ से मानहि पड़त । बजबाक काल लोक शीघ्रताक कारण भाषाक वास्तविक स्वरूपकेँ बहुत विकृत कय दैत

अछि; यथा, 'करैत अछि'—'करैए', 'नहि'—'नै', 'पओलहुँ'—'पौलौ'। किन्तु ई सभरूप शिष्ट मैथिललोकनि नहि लिखैत छथि।

(ड) यदि केओ कहथि जे लेखलाघवार्थ विलक्षण 'ऐ' 'औ'-क स्वीकार कर्तव्य; 'धएल' 'पठाओल' 'अएना' इत्यादिक स्थान 'धैल' 'पठौल' 'ऐना' इत्यादि लेखमे एक आखरक लाघव अछि। एहिपर वक्तव्य जे ई लाघव उपकारकसँ अधिक अप-कारके होएत। कारण जे एहि स्थितिमे एकाकारके 'ऐ' 'औ' लिपिकेँ दू प्रकारक ध्वनिक अभिव्यञ्जक मानय पड़त; तखन 'ऐक्य' 'कैल' 'धैल' 'ऐना' 'औन्नत्य पौल' 'और' 'ढौरब' इत्यादिमध्य कोन शब्दमे 'ऐ' 'औ' कीदृश स्वरक अभिव्यञ्जक थोक एकर व्यवस्था मैथिलेतरकेँ तथा नेना सभकेँ कठिन भय जयतैन्हि। हमरा मतें 'ऐक्य' 'पाओल' 'धैल' 'अएना' 'औन्नत्य' 'पाओल' 'आओर' 'ढौरब' इत्यादि व्यवस्थित अभ्रान्त लेख होइतअछि। वस्तुतः एकपदमे लाघव-गौरव-विचारे नहि अछि अन्यथा 'एक' 'दू' 'तीनि' 'चारि' 'पाँच' इत्यादिक स्थान 'ए' 'दू' 'ती' 'चा' 'पा' चलाओल जाइत; एवम् 'प्रमदवनविहारीशरण' एहन-एहन नाम नहि राखल जाइत।

एवम् लाघव एकतर पक्षक समर्थक ततहि होइत अछि जतय बुह पक्ष समकक्ष हो। किन्तु दोषावह एकतर पक्षक समर्थक नहि भय सकैत अछि। तस्मात् शास्त्रप्रातिकूल्य तथा भ्रमजनकत्व एहि प्रधान दू दोषसँ दुष्ट 'ऐ' 'औ' परिग्रह पक्षक समर्थक नहि होएत।

(च) 'ऐ' 'औ' अंशमे हिन्दीक सादृश्यपर जोर देनिहारकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे मैथिलीकेँ संस्कृतसँ जे योनिसम्बन्ध छैक से हिन्दीसँ नहि; तथा हिन्दीक कतबो उत्थान होयत तथापि संस्कृतक स्थान ओकरासँ उच्च रहत। अतः हिन्दीक अनुसरणक अपेक्षया संस्कृतहिक अनुसरण करब उचित। हिन्दीभाषा मैथिलीक सहज थोक, ताहिमे यदि एक उपजीव्य-विरोध करय तँ ओकर अनुकरण कय दोसरो उपजीव्यविरोध करय से उचित नहि।

(च) आठम शताब्दीसँ लय बारहम शताब्दीसमयधरि मैथिलीक जे केओ विद्वान् मैथिलीमे किछु लिखलैन्हि से सभ 'अए' 'अओ' इएह लिखलैन्हि 'ओकरा स्थान 'ऐ' 'औ' नहि। अतः एतेक दीर्घकालसँ चल आयल निर्दुष्ट परम्पराकेँ तोड़िकेँ मैथिलीकेँ हिन्दीक अनुगामी बनाएब सर्वथा अनुचित।

(छ) संस्कृत-विरुद्ध 'ऐ' 'औ' क स्वीकर्ता लोकनिक लेख कोनो व्यवस्थापर नहि अछि। 'आएल' 'पाओल' इत्यादिक स्थान ओ लोकनि 'ऐल' 'पौल' लिखैत छथि, तदनुसार 'जाए' 'जाओ' एकरो स्थान सर्वत्र हुनका 'जै' 'जौ' लिखबाक चाही; यथा 'आएल जाए' 'आएल जाओ' इत्यादिक स्थान 'ऐलजै' 'ऐल जौ' इत्यादिक लेख करब उचित; एवम् 'माए' 'गाए' इत्यादिक स्थान 'मै' 'गै' लेख कर्तव्य। किन्तु से नहि लिखैत छथि। बहुत व्यक्ति तँ एहनो छथि जे कतहु 'पौल' ओ कतहु 'पाओल' लिखैत छथि। किन्तु परिनिष्ठित आधुनिक बहुसंख्यक विद्वान् जे लोकनि मैथिलीभाषातत्त्वक

अनुसन्धान कएलैन्हि अछि ओ जे मैथिलीक परिनिष्ठित लेख कीदृश होयबाक चाही तकर विचार करैत छथि से सभ 'अए' 'अओ' सएह लिखैत छथि । प्रतिष्ठित प्रकाशको लोकनि अधिकांश एहीलेखमे अपनर पुस्तक प्रकाशित कयलैन्हि अछि । पटना विश्वविद्यालयक मैथिलीविभाग सेहो एही पक्षक समर्थक छथि । एहीलेखक ग्रन्थ सब सर्वत्र पठन-पाठनमे अछि । 'मैथिली-साहित्यपत्र' तँ सुतराम् एहि पक्षमे छल ।

अतः एहि काषमे 'अए' 'अओ' एकरा स्थान वैकल्पिक रूपहु संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ' नहि लिखल अछि ।

ड ढ द्विविध

'ड' दू प्रकारक अछि—मूर्द्धस्थानमे सरल जिह्वाप्रक संयोगजन्य तथा ओही स्थानमे वक्रीकृतजिह्वाप्रक आघातजन्य । एहिमे प्रथम प्रकारक 'ड' पदक आदिमे तथा संयुक्तमे उच्चरित होइत अछि; यथा 'डर' 'अड्डा' 'पण्डा'; द्वितीय प्रकारक 'ड' स्वरसँ आगाँ असंयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'कड़ी' 'गाड़ी' । यादृशध्वनिक ढकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज आघातक भवति । जेना वक्रीकृतजिह्वाप्रक आघात कयल जाइछ, तेना वक्रीकृत जिह्वाक अग्रसँ आघात कयने ई वर्ण उत्पन्न होइछ ।

एहि दुहू 'ड'क ध्वनिमे किछु भेद रहलहुपर एके स्थानमे जिह्वाप्रक स्पर्शसँ उत्पत्ति होएबाक कारणेँ वर्णभेद नहि मानल जाइत अछि, किन्तु एकजातीयते । 'क' 'ख' इत्यादि जे भिन्न जातिक होइत अछि से प्रयत्नक विभिन्नताक कारणेँ ।

'ड'द्वयमे शास्त्रोक्त प्रयत्नहुक भेद नहि अछि । एवम् 'ढ' सेहो ढकारवत् द्विविध अछि, संयोगज ओ आघातज । एकरो नियम ढकारवते अछि । संयोगज 'ढ' पदक आदिमे ओ संयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'ढक्का' 'बड्डी' । आघातज 'ढ' स्वरसँ आगाँ उच्चरित होइछ, यथा 'गढ' 'बेढ' । यादृशध्वनिक ढकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज जानब । 'ड' ओ 'ढ'मे विभिन्नता अल्पप्राणतामहाप्राणतात्मक प्रयत्नक भेदसँ होइत अछि । वर्णक स्थान ओ प्रयत्न आगाँ कहब ।

दुहू ड तथा ढ मे ध्वनिभेदसूचक कोनो चिह्न (तरमे बुन्दा) देबाक व्यवहार अतिपूर्व नहि छल । अतः हम आघातज 'ड' 'ढ'क नीचाँ बुन्दा नहि दय समाने लेख कयल अछि । दोसर कारण जे भेदसूचक चिह्न बेत्रेको बजबाक प्रकृतिक अनुसारेँ स्वतः उच्चारणमे भेद भय जाइत अछि । अस्तु, एमहर आबि आघातजक तरमे भेदसूचक बिन्दु देबाक परिपाटी चलल अछि; ताहिमे हमहुँ सहमते छी ।

यकार-षकारविचार

यकारक द्विविध उच्चारण अछि; खण्णं तृतीयवत् तथा 'एअ' एतदुच्चारणवत्—प्रथम प्रकारक 'यमुना' 'यणोबा' इत्यादि संस्कृत शब्दहिमे अछि; द्वितीय प्रकारक 'कय' 'जाय' 'खायर' इत्यादिमे, तथा 'कय' 'खय' इत्यादि मे प्रसिद्ध अछि । यथोचित उच्चारणबाला यकारक लिपिक नीचाँ असंयुक्तमे बिन्दु वा तिर्यक् रेखा मिथिलाक्षरमे देल जाइत अछि ।

मिथिलामध्य यजुर्वेदशाखीय लोकक संख्या अधिक रह-
वाक कारण यजुर्वेदवत् ओकर द्विविध उच्चारण प्रचलित
भेल । अतएव षकारहुक उच्चारण तदनुसार पुराणादिकहुमे
प्रचलित भेल । यजुर्वेदक माध्यन्दिनीयशाखाक प्रातिशाख्यमे
कहल अछि 'षकारस्य खकारः स्यादृकयोगे तु नो भवेत्, अर्थात्
षकारक उच्चारण खकारवत् हो परन्तु टवर्गक योगमे नहि ।
एहि अनुसारें 'पुरुष' आदिमे सर्वत्र षकारक कवर्गद्वितीयवत्
उच्चारण, केवल टवर्गक योगमे 'कष्ट' 'विष्णु' इत्यादि शब्द-
मध्य मूर्द्धन्यहिक उच्चारण होइछ ।

परन्तु अतःपर षकारक प्रसङ्ग संशोधन कयल गेल अछि ।
उक्त प्रातिशाख्यानुसार उच्चारण करब यजुर्वेदहिमे उचित,
आन वेद वा पुराणादिमे नहि, से धर्मधुरीण कर्मठप्रवर बाबू
श्री गुणेश्वरसिंहप्रभृति तथा जगद्विख्यात विद्वेद्वरेण्य श्री-
बच्चा झा प्रभृतिक सिद्धान्त भेल । अतएव आब हमरा
लोकनि षकारक उच्चारण संशोधनानुसार कय रहल छी ।
समुचितो इएह थीक । यदि उक्त प्रातिशाख्यानुसार सर्वत्र
उच्चारणव्यवस्था मानी तँ 'ऋण' क स्थान 'रेण', 'संस्कृत' क
स्थान 'संस्क्रेत', 'हर्ष' क स्थान 'हरेष' इत्यादिओ बाजय पड़त;
हेतु जे यजुर्वेदमे तादृश उच्चारण युक्तिसंगत अछि ।

यकारक द्विविध्य केवल मिथिला ओ बङ्गला दुइए देशमे
व्यवहृत अछि, अन्यत्र यकारक स्थानप्रयत्नानुकूल यथोचित
एके प्रकारक उच्चारण अछि ।

आब जाहि शब्दमे यादृश यकारक उच्चारण मिथिलामे
व्यवहृत अछि तकर उल्लेख करैत छी । शब्दक आदिमे यका-
रक जकारवत् उच्चारण होइत अछि; यथा, 'यम' 'योग' ।
पदक मध्यमे यथोचित; यथा, 'नियम' 'प्रयोग' 'बेजाय'
'जाय' । एकर अपवाद— एकपदस्थ स्वरमात्रव्यवहित दू 'य'
क उच्चारण जकारवत्; यथा, 'युयुधान', 'युयुत्सु'; तथा रेफो-
त्तरवर्ती यकार जकारवत्, यथा 'आर्य' 'वर्य' 'हर्यक्ष' ।

वर्गचतुर्थ-वर्णविचार

वर्गक चारिम घ् झ ढ ध् भ् एहि पाँच वर्णक यादृशध्वनि
सुनल जाइछ, तेहनेसन ध्वनि 'अह्' परक तद्वर्गीय तृतीय वर्ण-
हुक होइछ । अर्थात् 'घ्'—'गह्', 'झ्'—'जह्' इत्यादि तुल्यश्रुतिके
होइत अछि । एहि कारणें क्वचित्-क्वचित् दुहू व्यवहृत होइत
अछि; यथा, 'मघी' 'मगही', 'सोझाँ' 'सोजहाँ', 'साढ़' 'साड़हू',
'खोधा' 'खोदहा', 'उभी' 'उबही' इत्यादि दुहू बाजल ओ
लिखल जाइछ ।

परन्तु जाहि ठाम चतुर्थ वर्णसँ आगाँ दीर्घस्वर अछि
ताहि ठाम ई विषय; अतः 'पैघ' 'बोझ' 'टेढ़' 'बाध' 'थोभ'
इत्यादि स्थलमे आगाँ ह्रस्व रहवाक कारण द्वितीय प्रकारक
उच्चारण नहि । प्रत्युत तद्विषय स्थलहुमे कयचिदेय । उसम
कल्प तँ चतुर्थ वर्णहिक बाजब ओ लीखब ।

रौदा घैला इत्यादि अशुद्ध

'रौदा भेल', 'घैला लाउ' इत्यादि अशुद्ध थीक; 'रौद भेल'
'घेल लाउ' इत्यादिए शुद्ध । कारण जे 'घैल' इत्यादिए नाम

थोक । भ्रमकहेतु ई जे 'घैल' 'रौद' 'कोबर' 'मांडब' 'तिलकोड़' 'सोन' इत्यादि बहुत शब्दके विभक्तिसँ पूर्व दीर्घ होइछ, 'घैलाक जल रौदामे' 'सोनाक माला' गरामे, इत्यादि । कतोक साक्षरो व्यक्ति एहि भ्रममे पड़ैत छथि । एहि हेतु व्याकरण देखब आवश्यक । तस्मात् 'घैलाक जल, तिलकोडाक पात' इत्यादि प्रयोग देखि 'घैल' 'तिलकोड़' प्रभृति शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे कर्त्तव्य ।

शब्दक अर्थ त्रिविध

शब्दक अर्थ तीन प्रकारक होइत अछि—वाच्य, लक्ष्य ओ व्यङ्ग्य । ताहिमे वाच्य अर्थ ओ थोक जकर प्रथमतः शब्दसँ स्मरणद्वारा बोध हो । यथा 'आगि लाउ' एहि वाक्यमे 'आगि' शब्दसँ अग्निरूप अर्थ उपस्थित भय अवगत होइत अछि । लक्ष्य अर्थ थोक प्रथमोपस्थित अर्थमे असंगति किंवा तात्पर्यक अनुपपत्तिसँ तत्सम्बन्धी जाहि आन अर्थक अवगति हो से; यथा 'क्रोधे आगि भयगोलाह' एहिठाम प्रथमोपस्थित अग्निरूप अर्थ असंगत अछि, तेँ संतप्तत्वरूपधर्मसँ अग्निसदृश अर्थ अवगत होइत अछि; तस्मात् 'आगि' शब्दक दीप्त तथा अग्निसदृश अर्थ लक्ष्य भेल । एवम् मनुष्यमे कहल जाइत अछि जे 'ई मनुष्य नहि पिशाह' एहि ठाम वाच्यअर्थ असंगत अछि, तेँ 'मनुष्य' शब्दसँ मनुष्योचितक्रियायान् प्रतीयमान अर्थ लक्ष्य भेल ।

जयबापर उद्यत अतिथिकेँ गृहस्थ कहल जे 'सन्ध्या भेल, अहाँक गाम दूर अछि, एहिसँ ई व्यङ्ग्य भेल जे अहाँ एखन गाम जनु जाइ, आइ राति हमरहि ओहि ठाम रह ।

नैयायिक लोकनि शब्दक वाच्य ओ लक्ष्य दुइएटा अर्थ मानैत छथि ।

लेखापेक्षया बजबामे भेद

लेखापेक्षया बजबामे स्वाभाविक कोनो-कोनो शब्दमे किछु-किछु भेद भय जाइत अछि; यथा, 'देखलहुँ' ई शुद्ध थोक से जननिहारो 'देखलौ' बाजि उठैत छथि । तकर कारण बजबामे शीघ्रता । एवम् 'नहि'क स्थान 'नै', 'किये'क स्थान 'किये', 'एतय'क स्थान 'एत' । एवं शीघ्रोच्चारणमे पूर्वोच्चारित शब्दक अन्तिम अकार प्रायः हटाय देल जाइछ; यथा, 'रामदेव-रामदेव', 'बलजोरी-बलजोरी' । एवं प्रकार मध्यवर्ती अकारक बहुधा अनुच्चारण होइछ जेना इङ्गलिशमे होइत अछि । एतादृश उच्चारणक चालिसँ बहुत शब्द सन्दिग्ध होइछ जे अकारमध्यक थोक वा तद्रहित; यथा, 'अनहेर'-'अन्हेर'; ताहि ठाम अगत्या दुहू शुद्धे मानैक पड़ैत ।

वर्णक स्थान

जाहि वर्णक जे स्थान थोक ताहि स्थानमे जिह्वाव्यापारसँ सुस्पष्ट वर्ण उच्चरित होइत अछि । जकर जिह्वा मोट रहैत अछि ओकरा यथोचित स्थानमे यथायत् जिह्वाक अग्र-म्बन्धसँ सुस्पष्ट बाजल नहि होइछ । किञ्च, वर्णोच्चारण-योग्य जिह्वायुक्तो व्यक्ति यदि जोरसँ स्थानान्तरमे जिह्वा-व्यापार करथि तेँ दुष्टवर्ण उच्चरित होयत । तस्मात् वर्णक स्थानज्ञान आवश्यक । अतः वर्णसबलिक स्थान कहैत छी ।

ओष्ठसँ आरम्भ कय लबलबीक समीप पर्यन्त आस्य थीक, ताहिमे वर्णक स्थान पाँच गोठ अछि—कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त तथा ओष्ठ । एहि पाँचे स्थानमे जिह्वाव्यापार-जन्यवायुसंयोगसँ वर्णक अभिव्यक्ति वा उत्पत्ति होइत अछि । लबलबीसँ नीचाँ कण्ठविवरक प्रारम्भदेश कण्ठस्थान; ताहिसँ नीचाँक मुखावयव मूर्द्धा; दन्तसंयुक्त देश दन्तस्थान; तथा मुखक अन्तिम अवयवद्वय ओष्ठस्थान थीक । उक्त क्रमेँ मुखावस्थित एही पाँचो स्थानक क्रमेँ वर्णमालामे कवर्गादि पवर्गान्त पाँचो वर्गक उपन्यास अछि । यथा सर्वोच्च कण्ठस्थानवाला क, ख, ग, घ, ङ; ताहिसँ निम्न तालुस्थानवाला च, छ, ज, झ, ञ; ताहिसँ निम्नमूर्द्धस्थानवाला ट, ठ, ड, ढ, ण; ताहिसँ नीच दन्तस्थानजन्य त, थ, द, ध, न; ताहिसँ अगिला ओष्ठस्थानभव प, फ, ब, भ, म विन्यस्त अछि । जेना स्थान, स्थितिक क्रमेँ कवर्गादि पाँचो वर्ग पठित अछि तहिना य, र, ल, व, इहो चारु अन्तस्थो वर्ग तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ, एहि क्रमशः अधोऽधःस्थित चारि स्थानक्रमेँ पठित अछि । एवम् ऊष्महुमे हकार छोड़ि आओर श, ष, स, तीनवर्णकन्यास स्वस्वजनकस्थानक्रमहिँ अछि । यद्यपि स्थानक्रमेँ ह श ष स 'एना' पाठ उचित छल किन्तु सर्वोच्चकण्ठस्थानवाला हकार सभक आगाँ पढ़ल गेल तकर कारण अन्वेष्टव्य थीक । एक ई हेतु भय सकैत अछि जे हकारक नियमतः कण्ठस्थान नहि, 'ह्र' 'ह्र' प्रत्यादि हकारक ककारसंगलेँ यथास्थान थीक । तस्मात् ओकर पाठ बिलक्षणयात् सभसँ आगाँ कयल गेल हो ।

एवम् अ इ उ ऋ लृ एहि एकैक स्थानवाला पाँच स्वरमे केवल उकारकेँ छोड़ि अन्य चारु स्वरक पाठ कण्ठादिस्थान क्रमहिँ अछि । उचित छल जे 'अ इ ऋ लृ उ' एहिक्रमेँ पाठ कयल जाइत, किन्तु ऋ लृ तथा ए ऐ ओ ओ सन्ध्यक्षर थीक तेँ ओहि पाँचोकेँ एक संघीकरणक हेतु उकारसँ आगाँ ऋ लृ पढ़ल गेल—तखन अ इ उ एकर पाठ स्थान क्रमहिँ अछि; तथा ऋ लृ एवम् ए ऐ ओ औ एकरोपाठ तदनुसारे अछि—तालुस्थानवाला ए ऐ प्रथम, ततः पर ओष्ठस्थानवाला ओ औ । एकैक स्थानवाला अकारादि लृकारान्तक पाठोत्तर उभयस्थानवाला एकारादिक पाठ अछि । एतावता वर्णमालामे वर्णस्थितिक क्रम स्थानक्रमेँ अछि तकर स्पष्टीकरण भेल । प्रकृतमनुसरामः ।

दन्त, मूर्द्धा, तालु तीनूकेँ थोड़-थोड़ अन्तर अछि । दन्त-देशसँ आगाँ उच्चदेश मूर्द्धा ओ ताहिसँ आगाँ लगले नीच देश तालु थीक । वर्णोत्पादक तालुक भागसँ कण्ठस्थान दूर अछि । यद्यपि 'तारु' शब्दसँ प्रसिद्ध तालु कण्ठसँ नीचाँ मूर्द्धासँ ऊपर समग्र थीक, किन्तु मूर्द्धसंलग्ने तालुभाग वर्णोच्चारणमे साधक अछि ।

जिह्वाक मूल, मध्य, अग्र, तीन भागमे कोनो-कोनो वर्णक उत्पत्तिमे उपकारक होइत अछि । कवर्गक उच्चारणमे जिह्वाक प्रारम्भभाग, चवर्गक उत्पादनमे जिह्वाक मध्यभाग, तथा टयगं ओ पयगंक उच्चारणमे अपभ्रंश उपयुक्त अछि ।

प्रत्येक वर्णक स्थानकथन

अ क ख ग घ ङ ह	७ वर्णक	कण्ठस्थान
इ च छ ज झ ञ य श	८ वर्णक	तालुस्थान
ऋ ट ठ ड ढ ण इ ष	८ वर्णक	मूर्धस्थान
लृ त थ द ध न ल स	८ वर्णक	दन्तस्थान
उ ष फ ब भ म	६ वर्णक	ओष्ठस्थान
ए ऐ	२ वर्णक	तालुकण्ठस्थान
ओ औ	२ वर्णक	ओष्ठकण्ठस्थान
व	१ वर्णक	ओष्ठदन्तस्थान
ङ ञ ण न म तथा		
अँ ईँ आदि अनुनासिक	वर्णक	नासिकोस्थान
अनुस्वार	वर्णक	नासिकास्थान
विसर्ग	वर्णक	पूर्वस्थित स्वरकस्थान ।

वर्णक प्रयत्न

स्थानक ऐक्य रहलहुपर 'क' 'ख' इत्यादि वर्णक भेद किएक-एहि प्रश्नक उत्तरमें कथ्य जे प्रयत्नक भेदसँ । तस्मात् प्रयत्नक परिचय लिखैत छी ।

कोनो-कोनो वर्णक उच्चारणमे कण्ठविवरक विकास अपेक्षित, कोनो-कोनोमे ओकर संकोच (घोंकचब), एवम् कोनोमे हृदयस्थ वर्णोत्पादक वायुक अल्पता, कोनोमे आधिक्य, अपेक्षित । एहि चारि कार्यक जनक प्रयत्नक नाम क्रमशः विचार, संवार, अल्पप्राण ओ महाप्राण, शास्त्रमे कहल अछि । ई चारु बाह्य प्रयत्न कह्यैत अछि जे आस्यसँ बहिर्भूत अछि ।

एहि चारि प्रयत्नमे दू-दू प्रयत्न प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे आवश्यक, विचार-संवारमे एक, तथा अल्पप्राण-महाप्राणमे एक ।

एहि प्रयत्नसँ अतिरिक्त चारिटा आभ्यन्तर प्रयत्न अछि:—स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत ओ संवृत । ई चारि प्रयत्न वर्णजनक जिह्वाक स्पर्श, अल्पस्पर्श, दूरस्थिति, समीपस्थिति, एहि चारि कार्यक संपादक होइत अछि ।

ई चारु प्रयत्न मुखाभ्यन्तरकार्यकारितासँ आभ्यन्तर कहबैत अछि । एहि चारिमे एक-एक प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे अपेक्षित होइछ ।

एतद्भिन्न, स्वरक एक दू तीन मात्रा कालस्थितिजनक तीनटा प्रयत्न अछि । एहि तीनूक नाम कार्यक नामहिपर यौगिक ह्रस्वत्वादिजनक प्रयत्न कहि सकी । इहो बाह्य कहबैत अछि । व्यञ्जनक अर्द्धमात्राकालस्थिति स्वाभाविके अछि तें तज्जनक प्रयत्नक अपेक्षा नहि ।

आब कोन-कोन प्रयत्न कोन-कोन वर्णमे अपेक्षित से कहै-तछी । बाह्य प्रयत्न जे चारिटा कहल ताहिमे 'विचार' प्रयत्न वर्णक प्रथम, द्वितीय ओ श ष स ह वर्णक । 'संवार' प्रयत्न तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्णक तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, य र ल व तथा स्वरक । 'अल्पप्राण' प्रयत्न वर्णक प्रथम, तृतीय, पञ्चम, यरलव, तथा स्वरक । 'महाप्राण' तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्णक द्वितीय, चतुर्थ तथा श ष स ह वर्णक ।

आभ्यन्तर प्रयत्नमे 'स्पृष्ट' पाँचो वर्णक सकल वर्णक । 'ईषत्स्पृष्ट' यरलवक । 'विवृत' श ष स ह तथा ह्रस्व अकार-

भिन्न सकलक स्वर । 'संवृत' ह्रस्व अकारक । आब प्रत्येक वर्णक समुदित प्रयत्न देखवैत छी:-

क च ट त प—विवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
ख छ ठ थ फ—विवार	महीप्राण	स्पृष्ट
ग ज ड द ब—संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
घ झ ढ ध भ—संवार	महाप्राण	स्पृष्ट
ङ ञ ण न म—संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
य र ल व —संवार	अल्पप्राण	ईषत्स्पृष्ट
श ष स ह —विवार	महाप्राण	विवृत
'अ' भिन्नस्वरक—संवार	अल्पप्राण	विवृत
ह्रस्व 'अ' क—संवार	अल्पप्राण	संवृत

यद्यपि ग ड, ज ञ इत्यादि वर्णक तृतीय तथा पञ्चमक उक्त प्रयत्न सभटा समाने अछि ओ कण्ठादि स्थानो तुल्ये, तथापि पञ्चमक नासिको स्थान, तृतीयक नहि, तें स्थानभेद-प्रयुक्त भेद ज्ञातव्य । कण्ठादिस्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न, तीनू वर्ण सबहिक अभिव्यञ्जक वा उत्पादक थीक ।

मिथिलाभाषा अनुनासिकप्रचुर

मिथिलाभाषामे अनुनासिक अधिक अछि । 'पाएरे' काशी-सँ प्रयागकेँ बिदा भेलहुँ, इत्यादिमे द्वितीया, तृतीया ओ पञ्चमी विभक्ति तथा 'अलहुँ' तिङ् विभक्ति सानुनासिक अछि । तथा एवकारादिस्थानीय 'अहिँ' 'अहुँ' सेहो प्रायः सानुनासिक अछि—'सबहिँ' 'सबहुँ' । एतद्भिन्नो 'आगाँ' 'पाछाँ' इत्यादि बहुत

शब्दमे अनुनासिक अछि । तें केओ-केओ जाहिमे अनुनासिक नहि चाही ताहूमे अनुनासिक बजैत छथि; यथा, 'साँप' । किन्तु 'सर्प' शब्दमे रेफलोप ओ पूर्वकेँ दीर्घ कय 'साप' शब्द बनल अछि, तें ओहिमे अनुनासिक नहि उचित । वर्णक पञ्चम वर्णक लोप भेलापर पूर्व स्वर अनुनासिक होइत अछि; यथा, 'अङ्क' 'आँक', 'पङ्क' 'पाँक', 'अङ्गण' 'आँगन', 'अञ्जन' 'आँजन' 'घण्टी' 'घाँटी', 'वण्टन' 'बाँटब', मण्ड 'माँड़', 'कान्ति' 'काँति', 'संक्रान्ति' 'सँकराँति' । जतय वर्णान्तरक लोप ताहिमे अनुनासिक नहि होइछ; यथा, 'चक्र' 'चाक', 'चुक्र' 'चूक', 'बड़' 'बाट', 'वार्ता' 'बात' । संस्कृतभवमे तें ई नियम जकाँ अछि । क्वचित् भेदो, यथा, 'आगाँ' 'पाछाँ' ई दुहू शब्द 'अग्रे' 'पश्चात्' सँ सिद्ध भेल अछि । हम अपना जनैत एहि कोषमे समुचित रूपमे अनुनासिक लिखल अछि । कोनो-कोनोमे अनुनासिक अननुनासिक दुहूक प्रचुर प्रयोग देखि दुहू रूप देखाओल अछि ।

संस्कृतसँ मैथिलीमे भेद

संस्कृतसँ मिथिलाभाषा कोना बनल तत्प्रसङ्ग सविस्तर 'मिथिलाभाषाविद्योतन'क भूमिकामे कहल अछि; तथापि अति संक्षेपसँ कहैत छी । देशाध्यक्ष संस्कृत भाषाकेँ अतिमहान् रहबाक कारण आपामर जनताक हेतु अनुपयुक्त बूझि साधारण जनताक व्यवहारोपयोगी अतिसंक्षिप्तशब्दात्मक वेशभाषा बनाओल तथा प्रचार कयल । ततः पर ओकर अधिक प्रचार भेलासँ विद्वानो सभ संस्कृतक व्यवहार हटाय ओही भाषामे व्यवहार करए लगलाह । प्रत्येक सुबन्त,

तिङन्त, कृदन्त, तद्धितान्त, रूप देखलासँ स्पष्ट बोध होइछ जे देशभाषानिर्माता प्रकृतिभाग संस्कृतसँ साक्षात् तथा प्राकृताद्विद्वारा गृहीत कयल ओ बहुत स्वतन्त्रो; तथा प्रत्येक अर्थक एकएकमात्र शब्द राखल; एवम् तद्धित, कृत्, सुप् तिङ् प्रत्यय सकल स्वकल्पिते राखल । तस्मात् संस्कृतसँ देशभाषामे भेद प्रत्येक वाक्यमे स्पष्टे अछि । तथापि रीतिमे जे वेलक्षण्य अछि तकर दिग्दर्शन करबैत छी ।

मैथिलीमध्य एकार्थक एके शब्द । समासक अत्यल्पता । एकत्वादिबोधक वचनक अभाव । क्यजादिनानाप्रत्ययस्थानीय प्रत्ययक अभाव । सुप्मे तथा तत्प्रकृतिमे विकारक अभाव । प्रथमाक सर्वत्र लोप । आदरानादरादि अर्थभेदसँ तिङ्प्रत्ययक वैचित्र्य । सन्धिकार्यक अभाव ।

संस्कृतसँ साम्य

सुपक प्रकृतिभाग तथा धातु बहुत संस्कृततुल्यवर्णक अछि; यथा, माथ, कपार, गाल, ओठ, दाँत, तारु, कण्ठ इत्यादि नाम, तथा लिख, पढ़, सुन, रुस, कान, कूद, इत्यादि धातु । एवम् 'सुनब' 'कीनब' 'करब' 'धरब' प्रभृति । जेना प्राकृतादिभाषामे संस्कृतसँ साम्य अछि तेना मिथिलाभाषाहुमे किन्तु प्राकृतादि मे संस्कृतक सकल नाम तथा निखिल धातु किछु रूपान्तर कय गृहीत अछि; मैथिलीमे एकेके नाम ओ एकेके धातु ।

हिन्दीसँ भेद

हिन्दीमे एकबोधक ओ अनेकबोधक वचन अछि; यथा 'घरमें, घरोंमें' 'जाता है, जाते हैं' 'दाना है, दाने हैं', से हिन्दी

व्याकरणमे 'एकवचन' 'बहुवचन' शब्दे कहल जाइछ, किन्तु दू अर्थमे 'बहुवचन' कहब असंगत, तस्मात् 'एकवचन' 'अनेकवचन' कहब उचित, अस्तु । मैथिलीमे संख्याबोधक वचन नहि अछि । अतएव 'घैल अछि' एहिसँ घटगत संख्या नहि बुझल जाइत अछि । संख्याक बोध 'एक' 'दू' 'तीन' 'चारि' 'बहुत' इत्यादि शब्दहिसँ होइछ; यथा, 'गणेशकाँ एक दाँत, दू माय, तीन आँखि, चारि हाथ ।'

हिन्दीमे 'एव' 'अपि' स्थानीय 'ही' 'भी' शब्दक योजना पदक आगँहिमें होइछ; यथा, 'रामको ही' 'रामको भी', मैथिलीमे सविभक्तिक पदक मध्यहिमें; यथा 'रामहिके' 'रामहुँके' इत्यादि । एवम् समस्त पदक मध्यहुमें ओकर प्रयोग होइछ; यथा 'रामेनाथ वा रामनाथे अयलाह' । 'रामोनाथ वा रामनाथो छथि' इत्यादि । एहि प्रसङ्ग अनेक भेद 'भाषाविद्योत्तन' मे द्रष्टव्य ।

हिन्दीमे संस्कृतवत् शास्त्रीयो लिङ्ग मानल अछि; यथा, 'छोटी पुस्तक' 'छोटा गाँव', मैथिलीमे लौकिकमात्र, इत्यादि लिङ्गविचारमे कहि आयल छी ।

हिन्दीमे साधारण सप्तमी विभक्ति सँ विलक्षण निर्द्धारण मे 'मेंसे' कतोक वर्षसँ मानल गेल अछि; यथा, 'चार घरोंमेंसे एक घर मुझे मिला ।' मैथिलीमे निर्द्धारणहुमें साधारण सप्तमी अछि; यथा, 'चारि घरमें एक घर हमरा भेटल ।' भाषामे परस्पर वेलक्षण्यक अनभिज्ञ ओ हिन्दीक वासना सँ आप्लुत केओ-केओ मैथिली मैथिलीमे 'मेंसे' लिखय लागल छथि, एवं

हिन्दीक 'नकि' जेकाँ मैथिली भाषाहुमें 'नहिकि' इत्यादि लिखैत छथि, से आदरणीय नहि ।

हिन्दीमें पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द उत्तरवाक्यगत तच्छब्दान-पेक्ष कतोक दिन सँ मानल गेल अछि; अतएव उत्तरवाक्यमें तच्छब्दक अप्रयोगे; यथा 'उसने जो कहा, हो गया ।' मैथिली में संस्कृतसिद्ध निर्णयानुसार पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द नियमतः उत्तरवाक्यगत तच्छब्दसाकाङ्क्ष अछि; यथा, 'ओ जे कहलैहि से भए गेल ।'

हिन्दीमें अन्वयिपदार्थगतलिङ्गसंख्याभेदप्रयुक्त षष्ठी विभक्ति 'की' 'का' 'के' तीन प्रकारक होइत अछि; मैथिलीमें सर्वत्र 'क' मात्र एके अछि । प्राचीन गीतमें क्वचित् क्वचित् 'के' 'केर' देखि केओ-केओ 'रामके पुत्र' 'रामकेर आँगन' इहो लिखैत छथि परन्तु से अधमोक्ति थीक । पूर्वक गीतादिमें उत्तम, मध्यम, अधम तीनू उक्ति देखल जाइछ । हमरा विचारेँ अधमोक्तिक त्याग करब उचित ।

हिन्दीमें पूर्वपरवाक्यक सन्दर्भसूचक अव्यय 'कि' इत्याकारक अछि; यथा, 'उसने कहा कि मैं जाऊँगा ।' मैथिलीमें उक्तार्थसूचक 'जे' शब्द अछि; यथा 'ओ कहलैन्हि जे हम जाएब ।' ओ शब्द संस्कृतयच्छब्दस्थानीय थीक । संप्रति केओ-केओ मैथिल बाल्यतः हिन्दीक अधिक व्यवहार कयति-हार लिखैत छथि 'ओ कहलैन्हि की हम जाएब', परन्तु ई उचित नहि । एवं 'जेकी' 'भलेही' 'चाहे' इत्यादि सेहो त्याज्य ।

हिन्दीमें संस्कृतभिन्न शब्दमें म्लेच्छभाषास्थित संस्कृत-विरुद्ध ऐकार औकार परिगृहीत अछि; मैथिलीमें शास्त्रानुकूल 'अइ' 'अउ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' सर्वत्र अछि । 'ऐन-मैन' इत्यादिक स्थानमें 'एन-मेन', 'और' इत्यादिक स्थानमें 'आओर' इत्यादि लेख उचित । एवंविध हिन्दीसँ मैथिलीमें बहुत भेद अछि; कतेक देखाउ । विस्तरक भयसँ एहि प्रसङ्ग विरत होइत छी ।

जेना हिन्दीमे कान, नाक, मूह, हाथ, इत्यादि कर्ण, नासा, मुख, हस्त, इत्यादि संस्कृतक अपभ्रंश गृहीत अछि तहिना मिथिला भाषाहुमे । एवं देशिओ लोटा, गोटा, इत्यादि बहुतशब्द हिन्दीमे मैथिलीमे एके रङ्ग अछि । देख, सुन, पढ़, उठ, इत्यादि धातुओ बहुत समाने अछि ।

बहुत शब्दमें ह्रस्व दीर्घ, इकार अकार इत्यादि भेदप्रयुक्त हिन्दीमें भेद अछि, अधिकांश वर्ण तुल्य; यथा 'जीरा-जीर' 'पुतोहू-पुतहु' 'हलदी-हरदि,' 'चूड़ी-चूड़ि,' 'दाल-दालि,' 'आग-आगि,' 'रात-राति,' 'कल्ह-कालिह' ।

हिन्दीमे जेना अनेक धातु मील एक विलक्षण क्रियाक बोध करबैत अछि—'देखा करना' 'देख जाना' 'देख वेना' 'देख-लेना' 'देखने वेना' इत्यादि—तहिना मैथिली भाषाहुमें 'देखल करब' 'देखि जाएब' 'देखि लेब देखि देब' 'देखय देब' इत्यादि विशेषक्रियाबोधक होइछ । एवं आनो-आनो हिन्दीसँ बहुत तुल्यता अछि ।

शब्दक विभाग अनेक प्रकारे

प्रथम प्रकार

मेथिलीमें नाम संस्कृतवत् चारि प्रकारक अछि—कृदन्त, तद्धितान्त, समास, तथा अव्युत्पन्न । ताहिमें कृदन्त नाम ओ थीक जाहिमें अन्तभाग 'अनिहार' प्रभृति कृतसंज्ञक प्रत्यय हो; यथा 'देखनिहार' 'देखब' 'देखनाइ' । तद्धितांत नाम थीक जकर अन्त (अन्तिम भाग) 'गर' 'पन' इत्यादि तद्धितसंज्ञक प्रत्यय रहय; यथा 'धनगर' 'बुडिपन' । समास से कहबैत अछि जे अनेक नाम मिलाय एक शब्द बनाओल जाइछ जकर संज्ञा व्याकरणमें 'समास' कहल अछि; यथा 'सरबेटा' 'भलमानुस' 'बलिकट्टा' । अव्युत्पन्न ओ थीक जाहिमे प्रकृतिप्रत्ययविभाग नहि अछि तथा सार्थक खण्डद्वययुक्त नहि अछि; यथा 'घैल' 'कोहा' ।

द्वितीय प्रकारे शब्दविभाग

रूढ, यौगिक, योगरूढ, भेदसँ शब्द तीन प्रकारक होइत अछि । अवयवार्थक बोध नहि कराय समुदायार्थक बोध करओनिहार रूढ थीक; यथा 'घैल' 'घर' 'बासन' । अवयवार्थकबोधपूर्वक समुदायार्थक बोधकारक यौगिक थीक; यथा 'भनसिआ' 'सरबेटा' 'पनिभर' । अवयवार्थसंवलित विलक्षण समुदायार्थक बोधक योगरूढ थीक; यथा 'पनबट्टी' पान रखबाक बाटी ई अवयवक अर्थ भेल ओ पात्रविशेष (प्रत्यक्षगम्यजातिविशेषयुत) ई समुदायक अर्थ थीक । बुझक बोध युगपत् होइछ, अतएव यदि तीसनहिक बाटी पानक पात्र बनाय ली तँ 'पनबट्टी' नहि कहाओत ।

तृतीय प्रकारे शब्दविभाग

प्रकारान्तरे पुनः शब्द चारि प्रकारक अछि । जातिशब्द, गुणशब्द, क्रियाशब्द, ओ संज्ञाशब्द । जातिक बोध करओनिहार 'घैल' 'ब्राह्मण' आदि जातिशब्द थीक; गुणबोधक 'उजर' 'गरम' 'कोमल' इत्यादि गुणशब्द थीक; गमनादिक्रियाबोधक 'गेनिहार' 'गेनाइ' इत्यादि क्रियाशब्द कहबैत अछि; तथा एकमात्र व्यक्तिबोधक 'देवदत्त' 'भवदत्त' इत्यादि संज्ञाशब्द थीक ।

जातिक परिचय

अश्वमे तीनशब्दक प्रयोग होइत अछि—जानवर, पशु, घोड़ा । एहिमे प्रत्येक शब्दसँ विशेषणविधया विशेष अर्थ अवगत होइत अछि । ओही विशेष अर्थक नाम जाति थीक । ओकर फूट-फूट नाम जन्तुत्व पशुत्व अश्वत्व शास्त्रोक्त अछि । किन्तु मिथिलाभाषामे ताहि-ताहि जातिक नाम फूट-फूट नहि अछि । केवल ओकर व्यापक नाम जातिशब्दे अछि । यथा 'अहाँ कोन जाति थिकहुँ' एहि प्रश्नक उत्तर 'हम ब्राह्मण थिकहुँ' एहि शब्दे कयल जाइछ । एवंप्रकारक प्रश्नोत्तरवाक्यसँ स्पष्ट होइछ जे ब्राह्मणत्वादि जातिविशेष तथा तज्जातियुत व्यक्ति उभयक नाम ब्राह्मणादिशब्दे अछि । अतएव 'अहाँक कोन जाति थीक'; 'गेना कय जातिक होइत अछि'; 'क्षेत्रमे अनेक जातिक घोड़ा अबैत अछि' इत्यादि व्यवहार होइत अछि ।

व्यक्तिसँ भिन्न अनेक व्यक्तिमे रहनिहार कोनो विशेष अर्थ अछि ताहिमे प्रमाणान्तर ई जे वनमे कोनो एक अपरि-

चित जन्तुविशेष देखलाक उत्तर पुनः ओहने दोसर जन्तु देखि लोक बजैत अछि जे ई ओएह जानवर थीक जे पूर्व दृष्टि-गोचर भेल छल । व्यक्तिभेद रहलहुपर पूर्वदृष्टजाति पश्चात् दृष्टहुमे रहबाक कारणे 'ओएह' शब्द प्रयोग करैछ । अवयवो भिन्न रहैत अछि तेँ अवयवक ऐक्यनिबन्धन 'ओएह' ई प्रत्यभिज्ञा नहि कहि सकी; अन्यथा गोदर्शनानन्तर तत्सदृश गवयजन्तुकेँ देखि 'ओएह जन्तु ई थीक' एतादृश ज्ञान होइतैक, किन्तु से नहि होइत छैक, अपितु 'ओहने ई अछि' एतादृश ज्ञान होइत छैक । तस्मात् उभयसाधारण जातिविशेषप्रयुक्ते 'ओएह' शब्दक प्रयोग मन्तव्य । 'ओएह' शब्दक अर्थ 'पूर्वदृष्टगतजातियुक्त' एतादृश समुचित ।

चारिम प्रकारेँ शब्दविभाग

मैथिलीशब्द चारि प्रकारक अछि, संस्कृतानुरूप, संस्कृतभव, देशी, ओ विदेशी । जे संस्कृतशब्द सकलसाधारण मिथिलाभाषामे व्यवहृत अछि से संस्कृतानुरूप भेल । यथा देह, वानर, अनाथ, अधिक, अपराध, दोष । यद्यपि 'कर्तव्य' 'गन्तव्य' इत्यादि-ओ संस्कृतानुरूपे थीक तथापि आपामर व्यवहृत नहि अछि; तस्मात् ओ शुद्धसंस्कृत भेल । एवम् 'कथमपि' 'कदापि' 'येनकोनोपायेन' 'तस्मात्' इत्यादिओ शुद्धसंस्कृते थीक । किन्तु संस्कृतमूलक मैथिलीभाषामे संस्कृतशब्दक प्रवेशेँ संकीर्णतादोष नहि, तेँ ओ शब्द मैथिलीमे आयलो ठेठ मैथिली भाषा नहि कहाय सकैत अछि; एही कारणेँ ओहि सबहिक उल्लेख एहि कोषमे नहि कयल अछि ।

कतोक संस्कृत शब्द अर्थान्तरमे प्रसिद्ध

कतोक शब्द जाहि अर्थमे संस्कृतमध्य बाजल जाइत अछि से शब्द मिथिलाभाषामे प्रविष्ट भय ओहिसँ आन अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'मात्सर्य' शब्द संस्कृतमे द्वेषार्थक थीक; 'मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे' एहिकोषप्रदर्शित द्वेषार्थक 'मत्सर' शब्दसँ स्वाधिकष्यञ् प्रत्यय कएलासँ त्रैलोक्यत्रैगुण्ययादिवत् 'मात्सर्य' शब्द सिद्ध भेल अछि; ओ शब्द मैथिलीमध्य स्नेह अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'हमरा एहि नेनापर बड मात्सर्य अछि' । एवम् दीर्घवाचक 'आयत' शब्द मैथिलीमे आबि सुन्दर अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि—'ई गहना बड आयत अछि' अर्थात् सुन्दर अछि । तथा 'संवाद' शब्दक अर्थ मेल अर्थात् तदनुकूलार्थप्रतिपादन अछि, किन्तु मिथिलाभाषामे अनका कहबाक हेतु कथ्य अर्थक बोधक भय गेल अछि । तथा अनवधानतार्थक 'प्रमाद' शब्द मैथिलीमे 'धाखे' नहि कहब' अर्थक बोधक भय गेल । एवम् संस्कृतमे 'जङ्घा' 'छाबा' क नाम थीक, किन्तु जङ्घाशब्दभव 'जौघ' शब्द ऊर (जानुसँ उपर नितम्बसँ निचला अङ्ग) क बोधक भय गेल अछि । एवम् आवेशादिशब्द स्नेहाहिमे प्रसिद्ध अछि ।

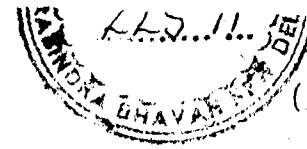
संस्कृतानुरूप शब्दमे 'थ' इत्यादि अधिकृते

मैथिलीमे वकारक स्थान बकार, शकारक स्थान सकार, षकारक स्थान खकार आदेश होइत अछि । क्रमशः उदाहरण— 'वामन-बाओन', 'विवाह-बिआह', 'श्राद्ध-सराध', 'भरवश-

भरोस', 'वर्ष-वरख', 'मूषक-मूस' । परन्तु उक्त तीनू आदेश ताही शब्दमे होइत अछि जाहिमे विकारान्तर भेल हो, किन्तु जाहिमे वर्णान्तर अविकृत अछि ताहिमे नहि, यथा 'विषय' 'विचार' 'शान्ति' 'शोथ' 'षष्ठी' 'षडानन' इत्यादिमे संस्कृता-नुरूपे वकारादि बोद्धव्य । एवम् शकारहुक प्रसङ्ग जानब ।

संस्कृतभव

संस्कृतभव ओ शब्द थोक जे संस्कृत किछु विकृत बनाय गृहीत कयल गेल अछि; यथा 'पसार' 'परबत' 'हर' । विकृत रूप तीन प्रकारे बनैत अछि, कोनो आखरकेँ हटाय देलासँ, वर्णान्तरक योजनासँ, तथा कोनो आखरकेँ हटाय ओकरा जगहपर वर्णान्तरक समावेश कय देलासँ । ई तीनू संस्कृत-शास्त्रमे लोप, आगम ओ आदेश कहबैत अछि । विकार तीनू भेल । उदाहरण—'प्रसार' शब्दमे प्रथम रेफक लोप कयलासँ 'पसार' संस्कृतभव भेल । 'पर्वत' मे अकार आगम कयलासँ 'परबत' भेल । एवम् 'हल' शब्दक लकारक स्थान रेफ आदेश कयलासँ 'हर' शब्द । एहिमे आगमबाला थोड़ अछि, लोपादेश-बाला बहुत । तत्रापि संस्कृतभवमे सात प्रकार अछि, १-लोप-मात्र, २-आगममात्र, ३-आदेशमात्र, ४-लोपआगम, ५-लोप-आदेश, ६-आगमआदेश, ७-लोपआगमआदेश तीनू । क्रमशः उदाहरण—१-'प्रसार' रेफक लोपमात्र, २-'पिरीति' इकारआगम मात्र, ३-'गर' केवल लकारक स्थान रेफादेश, ४-'परेम' नकारक लोप तथा अकार आगम, ५-'सात' सप्तन्



मे नकारक लोप ओ आकारकेँ दीर्घ आदेश, ६-'परान' अकार आगम ओ णकारकेँ नकार आदेश, ७-'सराध' दकारक लोप, अकार आगम, शकारकेँ सकार आदेश ।

उदाहरण देखाओल । आब कतय कोन विकार होइत अछि तकर दिक्प्रदर्शन करबैत छी । क्वचित् लकारकेँ रेफ; यथा, 'हल-हर', 'गल-गर' 'काल-कारी', 'पिप्पली-पीपरि', 'गालि-गारि', 'श्याल-सार', 'धूली-धूरा', 'शृगाल-सिआर' ।

क्वचित् टकारकेँ डकार; यथा, 'त्रोटन-तोडब' 'घोटक-घोडा', 'मोटक-मोडा', 'पपंट-पापड', 'पाटला-पाडरि', 'कीट-कीडा', 'बीटी-बीडी', 'पटोल-पडोर' ।

क्वचित् तकारकेँ थकार; यथा, 'हस्त-हाथ', 'मस्तक-माथ', 'पुस्तक-पोथी', 'मुस्त-मोथा', 'वास्तूक-बथुआ', 'प्रस्तर-पाथर' । संयुक्तमे व्यञ्जनक लोप ततः पूर्वकेँ दीर्घ सामान्य शास्त्रसँ सिद्ध अछि ।

'क्ष' केँ 'ख' वा 'च्छ' 'पक्ष-पख, पाँखि', 'अक्षि-आँखि', 'कुक्षि-कोखि', 'रुक्ष-रुख', 'बुभुक्षा-भूख', 'अक्षर-आखर, अच्छर', 'पक्ष-पख, पच्छ' ।

'द' केँ क्वचित् 'ड'; यथा, 'दर-डर', 'दंशन-डँसब', 'दण्ड-डाँड', ।

ऋकारके क्वचित् इकार; यथा, 'पृष्ठ-पीठ', 'वृश्चिक-बीछ, ।

संयोगमे पूर्व वर्णक लोप; क्वचित् परवर्णह्रस्व; उभयत्र पूर्व स्वरके दीर्घ; यथा, 'मस्तक-माथ', 'हस्त-हाथ', 'हस्ती-हाथी', 'प्रस्तर-पाथर', 'कर्ण-कान', 'अर्क-आक', 'चर्मन्-चाम', 'सप्तन्-सात', 'गर्भ-गाभ', 'छत्र-छाता', 'पत्र-पात', 'यष्टि-जाठि', 'मुष्टि-मूठि', 'अग्नि-आगि' । क्वचित् दीर्घाभावो; यथा, 'पथ्य-पथ', 'अपभ्रंश-अभठ' ।

वर्गीय पञ्चमक लोप भेलापर पूर्व स्वरके प्रायः अनुनासिक दीर्घ; यथा, 'अङ्क-आँक', 'वङ्क-वाँक', 'अङ्ग-आँग', 'जङ्घा-जाँघ', 'लङ्घन-लाँघ', 'पञ्चन्-पाँच', 'वण्टन-वाँट', 'मुण्डन-मूडन' । वर्गपञ्चमोपेत संयोगमे अपञ्चमक यदि लोप तं पूर्वके शुद्धे दीर्घ हो अनुनासिक नहि; यथा, 'आड' 'आडन' 'माण' 'कडाल' ।

संस्कृतभव शब्दक लेख उच्चारणानुकूले होयबाक चाही; यथा-जतय, जेना, जनौ, सब, परब, सरबसोख, सार, सेआन, बरख, बरखा, बरखी, इत्यादिमे मूलभूतसंस्कृतानुकूल य व श ष नहि, किन्तु उच्चारणानुसार ज ब स ख । एतबा अवश्य जे अप्राप्तविकारान्तरक जे शब्द गृहीत अछि, -यसुना, यशोदा, वानर, शोथ, शान्ति, षष्ठी, षट्चक्र, इत्यादि-ताहिमे यकारादिओ संस्कृतानुरूपे लिखबाक चाही । ओकर उच्चारण यथोचित वा चालिक अनुसार से दोसर विषय भेल ।

हमर मिथिलाभाषा प्राकृतहुक अनुच्छायापर बनल अछि । प्राकृतमे 'दुहितृ' शब्दकस्थान 'धी' शब्द मानल अछि, से हमरो

भाषामे गृहीत अछि । एवम् 'यदा'क अभठ 'जइआ' अछि; तदनुकूल मिथिलाभाषाहुमे 'जहिआ' शब्दे उचित, 'यहिआ' नहि । एवम् 'यस्य' क स्थान 'जस्स' प्राकृत थीक, तदनुसार यच्छब्दसिद्ध 'जसु' 'जकरा' 'जनिक' 'जे' 'जेना' इत्यादिए उचित, अन्तस्था य नहि । प्राचीन लेखहुमे तादृश उपलब्ध होइछ ।

एहिपर यदि केओ कहथि जे बङ्गलाभाषा ओ मिथिलाभाषा पूर्व तुल्ये जेकाँ छल ओ अछि तेँ रवीन्द्रनाथादिक जे नियम से मिथिलाभाषाहुमे मन्तव्य । हुनका लोकनिक सिद्धान्त भेल अछि जे संस्कृतभवहुमे य व श तथा ष संस्कृतानुकूले रहय जाहिसँ संस्कृतमूलकत्व स्पष्ट हो । एहिपर वक्तव्य जे तादृश हुनकालोकनिक विचार मैथिलसंप्रदायसँ विरुद्ध थीक तथा प्राकृतभाषा देशभाषासंपादनमे सहायक थीक एकर अपर्यालोचनमूलक थीक । हमरा भाषामे बङ्गलाभाषासँ साम्य अवश्य अछि, किन्तु हिन्दी भाषाहुसँ तँ साम्य अछिए जकर विशेष विवरण 'हिन्दीभाषासँ साम्य' एहि शीर्षक लेखमे कहि आयल छी । हिन्दीभाषाक विद्वान्लोकनि तँ हमरे मतक समर्थक छथि, अतएव 'जहाँ' 'जिसको' इत्यादिए शुद्ध मानैत छथि । हमर विचार अछि जे जाहि देशमे यादृश लेख बहुत पूर्वसँ चल अबैत इदानीपर्यन्त अछि ओकर यथासम्भव समर्थन करबाक चाही; प्रचलित लेखसंप्रदायकेँ वृथा उनटएबाक नहि चाही । तस्मात् यच्छब्दभव 'जतय' 'जखन' इत्यादि से तथा 'या'धातुभव 'जाइत' इत्यादिमे वर्गतृतीय लेख ।

चरम सिद्धान्त जे संस्कृतभव शब्दमात्रमे उच्चारणानुकूले लेख कर्तव्य ।

देशी शब्द

देशी ओ कहबैत अछि जे शब्द ने संस्कृत वा प्राकृतसँ आयल अछि आ ने देशान्तरभाषासँ, किन्तु स्वतन्त्र मानल अछि; यथा 'छाती' 'पहुँचा' 'छकब' इत्यादि अनेक सहस्रशब्द देशी थीक ।

देशीमे द्विरुच्चारण

मिथिलाभाषामे क्वचित् नित्य क्वचित् वैकल्पिक वर्ण-द्वित्व होइत अछि; यथा 'घट्टी' 'बड्ढी', 'सकत-सक्कत', 'चट-पट-चटपट', 'अमत-अम्मत' 'अतर-अत्तर', 'गप-गप्प', 'दुबर-दुब्बर' । वर्णद्वित्व भेलापर 'झलां जश् झशि' एहि संस्कृत शास्त्रानुसार ओहिमे पूर्वस्थित वर्गद्वितीयवर्ण ओहि वर्गक प्रथम भय जाइत अछि, तथा चतुर्थवर्ण तृतीय भय जाइछ; यथा 'अक्खा' 'बग्घा' 'आकच्छ' 'दोसज्जा' 'ठठर' 'बड्ढी' 'हत्था' 'गप्पा' । द्विरुक्तसँ पूर्वस्थ दीर्घ ह्रस्व भय जाइत अछि; यथा 'छीका-छिक्का', 'मूका-मुक्का', 'पाखा-पक्खा', 'जूता-जूता', 'चूटी-चुट्टी' ।

विदेशी शब्द

विदेशी शब्द ओ थीक जे देशान्तर भाषासँ आबि मैथिली-मे मिश्रित भय गेल अछि, यथा 'हजूर' 'अगुबार' 'मिनट' । ई तीन शब्द क्रमशः म्लेच्छभाषाक, हिन्दीक तथा अंग्रेजीक

थीक । मिश्रण होएबाक हेतु थिक तत्तद्भाषाक प्रचुर प्रचार । क्षत्रियक राज्यमे तत्तद्देशीय भाषा भाषान्तरसँ असंकीर्ण छल । कारण जे ओ राजा सभ अपन भाषाक प्रचार राजाक कर्तव्य नहि बुझैत छलाह । किन्तु यवनक शासनमे ओ सभ अपन भाषाहुक प्रचारमे यत्नशील भेलाह । न्यायालयादिमे म्लेच्छभाषासँ व्यवहार चलाओल गेल । ताहिसँ ओकर पठन-पाठन होए लागल । ततः पर बहुधा व्यवहार चलबाक कारण 'हजूर' 'हाजिर' 'दरखास्त' 'दस्तगर्दी' 'दस्तखत' इत्यादि 'प्रभु' 'उपस्थित' इत्यादिशब्दापेक्षया गौरवान्वित बुझल जाय लागल । ततःपर गौराङ्ग राज्यकालमे उक्तरीत्या अंग्रेजीभाषाक प्रचारसँ 'मिनट' 'सेकेण्ड' 'हाफ' 'पाबर' इत्यादि अंग्रेजी शब्दो मिथिलाभाषामे व्यवहृत होए लागल अछि । पूर्व थोड़ कालक व्यवहार 'छन' 'घड़ी' 'पल' इत्यादि शब्द होइत छल; यथा 'हमरा छनो भरि अवकाश नहि' 'पलखति नहि', 'एक घड़ी थमहू' । आब 'सेकेण्ड' 'मिनट' 'घण्टा'सँ व्यवहार चलल अछि । गौराङ्गशासन कालहिसँ अंग्रेजी शिक्षामे उपकारार्थ ओहि सङ्ग हिन्दीओ भाषा पठन-पाठनमे आवश्यक भय जयबाक कारणे हिन्दीभाषाहुक प्रचुर प्रचार भेल । पूर्व मिथिलामे ओकर गन्धो नहि छल । हमर बाल्यावस्थासमयमे केओ-केओ अंग्रेजीशिक्षापत्रे हिन्दीभाषा-पटु छलाह । हम जन्मतः अठारहम वर्षमे अध्प्रयनार्थ काशी गेलापर ओतहि हिन्दी भाषा सीखल । आब तँ सर्वत्र बालको सभ अपन मातृभाषापेक्षया हिन्दीभाषाहिमे निपुणाताक प्रय-

त्नशील देखल जाइत अछि । अस्तु, हमर कथ्य जे अँगरेजी तथा हिन्दीक अधिक प्रचारसँ ओह दुहू भाषाक शब्द सभ जे मिश्रित भए भेल अछि से विदेशी भेल ।

विदेशी शब्द दू प्रकारक अछि—अनुरूप ओ तद्भव । ‘हजूर’ आदि अनुरूप भेल, ‘नजर’ इत्यादि विदेशी ‘नजर’ आदि शब्दभव । हमरा एहि कोषमे विदेशी शब्द देवाक इच्छा नहि छल, तथापि बहुत व्यक्तिक आग्रहसँ थोड़ेक विदेशियो शब्द देल अछि ।

संस्कृत छोड़ि भाषामात्रक एक प्रधान स्थान होइत अछि । अम्बिकावत् व्यास अपनकृत हिन्दी व्याकरणमे लिखने छथि जे हिन्दीक कोनो शब्दमे यदि सन्देह हो तँ नागर देशक बाजबसँ निर्णय करबाक थोक । तस्मात् हिन्दीक केन्द्र नागर भेल । तकरा मिथिलासँ विभिन्नताक कारण हिन्दी शब्दकेँ हम विदेशी मानैत छी किन्तु कोषमे ओकर परिचय हिन्दी शब्दकेँ लिखल अछि; बहुतमे छुटिओ गेल होएत ।

मैथिलीकोष कीदृश चाही

हमरा इच्छा छल जे मिथिलाभाषाक उन्नतिक हेतु एहन कोष बनाबी जाहिमे अकारादिक्रमेँ परिशुद्ध निखिल शब्दक संग्रह हो । मिश्रित विदेशी शब्दक यथासंभव त्याग कएल रहए । यदि रखबहिक आग्रह हो तँ ओहि हेतु दोसर खण्ड रहओ । अर्थनिर्देश यथासंभव मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, तीनू शब्दसँ कएल जाय । विशेष शब्दमे लौकिकी प्रयोग देखाओल

रहय जे यथावत् अर्थक बोध हो । जे वस्तु जाहि गुणेँ उपादेय होइत अछि तकर उपादान कएल जाय । दृष्टान्त, पक्षीमे कोनो पक्षी प्रिय बजबाक हेतु ग्राह्य होइत अछि, यथा श्यामा; कोनो लड़बाक हेतु, यथा बुलबुल; कोनो मनुष्यजेकाँ बजबाक हेतु, यथा पहाड़ी मेना; कोनो तत्तज्जातीयकेँ भक्ष्यताक हेतु; कोनो सुन्दरताक हेतु । एवं प्राधान्यतः जाहि गुणेँ जे अपेक्षित होइछ से कहल रहए । एवम् जे फूल जाहि हेतु संग्राह्य होइछ, जाहि मासमे फुलाइत अछि, जेना लगैत अछि, जेहन फूल होइत छैक से परिचय यथासंभव देल जाइक । तथा कृतान्न, व्यञ्जन, मिष्ठान्नादिक नामोल्लेख एहि रूपेँ कएल जाय जे एहि प्रकारेँ संपादित वस्तुक नाम अमुक । एवम् क्रीड़ासभक नाम ओही रीतिसँ लीखल जाय जे एहि रीतिसँ संपाद्य क्रीड़ा अमुक थोक, जाहिसँ ओकर स्वरूप अवगत हो । धान्यमे हलुकधना, गरुहन, इत्यादि परिचय; सर्पमे एतादृश विषाह इत्यादि । एवम् रत्नाहिअहुमे । सजातीय वस्तुक नामावली वर्गक्रमेँ फूटो लिखल रहय; यथा, मनुष्यवर्ग, मनुष्यावयववर्ग, गृहवर्ग, गृहावयववर्ग; एवम् रत्न, यान, अन्न, वस्त्र, भूषण, इत्यादि जाहिसँ इहो अवगत भय सकय जे एतबा मनुष्यक, एतबा भूषणाहिक नाम एहिमे अछि ।

एहिप्रकारक मैथिलीबृहत्कोष निर्मित भय यदि प्रकाशित हो तँ महान् उपकारक होयत, संस्कृतव्यवहारहुमे उपकार पहुँचत । तस्मात् एतादृश कोष अनेक विद्वान् मील अवश्य बनाबथि । हम तँ एकाकी तादृश मनोऽभिलषित कोष नहि

बनाय समलहूँ, स्वल्पाकारे बनाओल । मैथिलबन्धुवर्ग सूर्यक
अभावमे दीपवत् एहि कोषक आदर अवश्य करताह से
आशा अछि ।

कोषक निर्माणमे साहाय्य

एहि मिथिलाभाषाकोषक निर्माणमे ५००) रुपैया
राघवपुरक हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रस्टसँ हमरा देल गेल,
जाहिसँ छपयबामे बहुत सहायता पहुँचल । एहिसँ अतिरिक्तो
जे एहि कोषक मुद्रणमे खर्च पड़ल सेहो सभटा परमकृपया
बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयसँ सहज हमरा भेटल ।

ट्रस्टक निर्माण

राघवपुरक बाबू श्रीयदुनन्दन सिंह महोदयक सुयोग्य पुत्र
बाबू श्रीहरिनन्दन सिंह महोदयकेँ साहित्यमे विशेष प्रेम तथा
पूर्ण योग्यता छलन्हि । अतः हुनक सुयोग्य पुत्र परमोदारवरित
बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहमहोदय हुनक कीर्त्यर्थ हुनका नामे
ट्रस्टक स्थापना कएल, जाहिसँ मिथिलाकसाहित्यकुसुम विकसित
भय रहल अछि । एहिसँ स्थाक स्थायिता रूपेँ विधानसँ बराबर
मैथिलीसाहित्यक अभ्युन्नति होइत रहत, यदि अधिकारापन्न
विचारक लोकनि यथोचित समय-समय पर एकर सञ्चालनमे
आलस्य नहि करथि । एहिमे सर्वाधिकार विचारक लोकनिक
उपर निर्भर अछि ।

ट्रस्टसँ पूर्व पुरस्कार

ई ट्रस्ट जाहि समयमे स्थायिताक हेतु राजस्वीकृत
कराओल गेल ततःपूर्वहिसँ तत्सम्बन्धी पुरस्कारात्मक कार्य
आरब्ध भय गेल छल । ओहिसँ अद्यावधि चारि विषयक रचनामे
पुरस्कार वितीर्ण भेल अछि (१) मैथिलीव्याकरण, (२)
मिथिलाक इतिहास, (३) शतदलकाव्य (मधुपकृत) ओ
(४) मिथिलाभाषाकोष ।

ट्रस्टक संक्षिप्त परिचय

नामः—हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रस्ट ।

स्थापकः—बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह, राघवपुर, दरभङ्गा ।

उद्देश्यः—(१) पुस्तकालय तथा संग्रहालयक स्थापना,
जाहिमे (क) समीक्षा (ख) भारत ओ मिथिलाक सांस्कृतिक
इतिहास (ग) योगदर्शन (घ) दर्शनसभक समन्वय (ङ)
व्यावहारिक दर्शन (च) मैथिलकृत सकल भाषाक रचना
(छ) मैथिली भाषाक निखिल ग्रन्थ (ज) सिद्धान्त ज्यौतिष
(झ) शान्तिमार्गाश्रित व्यक्तिक जीवनी (ञ) भ्रमणवृत्तान्त
इत्यादि विषयक ग्रन्थक संग्रह रहत ।

(२) मैथिलीमे विशिष्ट रचनापर २५०) सँ ५००)
पर्यन्त पुरस्कार । पुरस्कारार्ह रचनाक विषय रहत—(क)
प्रामाणिक मैथिली व्याकरण (ख) प्रामाणिक मैथिलीकोष (ग)
मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास (घ) आधुनिक महाकाव्य
(ङ) जनप्रिय काव्य ओ नाटक (च) आधुनिक दार्शनिक

निबन्ध (छ) मिथिलाक उन्नतिक उद्बोधक उच्च कोटिक उप-
न्यास (ज) अलंकार निरूपण (झ) अंग्रेजीक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध
तेहन ग्रन्थक अनुवाद जे मैथिली साहित्यक विकासक तथा
स्वसभ्यताक संघटनमे उपकारक हो ।

(३) दोसरा-दोसरा वर्षपर दार्शनिक ओ सांस्कृतिक
व्याख्यान, जाहिमे व्याख्याताक पुरस्कार ५००) सँ १०००)
धरि रहत ओ व्याख्यानलेखमुद्रण दृष्टक अधीन रहत ।

अन्तमे उक्त बाबू साहेबक औदार्य तथा मैथिलीमे अनुपम
अनुरागक भूरि-भूरि प्रशंसा कए सकलशक्तिमान् सच्चिदानन्द
घन श्री विष्णुभगवान्सँ प्रार्थना करैत छी जे एहि बाबू
साहेबकाँ सर्वार्थे परिपूरिताभिलाष बनओने रहथि ।

संवत् २००८ वि०

श्री दीनबन्धुः

॥ श्रोः ॥

* अथ मिथिलाभाषाकोषः *

नत्वा जनकसुतायाः पदकमलं दीनबन्धुरभिरामम् ।
मिथिलाभाषाकोषं तनुते तोषं सतां कलयन् ॥
वैदेहीपदकमलनत हेतु धीरजनतोष ।
दीनबन्धु निर्मित करथि मिथिलाभाषाकोष ॥

अ	
अँः—अ. परोक्त वाक्यार्थमे अस्वारस्यजन्य क्रोध ।	अकच्छ—वारंवार क्रियासँ हतोत्साह अकछाएब—अकच्छ होएब ।
अओ—अ. सादर पुरुषक संबोधन ।	अकट—अखण्डनीय । १ गुरुपाकी २ ।
अओरा—घात्रीफल, हिं. आवला ।	अकटकाँट—साफनहि कयल ।
अए—अ. सादर स्त्रीक संबोधन ।	अँकटा—अन्नविशेष ।
अएँ—अ. पुनःश्रवणेच्छा १	अकट्टी—हास्यास्पद अधिक बजनिहार ।
विस्मय २ क्रोध ३ ।	अकठ—सौख्यप्रभृति सुकाठसँ भिन्न काठ ।
अकचकाएब—कि० अकचक् + अब—साश्चर्य इतस्ततः ताकब ।	अँकडा—विना छाटल (चाउर) ।
अकचकाह—साश्चर्य इतस्ततः प्रेक्षणकर्ता ।	अकडा लागब—कि. लग + अब- शिराक रोगविशेष ।

अँकडाह—किञ्चित् आँकड । १
 आँकड+आह—आँकडसँ युक्त । २
 अकतिआर—वि. शक्ति ।
 अकथ—अकथ्य ।
 अकनाएव—क्रि. अकनब् + अब-
 कान एकाग्र कय सुनब ।
 अकवारव—क्रि. अकवार + अब-
 पाँजमे लेब ।
 अकर—सं. पोतसँशून्य खेत १ तादृश
 राजा, स्वतन्त्र । २
 अकरकचाह—साफ नहि कएल
 (खेत) ।
 अकरकन— { साफनहिकयल
 अकरकनाह— { (अन्न)
 अकराएव—क्रि. अकरब् + अब-
 अयोग्य क्रियासँ अयश पाएब ।
 अकराओन—घृणास्पद (जगह) ।
 अकरी—कर्माक्षम अकर्मण्य ।
 अकरोट—अक्षोट मेबाविशेष ।
 अकर्मण्य—सं. कर्माक्षम ।
 अकमी—अपकर्मकारी ।
 अकसक—अधिक भरबाक कारण
 सकलेश पेट ।
 अकसकाएव—क्रि. अकसक् +
 अब—अधिक पेट भरलासँ देवास-
 गतिमे क्लेश पाएब ।

अकसकी—पेटक अतिपूर्तिसँ देवास-
 गतिमे क्लेश ।
 अकस्मात्—अ. सं. देवात्, हि.
 अचानक ।
 अकहुत्थ—अतिविशाल (निन्दामे) ।
 अकाठ्य—नहि कटबाक योग्य (वच-
 नादि) ।
 अकादारुण— { अतिविशाल
 अकादारुन— { (निन्दामे)
 अकान—सुनबामे असावधान
 स्वभावक ।
 अकानव—क्रि. अकान् + अब—
 अकनाएव, कान एकाग्र कय सुनब
 अकावोन—दुर्ग जङ्गल ।
 अकाल—दुर्भिक्ष समय १ अनवसर २
 अकास—आकाश ।
 अकासकाँकोड़—निन्दनीय (मनुष्य)
 अकासदीप—आकाशदीप ।
 अकासी देव—क्रि. अकासी द +
 अब—वृथा आकाश दिश
 ताकब ।
 अकासी वृत्ति—अनिश्चित जीविका
 अकारथ—अकृतार्थ, व्यर्थ ।
 अकिल—वि. बुद्धि ।
 अँकुरव—क्रि. अँकुर + अब—
 अङ्कुरयुक्त होएब ।

अँकुरा—अङ्कुर ।
 अँकुरी—अँकुरायोग्य भिजल दलिहन
 अकुलाएव—ना. आकुल + अब—
 व्याकुल होएब ।
 अँकुसी—अङ्कुरासदृश लाक्षालंकरण
 १ फल तोडबाक लग्गीक मोरल
 अवयव २ ।
 अकोल—सिकस्त जगह ।
 अकवा—बोरा, सं. गोणी ।
 अक्री—अकर्मण्य ।
 अक्लेश—विनाश्रम ।
 अखज—वि. शत्रुता ।
 अखड़व—क्रि. अखड़ + अब संनद्ध
 होएब ।
 अखड़हा—दङ्गलभूमि १ बाबाजीक
 स्थान २ ।
 अखड़ा—मेही नहि पीसल
 (अन्न आदि) ।
 अखड़—डाभीप्रभृति उपयुक्त तृणसँ
 आन तृण ।
 अखड़िया } अखाड़ा पर शिक्षित=
 अखड़िया } नहि अगुतएनिहार ।
 अखत—पत्रविशेष ।
 अखतनामा—लेखविशेष ।
 अखरकट्ट—अक्षर लिखबामे कच्चा
 अखरताली—हस्ताक्षर लेख ।

अखरोट—अक्षोट, फलविशेष ।
 अखाढ—आषाढ मास ।
 अखाड़ा—अखड़हा-दङ्गल वा व्या-
 यामक हेतु कोडल भूमि । १ ।
 बाबाजी क स्थान २ ।
 अखारव—क्रि. अखार + अब—
 प्रक्षालन ।
 अँखिआएव—ना. आँखि + अब=
 अँखिअब् + अब—दुष्टदृष्टिसँ
 ताकब ।
 अँखिउट्टी—आँखि उठब, अक्षिरोग
 विशेष ।
 अँखिगर—उ देखबासँ वस्तुतत्त्ववेत्ता ।
 अँखिफोड़ा—कोटविशेष ।
 अँखिमुन्नो—कीड़ाविशेष ।
 अखुआ— { करचीक वंशस्थ
 अँखुआ— { मूलाधार ।
 अगओँ—ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु
 प्रथम उद्धृत अन्न ।
 अगड़वाला—अग्रवाल जातिविशेष ।
 अगड़ाही—दावानल ।
 अगण्य—सं. गणनाक अयोग्य ।
 अगता—पूर्व उपजनिहार (अन्न) १
 वधिआ कएल (बोड़ा) २ ।
 अगत्तो—अधिक उकठ कएनिहार ।
 अगत्या—सं. उपायक अभावे ।

अगधाएव—क्रि० अगध् + अब-
अतिवृत्ति वा गर्वसँ अनिच्छा
प्रकाश करब ।
अँगनइ—छोट आँगन
अँगनैत—आँगनक मालिक ।
अँगपोछ—अङ्ग पोछब ।
अँगपोछा—अङ्गप्रोच्छिका, अङ्ग
पोछबाक वख ।
अँगवरिआ—हरबाहसँ आन
हरक सङ्ग रहनिहार (जन) ।
अगबा—केवल, अत्रान्तरसँ अमि-
श्रित एक विध (अन्न) ।
अगबास—वासक अगिला भूमि ।
अँगबाह—उ० चलबामे सङ्ग
रहनिहार ।
अगम—अगम्य ।
अगर—अगुरु, वृक्षविशेष ।
अँगरखा—अङ्गाकार पहिरबाक वख ।
अँगरखी—छोट अँगरखा ।
अगरमस्त—औषधविशेष ।
अगराएव—क्रि. अगर् + अब—
आनन्दजन्य निन्दित चेष्टा करब ।
अगरेस—अग्रेसर, मुख्य ।
अगरैल—फुलक धारीक प्रभेद ।
अगल-अगल—एम्हर ओम्हर ।
अगस्ति—सं. पुष्पविशेष ।

अगहँड़ी—केराक अखण्डित
सँस पात ।
अगहन—आग्रहायणिक, कातिकसँ
अगिला मास ।
अगहनी—अगहनक उपजा ।
अगहनुआ—अगहनमे तैआर भेल
चाउर आदि ।
अगाउ—अग्रिमक हेतु देय वा
दत्त । पेशगी ।
अगाओँ—अगओँ । ब्राह्मणोद्देश्यक
प्रथम उद्धृत (अनादि) ।
अगाडू } वंशादिक अग्रभाग ।
अगाडी }
अगिआ—आगि तपलासँ उत्पन्न
चिह्नविशेष ।
अगिआ-बेताल—अधलाह काज
तीव्र वेगसँ कएनिहार, बहुत
क्रोध कएनिहार । उदण्ड ।
अगिआसी—तपबाक हेतु आगि ।
अगिआह—आनक नोक नहि सह-
निहार । १। ढेरी में ताप स्व-
भावक (नारआदि) २
अगिनझम्प—पुष्पविशेष ।
अगिनवान—व्रणविशेष ।
अगिमुत्त—आनक अधलाह कार्य
कयनिहार ।

अगिलकण्ठ—अधलाह कथा
बजनिहार ।
अगिलगगी—आगि लगनाइ ।
अगिलह—उ झगड़ लगओनिहार,
उत्पाती स्त्री अगिलहि ।
अगिला—उ अग्रिम स्त्री अगिली ।
अगिलेस्—अगिलह, उत्पाती ।
अगुअति—घरक अगिला चार ।
अगुआ—अग्रेसर आगाँ भेनिहार । १
एक प्रकारक लाक्षालंकरण २ ।
अगुआएव—ना. आगु + अब—
आगाँ जाएब ।
अगुआइ—गृहक अगिला अवकाश
अँगुठा—अङ्गुष्ठ हाथपाएक बुढबा
आङुर ।
अँगुठी—अङ्गुरीयक, आँगुरक भूषण ।
अगुताइ—शीघ्रता ।
अगुताएव—क्रि. अगुत् + अब—
शीघ्रता करब ।
अगुताह—उ शीघ्रता कएनिहार ।
अगुवार—हि. आगाँक हेतु अगाउ ।
अँगुरकट्टा—आँगुरक रोग विशेष ।
अँगुरी—अङ्गुली, आँगुर ।
अँगोजब—क्रि. अँगोज् + अब—
अङ्गहित करब, सहाय करब ।

अँगैठी—अङ्गारधानी, आगिरखबाक
पात्रविशेष । १। अङ्कक एँठब । २।
अँगैठीमोड़—अङ्कक एँठब ।
अँगोछ—अँगपोछ, अङ्ग पोछब ।
अँगोठ—अङ्गोष्ठ, अङ्कक आकार ।
अगोरब—क्रि. अगोर + अब—
रक्षा करब ।
अँगोरा—अङ्गार, पजरल काष्ठ खण्ड ।
अग्निझम्प—पुष्पविशेष ।
अघट—घाटसँ भिन्न तट ।
अघनुआ—अगहनमे भेल (चाउर
आदि) ।
अघाएव—क्रि. अघ् + अब—
उमठब, तुप्त होएब ।
अघोर—अघोर मतालम्बी साधु १
ओ हुनक क्रिया २ ।
अघोरी—उ अघोरमतावलम्बी ।
अडनइ—छोट आँगन ।
अडनैत—आँगनक मालिक ।
अँडपोछ—अङ्ग पोछब ।
अँडपोछा—अङ्ग पोछबाक वख ।
अडवरिआ—हरक सङ्ग आरि छट
निहार जन ।
अडवाह—हरक संग काज कयनि-
हार (जन) ।
अडरखा—अङ्गाकार वख ।

अडरखी—छोट अंगरखा ।

अडुठा—अडुष्ट ।

अडुरकट्टा—आँगुरक रोगविशेष ।

अडुरी—अडुली, आँगुर ।

अडेजब—क्रि० अडेज् + अब—
अङ्गहित करब सहा करब ।

अडेठी—अङ्गारधानी, आगि रख-
बाक पात्र १ अङ्क ऐँठव २ ।

अडेठी मोड़—अङ्क ऐँठव मोड़व ।

अडोछ—अङ्ग पोछव ।

अडोट—अङ्गसादृश्य ।

अडोरा—अङ्गार ।

अङ्क—सं. आँक ।

अङ्कुर—सं. अँकुरा ।

अङ्गोल—सं. ओषधिविशेष ।

अङ्ग—सं. आँग, शरीरावयव ।

अङ्गा—शरीराकार वस्त्र ।

अङ्गित—अपेक्षित (व्यक्ति) ।

अङ्गूर—द्राक्षा, फलविशेष ।

अचक— । अ.

अचक— । —अचानक ।

अचक्की—अकचकाह ।

अचंभा—भाँड़ रखबाक वंशरचित
आधार ।

अचरज—आश्चर्य ।

अँचरा—बालिकाकेँ पहिरबाक
छोट वस्त्रविशेष ।

अँचरी—छोट आँचर १ चारमे
जोड़ल भाग २ ।

अँचरीत—रक्षाश्लोक वस्त्र ।

अचल—सं. नहि चलनिहार ।

अचलभारथी—(ती) नहि
चलनिहार (निन्दामे) ।

अँचाएय—क्रि० अँचव् + अब—
हस्तमुख प्रक्षालन करब ।

अचाञ्चक— । अ—,
अचानक— । दैवात् ।

अँचार—आमादि फलक सलवण
संहित खाद्यविशेष ।

अचेत—संज्ञाहीन ।

अच्छत—अक्षत, पूजार्थ बोएल
भारव चाउर ।

अच्छर—अक्षर, आखर ।

अछुओँ—ग्रहणक अनिच्छा, अतिवृष्टि ।

अछुताएब—क्रि. अछुतव् + अब—
पछुताएब ।

अछार—अल्पकालिक सुवृष्टि ।

अछारब—क्रि. अछार् + अब—
पानिमे बीआ बाओग करब ।

अछाह—छाया ।

अछिआ—चिताक चूल्हा ।

अछिनजल—अच्छिन्न जल, शूद्रा-
स्पृष्ट जल ।

अछोप—अस्पृश्य चाण्डालादि जाति ।

अजग—अयज्ञक, अनुत्स्पृष्ट (पोखरि
प्रभृति) ।

अजगर—सर्पविशेष ।

अजगुत—अयुक्त, अद्भुत ।

अजगेवी—आश्चर्य ।

अजन—अधलाह लोक ।

अजवारब—क्रि. अजवार + अब—
शून्य करब ।

अजब—वि. आश्चर्य ।

अजवारि—वस्तुयुत (पात्र) १
वस्तु शून्य (पात्र) २ ।

अजमाएब—क्रि. अजमव् + अब—
जाच करब ।

अजराजोरी—जबरदस्ती, बलात्कार ।

अजस—अयश, अकीर्ति ।

अजस्त्र—अजस, बहुत ।

अजान—अज्ञान ।

अजिआ सासु—सासुक सासु ।

अजीर्ण—सं. पेटमे अन्नक विपाक ।

अजुका—अद्यतन, आइ मेल (वस्तु) ।

अजूरा—वेतन भारा ।

अजेगर—सर्पविशेष ।

अजोध—विशाल सर्प ।

अजोह—अपक्व, बिनु जोआएल
(फल) ।

अज्ञान } सं.—ज्ञान शून्य,
अज्ञानी } अविचारी ।

अज्ञक } अ.—किञ्चित् देखब ।
अज्ञक }

अञ्चोक—अचिन्तितावसर ।

अञ्जस—लेश (आन्तर ज्वरादिक) ।

अञ्जीर—मेवा, फलविशेष ।

अँटकब—क्रि. अँटक् + अब—
गतिनिवृत्ति ।

अँटकर—अन्दाज ।

अँटका—जगन्नाथ प्रभृतिक नियत
भोज्य ।

अँटकाओ—प्रतिबन्धक वशात् रहनाइ
अँटकारब—क्रि. अँटकार + अब—
अन्दाज करब ।

अटपट }
अटपटाँग } अण्टबण्ट
अटपटाड़ }

अँटब—क्रि. अँट + अब—समावेश
होएब ।

अटल—नहि टरनिहार, दृढ़ ।

अँटावेस—समावेश ।

अटारी—अट्टलिका, कोठाक छत ।

अँटिआएब—ना. आँटी + अब=
अँटिअव् + अब—आँटी बान्हब ।

अट्ट—अत्यधिक ।

अटोर—संप्रह ।

अठकपारि—विघ्नाक्रान्त, 'अलच्छ' अभागल ।

अठकोसल—आठव्यक्तिक मन्त्रणा, गुप्त मन्त्रणा ।

अठगोड़वा—कीटविशेष ।

अठतालीस—अष्टचत्वारिंशत् आठ अधिक चालीस ।

अठतालीसम—अष्टचत्वारिंशत्तम अठतालीसक पूरक ।

अठतीस—अष्टत्रिंशत् आठ अधिकतीस

अठतीसम—अष्टत्रिंशत्तम आठ-अधिक तीसक पूरक ।

अठन्नी—अष्टाणकी, आठ आनाक राजत मुद्रा ।

अठबभना—उपनयनमे आठ ब्राह्मणका शीषम ।

अठसष्टि—अष्टषष्टि, आठ अधिक साठि ।

अठसष्टिम—अष्टषष्टितम, आठ-अधिक साठिक पूरक ।

अठाइस—अष्टविंशति आठअधिकबीस

अठाइसम—अष्टविंशतितम आठ-अधिक बीसकपूरक ।

अठावन— } अष्टापञ्चाशत् आठ-अठावन— } अधिक पचास ।

अठावनम—अष्टापञ्चाशत्तम अठा-वनक पूरक ।

अठारह—अष्टादश आठअधिकदश

अठारहम—अठारहक पूरक ।

अठासी—अष्टाशीति आठ अधिक असी ।

अठासीम—अष्टाशीतितम अठा-सीक पूरक ।

अँठिअमत— } अष्टयमल, आँठीमे
अँठिअम्मत— } अम्मत ।

अँठिआ— } अनुचित आँठी सँ युक्त
अँठिया— } [अँठिआ केरा]

अठुलाहि—झी. अभिमानिनी, गौरवाहि ।

अठैत—सर्पविशेष ।

अठौंगर— } ब्राह्मणक विवाहमे
अठौंगर— } प्रसिद्ध कर्मविशेष ।

अठ्ठा—तासक आठम फर्द ।

अठ्ठाइस—अष्टविंशति आठ अधिक बीस ।

अठ्ठाइसम—अष्टविंशतितम अठ्ठा-इसक पूरक ।

अँडकोस—अण्डकोष ।

अडखीस—कानि, द्वेष ।

अडचन—हि. बाधा ।

अडब—कि० अड् + अब—गतिके रोकव, अवरुद्धगतिक होयब ।

अडरनेवा—फलविशेष हि. पृथुपीता ।

अडराएब—यत्र कुत्र कथा बाजब १ घूमब २ ।

अँडरी—एरण्ड, हि. रेँडी ।

अडसट्टा—प्रमाणपत्रविशेष ।

अडसा—विलम्ब ।

अडाँच—दूठाठक एकत्रबान्ह ।

अडाँचब—कि. दूठाठके एकठाम बान्हब ।

अडाँची—एला ।

अडाँचीदाना—मिष्टान्नविशेष ।

अडानी—अडएबाक वस्तु ।

अडारा—नदीक तट ।

अडारि—कण्टकविशेष १ मनमे झगडा राखब, अडखीस २ ।

अँडिआ— } अण्टकोषयुक्त
अँडिया— } (बडव आवि) ।

अँडुआर—मालकपैघ धन ।

अडोपब—कि० अडोप् + अब—आरोप करब, साग्रह निश्चय करब ।

अडुबडु—अण्ट बण्ट, व्युत्क्रम ।

अड—व्यवधान ।

अडइआ— } अडाए सेरक
अडइया— } बटिखारा ।

अडाएब—कि० अडब + अब—प्रवृत्ति कराएब ।

अडाए— } अडबद्धि, आधा
अडाय— } अधिक दू ।

अडाहिस्सी—अन्यक अकरण जन्य क्रोधसँ तत्सम कार्यक अकरण ।

अडिआ— } पादप्रक्षालनक पात्र
अडिया— } विशेष ।

अडीठ—अनिर्भय ।

अडैआ—अडाए सेरक बटिखारा ।

अडैपँजरा— } मालक रोग
अडैपँजर— } विशेष ।

अडैया—अडाय सेरक बटिखारा ।

अडैहथी—अडाए हाथक लाठी ।

अणाच—दूठाठक एकत्र बान्ह ।

अणाचब—कि० अणाच् + अब—दूठाठके मिलाए बान्हब ।

अणाची—एला, हि. इलायची, फलविशेष ।

अणाचोदाना—मिष्टान्नविशेष ।

अणिआ—अण्डकोश सँ युक्त (बडव)

अणुआर—मालक पैघधन ।

अण्ट बण्ट— } असम्बद्ध ।
अण्ट सण्ट— }

अण्टा—सीर चलबाक हेतु ठारिमे माटि ।	अतिवृद्धप्रपितामह—सं. वृद्ध प्रपितामहक पिता ।
अण्टोटल—असम्बद्ध अप्रिय (बात) ।	अतिवृद्धप्रमातामह—सं. वृद्ध प्रमातामहक पिता ।
अण्टोटह—उ असम्बद्ध अप्रिय कथा बजबाक स्वभाव बाला ।	अतिसय— } अतिशय ।
अण्टाएव— } क्रि० अण्ट + अब—	अतीस—अतिविषा ओषधिविशेष ।
अण्टायब— } उपेक्षा करब ।	अत्ता—फलविशेष ।
अण्टिआ— } समाजसँ आन	अत्यन्त—सं. अतिशय ।
अण्टिया— } अपरिचित ।	अथक— } नहि थकनिहार ।
अण्डकोष—सं. अँडकोस ।	अथक— } अथक ।
अण्डवृद्धि—सं. अण्डकोषक वृद्धि ।	अथबल—उ अस्तबल पाएरक
अण्डा—अण्ड, गर्भसँ निःसृत सजीव गोल ।	अथोयतादि कारणेँ चलबामे अक्षम ।
अण्डी—एण्ड, अँडरी ।	अथाह—अगाध, जकर थाह नहि पाबी ।
अतर—सुगन्धि द्रव्यविशेष, हि. इत्र ।	अदण्ड—अनुचित दण्ड १, समुचित
अतरदान—अतर रखबाक पात्र ।	सँ अधिक (खर्च) २ ।
अतरबात—झारबामे एक एक बाती छोटि स्थापित बाती ।	अदत्त—अतिक्रमण ।
अतराएव—क्रि० अतर + अब—	अदना—साधारण, अनबूझ ।
अन्तर कयजनमय ।	अदनार—काँच दानासँ युक्त (धान) ।
अँसरी—अन्त्र, ओँटी ।	अदन्त—बिना दाँतल (माल) ।
अतिषाइन—किभित् कषाय, कनिँ आतिख ।	अदय—बि—प्रताप ।
अतिथि—सं. अभ्यागत ।	अदरदिआह—उ अहङ् ।
अतिरिक्त—सं. भिन्न ।	अदलबदल—हेरी फेरी ।
	अदलहिसाव—वि बिना हिसाबक

अदलहुकुमी—वि. आज्ञाभङ्ग ।	अधनष्फी—जाहि मालमे आधा नफा हो ।
अदालति—न्यायार्थ निवेदन ।	अधन्नी—आध आनाक मुद्रा ।
अदिना—भदवा ।	अधपह— } आधपाओक बटिखारा
अदृष्ट—सं. भागधेय ।	अधपै— } वा नपना ।
अदृष्टघट्ट—अभागल ।	अधबणसू— } अर्द्धवयस्क ।
अदौ—अ सनातन (वास) ।	अधवयसू— } अर्द्धवयस्क ।
अदौरी—संहित खायवटीविशेष ।	अधबहुआँ—आधा बहुआँबाला (अङ्गा) ।
अद्धी—आधा पाह ।	अधवाड़—पृथक् आधा कएल ।
अद्भुत—सं. आश्चर्य ।	अधवाड़—पृथक् आधा कएल ।
अधओड़—आध खण्ड ।	अधबोलीआ— } आधा शब्दक
अधकट्टी—रसीदक आधा खण्ड ।	अधबोलीआ— } अनुच्चारण कए
अधकच्छू—सर्वथा अपक्क १ आधा कएल । २ ।	अधबोलिया— } शिशुक बाजब, वा तादृश बजनिहार ।
अधकपन— } धृष्टता ।	अधम—सं. अधलाह ।
अधकपना— } धृष्टता ।	अधमोनी—आधमोन प्रमाणक (पथिआ वा बटिखारा) ।
अधकपनी— } धृष्टता ।	अधरति—अर्द्धरात्र, निशीथ ।
अधकपारी—रोगविशेष ।	अधरतिआ—निशीथमे उगनिहार (तारा) ।
अधक्री—धृष्ट ।	अधरम—अधर्म ।
अधखँड़—खण्डित ।	अधरमी—अधर्मी ।
अधडा— } पक्षिविशेष ।	अधर्म—सं. पाप ।
अधडो— } पक्षिविशेष ।	अधर्मी—सं. पापी ।
अधडुँडर— } शरीरक मध्य भाग ।	अधलाह—असुन्दर, दुष्ट ।
अधडणेर— } शरीरक मध्य भाग ।	अधसर—सर्पविशेष ।
अधनट—नटखटाह, योग्यता राखि आनक उपकार नहिकयनिहार मलिन मनक ।	

अधसेरा— } आधासेरक बटिखारा
अधसेरी— } वा नपना ।

अधाठी—कोदारिक छुओ भरिंक
प्रमाण ।

अधिक—सं. बेशी ।

अधिकरास—अत्यधिक ।

अधिकार—सं. सामर्थ्य १ विवाह
बाधक सम्बन्धाभाव २ ।

अधिकारमाला—विवाह बाधक
सम्बन्धाभाववान् व्यक्तिक नामावली ।

अधिकांश—सं. अधिक भाग ।

अधोन—सं. स्वायत्त ।

अधेड़—आधा खण्ड ।

अधोखा— } गृहाङ्गविशेष
अधोखी— }

अधोड़— } अधबाड़ ।
अधओड़— }

अनकट—नहि कटबाक योग्य ।

अनखुनाह—उ आनक नीक नहि
देखनिहार, छी अनखुनाहि ।

अनगनित—अगणित ।

अनगुति—अनुदित, अति प्रातःकाल ।

अनगौआँ—आन गाभमे बसनिहार ।

अनघोल—अधिक धोल ।

अनचिन्हार—अपरिचित ।

अनजान—अज्ञान ।

अनट—बेरबाद ।

अनट-घनट } असमीचीन, अनर्गल ।
अनट-सनट }

अनटोटल—असंबद्ध ।

अनठेकान—बिना ठेकान ।

अनतए— } अव्य—अन्यत्र ।
अनतय— }

अनदिना—अवसर शून्य दिन ।

अनधना—धानमे मिश्रित आनधान ।

अनधुन—बिना ठेकान बिनाविचार ।

अनन्त—सं. अन्तहीन ।

अनन्तमूल—ओषधिविशेष ।

अनपरासन—अन्नप्राशन, प्रथम
अन्नभक्षण ।

अनबाह—हरबाहक पाछौरहनिहार
(जन) ।

अनबिसवास—अविश्वास ।

अनबूझ—अबोध ।

अनभरोस—अनाशा ।

अनभुआर—स्थानादिसँ अपरिचित ।

अनमनस—अन्यमनस्क ।

अनमना—अन्यमनस्कता, क्रीडादिसँ
मन बहटारब ।

अनमनाएष—फि० अनमन्—अब—
अप्रसन्नमनस्क होएब ।

अनमनाह—उ अन्यमनस्क
होएनिहार ।

अनमूह—बजबामे
मुहसच्छ ।

अनमेल—विसदृश, जाहिमे जकर
मेल नहि खाए ।

अनमोल—अमूल्य ।

अनरस—खाएल अन्नक विपाक ।

अनरसा—मिष्टान्न विशेष ।

अनर्गल—असंगत ।

अनर्थ—अन्याय ।

अनवसर सं०—अयोग्य समय ।

अनसधरि—अधलाह स्थान ।

अनसाह—अस्या युक्त, आनक
नीको काजमे दोष लगओनिहार ।

अनसुन— } अश्रवण ।
अनसुनी— }

अनसोहँत—अप्रिय ।

अनहद—अत्यन्त ।

अनहोनी—असम्भाव्यक होएब ।

अनाइत—अनायत्त दैवात् ।

अनाज—अन्न गेरह ।

अनाथ—सं. अशरण ।

अनादर—सं. अपमान ।

अनायत—अत्याज्य सम्बन्धिक ।

अनारसा—मिष्टान्नविशेष ।

अनारी—अज्ञ ।

अनुगुति—अनुदित, अति प्रातःकाल ।

अनुचित—सं. असमीचीन ।

अनुपान—कदलीविशेष १ ओषध-
खाय खायब २ ।

अनुपी—पुष्पविशेष ।

अनुभव—सं. तर्क ।

अनुमान—सं. तर्क ।

अनुरूप—सं. अत्यन्त सदृश ।

अनुरोध—सं. रोच १ इच्छा २ ।

अनुसन्धान—सं. अन्वेषण १
स्मरण २ ।

अनुसार—सं. रीति ।

अनूप—अनुपम ।

अनेक—सं. नाना ।

अनेर—अ निष्कारण, कृथा १
अरक्षित २ ।

अनेर धुनेर—अरक्षित ।

अनोन—लवणहीन १ स्वल्प नोन
सँ युक्त २ ।

अन्त—सं. अवसान ।

अन्तकाल—सं. अवसान काल १
मरणकाल २ ।

अन्तय—अ अन्यत्र ।

अन्ता—माछ मारबाक यन्त्र विशेष ।

अन्तिम—सं. अवसानभव ।

अम्बर—वि० अभ्यन्तर ।

अन्दाज—वि. तर्क ।

अन्दाजब—कि० अन्दाज् + अब-
तर्क करब ।

अन्देसा—अनिष्टशङ्का ।

अन्न—सं. धान आदि ।

अन्नप्राशन—अन्नप्राशन, प्रथम
अन्नभक्षण ।

अन्नर—अभ्यन्तर ।

अन्यथा—सं० अ० आन प्रकारे ।

अन्याय—सं. न्यायसँ अपेत ।

अन्यायी—सं. अन्याय कयनिहार ।

अन्वेषण—सं० गवेषण ।

अन्हरजाली—यथार्थ बुद्धिक प्रति-
बन्धक बुद्धिविकार ।

अन्हराएब—कि० अन्हर् + अब-
अन्धकारयुक्त होएब ।

अन्हरिआ— } अन्धकार युक्त
अन्हरिया— } (राति) ।

अन्हरोख—प्रत्युष, अन्हारसँ युक्त
भोर ।

अन्हरोन—किञ्चित् अन्हारसँ युक्त
(बाल) ।

अन्हार—अन्धकार १ अन्धकार
युक्त । २

अन्हारी देब—कि० दू + अब-
तमबाक प्रभेद ।

अन्हेर—अनर्थ ।

अन्है—सर्पाकार मत्स्यविशेष ।

अपक—विपाक ।

अपकरम—अपकर्म ।

अपकार—सं. आनक अधलाह
करब ।

अपकारी—आनक अधलाह क
यनिहार ।

अपखोरा—जलपात्रविशेष ।

अपङ्गु—अपाङ्ग, अवयवरहित शरीर
सँ अकर्मण्य ।

अपच—विनु पचल ।

अपजस—अयश ।

अपजसी—अयशस्वी ।

अपटीक खेत—निर्जन स्थान ।

अपथ—अपथ्य, कुसंयम ।

अपन—स्वीय ।

अपना अपनी—अ स्वयं स्वयम् ।

अपनाएब—ना. अपन + अब-
अपनब + अब = अपन बनाएब ।

आत्मसात् करब ।

अपनाभरि—अ० गयाशक्ति ।

अपने—स्वयम् १ आदरणीय संबोध्प्य

अपमान—सं. अवज्ञा ।

अपमानित—सं. अनाहत ।

अपरचाल—घृणास्पद काज कए
निहार, अपरोजक ।

अपरतिभ—अप्रतिभ, मुहसच्छ ।

अपरपच्छ—अपरपक्ष पितृपक्ष
आश्विन कृष्णपक्ष ।

अपरपात—अत्यवयस्कक मृत्यु ।

अपरस—रोगविशेष ।

अपराजित—अपराजिता एक प्रका-
रक फुल १ ओकर लत्ती २ ।

अपराध—सं. कसूर ।

अपराधी—सं० अपराधयुक्त ।

अपरोजक—अप्रयोजक, कार्यमे
अपटु ।

अपसराहि—स्त्री. अधिक अप-
वित्रतायुक्त (स्त्री) ।

अपसेआँत—अधिक श्रमयुक्त,
श्रान्त ।

अपसोच—शोक ।

अपाटक—उ अपटु, स्त्री-अपाटकि ।

अपात—अ. अन्तमे सबसँ थोड ।

अपालन—सं० गायक अरक्षा ।

अपि—अ. समुच्चय, एतत्प्रसङ्ग विधो
तन रह्य्य ।

अपिआधी—माछ बसाएबाक खाधि ।

अपुआँग— } तृण विशेष ।

अपुआड— }

अपूर्व—विलक्षण ।

अपेच्छा—अपेक्षा, आपकता ।

अपैत—उपहत ।

अपोआँग—तृणविशेष ।

अप्रिय— } अप्रिय ।

अप्री— }

अफजल—असर्धदेह रखनिहार ।

अफनाएब—कि० अफन् + अब-
उत्सुकता प्रकाश करब ।

अफरब—कि० अफर् + अब-
खएळासँ अकसक करब ।

अफरा—मालक देहमे रहनिहार
कीट विशेष ।

अफार—बिना जोतल (खेत) ।

अवकाश—सं. छुट्टी १ अन्तर २ ।

अवगति—सं. ज्ञान ।

अवगुण— } दोष ।

अवगुन— }

अवञ्च—अनाक्रान्त ।

अवजोस—मेवाविशेष ।

अवढङ्ग—ढङ्गहीन, अपटु ।

अवढँगाह— } उ—अपटु, स्त्री०

अवढङ्गाह— } अमढङ्गाहि ।

अयण्ड उ अकर्मण्य ।

अव-तव—अ. इदानीं तदानीम् ।

अवती—अ. अयबाक समयमे ।

अवधि—सं. पर्यन्त देश वा समय

अवरख—अन्नप, धातु विशेष ।

अबरजात—गतायात ।
 अवर्ण—जातिभ्रष्ट ।
 अवल—सं. दुर्बल ।
 अवलम्ब—सं. आश्रय ।
 अवलहा—उ निन्दनीय अवल स्त्री०
 अबलही ।
 अबला—सं. असहाया (स्त्री)
 अवश्य—अ. अवश्यम् ।
 अवसर—सं. उचित समय ।
 अवस्था—सं. स्थिति १ वयःक्रम २
 अवस्थित—सं. स्थित १ वासी ।
 अवाक—वचनहीन ।
 अवाज—वि. शब्द ।
 अवाजाही—अबरजात, गतायात ।
 अवाद—बिनु खसल (खेत)
 अवार—उजाहिमें चलैत माछ ।
 अवारा—अवारणीय, कुचालि ।
 अवाह—आवाक दोषयुक्त १ पण्दार २ ।
 अविधि—सं. अनुचित ।
 अविष—विषहीन ।
 अवीर—पटवास, सुगन्धि द्रव्य ।
 अवीरी—अवीरक सदृश (रङ्ग)
 अवुरवान—विचित्र मनुष्य ।
 अवूह—दुष्करता, तर्कक अविषय ।
 अवेत—बिनु बेओतल ।
 अवेर—अपेला, अतिक्रान्तकाल ।

अबोध—सं. बोधहीन (शिशु) ।
 अव्यवस्थित—व्यवस्था नहि रख-
 निहार, मिथ्यावादी ।
 अभक्ष्य— } अखाद्य ।
 अभक्ष— }
 अभरख—अभ्रष, धातुविशेष ।
 अभाग—अभाग्य ।
 अभागल—उ अदृष्टदू, स्त्री-
 अभागलि ।
 अभार—अजस ।
 अभाव—सं. असत्ता ।
 अभास—आभास ।
 अभिप्राय—सं. इच्छा ।
 अभिमान—सं. अहङ्कार ।
 अभिमानो—सं. अहङ्कारी ।
 अभिसार—बटगमनी, स्त्रीक स्वामीक
 समीप जयवा कालक गीत ।
 अभेला—अवहेला, अनादर ।
 अभ्यन्तर—सं. भीतर ।
 अभ्यागत—सं. अतिथि ।
 अभ्यास—सं. वारंवार पढ़न वा
 करन ।
 अमचुकारी—अमत डेकार ।
 अमचूर—शुष्क आमक चूर्ण ।
 अमजिहुल—किञ्चित् अमत,
 किञ्चित् मधुर ।

अमट—आम्रावर्त, आतपशोषित
 घनीभूत आम्ररस ।
 अमड़ा—आम्रातक, अम्लफलविशेष ।
 अमत—अम्ल रसविशेष ।
 अमतहा—अम्लप्रकारक ।
 अमतइ—अम्लता
 अमताइनि—किञ्चित् अम्लतायुक्त ।
 अमताएव—कि० अमत् + अब-
 अमत होएब ।
 अमताह—किञ्चित् अमत ।
 अमती—काँटबाला लताविशेष ।
 अमतौआ—अमत प्रकारक
 (नेबो आदि) ।
 अमरकन— } कन्दवत् चिर-
 अमरकन्द— } जीवी (गाछ)
 अमरलत्तो—सं. अमरवलरी लता
 विशेष ।
 अमरोड़ा—अम्ललोणी शाकविशेष ।
 अमल—वि. समय ।
 अमलगिरी—अमलाक कार्य ।
 अमलतास—आरग्वध वृक्षविशेष ।
 अमलबेत—सं. अम्लबेतस,
 ओषधिविशेष ।
 अमला—वि. अधिकृत विशेष
 पुष्पक अधीनस्थ कार्यकर्ता ।

अमलापोस—वि. स्वाधीनस्थक
 पोषक (हाकिम) ।
 अमलासाजी—वि. अमलासँ मेल ।
 अमसूल—धानविशेष ।
 अमाघौर—धान्यविशेष ।
 अमात—शूद्रजातिविशेष ।
 अमाबस—अमावस्या ।
 अमावास्या—अमावस, अमावस्या ।
 अमाल—तृणविशेष १ चरखाक
 सूत्रविशेष २ ।
 अमिलगर—अधिक आमिलसँ युक्त ।
 अमीन—क्षेत्रक मापक ।
 अमीर—दुःख नहि सहनिहार ।
 अमूल—सं० बिना मूलक ।
 अमृत—सं० पीयूष ।
 अमृतफल—फलविशेष ।
 अमृतवान—घृतादिक पात्रविशेष ।
 अमृतभेला—सूगाक प्रभेद ।
 अमृती—मिष्टान्नविशेष ।
 अमेढव—कि० अमेद + अब-
 ऐँठब ।
 अमेढी—ऐँठनाइ
 अमोल—अमूल्य, मोल नहि भेट-
 बाक योग्य ।
 अमोट—आम्रावर्त, अमट ।
 अम्बात—आमवात रागविशेष ।

अयना—आदर्श १, आगमन २ ।
 अरकसिआ—आरासँ चिरनिहार
 जातिविशेष ।
 अरखीस—कानि, कोपरक्षा ।
 अरगज—अपक्व अनेक औषध
 मिश्रित तेल ।
 अरगट—अनुमान ।
 अरगनी—कपड़ा रखबाक टाँगल
 ढण्टा ।
 अरजब—क्रि० अरज् + अब—
 खएला पीलापर बहार नहि
 होएब [औषध नहि अरघैत
 अछि] ।
 अरजब—क्रि० अरज् + अब—
 अर्जन करब ।
 अरतल—शीघ्र कर्तव्य ।
 अरधङ्ग—अर्द्धाङ्ग, रोगविशेष ।
 अरना—जन्तुविशेष, वन्यमहिष ।
 अरबधि कए—अ. कृत्रिम कए ।
 अरवा—बिनु उसिनल (चाउर आदि)
 अरवेठ—अरवा चाउरक चिकस ।
 अरस—नीरस ।
 अरसी—आरसि, आदर्श ।
 अराका—नशीक तट ।
 अराङ्गि—अङ्गुली, द्वेषविशेष ।
 अरारि—उदकीर्य, वृक्षक प्रभेद ।

अरिआ—आरिसम्बन्धी ।
 अरिआएब—क्रि. अरि + अब—
 अकच्छ होएब ।
 अरिआत—अनुव्रजन ।
 अरिआतब—क्रि. अरिआत् + अब—
 प्रत्युद्गमन ।
 अरिआ दुर्भिक्ष—एक खेतमे उपर
 समीपहिक खेतमे दुर्भिक्ष ।
 अरिआलङ्घन—जाहिमे आरि
 नाँधिके पानि बहए, ताहूँ (वर्ष)
 अरिपन—पिठारसँ लिखल यन्त्र ।
 अरिलघाँओ }
 अरिलघाँन } —आरिक लङ्घन
 अरुआएब—क्रि. अरु + अब—
 भातक अधिककालज विकार ।
 अरुचि—सं. खएबाक अनिच्छा ।
 अरुवी—खाद्यकन्दविशेष ।
 अरु—अ. नीचक सम्बन्धोन,
 आश्चर्य २ ।
 अरेवा—अ. भयशोकादिव्यञ्जक ।
 अरोस-परोस—ग्राम समीप ।
 अर्घ—सं. अर्घ्य ।
 अर्घब—क्रि. अर्घ् + अब—अर्घ
 अर्घासन—दशाहाम्यन्तर पितर
 अर्घार्घ अर्घ आसन ।
 अर्घी—अर्घ देबाक पात्रविशेष ।

असिआस—अत्यायास ।
 असिद्ध—सं. किञ्चित् भागमे पक्क
 ओ किञ्चित् भागमे अपक्क । १।
 भातसँ भिन्न पक्क अन्न । २।
 असिनहट—आसिन ओ तत्समीपक
 समय ।
 असिनी—आश्विनमे भेनिहार
 एक धान ।
 असीतर—अस्सीसँ किछु कम वय-
 सक (लोक) ।
 असुआएब—क्रि. असु + अब—
 पाकक वैगुण्यसँ सकत होएब ।
 असुस्त—अस्वस्थ, दुःखित ।
 असुस्ताह—उ. किछु दुःखित ।
 स्त्री. असुस्ताहि ।
 असोक—अशोक, वृक्षविशेष ।
 असोख—विचारशून्य ।
 असोच—अशोच्य, धनादिपूर्ण ।
 असोथकित—अत्यन्त थाकल ।
 असौजन } खएबाक वा सिद्ध ख-
 असौजन्य } एबाक अव्यवहार ।
 असौजनिआँ—खएबाक व्यवहार
 सँ बहिर्भूत ।
 अस्त—सं. अस्ताचलक अधःस्थित ।
 (सूर्यादि) ।
 अस्तर—वि. दोहाराक तरका वस्त्र ।

अस्तव्यस्त—कार्यमे व्याकुल,
 अत्यन्त अनवकाश (निन्दा) ।
 अस्तूरा—केश कटबाक अन्न, छूरा ।
 अस्त्र—सं. हथिआर ।
 अस्मानखोचा मारब—क्रि.
 मार + अब—असाध्य कार्य करब ।
 अस्मानतारा—रबाइसक प्रभेद ।
 अस्यास—रुकि रुकि श्वास चलब ।
 अस्वरस—सं. असम्मति ।
 अँह—अ. क्रोधद्योतक, १ निषेध
 द्योतक २ ।
 अहगर—पर्याप्त ।
 अहदिपन—
 अहदिपना— } आलस्यशीलता ।
 अहदिपनी— }
 अहदी—आलसी ।
 अहरा—पक्षीक आहार ।
 अहा— } अ-खेद आश्चर्य आदिक
 अहाहा— } द्योतक ।
 अँहा—आदरणीय सम्बोधन ।
 अहाँड—अहङ्कार ।
 अहिबात—सौभाग्य ।
 अहिबाती—स्त्री.सौभाग्यवती स्त्री ।
 अहो भाग्य—अ.सं.आनन्दसूचक ।
 अह्लाव—आह्लाव, आदर ।
 अह्लादब—क्रि. अह्लाद् + अब—
 सस्नेह आदर करब ।

आ

आ — अ. आओर ।

आइ — अ. अब, वर्तमान दिनमे ।

आइसँ — अ. अद्यारभ्य ।

आँए — अ. विस्मय १ संबोधनोत्तर
सावधानता २ ।

आपत — सुन्दर ।

आएब — कि. अब् + अब — आगमन

आओ — अन्नक विकार-विशेष, सं०
आम ।

आओँट — व्याकुल ।

आओन — गाड़ीक पहिआक सामी ।

आओर — अ. समुच्चय । १। अति-
रिक्त । २।

आक — अर्क, पुष्पविशेष ।

आँक — एकसँ नओ पर्यन्त अङ्क । १।
चिह्न । २।आँकड़ — हि. कंकड़, बहुत छोट-
छोट पाथर ।आँकब — कि. आँक् + अब —
अङ्कित करब ।

आकर — सं. खानि ।

आकरि — बहिला (माल) ।

आकस्मिक — सं. दैवात् होएनिहार

आकार — सं. आकृति, स्वरूप ।

आकाश — सं. अस्मान ।

आँकुर — अंकुर ।

आँकुस — अंकुश, अँकुसी ।

आकृति — आकार ।

आखर — अक्षर ।

आखरि करब — कि. कर् + अब —

रोसँ सिंहसँ माटि उखाड़ब ।

आँखि — अक्षि, नेत्र ।

आँखि उठब — कि. उठ् + अब —

अक्षिरोग विशेष ।

आँखि गुड़ारब — कि. गुडार् +

अब — क्रोधँ आँखिक उत्फालन ।

आँखि देखाएब — कि. देखब +

अब — आक्षेप करब ।

आँखि देब — कि. द् + अब —

दोषावह अक्षिपात करब ।

आँखि नहि लगाएब — कि.

लगब + अब — तुच्छ बुझब ।

आँखि निडारब — कि. निडार् +

अब — रोगँ आँखिक उत्फालन

करब ।

आँखि लागब — कि. लग् + अब —

किञ्चित् काल आँखि मुनब । १।

दोषावह ओ साश्चर्य अक्षिपात

होएब । २।

आखिर — वि. अन्त ।

आँग — अङ्ग, शरीर ।

आगत-स्वागत — अतिथि सम्मान ।

अर्जी — वि० निवेदन ।

अर्जुन — सं. वृक्ष विशेष ।

अर्थ — सं. प्रयोजन [एहि अर्थे

आएल छी] १ वस्तु [कोनो

अर्थे हम छोट नहि] २ ।

अर्थीएब — कि. अर्थब + अब —

ज्ञात रहनहुँ जिज्ञासा करब ।

अर्दर बाजब — अण्डबण्ड बाजब ।

अर्हणा — जामाताक हेतु अर्घादिदान ।

अलगचित्त — दाओविशेष ।

अलगटैट — योग्यक बजबाक अव-

सर नहि दय उत्तर देनिहार ।

अलगटैटाह — अगलटैट + आह —

किञ्चित् अलगटैट ।

अलगट्ट — अनुचित तर्क ।

अलगफुनगी मारब — कि०.

मार् + अब — बिनु तत्त्वतः

बुझनहि बाजि उठब ।

अलगब — कि. अलग् + अब —

उपर आएब ।

अलग बलग — अ. शीघ्रताजन्य

असमीचीनतापूर्वक ।

अलगाह — उ. अलग्न होएनिहार,

स्त्री० अलगाहि ।

अलगो — स्त्री. चञ्चल स्वभाववाली ।

अलगोजा — बासुरीविशेष ।

अलङ्करण — सं० भूषण ।

अलङ्ग — एकदेश ।

अलच्छ — अशुभकर ।

अलछपन —

अलछपना —

अलछपनी —

अशुभकरत्व ।

अलटपलट — हेरफेर ।

अलबटाह — उ. ओरिआएके

नहि काज कएनिहार । स्त्री.

अलबटाहि ।

अलबल — असम्बद्ध (वचन)

अलबेला — उ० स्वेच्छाविहारी ।

स्त्री. अलबेली ।

अलमान — ऊनक सादा ओढना ।

अलमारी — पुस्तकादि रखबाक

पात्रविशेष ।

अलसाएब — कि. अलस् + अब —

आलसयुक्त होएब ।

अलौकिक — सं. लोकव्यवहारा-

नभिज्ञ ।

अलहुआ — मूलविशेष, हि. शकर-

कन्द ।

अव्यवस्थित — सं. मिथ्याव्यवस्था.

कएनिहार ।

अंश — सं. भाग ।

अशुद्ध—सं. अपवित्र । १। विवाहादि
निषिद्ध समय २ ।
अशुभ—सं. अमङ्गल ।
अशोक—सं. वृक्षविशेष ।
अशौच—सं. जननमरणादिजन्य
अशुद्धि ।
अपाढ़—आषाढ़, जेठक अगिला मास
अष्टकोसल—आठव्यक्तिक मन्त्रणा,
गुप्त मन्त्रणा ।
अष्टगन्ध—धूपविशेष ।
अष्टमी—आठम तिथि ।
असक—आवश्यक । १। रोगी । २।
अशक्य । ३।
असकताएब—कि. असकत् +
अब—आलस्य करब ।
असकताह उ०—आलस्ययुक्त ।
स्त्री. असकताहि ।
असकूर—असंनिधि ।
असगनी—नूआ टैंगबाक डण्टा ।
असगन्ध—अश्वगन्धा, औषध
विशेष ।
असगुन—अशकुन ।
असँघइ—शैथिल्य ।
असघनी—कपड़ा रखबाक डोरि ।
असङ्ख्य—सं. अगणित ।
असङ्ग—असंज्ञ, संज्ञा (चैतन्य) हीन ।

असङ्गत—सं. असुष्ठु ।
असंज्ञ—संज्ञाहीन ।
असत्य—सं. मिथ्या ।
असफल—सं. विफल ।
असबाब—वि. वस्तुजात, सामग्री ।
असवार—अश्ववार, सवार ।
असर—वि. प्रभाव ।
असरफो—स्वर्णक मुद्राविशेष,
असराएब—कि. असर् + अब—
धातुकेँ ठोकि ठोकि पसारब ।
असरेस—अश्लेषा नक्षत्र ।
असर्ध—श्रद्धाक अयोग्य ।
असर्फी—दस मासाक स्वर्णमुद्रा विशेष
असल—वि. तात्त्विक ।
असह—चेष्टाहीन ।
असहाज—असह्य ।
असाइ—कौटविशेष ।
असाओन—किछु कम, असान ।
असाध— } अप्रतीकार्य ।
असाध्य— }
असान—किछु कम ।
असामी—प्रजा, रैअति ।
असार—सारिलसँ भिन्न, सारभिन्न
(काठ) ।
असारब—कि. असार + अब—
पीटिकेँ लाम बनायब ।

आँगन—अङ्गण ।
आगन्तुक—सं. अयनिहार ।
आगम—भाविवर्षादिक चिह्न ।
आगर—अप्रतिरुद्धवातागम स्थान,
हवादार १ खानि । २।
आगरह—आग्रह ।
आगाँ—अग्र ।
आगि—अग्नि ।
आँगी—स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आगु—अग्र ।
आँगुठ—अङ्गुष्ठ, बुढ़बा आँगुर ।
आँगुर—अङ्गुली, हाथ पाएरक
शाखा ।
आगू—अग्र ।
आग्रह—सं. अति प्रार्थना ।
आड—अङ्ग ।
आडन—अङ्गण ।
आडो—स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आडुठ—अङ्गुष्ठ ।
आडुर—अङ्गुलि ।
आँच—चूल्हिमे लगाओल जारनक
ज्वाला ।
आँचब—कि. आँच् + अब—चूल्हिमे
जारन देब ।
आचमन—सं. जलसँ मुहक शुद्धि ।
आचमनी—आचमनक पात्रविशेष ।

आँचर—अञ्चल ।
आचार—सं. व्यवहार ।
आचार्य—सं. उपनयन करओनि-
हार गुरु ।
आच्छन्न—सं. व्याप्त ।
आज—अ. अद्य, वर्तमान दिनमे ।
आँजन—अञ्जन, अक्षिरोगक औषध
विशेष ।
आजुक—वर्तमानदिनसम्बन्धी ।
आँजुर—अङ्गुलि, मिलल दुहू हाथ ।
आँट—अवधि ।
आँटा—गोधूमादिचूर्ण ।
आँटी—प्रमाणविशेषपरिच्छिन्न बद्ध-
तृण ।
आठ—अष्ट, एक अधिक सात ।
आठम—अष्टम ।
आँठी—अष्टि, आम्नादिक बीज ।
आड—व्यवधायक ।
आडम्बर—सं. आड्वाल ।
आडा—व्यवधानकारक लम्बा उच्च
माँटि ।
आँडा—अण्डबीज, सजीव गोल वस्तु
आड्वाल—आडम्बर ।
आँत—अन्त्र ।
आँत उतरब—कि. उतर + अब—
अण्डकोषक रोगविशेष ।

आँत ममोरब—कि. ममोर् + अब
पेटक व्यथाविशेष ।
आँतर—प्रथम सिराउङ्क मध्य भाग ।
आता—फलविशेष ।
आतिख—आतिक्त, कषाय ।
आँती—अण्डकोषमे आँतरीक प्रवेश,
रोग विशेष ।
आतुर—सं. अति उत्सुक ।
आतू—अ. कुकुरक आह्वानशब्द ।
आद—आर्द्रक, कन्दविशेष ।
आदङ्क—आतङ्क, भयविशेष ।
आदति—वि. स्वभाव ।
आदमी—वि. मनुष्य । १। मृत्यु । २।
व्यक्ति । ३।
आदर—सं. संमान ।
आदरस—आदर्श ।
आदाय—वि. गृहीत ऋणक प्रत्यर्पण ।
आदि—सं. प्रथमावयव ।
आद्योपान्त—सं. आदि सँ अन्त पर्यन्त ।
आध } —अर्द्ध, समांश
आधा }
आधा-आधी—परस्पर आधा ।
आधार—सं. अधिकरण । १। भक्षण । २।
आधी—सतरङ्ग में आधा जीत ।
आध्वान—उद्गार, डेकार ।
आन—अन्य, भिन्न ।

आनन्द—सं. हर्ष ।
आनन्दित—सं. हर्षसँ युक्त ।
आनव—कि. अन् + अब—आनव
आन्दोलन—हल्ला मचाएब ।
आन्हङ्—हि० अन्धङ्, बिहारि ।
आन्हर—अन्ध, दर्शनशक्तिरहित-
नेत्रद्वययुत ।
आन्ही—बिहारि, हि० आँधी ।
आपकए—अ. दोष समुच्चय, से-
हो [ई गाए बुद्धि आप कए
(= सेहो) मरखाहि आप कए] ।
आपट—अनुचित आग्रह ।
आपति } —विपत्ति ।
आपति }
आपस—प्रत्यर्पण ।
आपसी—प्रत्यर्पित ।
आफद—वि. आपत्, उपद्रव ।
आफदी—उपद्रव कएनिहार ।
आब—इदानीम्, हि० अब ।
आबा—मृद्भाण्डपाकानल ।
आबाज—वि. शब्द ।
आबाद—वि. बिनु खसल (खेत) ।
आबादी—उपजाबाला (भूमि) ।
आबेस—स्नेह ।
आभङ्ग-खुभङ्ग—उच्चावच, ऊँच-
नीच ।

आभा—झलक । १। सादृश्य । २।
आभ्युदयिक—सं. नान्दी श्राद्ध ।
आम—आम्र, फलविशेष ।
आम कलमी—राजाम्र ।
आमद—वि. आय, द्रव्यागम ।
आमदनी—वि. नियत आमद ।
आम सराही—क्षुद्राम्र ।
आमाघौर—धान्यविशेष ।
आमील—काँच आमक सुखाएल
खण्ड ।
आमेख—ईर्ष्या ।
आमोद-प्रमोद—अनेक विषयक
आनन्द ।
आयत—सुन्दर ।
आरत—अलक्त, नखराग । १। आर्ति । २।
आरतक पात—लाक्षारस सम्भृत
पात ।
आरति—आर्ति ।
आरती—आराति, नीराजन ।
आरव—बिना उसिनल (चाउर) ।
आरम्भ—सं. प्रथमक्रिया ।
आरसि—आदर्श । १। औंठीक प्रभेद
। २। छातीक खोदहा । ३। आगि
रखबाक मृत्पात्र । ४।
आरा—उभयतः उण्टाबाला आरी ।
आरारोट—वि० खाद्यविशेष ।

आरि—खेतक चारु कातक उच्च
सीमा, हि० मेढ़ ।
आरी—चिरबाक लौहयन्त्रविशेष ।
आरु—खाद्य कन्दविशेष ।
आल—लाल रङ्गविशेष ।
आलन—टाट वा भीतक मध्यमे
देवाक खढ़ ।
आलस—आलस्य ।
आलसी—आलस्ययुत ।
आलात—गजीफाक शरविशेष ।
आलाप—परस्पर गप्प ।
आलू—कन्दविशेष ।
आलू बोखारा—आलू आकारक
अमृत फल ।
आशा—सं० शुभसंभावना ।
आशीर्वाद—सं० शुभेच्छा बोधक वचन ।
आशीष—शुभेच्छा ।
आश्रम—सं. निवासस्थान । १। गार्ह-
स्थ्यादि २ ।
आषाढ़—जेठसँ अगिला मास ।
आस—आशा, शुभक विश्वास ।
आसकति—अशक्ति, आलस्य ।
आसकूर—दूर, असमीप ।
आसन—सं. बैसबाक कम्बलादि । १।
वृक्षविशेष, सं० असन २ ।
आसनी—छोट आसन ।

आसमर्द—घोल ।

आसरम—निवासस्थान ।

आसरा—आश्रय, अवलम्बन ।

आसिन—आश्विन, मादबसँ अगिला मास ।

आसिरवाद—आशीर्वाद ।

आँसु—आश्विनमे उपजनिहार धानक सदृश अन्न ।

आस्था—सं. सेवा-परिचर्या १ आदर-बुद्धि २ ।

आस्फोट—आडम्बर ।

आस्मर्द—घोल ।

आह—अ. क्रोध ओ शोकक व्यञ्जक

आहट—किञ्चित् शब्द ।

आहर—खेत लगक जलाशय ।

आहरा—पक्षीक भक्ष्य ।

आहल—परिमाणविशेष (तृणक) ।

आहार—भोजन । १। धान्यादि पट-एवाक जलाशय २ ।

आहि—आधि, मानस दुःख ।

आहिरे

आहिरेवा } अ. खेद व्यञ्जक ।

इ

इआर—मित्र ।

इआरी—मित्रता ।

इकड़ी—तृणविशेष ।

इचना—मत्स्यविशेष, इच्छाक ।

इछाइन— } दुर्गन्धविशेष ।

इछैनीवच—औषधविशेष ।

इजमलिआ—केवाड़क लोहक छिड़की ।

इजर—इजल, तृणविशेष ।

इजहार—वि. वादी ओ प्रतिवादीक कथन ।

इजोत—उद्योत, प्रकाश ओ प्रकाशवान् ।

इजोरिआ—चन्द्रकिरण वा तदुत्पत्ति (राति) ।

इज्जति—वि. मर्यादा, प्रतिष्ठा ।

इड़हर—संहितव्यञ्जनविशेष ।

इतर—सं. अन्य । १। छुद्र । २।

इतरपन— } क्षुद्रता ।

इतरपना— }

इतरपनी— }

इतराएब—क्रि. इतर + अब—

अगराएब ।

इतलाय—वि. निवेदन ।

इनहोर—गरम, उष्ण (जल) ।

इनाम—वि. पारितोषिक ।

इनार—पैष कूप ।

इन्तजाम—वि. प्रबन्ध ।

उचिला—धोतीमे बिनबाक दोषे उच्च देश ।

उच्छन्न—सं. समूल विनष्ट ।

उछटब—क्रि. उछट् + अब—
एकमे लागिके वेगे दोसरा दिस जाएब ।

उछती—विनय ।

उछन्न—उच्छन्न ।

उछन्नर—उ. उच्छृङ्खल । स्त्री.
उछन्नरि ।उछलब—क्रि. उछल् + अब—
उछलन, जलादिक उपर छिटकब ।

उछाल—पूर्ण भए बहता पानिबाला ।

उछाह—उत्सव ।

उछाही—उत्सवमे देय ।

उछिलब—क्रि. उछिल् + अब—
उछलन ।उजबिजाएब—क्रि. उजबिज् +
अब—उद्दिग्न होयब ।

उजर—शुक्ल ।

उजर दप-दप—अत्यन्त उजर ।

उजरब—क्रि. उजर् + अब—अव-
यवशः नष्ट होएब ।

उजरा—स्वेत प्रमेदक ।

उजरी—शुक्लता ।

उजरी धबब—क्रि. धब् + अब—
श्वेतता प्रकाश होएब ।उजहब—क्रि. उजह् + अब—
माछक जलवेगाभिमुख गमन ।उजहिआ—जलवेगाभिमुख चलित
(माछ)

उजागर—प्रकाश ।

उजार—भग्नाङ्ग होएब (गृहादिक
उजरब) ।उजारब—क्रि. उजार् + अब—
भग्नाङ्ग करब (वृक्षगृहादिक) ।

उजाहि—वेगाभिमुख गमन (माछक)

उजिआर—प्रकाश ।

उज्जर—उज्ज्वल, शुक्ल ।

उज्जट—उद्भट ।

उझक } —किञ्चित् (दर्शन)

उझकक } —किञ्चित् (दर्शन)

उझकब—क्रि. उझक् + अब—
चढ़ल पात्रक भुक्कब ।

उझकुन—बरतन आदिमे टेकन ।

उझट } —उझट । १। उझाँट । २।

उझट्ट } —उझट्ट । १। उझाँट । २।

उझट लागब—क्रि. लग् + अब—
वेगापन्न वस्त्रादिक किञ्चिन्मात्र
सम्बन्ध ।

उझाँट—अलक्ष्यमे लागब ।

उझिलब—क्रि. उझिल् + अब—
पात्रक मुह नीच कए भूमि पर
धान्यादि खसाएब ।

उल्लिला—उल्लिल पात्रक मुह नीचाँ
कय खसाओल ।

उल्लुका—आकस्मिक आघात ।

उल्लालिस—एकोनचत्वारिंशत् ।

उल्लालिसम—एकोनचत्वारिंशत्तम

उल्लालस—एक कम पचास ।

उल्लालसम—एकोनपचाशत्तम ।

उल्लङ्क—उकरू, अयथावत् स्थित ।

उल्लटनी—स्त्री. उल्लू स्त्री, विशाल स्त्री-
प्राणिविशेष । पुं० उल्लट ।

उल्लओना—प्रतिदिन नियत (कयण)

उल्लव—क्रि. उल्ल + अब—उत्थित
होएब । १। खर्च होएब । २।

उल्लल्लू—अगण्य ।

उल्लओ—त्याग (पूर्व प्रचलितक) ।

उल्लबैसी—बारंबार उल्लव बैसब ।

उल्लकुस्सी—विषाक्त लताविशेष ।

उल्लङ्गा—मत्स्यविशेष ।

उल्लङ्गा—उल्लवाक योग्य ।

उल्लनखटोला—एम्हर ओम्हर
वृथा धुमनिहार (निन्दामे)

उल्लन्ती—अमूलक विषय, किंवदन्ती ।

उल्लव—क्रि. उल्ल + अब—आकाश
मार्ग चलब ।

उल्लरा—मत्स्यविशेष ।

उल्लक—उल्लनिहार ।

उल्लहव—क्रि. उल्लह + अब—
नवीन भौंडकेँ काजमे आनब ।
इनार पोखरिक पानि उपल्लि
शुद्ध करब । २।

उल्लीस—मत्कुण, शोणिताशी की
विशेष हि० खटमल ।

उल्लरव—क्रि. उल्लर + अब—पुनः
पान्तरक सङ्ग स्त्रीक कामवश
जाएब ।

उल्लरी—स्त्री. पर पुरुषक संग
कामवश गेलि (स्त्री) ।

उल्लारव—क्रि. उल्लार + अब—अन
स्त्रीक अधीन कए पत्नीभा
लए जाएब ।

उल्लटन—अन्यथास्थिति ।

उल्लटव—अन्यथाभाव ।

उल्लटा—विपरीत ।

उल्लरंग—उत्तरसँ अबैत बसात ।

उल्लरव—क्रि० उल्लर + अब—नो
आएब ।

उल्लरबरीआ } —उत्तर दिशक
उल्लरवारि }

उल्लरा—उत्तरफलगुनी नक्षत्र ।

उल्लराढाढ़—उत्तरोत्तर नीच
उत्तरपलव ।

उल्लराहुत—किञ्चित् उत्तरदिगति

उल्लजओ

उल्लजओ—इन्द्रयव, यवाकार
औषधविशेष ।

उल्लरी—लिङ्ग ।

उल्लोर—उष्ण (जल) ।

उल्लार—मित्र ।

उल्लारी—मित्रता ।

उल्लोत—अद, व्यवधान ।

उल्लोची—फलविशेष हि० लीची ।

उल्लमलिआ—केवाड़क लोहक
छिड़की ।

उल्ल—अ. पीड़ाद्योतक ।

उल्लखिआम—इसखीक योग्य ।

उल्लखी—सोटनिहार, स्वशरीर-
सौन्दर्यप्रेमी ।

उल्लफगोल—औषधविशेष ।

उल्लरगत—सापक जड़ी क्षुद्रवृक्ष,
सं. पुलिक ।

उल्लारा—इज्जित ।

ई

ई—प्रत्यक्ष दृश्य ।

ईर्ष्या—सं. चित्तविकारविशेष ।

ईशानकोण—सं. पूर्वोत्तरक मध्य-
कोण ।

ईश्वर—सं. निखिलसामर्थ्यशाली ।

ईश्वरी—ईश्वरसम्बन्धी (चक्र वा
घटना)

ईस्—अपीडाव्यञ्जक ।

ईह—अ. असूया १ कोध २ खेद ३ ।

उ

उल्लृण—कृण सँ उल्लृत, अनृणी ।

उल्लटन—उल्लर्तन, आँग उल्लारवाक
वस्तु ।

उल्लटव—क्रि. उल्लट + अब—अनौ-
चित्य पूर्वक कथोद्घाटन करब । १।
माटि कोड़ब । २।

उल्लठ—अन्योद्देजक क्रीड़ा, उपद्रव ।

उल्लठाह—उ. उल्लठ कएनिहार ।
स्त्री. उल्लठाहि ।

उल्लठिआ—उल्लठ कएनिहार ।

उल्लरू—उत्कम, अयथावत् स्थित ।

उल्लस पाकस—अस्थैर्य ।

उल्लहव—क्रि. उल्लह + अब—
काष्ठक दृढ़ता हटव ।

उल्लाठी—उल्लठाह उपद्रवकयनिहार
(नेना) ।

उल्लासी—काश रोग ।

उल्लखरि—उल्लखल ।

उल्लखड़व—क्रि. उल्लखड़ + अब—
उल्लखनन ।

उल्लखड़ा—एकोपक्रम कार्यकाल ।

उल्लखड़ा—वृक्षक व्याधिविशेष ।

उल्लखड़ाह—उल्लखि गेनिहार ।

उखरड़—चूड़ा कुटबाकाल उखरिसँ
छिरिआएल अन्न ।
उखरि—उदूखल, धान कुटबाकपात्र ।
उखरिमुसरा—शाकविशेष ।
उखाड़व—क्रि. उखाड़् + अब—
उत्पाटन ।
उखिआर—इक्षु, कुसिआर, हि० ऊख ।
उखीबिखी लागव—क्रि. अस्थिर
रहब ।
उगव—क्रि० उग् + अब—उदित
होएब ।
उगरव—क्रि. उगर् + अब—उर्व-
रित होएब ।
उगरा—उर्वरित ।
उगरास—चन्द्र सूर्यक राहुसँ
विमुक्ति ।
उगहन—नीचसँ पानि भरबाक
ढोरी ।
उगहव—क्रि. उगह् + अब—
उद्वहन, हि. ढोना ।
उगारव—क्रि. उगार + अब—
उर्वरित करब ।
उँगारव—क्रि. उँगार + अब—
उद्वर्तन करब ।
उगिलव—क्रि. उगिल् + अब—
उद्विगण, मुहसँ फेकब ।

उगिला—उद्गोर्ण, उगिलल ।
उघरव—क्रि. उघर् + अब—उद्-
टित होएब ।
उघार—उद्घाटित, अनावृत ।
उघारव—क्रि. उघार् + अब—
उद्घाटन करब ।
उडारव—क्रि. उडार् + अब—
उद्वर्तित करब ।
उचका } उचङ्का, कनेक आँखि पुके
उचकी } हठात् वस्तु लए लेनिहार ।
उँचगर—अधिक ऊँच ।
उचङ्का—उचका ।
उचती—विनय-वचन ।
उचरव—क्रि. उचर् + अब—
बुद्धि पढ़ब १, फुरब २ ।
उचरिङ—उच्चिटिङ्ग, पक्षिकी-
विशेष ।
उँचाड़—उच्चता ।
उचाट—उच्चाटन ।
उचाँढ़—चार अलगओनिहार कोरी ।
उचाँस—उच्चप्राय, कनेक ऊँच ।
उचित—सं. योग्य ।
उचितवक्ता—सं. यथास्थि
वज्रवामे प्रौढ़ ।
उचित कल्याण—उचित श्राद्धादि
कल्याण विवाहादि एतदुभय ।

उतरी—श्राद्धमे यज्ञोपवीताकार उत्त-
रीय वस्त्र ।
उतान—उत्तान, पीठक भरै सुतल ।
उतार—क्रमिक पातर (लाठी आदि)
उतारव—क्रि. उतार् + अब—
प्रतिलिपि करब १। उपरसँ
नीचाँ करब २।
उतारा—पत्रोत्तर ।
उताहुल—उत्सुक ।
उत्कट—सं. तीव्र १ अप्रिय २ ।
उत्कट कोटि—सं. तीव्र विभाग ।
उत्तम—सं. उत्कृष्ट ।
उत्तमहा—उत्तम प्रभेदक ।
उत्तर—सं. उदीची दिक् १। प्रति-
वाक्य २।
उत्तर भर—उत्तर दिस ।
उत्तरीय—सं. द्वितीय वस्त्रविशेष ।
उत्थर—अल्प गहौँढ़, उत्थल ।
उत्पटाँग— } असङ्गत ।
उत्पटाङ्क— }
उत्पति—उत्पत्ति ।
उत्पात—सं. उपद्रव ।
उत्पाती—सं. उपद्रवकर्ता ।
उत्फाल—उद्धत ।
उत्सव—सं. उज्झाह ।
उत्साह—सं. तीव्र इच्छा ।

उत्साही—सं. उत्साहसँ युक्त ।
उत्थर—उत्थर, उचितसँ अल्प गहौँढ़ ।
उदय—सूर्य चन्द्रमाक उगब ।
उदय-प्रलय—नीक-अधलाह ।
उथल-पाथल—युगपत् नानाक्रिया ।
उदार—सं. दानी ।
उदास—सं. शोकयुक्त, विरक्त ।
उदासी—औदास्य १। वैराग्य-
शाली २ ।
उदासी झलकव—क्रि. झलक् +
अब—औदास्य देखार होएब ।
उदेस—उद्देश, स्थिति ।
उदण्ड—उच्छृङ्खल ।
उद्ध—जलजन्तुविशेष ।
उद्धव—अविषयज्ञ ।
उद्धार—उबारब ।
उद्धृत्त—सं. अधलाह क्रियाबाला ।
उद्धग—सं. उन्मनस्कता ।
उद्यम—सं. उद्योग ।
उद्यमी—सं. उद्योगी ।
उद्योग—सं. साधनक्रिया ।
उद्योगी—सं. उद्योग कएनिहार ।
उधकव—क्रि. उधक् + अब—
बारबार किञ्चित् उपर नीचाँ
होएब ।
उधार—पश्चात् मूल्य देबाक व्यव-
स्थासँ कीनल १। उद्धार २।

उधारव—क्रि. उधार् + अव—
उद्धार करव ।

उधारी—पश्चात् मूल्य देबाक व्यव-
स्थासँ कीनल ।

उधिआएव—क्रि. उधि + अव—
दुग्धादिक तापसँ ऊर्ध्वमुख होएव

उधिआन—उधिआएव ।

उधुक्का—जोरसँ उपरदिशक धक्का

उधेसब—क्रि. उधेस् + अव—
असाधुतया उद्घाटन ।

उनचालिस—ऊनचत्वारिंशत् ।

उनचालिसम—ऊनचत्वारिंशत्तम ।

उनचास—ऊनपञ्चाशत् ।

उनचासम—ऊनपञ्चाशत्तम ।

उनट—परिवर्तन ।

उनट-पनट—हेरी-फेरी ।

उनटन—अन्यथा स्थिति ।

उनटव—क्रि. उनट् + अव—
अन्यथाभाव । १। अधोमुख
होएव । २।

उनटल—अन्यथा भेल । १। अधो-
मुख । २।

उनटा—विपरीत ।

उनटा खोदहा—खोदहाक प्रभेद ।

उनटा सरिसव—नीचमुख सरिसव

उन्तीस—ऊनविंशत् ।

उन्तीसम—ऊनविंशत्तम ।

उनमुनाएव—क्रि. उनमुन् + अव—
—उन्मुख होएव ।

उनरव—क्रि. उनर् + अव—माठा
आदि खेचलासँ अधिक फानक
होएव ।

उनसट्टि—एकोनषष्टि, एक कम साठि

उनसट्टिम—एकोनषष्टितम, उन-
सट्टिक पूरक ।

उनहत्तरि—एकोनसप्तति ।

उनहत्तरिम—एकोनसप्ततितम ।

उनारव—क्रि. उनार् + अव—
फान पैघ करबाक हेतु आकर्षण ।

उनासी—एकोनाशीति, एक कम
अस्ती ।

उनासीम—एकोनाशीतितम, उना-
सीक पूरक ।

उनाह—भाफ लेब ।

उनाहव—क्रि. उनाह् + अव—
भाफ लेब ।

उनैस—एकोनविंशति, एक कम
बीस ।

उनैसम—एकोनविंशतितम, उनैसक
पूरक ।

उन्तीस—एकोनविंशत् ।

उन्तीसम—एकोनविंशत्तम ।

उन्नैस—एकोनविंशति ।

उन्नैसम—एकोनविंशतितम ।

उपकार—सं. आनक इष्टसम्पादन ।

उपकारी—सं. आनक इष्टसम्पादक

उपज—उपजा, उत्पाद्य धान्यादि ।

उपजब—क्रि. उपज् + अव—
धान्यादि उत्पन्न होएव ।

उपजा—उत्पन्न धान्यादि ।

उपटव—क्रि. उपट् + अव—चास
हटाएव । १। गालुक सर्वथा
विनाश [राडीक उपटव कटिन] २।

उपड़व—क्रि. उपड़् + अव—
मूल सँ अलग्न होएव ।

उपदेश—सं. इष्टकथन ।

उपनयन—सं. व्रतबन्ध । ब्राह्मणा-
दिक संस्कारविशेष ।

उपनयनिआ—अचिरोपनीत । १।
उपनयनसम्बन्धी । २।

उपपुरोहित—पुरोहितक सहायक ।

उपमा—सं. सादृश्य ।

उपर—उपरि सं. अधिकरणार्थक
अवयव ।

उपरका—उपरिस्थित, स्त्री० उप-
रकी ।

उपरफट्ट
उपरफट्टी } —उपरिष्ठात् प्राप्त ।

उपरवदरा—किछु मात्र वर्षा,
क्षणिक मेघकृत वर्षा ।

उपरसहकिआ—भानसमे भनसि-
आक सहायक ।

उपरसहाक—भानसमे भनसि-
आक सहायता ।

उपरा—उचितसँ अधिक (अन्नादि)

उपराग—दोषकथन ।

उपराड़ि—उच्च चास ।

उपरी—बाइली आएल वस्तु ।

उपरौझि—एकप्राप्ततया निश्चितक
अनका लेबाक आप्रह ।

उपरोश—उपरका ।

उपहत
उपहँत } अनुच्छिद्य प्रक्षालन योग्य

उपाड़—उत्पाटन ।

उपाड़व—क्रि. उपाड़् + अव—
उत्पाटन ।

उपाति—अनका देल असिद्ध
भोजनसामग्री ।

उपाधि—पदवी, मिश्रप्रभृति ।

उपाध्याय—ब्राह्मणक पदवीविशेष

उपाम—उत्तम ।

उपाय—सं. साधक ।

उपास—उपवास ।

उपासब—क्रि० उपवास ।

उपासल—उपोषित, उपास कएने ।

उपेखब—कि० उपेख् + अब }

उपेखुब—कि० उपेख् + अब }

उपेक्षा करब ।

उफाँट—अप्रेषित भूत ।

उफाँटि—पचेसीक खेदिमे कटबाक योग्य स्थानगत (गोटी) ।

उफाँटि लागब—किञ्चिद्भाग मात्रेण अन्नादिक लागब ।

उबरब—कि० उबर् + अब—
उर्वरित होएब ।

उबानि—उद्धान, अनुचित बान्ह । १।
अनुचित बान । २ ।

उबार—उद्धार

उबारब—कि० उबार् + अब—
उद्धार करब ।

उवेर—गतमेघ काल ।

उभड़-खामड़—उच्चावच (भूमि)

उमकब—कि० उमक् + अब—
मदजन्य बालक्रीडा ।

उमकी—बालक्रीडा, दौडधूप ।

उमगब—कि० उमग् + अब—
उद्गम ।

उमजब—कि० उमज् + अब—
कृश मालक किञ्चित् पुष्ट होएब ।

उमठब—कि० उमठ् + अब—
अतिभोजनसँ तृप्त होएब ।

उमड़ब—कि० उमड् + अब—
आधार परिपूर्ण होएब ।

उमत—उन्मत्त ।

उमतल—उन्मत्त ।

उमेद—वि० आशा, इच्छा ।

उमेदवार—इच्छुक ।

उरड्ब—कि० उरड् + अब—
पुनः संप्राप्ति

उरड्—हर जोतबामे हरमें लागल मृत्तिकातृणादि ।

उरमा—मनक तरङ्ग ।

उरम्हब—कि० उरम्ह् + अब—
पुनः प्रादुर्भाव ।

उरिण } ऋण सँ उद्धृत ।
उरिन }

उरीद—माष, अन्नविशेष ।

उरेब—असमीचीन

उलटब—कि० उलट + अब—
विपरीत होएब ।

उलटा—उद्धृत, विपरीत ।

उलटा खोधहा—खोधहाक प्रभेद ।

उलटासरिसओ—अधोमुख सरिसओ ।

उलबुलाएब—कि० उलबुल् +
अब—प्रतारल जाएब ।

उलबुलान—प्रतारणा ।

उलहन—उपराग, दोषकथन ।

उलाएब—कि० उलब् + अब—
किञ्चिन्मात्र भर्जनराहडि आदिक ।

उलाओल—किञ्चिन्मात्र भृष्ट ।

उलार—पाछाँदिस अधिक भारयुक्त
(गाड़ी) ।

उलूक—सं० पक्षिविशेष, बादुर ।

उलौंच—उत्तरच्छद ।

उल्कापात—सं० + आकाशसँ
ज्वालाक खसब ।

उलटा—उलटा, विपरीत ।

उलटा खोधहा—खोधहाविशेष ।

उलटासरिसओ—अधोमुख सरि-
सओ ।

उल्लू—पक्षिविशेष ।

उसकब—कि० उसक् + अब—
उत्तरण, आगँ जाएब ।

उसट्ट } —नौरस ।
उसठ }

उसर—ऊपर ।

उसरड्—उसरबाला भूमि ।

उसरग—उत्सर्ग ।

उसरगा—उत्सृष्ट ।

उसरब—कि० उसर + अब—
शीघ्र शीघ्र किया होएब । १।
समाप्त होएब । २ ।

उसराहु—शीघ्र होएबाक योग्य ।

उसार—समटब ।

उसारब—कि० उसार् + अब—
समटब ।

उसास—उच्छ्वास । आश्वास,
विश्राम ।

उसास देव—कि० द् + अब—
अनका काजकेँ अपनापर लए
ओकरा विश्राम देव ।

उसाहब—कि० उसाह + अब—
उद्यमन ।

उसिनब—कि० उसिन् + अब—
धान्यादिक जलमे अमिपाक ।

उसिना—पानि में सिद्ध (धान्य ओ
तदीय तण्डुल) ।

ऊ

ऊक—उल्का, मुखमे प्रज्वलित
लम्बा बद्धतृणपुञ्ज ।

ऊकाऊकी—ऊकक कीड़ा मुख-
रात्रिक ।

ऊख—इक्षु, कुसिआर ।

ऊगब—कि० उग् + अब—उदय ।

ऊघब—कि० उघ् + अब—उद्घ-
हन ।

ऊँच—उच्च ।

ऊँट—उष्ट्र, जन्तुविशेष । स्त्री०
ऊँटनी ।

ऊठब—क्रि० उठ् + अब—उत्थान ।
ऊड़ब—क्रि० उड् + अब—उड्डयन ।
ऊद—माछ मारनिहार जन्तुविशेष ।
ऊधम—उत्सव ।
ऊन—ऊर्णा ।
ऊनी—ऊर्णावन्न ।
ऊपर—उपरि ।
ऊभी—तीक्ष्णाम् बाती ।
ऊमी—काँच मरुआक आँटा ।
ऊरीबोरी—मनक अस्थैर्य ।
ऊस—ऊष ।
ऊसर—ऊषर ।
ऊहि—ऊह, तर्क ।

ए

एँ—अ० प्रश्नार्थक ।
ए—एतद्, प्रत्यक्ष निर्देश्य ।
एक—सं० स्वतुल्यद्वितीयशून्य ।
प्रथमसंख्यायुक्त ।
एकघरिआ—स्वतुल्य दोसराक घरसँ रहित गाममें बसनिहार ।
एकचारी—तुल्य दोसर चारसँ शून्य घर ।
एकचोपा—साम्यानाक एक प्रभेद ।
एकछाहा—आन अन्नसँ अमिश्रित (अन्न) ।

एकजनिआँ—एक गोटाक योग्य छोट (पाकपात्रादि) ।
एकजुतिआ—जाहिमे एक व्यक्ति जूति हो ।
एकटक } दीर्घकाल तन्मात्रमे
एकटकी } अक्षिपात ।
एकटक्की लगाएब—क्रि० लग-
ब + अब—तन्मात्रमे बराबरी
अक्षिपात करब ।
एकटङ्ग—एकभगाह, एक भाग
अवनत ।
एकटङ्गा—एक पाएरें स्थिति ।
एकटङ्गादेब—क्रि० दू + अब—
एक पाएरसँ ठाढ़ रहब ।
एकटप—एकावरण वस्त्रगृहविशेष ।
एकटार—पृथक् महानसादिक पर-
स्पर सम्बन्ध ।
एकट्टा—एकत्रित ।
एकठहुरी—एकमुष्टि, एकदि बेरमे ।
एकठा—एक काठक बनाओल
(नाओ) ।
एकढ़वा—फुटल बानरक दल्ल ।
एकतरफा—एकदिसाह ।
एकतारा—बाद्यविशेष ।
एकतालीस—एकचत्वारिंशत्,
एक अधिकचालिस ।

एकतालिसम—एकतालिसक पूरक ।
एकतीस—एकत्रिंशत् । एक अधि-
क तीस ।
एकतीसम—एकतीसक पूरक ।
एकतुरिआ—एकवयस्क ।
एकदम—वि. नितान्त ।
एकदिना—एक दिनमे सम्पन्न
मेनिहार ।
एकदिसाह—एकतरफा ।
एकद्वी—एक आनाक राजकीय
मुद्रा ।
एकपट्टा—एक पाटक ओढ़ना-
विशेष ।
एकपरतार—कोनो एक समय ।
एकपिठिआ—अव्यवहित कनिष्ठ
वा ज्येष्ठ ।
एकपुरुषिआ—एकपुरुषभोग्य
(धनादि) ।
एकपैँड़िआ—एक गोटाक चल-
बाक रास्ता ।
एकफक्का—आधा फाँक कएल
(सुपारी) ।
एकबग्घा—क्रीडाविशेष ।
एकबटिआ—एक व्यक्तिक चल-
बाक योग्य बाट ओ ताहश
नीपल भूमि ।

एकबट्टी—एकक चलबाक योग्य
बाट ।
एकबतरिआ—एक बयसबाला ।
एकबरखा } एक वर्षक निर्मित । १।
एकबरखू } एक वर्ष रहनिहार । २।
एकवार—समाचारपत्र ।
एकवाहि—एकभगाह ।
एकभगत—एकभुक्त ।
एकभगाह } एक भाग छुकल ।
एकभग्गू }
एकमसिआ } एक मासक जनमल
एकमस्सू } (नैना) ।
एकमहला—एक महलक (कोठा) ।
एकमुहिआ—एकोन्मुख ।
एकम्मा—पृथक् लटकल एक
आम ।
एकरङ्गा—वस्त्रविशेष ।
एकलखत—बराबरी ।
एकलयँ } एकार मात्राक चिह्न ।
एकलँ }
एकलेब—एकबेर लेबल ।
एकसऔ—एकसम, बराबरी, अनु-
चावच ।
एकसर } एकाकी ।
एकसरुआ }
एकसठि—एकषष्टि, एक अधिक
साठि ।

एकसद्विम—एकषष्ठितम, एक
सद्विम पूरक ।
एकसम—एकरज समीकृत भूमि ।
एकसंभर—एकाटार ।
एकहत्तरि—एकसप्तति, एक अधिक
सत्तरि ।
एकहत्तरिम—एकसप्ततितम, एक-
हत्तरिक पूरक ।
एकहत्थी—एक हाथक सोटा ।
एकहत्थू—एक गोटाक हाथें लग-
निहारि माल । १ । एक गोटाक
हाथें सम्पादित । २ ।
एकहारा—एक तहक वस्तु ।
एकहेड़िआ—एकसंधसम्बन्धी ।
एका—घोडा गाड़ीक प्रभेद ।
एकाएकी—अ० एकैकशः ।
एकाङ्गी—ओषधिविशेष ।
एकाटार—एकसंभर, परस्पर
संबद्ध ।
एकाढ़—जेरफुडू मुख्य बानर ।
एकादशी—सं० एगारहम तिथि ।
एकान्त—सं० व्यस्त्यन्तर शून्य
स्थान ।
एकान्ती—खानगी, जनान्तिक ।
एकान्नवे—एकनवति, एक अधिक
नवे ।

एकान्नवेम—एकनवतितम,
एकान्नवेक पूरक ।
एकावन } एकपञ्चाशत्, एक
एकावन्न } अधिक पचास ।
एकावन्नम—एक पञ्चाशत्तम, एका-
वनक पूरक ।
एकार—श्रेष्ठक नीच शब्दें सम्बोधन
। १ । ए आखर २ ।
एकार मारब—कि० मारू+अब-
श्रेष्ठक नीच शब्दें सम्बोधन
करब ।
एकारि—जकर चारुदिश जजाति
कटल हो एहन जजातिबाला खेत ।
एकार्णवा—अतिजलव्याप्त ।
एकासी—एकाशीति, एक अधिक
अस्सी ।
एकासीम—एकाशीतितम, एकासीक
पूरक ।
एकैस—एकविंशति, एक अधिक
बीस ।
एकैसम—एकविंशतितम, एकैसक
पूरक ।
एकौँछ—एकदिसाह, एकदिस झुकक
(खाम्हीप्रभृति) ।
एकौहिष्ट—वार्षिक श्राद्ध, वर्षी ।

एकोन—एक दिस टेढ़ ।
एकौर } एक दिस कम (भार
एकौर } आदि) ।
एकौस—एकदिश लबल ।
एक्का—घोडाबाला गाड़ीक प्रभेद ।
एखन—एतत्क्षण ।
एखनुक } एतत्क्षणिक, एहि
एखनुका } कालक ।
एगारह—एकादश, एक अधिक
दश ।
एगारहम—एगारहक पूरक ।
एटन दोटन—क्रीडाविशेष ।
एड़ा—जूताक एडीलगक तरी ।
एड़ी—पाएर तरक गोल भाग ।
एड़ी दोड़ी—गुली डण्टाक एक
खेलि ।
एतनी—एहि अल्प परिमाणक ।
एतने—एतावदेव सं०, एतबे ।
एतवा—एतावत्, एहि परिमाणक ।
एतय—अ० एहिठाम ।
एतीकाल—एतेक समय धरि ।
एतीखन—एतेक क्षण धरि ।
एतेक—एतावत्, एहि परिमाणक ।
एत्ता—इयत्ता ।
एनमेन—अ० हूबहू, ।
एना—अ० इत्थम् सं०, एहि प्रकारँ ।

एनाएनी—अ० हस्तदर्शितदिग-
नुसार ।
एमहर—अ० एहि दिश ।
एमाढ़—नृणविशेष ।
एम्हर—अ० एहि दिश ।
एव—अ० सं० अवधारण । एहि-
प्रसङ्ग वियोजन दष्टव्य ।
एसकर—एकाकी ।
एसकरुआ—दोसर समाहसँ हीन ।
एह—अ० क्रोधार्थक ।
एहन—एतादृश, एकर सन ।
ए
ऐआम—वि० समय ।
ऐँचब—कि० ऐँच् + अब—तिर्यक्
होएब । १ । तिर्यक् करब । २ ।
ऐजन—ओएह व्यक्ति ।
ऐँठ—उच्छिष्ट, हि० जूठ ।
ऐँठकूठ—उच्छिष्ट तत्सम उभय ।
ऐँठकचार—जलमिश्रित अधिक
ऐँठ ।
ऐँठन—धुमाएब ।
ऐँठब—ऐँठ + अब-धुमाएब ।
ऐँठलाह—कथा नहि माननिहार ।
खी० ऐँठलाहि ।
ऐँठा—डोरि, केशबन्धक ।
ऐँठार—उच्छिष्ट फेंकबाक स्थान ।

ऐंठी—ऐंठन ।

ऐंढब—कि० ऐंढ् + अब—घुमा-
एब ।

ऐंढी—पाकक हेतु घुमाएब ।

ऐतिस—अभिमान ।

ऐयाम—वि० समय ।

ऐला—रोगविशेष, छोट मांस
बढ़ल ।

ऐसतैस—क्रोधसँ भयवचन

ऐहब—स्त्री० अविधवा, सधवा ।

ओ

ओ—असौ, परोक्ष निर्देश्य । १।

अ० आओर । २ ।

ओआक—पक्षिविशेष ।

ओआजिव—वि० उचित ।

ओइरी—धानक प्रभेद, सं० नीवार ।

ओकाएब—कि० ओक् + अब—
बमनोपस्थितियुक्त होएब ।ओगरब—कि० ओगर् + अब—
रक्षार्थ लगमे रहब ।ओगरबाह—रक्षक, स्त्री० ओगर
बाहिनी ।

ओगरबाहि—रक्षकता, रक्षा ।

ओगारब—कि० ओगार् + अब—
मालकेँ घास देब ।ओडठन । —जाहिमे सटि पीठक
ओडठनी } भरे बैसी से ।ओडठब—कि० ओडठ् + अब—
पीठक भरे बैसब ।

ओछ—छोट । १। कृपण, नीच । २ ।

ओछओना—आस्तरण ।

ओछाएब—कि० ओछव् + अब—
आस्तरण करब ।ओछाह—नीच प्रकृतिक, स्त्री०
ओछाहि ।

ओज—थोड । अल्पमान शिकस्ती

ओजन—वि० परिमाण ।

ओजी—एबज, प्रतिनिधि ।

ओझराएब—कि० ओझर् + अब
—अनायासेँ उद्धारक अयोग्य
होएब ।

ओझरोट—ओझराएब ।

ओझा—ब्राह्मणक उपाधि १। गुनी २।

ओझैगिरी—यन्त्रमन्त्रप्रयोग ।

ओँटी—वस्ति, नाभिक नीचाँ भाग
(पेटमे) ।

ओठ—ओष्ठ ।

ओठग(ङ) न करब—कि०
कर् + अब—उपवासार्थ
रात्र्यन्तमे भोजन करबओठग(ङ)न } जाहिमे सटि पीठक
ओठग(ङ)नी } भरे बैसी ।ओठग(ङ)व—कि० ओठग् +
अब—पीठक भरे बैसब ।

ओठर—अवेर, अन्तिम समय ।

ओड़नी—डोम आदिक वाद्य
विशेष ।

ओड़हुल—पुष्पविशेष, सं० जपा ।

ओड़िआ—उत्कल, उड़ीसा ।

ओड़िका—दूध लारबाक ओ परसबाक
वस्तुविशेष ।

ओढ़ना—ओढ़बाक वस्त्र ।

ओढ़नाएब—कि० ओढ़न् + अब—
उनटि पनटि सर्वाङ्ग लगाएब ।

ओढ़नी—ओढ़बाक छोट वस्त्र ।

ओढ़ब—कि० ओढ़् + अब—
वस्त्रकेँ देहमे आच्छादनक हेतु
लगाएब ।

ओढ़ुल—सं० जपा, पुष्पविशेष ।

ओतनी—ओहि परिमाणक अल्प ।

ओतने—ओतबे, ओहि अल्प परि-
माणक ।

ओतप्रोत—व्याप्त, भरल ।

ओतवस्थित—तदवस्थित, तद्रूप ।

ओतवा—तत्परिमाणक, तावान् सं० ।

ओतय—अ० ओहिठाम, सं०
तत्र ।

ओतीकाल—ओतबा काल ।

ओतीखन—ओतबाक्षण ।

ओतीराति—ओतेक राति ।

ओतेक—ओहि परिमाणक ।

ओदरब—कि० ओदर् + अब—
विदरण ।

ओदार—विदरण ।

ओदारब—कि० ओदार + अब—
विदारण ।

ओदावर्त—परिच्छेद ।

ओदासोखा—किछु शुष्क किछु
तीतल (वस्त्रादि) ।ओदि—सं० दोहद, गुर्विणीक स्वा-
भाविक रोग ।

ओधि—बाँसक जड़ि ।

ओना—ओहि प्रकारेँ ।

ओनाओनी—अ० हस्तनिर्दिष्ट
दूरसरलदिगनुसार ।

ओफ—रौदक आगर ।

ओबा—हैजा, सं० महामारी ।

ओमहर } अ०—ओहि दिस ।
ओम्हर }

ओर—अन्त

ओरहा—साक्षात् आगिसँ छिम्मडि
सहित पक द्विदल ।

ओराहव—कि० ओराह + अब—
साक्षात् आगिमे शिम्बी सहित
द्विदलक पकाएब ।

ओरि—भारक प्रथमभागक समान
द्वितीय भाग ।

ओरिआएब—कि० ओरिअब् +
अब—वस्तु ठीक करब ।

ओरिआओन—प्रबन्ध, सबील ।

ओल—खाद्य कन्दविशेष, सं०
सूरण ।

ओलकोवी—हि० गाँठ कोबी,
कन्दविशेष ।

ओलतो—ओसारासँ बढल चारक
निचला भूमि ।

ओलब—कि० ओल् + अब—
गर्दा तर करैत हाथ धुमाए
अन्नकेँ उपर आनब ।

ओलरब—कि० ओलर् + अब—
पलरब ।

ओला—अतिसंशोधित वर्तुलाकार
चीनी ।

ओलिआ—सिद्ध बाबाजी ।

ओस—बिनुमेघक आकाशपतित
अति सूक्ष्म तुषार ।

ओसाएब—कि० ओसब् + अब—
बसातसँ अन्नकेँ साफ करब ।

ओसाओन—ओसओनिहारक वे-
तन । १ । ओसयबासँ पृथक्
भेल तृणादि । २ ।

ओसारा—घरक बाह्य अनावृत कोष्ठ
ओसूल—आसादित (आदेय धन) ।

ओसूली—आदेय धनक आसादन ।

ओस्ता—वैद्यविशेष ।

ओस्ताद—वि० कारीगर ।

ओह—अ० खेद ।

ओहदा—वि० पद ।

ओहन—तादृश ।

ओहाएब—कि० ओह् + अब—
बाहब ।

ओहार—आवरण ।

ओहासी—बलिष्ठ भूरससहित जल ।

औ

औआएब—कि० औ + अब—
व्याकुल होएब ।

औक—वमन ।

औखध—औषध ।

औखधार—औषधविधया उप-
योगी ।

औँघी—निद्राक पूर्वरूप ।

औँघाह—औँघीसँ युक्त । स्त्री०

औँघाहि ।

औँटन—दुग्धादिक पाक ।

औँटव—कि० औँट् + अब—दु-
ग्धादिक पाक ।

औँट—वस्त्रादिक प्रान्त ।

औँठा—अँगुठा । १ । अँगुठाक
भूषण । २ ।

औँटी—आँगुरक भूषण । अङ्गुली-
यक ।

औनाएब—कि० औन् + अब—
औलबौल होएब, अनवस्थिति ।

औनापथारी—आकुलतापूर्वक अ-
न्वेषण ।

औन्हव—कि० औन्ह् + अब—
सं० न्युञ्जीकरण ।

औन्हा—मुरगा विशेष ओ बिना मु-
हक गुर १ । वासनक मुखबन्दकए
उपरसँ आगिमे पकाओल फल ।

औन्हापथारी—औनापथारी उठब ।

औन्ही—पाएरक भूषणविशेष, सं०
मञ्जीर ।

औबल—वि० उत्तम ।

औल—गरमी ।

औलबौल—गरमीसँ मनक व्याकु-
लीभाव ।

औषध—सं० भेषज ।

औषधी—चिकित्सा ।

औसव—कि० औस् + अब—
स्नेहलेपन ।

क

कएथा—कन्था ।

कएनिहार—उ० कर्ता । स्त्री
कएनिहारि ।

कएम—कतम, कोन संख्याक पूरक ।

कएल—कृत ।

कओर—कवल, खयबाक प्रमाण-
विशेष ।

कँकड़ोहरि—कँकोड़क बिल ।

ककबा—कङ्कतिक, ककही ।

ककरासिहो—ओषधिविशेष ।

ककरेज } —ओषधिविशेष ।

ककरेजा }

ककरैल—ओषधिविशेष ।

ककहा } —कङ्कतिक, ककबा ।

ककहो }

कँकोड़हाबाजू—बाँहिक भूषण-
विशेष ।

कखन—अ० कोन क्षणमे ।

कखनुक } —कोन क्षणमे भेल ।

कखनुका }

कखहरा—कखप्रभृति शषसहान्त
वर्णमाला ।

कँखौर—कँखक गूर ।

कगजंघ—छोट-पैघ जाँघबाला ।

कँगना—कङ्कण, पहुँचाक स्त्रीभूषण-
विशेष ।

कँगनी—उच्च भूमिक ओर ।
 कँगहिआ—ओषधिविशेष, सं०
 अतिबला ।
 कङ्कना—कङ्कण ।
 कङ्कनी—उच्च भूमिक अन्तभाग ।
 कङ्कहिआ—अतिबला ।
 कङ्काल—शरीरक अस्थिपञ्जर ।
 कच-कच—बालुकायुक्त (भात-
 आदि) ।
 कचकचाएब—कि० कचकच् +
 अब—क्रोधाकुल होएब ।
 कचकचाह—उ० क्रोधस्वभावक ।
 स्त्री० कचकचाहि ।
 कचकब—कि० शिरा दुखाएब ।
 कँचका—कँच प्रभेदक ।
 कँचकुआह—आवासँ उद्धृत किञ्चित्
 अपक्व (मृद्गाण्ड) ।
 कँचकूह—आवासँ उद्धृत अपक्व
 (मृद्गाण्ड) ।
 कचनार—काञ्चनाल, पुष्पविशेष ।
 कचनारी—ओढहूल फूलक प्रभेद ।
 कचब—कि० लग-लग लुओ देब ।
 कचबच करब—कि० बहुत
 बाजब ।
 कचबचिआ—पक्षिविशेष ।

कचरब—कि० असमप्र भक्षण,
 आम आदि बिछु खाएब किछु
 छोडब ।
 कचुरमकूट—अनेक वस्तुक पर्याप्त
 भोजन ।
 कचरा—हाथमे पहिरबाक काचक
 गहना १ । मोट हथजौड २ ।
 कचलोहिआ—परिश्रमसँ देह
 चोरओनिहार ।
 कचहरी—वि० न्यायालय ।
 कचार—थालपानिसँ युक्त (स्थान) ।
 कचारब—कि० प्रक्षालन ।
 कचाल—अधिक थालसँ युक्त
 (स्थान) ।
 कचिआ—खद कटबाक दाँतबाला
 हाँसू १ । कच्ची प्रभेदक (मोति
 आदि) २ ।
 कँचिआएब—ना० कँची + अब—
 कँचीसँ युक्त होएब ।
 कचुआवध—छिन्न-भिन्न काटब ।
 कचुरी—कबै माछुक छबरा १ ।
 जलज तृणविशेष २ ।
 कचूर—कर्चुर, ओषधिविशेष ।
 कचोआवध—छिन्न-भिन्न काटब ।
 कचोट } —पश्चात्ताप ।
 कचोट }

कचौरी—दालिसँ युक्त पूरी ।
 कच्ची—नकली, अवास्तविक (मोति
 आदि) ।
 कचू—कार्यमे अयोग्य, कार्य
 करबामे अपरिपक्व ।
 कच्छाछोप—भरि जाँघ (जल) ।
 कछुटा—कच्छटिका, नछोटा ।
 कछनो काटब—कि० कछ् +
 अब—व्याजसँ अवस्थान्तरक
 चेष्टा करब ।
 कछब—कि० व्याजचेष्टा करब ।
 कछवी—काछुक समा (पिलही) ।
 कछमछकरब—कि० स्थिर नहि
 रहब ।
 कछमछाएब—कि० कछमछ् +
 अब—कच्छपमत्स्यवत् स्थिर
 नहि रहब ।
 कछमछी—अस्थैर्य ।
 कछार—अन्नविशेष ।
 कछुआडाबर—काछुक उदरा-
 कार डाबर ।
 कछुआपीठ—कच्छपपृष्ठाकार
 (भूमि) ।
 कछुबी—काछुक समानाकार गोल
 (पिलही) ।
 कछेर—जलक प्रान्त, तट ।

कछोटा—कच्छटिका, कच्छी ।
 कछौर—शुष्क पुरैनिक पातक बोझ ।
 कजरगौर—धान्यविशेष ।
 कजरङ्गी—कारी गाए । कज्जलाङ्गी ।
 कजरी—जमल पिच्छड़ जलविकार
 १ कज्जल २ धान्यविशेष ३ ।
 कजरोट—पैघ कजरीटी १ तत्सदृश
 भूषणविशेष २ ।
 कजरौटी—काजरक पात्रविशेष ।
 कजला—बटेरक प्रभेद ।
 कजली—कज्जल, अग्निशिखा
 विकार ।
 कज्जी—वि० अङ्गवैगुण्यसँ अक्षम ।
 कञ्चटक—कानमे मारब १ सुखा-
 एल काठमे उत्पन्न ओषधि
 विशेष ।
 कञ्चगति—अ० कञ्चाक हिसाबे ।
 कञ्चा—पैसा, पण ।
 कञ्च—कच्ची सं०, कन्दसम्भव शाक
 विशेष ।
 कञ्छब—कि० पेट किञ्चित् दर्द
 युक्त होएब ।
 कञ्छी काटब—कि० कट् + अब—
 परोक्ष देने (चिलब) ।
 कट—अवधि

कटकटाएब—क्रि० कटकट् +
अब—कटकट शब्द करब
(दाँत कटकटाएब रोग थीक) ।
कटको—पातर काठी ।
कटकुट करब—क्रि० अस्थिर
विचार करब ।
कटकेना—बन्धकी ।
कटगर—उ० नीक काटबाला,
सुन्दर । स्त्री कटगरि ।
कटगैनी—कण्टकारी, ओषधिविशेष ।
कटनिआँ—तटक कटनाइ ।
कटनी—कटनाइ, सं० कर्त्तन, धन-
कटनी ।
कटनौत—काटल वस्तुक बनाओल
(तौमन) ।
कटव—क्रि० छिन्न होएब ।
कटबन्धक—छोड़एबाक कटसँ
युक्त बन्धक ।
कटबी बाजू—अलङ्करणविशेष ।
कटमट करब—क्रि० क्षोद-क्षेम
करब ।
कटमटी—क्षाद-क्षेम ।
कटरा—कटाह (घोड़ा) ।
कटसरि—कण्टभूषण, काँट ।
कटहर—कण्टकिफल, पनस, फल-
विशेष ।

कँटहा—काँटबाला १ कँटाह प्रभे-
दक. २ ।
कटाउझ—परस्पर दाँतसँ काटब
(कुकुर आदिक) ।
कटाओ—कषण, काटब । यथा
कौशिकी बहुत कटाओ करैत
छथि ।
कटार—अस्त्रविशेष, खोड़ेआ १
वृक्षविशेष २ ।
कटारि—अधिक कटाओ ।
कटारी—अस्त्रविशेष ।
कटाह—दाँतसँ कटनिहार (कुकुर-
प्रभृति) ।
कँटाह—अधिक काँटबाला ।
कटैया—काँटबाला क्षुपविशेष ।
कटौझ—कुकुर आदिक परस्पर
दाँतसँ काटब ।
कटोरी—कटोरिका सं०, पूड़ी ।
कट्टर—अत्यन्त दृढ़ (मनुष्य) ।
कट्टू—लड़ाइमे हारि गेल, (बटेर-
आदि) ।
कट्टा—बिगहाक बीसम अंश ।
कटकेरा—पकलहु पर कठोर रह-
निहार वा आँठीबाला केरा ।
कठकोकाँड़ि—अतिदृढ़ (निन्दामे)
कठखोधी—काठ खोधनिहार एक
पक्षी ।

कठगर—कठोर (फलादि) ।
कठताल—वाद्यविशेष ।
कठधारा—न्यून बटिखारासँ हेरी-
फेरी कए साधित बृहत् परिमाण ।
कठपीरी—पीताम्लानक, पुष्प-
विशेष ।
कठपुतरी—काठक पुतरी, काष्ठ-
पुत्तलिका ।
कठबाद—बकबाद, वितण्डा ।
कठघादी—कठबाद कएनिहार ।
कठबाप—जन्मदातासँ अन्य मताक
स्वामी ।
कठबेङ्क—बेङ्कक प्रभेद ।
कठबेली—बेली फूलक प्रभेद ।
कठम—गुलगुल नहि भेल, पक्व
कठिन फल ।
कठमाम—विमाताक भ्राता ।
कठरा—वाद्यादिक शरीर, ठठुर १
'इजलास लग वादी-प्रतिवादीक
ठाढ़ होएबाक स्थान २ ।
कठरिआ—रङ्गविशेष १ ताहिसँ
रङ्गल वस्त्र २ ।
कठलाज—कृत्रिम लज्जा ।
कठहर—कण्टकिफल, पनस ।
कठहँसी—कृत्रिमहास, हास्याभास ।
कठाइन—गन्ध विशेष १ तद्युक्त

वस्तु २ ।
कठार—अस्त्रविशेष ।
कठाल—गाछ कटबाक स्थान,
काष्ठालय ।
कठिआरी—दाहक स्थान १ पसा-
रीसँ ग्राह्य वार्षिक कर २ ।
कठिन—सं० कठोर १ कष्टसाध्य २ ।
कठिनाएब—ना० कठिन + अब—
कठिन होएब ।
कठिनाह—किञ्चित् कठिन ।
कठुआएब—क्रि० कठु + अब—
शैत्यसँ काष्ठप्राय होएब ।
कठुपेनी—काष्ठप्राय होएब ।
कठुली—छोट कोठी ।
कठैत—सर्पविशेष ।
कठोर—सं० सकत ।
कठोह—कठोर ।
कठोहि—काठमे रहनिहार बैंग वा
साप ।
कठौत—काठक पात्रविशेष ।
कड़कड़ाएब—क्रि० कड़कड़ +
अब—कड़कड़ शब्द करब ।
कड़कव—क्रि० क्रोधसँ उत्कट
क्रियेच्छा ।
कड़गर—अत्यन्त कड़ा ।

कडरब—क्रि० बड़दक दाँत कड़कड़ा-
एब १ ककरो उन्नतिक बारंबार
उल्लेख करब २ ।

कडरा—ककर, पक्षिविशेष ।

कडरि—कदली, केराक गाछ ।

कडहर—खाद्य जलीय कन्दविशेष ।

कडहा—कवाथ ।

कडही—अधिक दही दए बनाओल
झोर ।

कडा—सकत, कठिन ।

कडाङ्गुल—बृहदाकार पक्षिविशेष ।

कडाम—दाउनिमे पाँती जोरसँ
बड़दके बन्हवाक रस्सा ।

कडार—व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।

कडारी—व्यवस्थाबाला ।

कडो—शुद्धला १ कोठाक छतक
छोटका चौपहल काठ २ ।

कडुआइ—कटुता ।

कडू—कटु, खएबामे कटुरस ।

कडूतेल—सरिसबक वारैचीक तेल ।

कडोरिआ—जातिविशेष ।

कडो—दहीक घोरमे बनाओल
तीमन ।

कण्टहा—पुं० पात्र, श्राद्धमे पाएर
पुजओनिहार ब्राह्मण ।

कण्टि—कन्ति, परिमाणविशेष ।

कण्टिरवा—उ० छोट नेना । स्त्री०
कण्टिरबी ।

कण्ठ—सं० शरीरावयवविशेष ।

कण्ठगत—सं० कण्ठ मे आएल ।

कण्ठदाह—सं० कण्ठक जलनि ।

कण्ठपुष्पी—ओषधिविशेष ।

कण्ठमलिआ—कण्ठीधारी, बाबाजी ।

कण्ठा—कण्ठक पैघ दानाक छोट माला ।

कण्ठिआ—कण्ठीधारी बाबाजी ।

कण्ठी—कण्ठमे पहिरबाक तुलसीक
माला ।

कण्डरिपँताकब—क्रि० तक् +
अब—कटाक्ष-वीक्षण ।

कण्डली—वृक्षविशेष, शिशु
कन्दली ।

कण्डा—शरकाण्ड, सरकाण्ड ।

कतका—कातमे स्थित ।

कतनी } —किपरिमाणक अल्प ।
कतने }

कतवा—कियत् सं०, किपरिमाणक ।

कतवाहि—तटसमीपक जलभूमि ।

कतय—अ० कुत्र सं०, कोनस्थानमे ।

कतरनी—कर्तरी, पान कतरबाक
वंशरचित अन्न ।

कतरब—क्रि० कर्तन, कैचीपँ
काटब ।

कतरा—कतरक, यथा सुपारीक
कतरा १ मत्स्यविशेष २

उशीर, तृणविशेष ३ ।

कतरी—मत्स्यविशेष ।

कतहु—अ० कोनो स्थानमे,
क्वचित् ।

कतिआ—काती, अस्त्रविशेष ।

कतिकहर—कार्तिक तथा
तत्समीपक समय ।

कतिका—धान्यविशेष ।

कतिकावतर—कार्तिकावतारसमय
ओ तत्समीप पूर्व समय ।

कतिकी—कार्तिकमे होएनिहार
(ग्राम आदि)

कतीकाल—कियत्, काल ।

कतीखन—कियत्क्षण ।

कतीराति—कियद्वात्रि ।

कतेक—कियत्, किपरिमाणक ।

कतोक—कतिपय ।

कत्तल—कृत्त, काटल ।

कत्ता—काता, हाँसूक प्रभेद ।

कथ—कपित्थ, फलविशेष ।

कथकड़—बहुत कथा जननिहार ।

कथा—कथन १ दुर्वचन २

इतिहास ३ ।

कथोपकथन—नाना प्रकारक
निन्द्य उत्तरप्रत्युत्तर ।

कदन्न—सं० अधजाह अन्न ।

कदबा—कर्म, खेतक कादो ।

कदबापखार—कदबाक अनवशेष ।

कदम—कदम्ब, वृक्षविशेष १
घोडाक गतिविशेष २ ।

कदम्ब—सं० वृक्षविशेष ।

कदराएब—क्रि० कदर + अब
शीतसँ भीत होएब ।

कदरिआएब—ना० कदरी ×

अब, शीत भीत होयब ।

कदरी—शीतसँ भीत ।

कदीमा—पीतकृष्णमाण्ड, लताफल-
विशेष ।

कदूकस—सजमनि प्रभृति केँ मेही
बनयबाक सच्छिद्र वस्तु-
विशेष ।

कदै—थाक्षमिश्रित जल ।

कन—कण, १ फल वा अन्नक
आनुमानिक परिमाण ।

कनउसास—खेतक किंचित् ऊँच
भाग १ भारी उठएबा
मे मइति २

कनकजीर—धान्यविशेष ।

कनकट—उ० ऊकर कान काटल हो । स्त्री० कनकटि ।
 कनकट्टा—उ० अनादियमाख काटल कानवाला । स्त्री० कनकट्टी ।
 कनकट्टू—पु० काटल कानवाला आदर विषय ।
 कनकन—शीत ।
 कनकन करब—मारवाक उत्साह करब ।
 कनकनाएब—क्रि० कनकन् + अब—वेदनाविशेष ।
 कनकनी—वेदनाविशेष । शीतसा २ ।
 कनकुत्ती—जे खेत बराबरि कृत कएल जाए ।
 कनखरल—कानि कएने स्थित ।
 कनखा—फुटल भाँसक टुकड़ा ।
 कनखी—छोट कनखा । चाउर आवि अन्नक टूटल अग्र-भाग २ आँखिक हसारा ३ ।
 कनखुर—माखक कर्णाकार अङ्ग ।
 कनखुराह—उ० खोचाह । उपद्रव कएनिहार २
 कनगुरिआ—कनिष्ठा, सभसँ छोट आँपुर ।

कनगोज {—कीट विशेष १
 कगोजर { कानक मूल भाग २ ।
 कनचटक—कानक उपरका घाओ १ ओकर औषधविशेष २ कानमे मारब ३ ।
 कनछी-काटब—क्रि० कट् + अब—परोक्ष बाट धरब ।
 कनछेदी—कर्णवेध ।
 कनकप्पा—कान रूपनिहार (टोपी) ।
 कनतोप—चुपकी, मौन ।
 कननमुह—उ० कन्दनक पूर्व रूपायन मुहवाला स्त्री० कननमुहि ।
 कनना—उ० अधिक कन्दन-शील । स्त्री० कननी ।
 कनपट्टी—कान ओ नेत्रक मध्यभाग ।
 कनफट्टा—संन्यासीक प्रभेद ।
 कनफुसही {—कान लग
 कनफुस्सी { सुस्तेसँ कहब ।
 (निन्दा में)
 कनघधा—मुख्य बाध सँ अन्यत्र थोड़ खेत ।
 कनघह—अप्रधान बाहा ।
 कनघहार—गतायात शून्य बहार ।

कनमन करब—क्रि० { मारवाक
 कनमनाएब—क्रि० { चेष्टा
 करब ।
 कनमा—सेरक षोडशांश प्रमाण, छुँटाक हि० ।
 कनम ही—एक कनमाक बटिखारा वा पैली ।
 कनमुनिआँ—कनमुन्ना कएनिहार ।
 कनमुन्ना—खेड़ि मे असत्य व्यवहार ।
 कनरी—उपादल गाछक सीर सहित माटि ।
 कनसार—भूजाक स्थान ।
 कनसुन—अन्यमनस्क, कर्णशून्य ।
 कनसुपती—बाँसक शूर्पाकार बलकल ।
 कनात—परदाक हेतु आवरण पटविशेष ।
 कनाती—परदाक टाट ।
 कनारि मारब—क्रि० मार + अब—जोर सँ चिकरब ।
 कनारोहट {—अतिकन्दन ।
 कनारोहठ {
 कनाह—उ०काण, एक आँखि

सँ दर्शन शक्ति शून्य ।
 स्त्री० कनाहि ।
 कनिआँ—स्त्री० कन्या, अविवा-हिता वा नवविवाहिता ।
 कनिआँ पुतरा—कपड़ाक स्त्री पुरुष ।
 कनिआरि—वृत्त विशेष ।
 कनिएँ—किञ्चित् ।
 कनिआँ—स्त्री० कन्या, अविवा-हिता । वा नवविवाहिता २ ।
 कनियाँ पुतरा—क्रीडार्थ बख निर्मित स्त्री पुरुष ।
 कनियँ—किञ्चित्, अल्प ।
 कनीटा—स्वल्प प्रमाणक ।
 कनेआ—स्त्री० कन्या ।
 कनेआँ पुतरा—कनिआँ पुतरा ।
 कनेक—किञ्चित् ।
 कनेब—क्रि० ऐँ ठिके कान्ह घुमाएब ।
 कनैठी—कानक ऐँ ठव ।
 कनैल—कर्षिकार, पुष्पविशेष ।
 कनैली—कानक भूषणविशेष ।
 कनोजरि—ठारिक अङ्कुर ।
 कनोजिआ—ब्राह्मणजाति-विशेष ।

कनोत—खाम्ह खाम्हक उपरका
वस्तु मे बन्धन ।

कनोतब—क्रि० खाम्ह खाम्हके
उपरका सँ बान्हब ।

कनौसी—कर्णाङ्गुश, भूषण
विशेष ।

कन्ताकनैल—पुष्पविशेष ।

कन्ति—परिमाणविशेष ।

कन्तोड़—मझूपा, बन्द कए वस्तु
रखबाक काष्ठद्विचित्र पात्र
विशेष ।

कन्तोड़ी—छोट कन्तोड़ ।

कन्तोप—चुपकी, मौन ।

कन्था—सं० गुदड़ी ।

कन्न कन्न करब—क्रि०

मारबाक हेतु कसमस करब ।

कन्न—खेड़ि मे अनौचित्य ।

शाकविशेष २ ।

कन्ती—रत्नादिक टुकड़ा ।

कण २ ।

कन्या—सं० पुत्री ।

कन्यागत—कन्या दिसक लोक ।

कन्यादान—सं० कन्याक दान,
विवाह ।

कन्हार—दड़ कन्हसँ युक्त ।

कन्हुआएब—क्रि० कन्हु X
भव—क्रोधसँ कुटिलवीक्षण ।

कन्हैठब—क्रि० कान्हपर
लादब ।

कन्हैर—तट ।

कन्हौर—कान्हक वहनप्रयुक्त
मांसवृद्धि ।

कपचब—क्रि० कैंचीसँ केशादिक
काटब ।

कपट—सं० छल ।

कपट—सं० छली, ठक ।

कपड़—हिं० वस्त्र ।

कपड़िया—पु० बाबाजीक पूभेद ।

कपनी—कम्प ।

कपब—क्रि० कम्पन ।

कपहा—कापवाला (तृण) ।

कपार—ललाट ।

कपाह—काप X आह—किंचित्
कापसँ युक्त ।

कपिली—कपिल गाय, कैल गाय ।

कपुतनेइहा—पु० कुपुत्र, नेवहा
सन अकार्यक पुत्र
(निन्दामे)

कपूत—पु० हिं० कुपुत्र ।

कप्पा—वस्त्रक छोट खण्ड ।

कफ—सं० श्लेष्मा ।

कफनचोर—वि० मुरदाक नूआ
चोरओनिहार ।

कफाह—उ० कफी । स्त्री कफाहि
१ कफकारक (खाद्यवस्तु) २ ।

कवइ—कवयी, मत्स्यविशेष ।

कवकव—खण्डापर मुहमें कुच
कुची लगओनिहार (ओल
कन्चु प्रभृति)

कवकाएब—क्रि० कवकव +
अब—ओल आदिक भङ्गसँ
विकारविशेषयुक्त होएब ।

कवकी—ओल आदिक सम्बन्ध
जन्यविकारविशेष ।

कवजंघ—उ० छोट पैघ पाएरवाला
स्त्री० कवजङ्घि ।

कवजा—दू काठक संयोजक

लौहादि निर्मित पैचवाला
वस्तुविशेष १ पहुँचा २
स्वाधीनता ३ ।

कवडील—क्रीडाविशेष ।

कवाएब—क्रि० कच् + अब—
आवाक तावेँ वा आनो प्रकारेँ
दरकयुक्त होएब ।

कवाछु—कपिकच्छु, विषवाला
लताविशेष ।

कवाड़—कपाट ।

कवाला—वि० विक्रय पत्रविशेष ।

कवाहटि—कठिनता, असौकर्य ।

कविता—कविकर्म, कवित्व आदि ।

कविताम—काव्याकार काव्य—
भिन्न (लेख)

कवित्त—छन्दविशेष ।

कवीर—रागबद्ध होरीक गारि ।

कवीला—काम्पिल ।

कबुलचोर—उ० स्वीकारक अच-
सरपर नठनिहार, स्त्री०

कबुलचोरनी ।

कबुला—पूर्व अङ्गीकार ।

कबुलापाती—देवाराधनाक पूर्व
अङ्गीकार ओ सम्प्रति आच-
रण उभय ।

कबूल—वि० स्वीकार ।

कवुची—उपद्रावक ।

कबुचची

कवै—कवयी, मत्स्यविशेष ।

कवू—बटेर रखबाक पिजड़ा ।

कम—अल्प ।

कमचा—छुरिकाकार तीक्ष्ण
बाती ।

कमचालि—मन्त्रगात्री, कम-
चलनिहार ।

कमची—छोट कमचा ।

कमठाइनि । —नृणरहित करष ।
कमठान ।

कमण्डल—कमण्डलु ।

कमण्डलु—सं० जलपात्रविशेष ।

कमतिआ—पु० खेतक कार्यमे
नियुक्त भृत्य ।

कमती—अल्पता ।

कमब—क्रि० अल्प होएब ।

कमरकस—डोँडक भूषणविशेष,
मेखडा ।

कमरख—कर्मरङ्ग, फलविशेष ।

कमरसारि—कर्मकारशाला,
कमारक कार्यालय ।

कमरा—वि० कोठली ।

कमरिआ—पु० एकपूकारक
बाबाजी ।

कमरी—कटहरक कोमे सटल
कोसदश १ घोडाक
रोगविशेष २ ।

कमल—सं० पद्म १ कमल २
न्यूनीभूत ३ ।

कमलगट्टा—ठाठमे मसालक हेतु
माटिक चिलम सन १

कमलाच २ ।

कमलपत्री—कमलक पातक
समान रङ्ग ।

कमला—स्त्री. नदीविशेष ।

नेत्ररोगविशेष, कामला १

कमलाच—सं० कमलक बीआ

कमसरही—स्वल्पकरक, जा
जमीनक मालगुजारी

थोड़ हो ।

कमसल—वि० नकली

अतात्त्विक ।

कमहिआ—कामहि, कार्यहीन ।

कमाइ—कमएबाक वेतन ।

कमाएब २ ।

कमाएब—क्रि० कम + अब—
अर्जन १ खेतसँ नृणादि

हुँटाएब २ ।

कमानो—छाता चसमा आदि
लागल तार १ अण्डको

बन्हबाक यन्त्र २ ।

कमार—उ० कर्मकार, काठक कार
कएनिहार । स्त्री० कमैनि ।

कमालि—पसारीक वार्षिक निश्चि

देय ।

कमासुत—कर्मासक्त, कमएबा
पूर्ण प्रवृत्त ।

कमी—न्यूनता ।

कमीला—औषधविशेष ।

कमैनि—स्त्री० कमार जातिकस्त्री

कमोट—पसारीक वार्षिक नियत
कमाई अन्न ।

कम्पास—पत्ती बन्नुएबाक यन्त्र ।

कम्बल—सं० भेडाक रोमक आसन
वा ओढ़ना ।

कम्म—अल्प ।

कम्मल—कम्बल ।

कम्मी—अल्पता ।

कयनिहार—उ० कर् + अनि—

हार—कर्ता, स्त्री० कयनिहारि ।

कयम—कृतम, कोन संख्याक
पूरक ।

कयल—कर् + अल—कृत ।

कर—कवल, घास, कओर १

खप्पा २ ।

करकर करब—क्रि० आनक
अप्रिय बाजब ।

करकराएब—क्रि० करकर +

अब—करकर शब्द करब ।

करकरेज—औषधविशेष ।

करकुटुमैती—विवाहादि सम्बन्ध ।

करगर—उ० पैघ-पैघ कर खए-

निहार । स्त्री० करगरि ।

करची—वंशशाखा ।

करछु—धातुरचित दवी ।

करछुली } —छोट करछु ।

करछुल्ली }

करजनी—करज, औषधि
विशेष ।

करजान—कदल्युधान, केराक
गाछक स्थान ।

करजोड़ी—पानक प्रभेद ।

करनी—क्रिया १ सुरपीसन

लेबबाक साधनविशेष २ ।

करब—क्रि० करण ।

करवीर—सं० पुष्पविशेष ।

करम—कर्म १ अदृष्ट २ ।

करमसह—अ० क्रमशः ।

करमसाँढ़—भाग्यवान् ।

करमा—धान्यविशेष ।

करमी—कलम्बी, लताविशेष ।

करलत—बन्धनोपयोगी दृढ़

लताविशेष ।

करसी—सुखाएल गोबर ।

करहड़—करहाट, कन्दविशेष ।

कराओ—कलाय, अन्नविशेष ।

करामाति—वि० युक्ति ।

करामाती—वि० युक्ति कएनि-

हार ।

कराह—फटाह, पैघ कराही ।

कराहब—क्रि० दुःखसँ कहब ।

कराही—माटिक छोट कराह ।

करिअंमा—जे पकलहुपर हरिअर

रहए सँ आम ।

करिआ—कारी प्रभेदक ।
 करिआएब—ना० कारी + अब
 कारी होएब ।
 करिआ भाँप—ओषधिविशेष ।
 करिआभुमरि—स्तोक क्रीडा-
 विशेष ।
 करिआरी—कलिकारी, ओषधि-
 विशेष ।
 करिआँ छ—ईषत् कृष्ण ।
 करिआँतआबाद { —फागुन
 करिआँतीआबाद { चैतमेछाँटिके
 आबाद ।
 करिआ—उ० कारी प्रभेदक ।
 स्त्री० करिकी ।
 करिछाँह—उ० किञ्चित् कारी ।
 स्त्री० करिछाँहि ।
 करिछोह—किञ्चित् कारी ।
 करिनपट { —करीनसँ पटए-
 करिनबह { बाक बाहा ।
 करिनबाह—पु० करीन पटओ-
 निहार ।
 करिनबाहि—करीन पटओनाह ।
 करिहारी—ओषधिविशेष ।
 करीन—पानि पटएबाक गहीँह
 लगबा पात्र ।
 करीब—वि० लगभग ।
 करुआरि—नाओ खेबबाक

साधन ।
 करेज { —हृदयाभ्यन्तरक
 करेजा { मांसपिण्डविशेष ।
 करैत—सर्पविशेष ।
 करैल { —कारवेल, जत्तीमे
 करैला { फड़निहार फलविशेष ।
 करोट—पार्श्व ।
 करोना—करमर्द, अमलफल
 विशेष ।
 कर्करेज—ओषधिविशेष ।
 वर्णफूल—कानक पुष्पाकार
 अलङ्करण ।
 कर्णवेध—स० कनछेदी, कानमे
 छिद्र करब ।
 कर्ज { —वि० ऋण ।
 कर्जा {
 कर्जान—कदलीक उद्यान, केराक
 गाछी ।
 कर्तव्यता—स० विवाहादि
 क्रिया ।
 कर्त्ता—स० कण्ठनिहार ।
 श्राद्धकर्ता २ ।
 कर्नाल—वाद्यविशेष ।
 कर्पूर—स० कपूर हि० ।
 कर्म—स० क्रिया । अदिष्ट २ ।
 कर्मकाण्डी—स० शास्त्रोक्त
 क्रिया कण्ठनिहार ।

कर्मसाँह—भाग्यवान् ।
 कर्माधर्मा—सं० भाद्र शुक्लक
 एकादशी ।
 करी—बनगोइठा ।
 करी छाउर—बनगोइठाक
 छाउर ।
 करीआ—वृक्षनाशक कीट
 विशेष ।
 कल—यन्त्र १ निचेनी,
 शान्ति २ ।
 कलकल करब—क्रि० अतिबुभुचा
 जनाएब ।
 कलकलाएब—क्रि० अति बुभुचा
 जनाएब ।
 कलकलि—पामा, रोगविशेष ।
 कलकली—अति बुभुचा ।
 कलकोसल—अ० करकौसल सँ,
 सुस्ते सँ ।
 कलगी—पागक अङ्गविशेष ।
 कलगैआँ—लोटाक प्रभेद ।
 कल जोरब—क्रि० दुइ हाथ
 जोड़ब ।
 कलजोड़िआ—शाकविशेष ।
 अञ्जल्याकारक (पान) २ ।

कलपनाथ—ओषधिविशेष ।
 कलपब—क्रि० कलपू × अब—
 अति दैन्यक प्रकाश करब ।
 कलबल—अ० चेष्टा नहि करैत,
 चुप्प ।
 कलबाड़—जातिविशेष ।
 कलम—लेखनी १ वि० गाछ मे
 गाछक जोड़ २ ।
 कलमकाठी—कलमयोग्य खड्की-
 सन एक गाछ १ धान्य
 विशेष २ ।
 कलमदान—वि० मसि लेखनी
 रखबाक पात्र ।
 कलमबाग—वि० वृक्षान्तर मे
 जोड़ल गाछक समूह ।
 कलमी—वि० कलमक (ग्राम),
 राजाग्र ।
 कलर—उ० निःस्व, खाद्यान्नाद्य-
 विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री०
 कलरनी ।
 कलस—कलश, घट ।
 कलसस्थापन—सविधि
 घटस्थापन ।
 कलसा—देवघट ।
 कलसी—छोट देवघट ।
 कलह—स० झगडा ।

कलहन्त—कलहान्त, भगदा पर्यन्त ।
 कलाबत्तू { —आभूषण मे लग-
 एबाक सोनाचानीक
 कलाबत्तू { तार १ तार सँ
 मड़ल डोरी २ ।
 कलाल—जातिविशेष ।
 कली—कलिका ।
 कसेजा—उरस्थ अङ्गविशेष ।
 सामर्थ्य २ ।
 कलेस—बलेश ।
 कलोल—घोल, कोलाहल ।
 कलौ—मध्याह्नक भोजन ।
 कललर—उ० निःस्व, खद्याखाद्य
 विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री०
 कलरनी ।
 कल्ला—दौत ६ आधार
 कलली—कलिका, फूलक प्रङ्कुर ।
 कलहुका—जे कलिह भेल वा
 होएत तकर प्रभेद ।
 कष्ट—स० दुःख ।
 कसकसाएव—क्रि० कसकस् +
 अब—सकत होएब ।
 कसकूट—धात्वन्तर मिश्रित
 कांस्य ।
 कसब—क्रि० दड़ करब १ कसौटी

मे घषण २ बोरा आदि मे
 धान्यादिक भरब ३ घोड़ा
 सुसजित करब ४ ।
 कसमस करब—क्रि० उकस-
 पाकस करब, अस्थैर्य ।
 कसमसाएव—क्रि० कसमस् +
 अब—अस्थैर्य ।
 कसरति—वि० व्यायाम ।
 कसरात—वि० हिसाबक शेष ।
 कसरि—वि० सिद्धि मे किञ्चित्
 क्रियाक शेष ।
 कसहँड़ी—पितृक लोहिआ,
 व्यञ्जनपाकपात्र ।
 कसाइ—बधकर्ता, चाण्डाल ।
 कसाए—कचूरक चूर्णमिश्रित
 यवक चूर्ण ।
 कसामसी—अनवकाशता,
 कसामस्ती—सिकस्ती ।
 कसाय—सुगन्धित कचूर आदिक
 चूर्ण ।
 कसीदा—वि० वस्त्र पर सुइ सँ
 निर्मित चित्त ।
 कसीस—रङ्गकसीस, रङ्गक द्रव्य
 विशेष ।
 कसूर—वि० अपराध ।
 कसूरी—वि० अपराधी ।

कसेरा—उ० बरतन बेचनिहार ।
 जातिविशेष ।
 वसेरनी—स्त्री० कसेरा जातिक
 स्त्री ।
 कसैआ—पु० व्याध, बड़दक
 अण्डकोष कटनिहार ।
 कसोन्ह—धान्यविशेष ।
 कसौटी—निकष, स्वर्णपरीक्षाक
 प्रस्तरविशेष ।
 कस्तर—अपाकरणीय तृणादि ।
 कहब—क्रि० कथन ।
 कहबो—लोकोक्ति ।
 कहर—अनर्थ ।
 कहरव—क्रि० दुःखे 'अहँ अहँ'
 इत्यादि शब्द करब ।
 कहरवा—पु० कहार + वा—
 अनादरणीय कहार ।
 कहाँ—अ० कुत्र, कोन स्थानमे १
 निषेध २ ।
 कहाओत—द्विरागमनक पूर्व दिन
 कहबाक हेतु भार १ वि०
 दुर्भित्त २ ।
 कहाँदन—अ० अज्ञात स्थानमे ।
 कहाँधरि—अ० किमवधि, कहाँ
 तक हि० ।
 कहार—उ० शिविकावाहक जाति-

विशेष ।

कहारनी—स्त्री० कहारक स्त्री ।
 कहारी—कहारक कर्म,
 शिविकावाहन ।
 कहाँसँ—अ० कोन स्थान सँ ।
 कहासुनी—परस्पर कहब-सुनब ।
 कहिआ—अ० कोन कालमे ।
 प्राकृत—कइआ ।
 कहुआ—वृत्तविशेष ।
 कहुखन—अ० कोनहु छणमे ।
 काइनि—कानि, अभ्यन्तर स्थापित
 क्रोध ।
 काइल—उ० वि० वादमे प्रमाण
 सँ मिथ्यावादी निश्चित ।
 स्त्री० काइलि ।
 काउन } कङ्कु, अन्नविशेष ।
 काउनि }
 काएथ—उ० कायस्थ, जाति-
 विशेष । स्त्री० कैथिनि ।
 काकरासिंगी—श्लेषधिविशेष ।
 काँकड़ि—फलविशेष ।
 काकमाची—श्लेषधिविशेष ।
 काका—उ० पितृव्य । पितृव्यक
 स्त्री० काकी ।
 काँकोड़—ककडी, जन्तुविशेष ।
 काँख—कच, बगल हि० ।

काँखी—पातक लगसँ चलल तमाकू आदिक डाँट ।

काग—अयुरम ।

कागज—वि० पत्र, बनाओल पात ।

कागजी—हिसाब-किताबमे पटु । नेबोक प्रभेद २ बदामक प्रभेद ३ ।

कागत—वि० कागज, पत्र ।

कागदोस्त—वि० क्रीड़ाविशेष ।

कागातूआ—पक्षिविशेष ।

काङक्षा—सं० इच्छा ।

काच—सं० सीसा ।

काचनोन—काचलवण ।

काँच—अपक्व (फलादि) ।

काँची—नेत्रविकार ।

काछ—कच्छ, अङ्गविशेष ।

काछव—क्रि० कछ + अब—अवस्थान्तरक चेष्टा करब । हाथक निचला भाग लगाए घृतादिक उद्धार २ ।

काछु—कच्छप ।

काज—कार्य ।

काजबूत—कार्यादि ।

काजर—कज्जल, अङ्गन ।

काँजी—फल विशेष ।

काजुल—उ० कार्यपटु । स्त्री० काजुलि ।

काजू—फलविशेष ।

काञ्चुन—आकारक मात्रा ।

काट—आकार १ विद्वेष २ छेदन ३ ।

काँट—कण्टक १ गरदनिक भूषण २ ।

काँटकूस—कण्टकादि ।

काटछाँट—खण्डन-मण्डन ।

कटव—क्रि० कट् + अब—छेदन ।

काँटा—लोहाक कील ।

काटि—तेलक विकार ।

काँटी—छोट लौहशङ्कु ।

काठ—काष्ठ ।

काठी—छोट पातर काष्ठ ।

काँड़—बोझक राशि ।

काड़ा—पाएक भूषणविशेष । काड़ाबीड़ी—पानक एक प्रकारक बीड़ी ।

काँड़ि—मालकेँ औषध पिअए-बाक चोँगा ।

काढ़व—क्रि० कढ़् + अब—पाक-पात्रसँ उद्धार करब ।

काढ़ा—क्वाथ ।

कात—दिश १ पोखरि आदिक

समीप देश २ बाह्य ३ ।

कातकरोट—कात वा ताहुसँ बाह्य ।

कातर—उ० सं० कदरी, कार्य-भीरु स्त्री० कातरि ।

काँति—ग्लह, हारिमे देय धन १ कान्ति २ ।

कातिक—कार्तिक ।

कातिव—वि० प्रमाणपत्र लिखनिहार ।

काँती—कर्त्री, छोट खड्ग ।

कादर—कातर ।

कादो—कदम, पाँक, कदवा ।

कान—कर्ण, श्रवणेन्द्रिय १ कर्णशङ्कुभी २ ।

कानकुहुड़ाएब—क्रि० कुकुह् + अब—कान कुड़िआएब ।

कानटनकब—क्रि० कानक व्यथा ।

कानपाथव—क्रि० पथ् + अब—सुनबाक हेतु कान एकाग्र करब ।

कानब—क्रि० कन् + अब—क्रन्दन ।

कानब-खीजब—क्रि० कन् + अब, खिज + अब—रोदन ओ शोकजन्य चेष्टान्तर ।

कानर—करीन पटएबाक हेतु कोइल जलाधार ।

काना—शाकविशेष ।

कानाकानी—परस्परकोप ।

कानारोहट { —अधिक क्रन्दन ।
कानारोहठ {

कानि—सञ्चित कोप, ईर्ष्या

कानी—कानलग विन्यस्त राखल केश ।

कानू—उ० जातिविशेष । स्त्री० कानूनि ।

कानून—वि० नियम, न्याय ।

कानोकान—अ० कान पर्यन्त, कन्हेर धरि ।

कान्ति—सं० शोभा ।

कान्ती—माटि मिलाएकेँ बना-ओल (लोहक लोडिया)

कान्ह—स्कन्ध ।

काप—तीक्ष्ण तृणादिसँ खचाक भेड़ ।

कापव—क्रि० कप् + अब—कम्पन ।

कापा—कप्पा, वस्त्रखण्ड ।

कापी—वि० नाथल कागत ।

काफर—कटफल, ओषधिविशेष ।

काफी—वि० पर्याप्त ।

काबा—देहमे पहिरबाक वस्त्र विशेष १ मुसलमानक एक तीर्थस्थान २ ।

काविज—वि० बुद्धिमत् न लौकिक
व्यवहारपटु ।

कावू—बटेस्क पजड़ा १ वि०
अधीनता २

कामत—जिरात, खाप खेत ।

कामति—शूद्रविशेषक उपाधि ।

कामधू—धान्यविशेष ।

कामना—इच्छा ।

कामरु—भार, जाहिमे गङ्गाजल
बोझल जाए १ देशविशेष २ ।

कामला—रोगविशेष ।

कामि—टकुरी आदिमे लगएवाक
वंशादिनिर्मित लाम पातर
शलाका ।

कामिनो—पुष्पविशेष ।

कायथ { —उ० कायस्थ, लेख-
कायस्थ { जीवी जातिविशेष ।
स्त्री० कैथिनि ।

कार—कार्य ।

कारकौआ—द्रोणकाक ।

कारखाना—वि० कार्यालय ।

कारण—सं० हेतु ।

कारन—हेतु १ कारणडव पत्नी ।

कारनी—चिकित्स्य, जकरा कारणे

देवालयगमन हो ।

कारबार—वि० व्यापार ।

कारी—कृष्णवर्ण ।

कारीगर—शिखी ।

कारीगरी—वि० शिल्प ।

कार्य—सं० कृत्य ।

काल—सं० समय ।

कालकण्टक—दुष्ट, कण्टकतुल्य
कष्टद, बलाय ।

कालदार—दस मासाक असरफी ।

कालि—न्याय कएलासँ मिथ्या-
वादित्वेन निर्णीत ।

कालिह—अव्यवहित पूर्व ओ पर
दिन ।

कालहुक—अव्यवहित पूर्व वा
पर दिन सम्बन्धी ।

काशीवाल—काशीमे बनल
(लोटा आदि) ।

काँस—काँय, धातुविशेष ।

कासनी—काँटवाला क्षुपविशेष ।

कास्मीरी—काश्मीर मे भेनिहार ।

काहकूट—कस्तर, अपाकरणीय
तृणादि ।

काहि काटब—क्रि० कट् + अब—
दुर्दशाप्राप्त होएब ।

किआरी—आलवाल ।

किष्क—अ० कुतः, कोन

किष्क

ॐ मिथिलाभाषाकोषः । ॐ कीर्तिशिला ६३

किच्छु } किञ्चित्, कुछ हि०
किछु }
किञ्चित्—अ० सं० अल्पपरिमा-
णक, थोड़, किछु ।

किड़री—अधिक काल जल मे
रहनहु नहि फुलल (केराओ
आदि) १ भुजलहु उत्तर
नहि फुलल (मखान) २ ।

किनब—क्रि० क्रयण ।

किनहेरि—तट, धारक उभय
भाग जलसँ अव्याप्त ।

किनार—कात, जलाशयक तट ।

किनारी—रूपडामे लगयवाक
द्रव्यसूत्ररचित चकचक वस्तु ।

किन्नहु—अ० कथमपि ।

किफाहत—वि० सस्त, अल्प
मूल्यग्राह्य ।

किमती—मूल्यवान् ।

किम्मति—वि० मूल्य
पराक्रम २ ।

कियारी—आलवाल ।

कियेक—अ० कस्मात् कारणात्,
क्यों हि० ।

किरची—एक प्रमाणसँ परिमित
सूत्र ।

किराया—भारा, मासूल ।

किरिया—शपथ ।

किरीच—ठेंगामे पैसाए रखवा
योग्य अस्त्रविशेष ।

किरीट—सं० देवताक वा राजाक
शिरोभूषण ।

किलहोरि काटब—क्रि० कट् +
अब—दुःखे शब्द करब ।

किलोल—अधिक शब्द, चीत्कार ।

किल्ला—पैघ कील ।

किल्ली—छोट कील ।

किसमिस—बितु आँठीक शुष्क
अङ्गुरक प्रभेद ।

किसान—खेती कएनिहार ।

किस्तान—किस्तान, किश्चियन ।

किस्ती—सतरञ्जक एक गोटी ।

की—किम्, जिज्ञासाविषय १ आ०
क्या हि० ।

कीआ—सिन्दूरगदि रखवाक युग्म
पात्रविशेष ।

कीड़ा (रा)—कीट ।

कीदन—अ० अज्ञात, यत्किञ्चित् ।

कीनह—क्रि० किन् + अब—
क्रयण ।

कीमति—वि० मूल्य ।

कीर्ति—सं० यश ।

कीर्तिशिला—सं० मन्दिरादिक
समयादिसूचक लेखयुक्त शिला ।

कील—सं० पैघ किल्ली ।
 कुअन्न—कदल ।
 कुअवसर—अबलाह अवसर ।
 कुइर—कम कारी डिम्हावाला ।
 कुकर्म—सं० अधलाह किया ।
 कुकर्मी—सं० अधलाह कर्म
 कएनिहार ।
 कुकुर—कुकुर, श्वान ।
 कुकुर कटाउम्—कुकुरक र
 काटब ।
 कुकुरकाँट { —काँटक प्रभेद ।
 कुकुरटङ्गा {
 कुकुरवालि—अस्थिर प्रकृतिक
 अविवेकी ।
 कुकुरभुकी—गिदरनोच, निन्द्य
 (कपड़ा)
 कुकुरमाछी—कुकुरक माछी ।
 कुकुइएब—क्रि० कुकुइ +
 अब—कानक कुड़िआएब ।
 कुकुर } —श्वान ।
 कुकुर }
 कुगर—उचित गरे नहि बैसल
 (सिन्धुक प्रादि)
 कुकुम—सं० केसरि ।

कुचकुच करब—क्रि० } —कण्डू-
 कुचकुचाएब—क्रि० } जनक ।
 कुचकुच + अब होएब ।
 जाहि में कुड़िआएबाक इच्छा
 हो तादश वेदना ।
 कुवकुची—कण्डूजनक वेदना
 शेष ।
 कुचरब—क्रि० अस्पष्ट बाजब ।
 कुचराह—कतोक सिद्ध कतोक
 असिद्ध (भात आदि) ।
 कुवालि—अधलाह चालिवाला ।
 कुचेष्टा—अधलाह चेष्टा, पर-
 निन्दा ।
 कुचब-लागब—क्रि० लग् +
 अब—घोषा आदिक चलबाक
 काल पाएर मे पाएर लागब ।
 कुचचा—साना, चोखा हि० ।
 कुचची—रजनादिक साधन-
 विशेष ।
 कुजबाह—हाथीक सङ्ग बर्छा लेने
 चलनिहार ।
 कुज्जी—कुञ्जिका, ताला खोलबाक
 यन्त्र ।
 कुटकी—कटुका, ओषधिविशेष ।
 कुटना—कुटबाक साधन ।

कुटना—स्त्री० जारके अननिहारि,
 कुटिनी ।
 कुटब—क्रि० कुटन, मुसलादिसँ
 आघात देब ।
 कुटाओन—कुटबाक बोनि ।
 कुटिआ—कुट्टी १ खण्ड २ ।
 कुटुम—उ० कुटुम्ब, स्त्री०
 कुटुमिनी ।
 कुटुमारए—कुटुम्बालय, कुटुम्बक
 व्यवहार ।
 कुटुमैता { —कुटुम्बक व्यवहार ।
 कुटुमैती {
 कुटुम्ब—सं० सम्बन्धिक ।
 कुट्टी—धान्यादिक कुटब ।
 कुठट्ट { —कुत्सित रीति ।
 कुठाठ {
 कुठाठ मचाएब—क्रि० मचव् +
 अब—कुत्सित रीति करब ।
 कुठाम—कुत्सित स्थान ।
 कुडकुइएब—क्रि० कुडकुइ +
 अब—किञ्चित् क्रोधयुक्त
 होएब ।
 कुडनी—छोट सोझ कानक घैल ।
 कुडवार—पैघ कूड़ा ।
 कुडरा—गण्डूष ।
 कुडरी—पक्षिविशेष ।

कुड़हरि—कुडार ।
 कुड़िआएब—क्रि० कुड़ि + अब-
 कण्डूयुक्त होएब ।
 कुड़िऐनी { —कण्डू ।
 कुड़िहठि {
 कुड़ुर—गण्डूष ।
 कुड़ेर—पक्षिविशेष ।
 कुडोरि—मार्गक वक्रता ।
 कुदब—क्रि० मनहि मन क्रोध
 करब ।
 कुदब—बेडोल, कुत्सितकारक ।
 कुण्ड—सं० होमाद्यर्थ खाधि ।
 कुण्डत—सं० कर्णभूषणविशेष ।
 कुण्डली—फलविशेष, लता
 विशेष ।
 कुण्डा—भाँग वा नोसि घाँटबाक
 पात्र ।
 कुण्डाबोर—पूरा रङ्ग ।
 कुण्डी—नोसि घाँटबाक गँहीड़
 पात्र ।
 कुतकुताओन—सतरङ्ग में तारा
 उपरी दू प्यादा सँ मातु ।
 कुतब—क्रि० अन्दाजसँ परिमाण
 करब ।
 कुतरुम—क्षुपविशेष ।

कुतर्क—सं० अनुचित तर्क ।

कुताक २ ।

कुतद्गरदन—छोट गरदनि
बाला ।

कुताक—सम्पन्नताक कारणक
विघटन ।

कुताही—कार्पण्य ।

कुत्ता—कुक्कुर ।

कुथनी—पक्षिविशेष ।

कुथब—क्रि० सकृदंश अपान
वायुके गुदमार्ग दिस प्रेरित
करब ।

कुदब—क्रि० कूदन, हि० फौदना ।

कुदिन—अधलाह दिन ।

कुदेश—अधलाह देश ।

कुन्द—सं० पुष्पविशेष ।

कुन्नह—कानि ।

कुपच—अपक्वता, विपाक ।

कुपथ—पथविरुद्ध ।

कुपीठ—कुडोरि ।

कुप्पा—घृतादिभाण्ड ।

कुप्पी—छोट घृतादिभाण्ड ।

कुफर {—वि० कलह ।

कुफर {

कुफर मचब—क्रि० अधिक
झगडा होएब ।

कुवाट—अधलाह मार्ग ।

कुवेर {—अधलाह वेला ।
कुवेरि {

कुब्योत—कुप्रबन्ध ।

कुभाँजि—असरल मार्ग ।

कुमरम—कुमारकर्म, उपनयन
ओ विवाहसँ पूर्व दिव

कुमार ओ कुमारिक कर्म-
विशेष । कुमर्म २ ।

कुमर्म—सं० मर्मक नहि बचाओ ।

कुमार—उ० सं० अनुपनीत ।
अकृतविवाह २ ।

कुमारि—स्त्री० कुमारी, अकृत-
विवाहा ।

कुमुदिनि {—कुमुद्वती, राति
कुमुदिनी { केँ जलमे कुलपनि-
हार उजर फूल ।

कुम्भी—जलाशयक आच्छादक
तृणविशेष ।

कुम्हड़—श्वेत कूष्माण्ड ।

कुम्हड़ा—कीटविशेष ।

कुम्हरौड़ी—कुम्हड़सँ बनाओल
वटी ।

कुम्हरौट—कुम्हारक उपयोगी
माटि ।

कुम्हलाएव—क्रि० कुम्हल् + अव
—पात फूलक मूर्छित होएब

कुम्हार—उ० कुम्भकार, जाति-
विशेष । स्त्री. कुम्हैनि ।

कुम्हलाएव—क्रि० कुम्हल् +
अव—पात-फूलक मूर्छित होएब ।

कुम्ही—कुम्भिका, कुम्भी ।

कुम्हैनि—स्त्री० कुम्हाम्क स्त्री ।

कुयोग—अधलाह योग ।

कुरकुट—कस्तर, अपाकरणीय
तृणादिपुञ्ज ।

कुरकुटाह—कुरकुटसँ युक्त ।

कुरङ्ग—कुलक्षण ।

कुरथी—कुलस्थ, अन्नविशेष ।

कुरमी—शूद्रजातिविशेष ।

कुरसा—मत्स्यविशेष ।

कुरसी—मच्छिआ ।

कुरीच—पुरान पालित बटेर ।

कुरुप—स. देखबामे अधलाह ।

कुर्य—शीतलाक रोगविशेष ।

कुर्मी—शूद्रजातिविशेष ।

कुल—सं. वंश ।

कुलच्छन—अधलाह लक्षण ।

कुलच्छनि—स्त्री० कुलटा ।

कुलदेवता—सं० कुलपूज्यदेवता,
गोसाउनि ।

कुलपुरुष—कुलक विशिष्ट पुरुष ।

कुलवृत्त—सं. वृत्तसदृश कुल-
पुरुषक नामावली ।

कुलामय—सं. कुलागत रोग ।

कुलीन—स. नीक कुलमे जनमल ।

कुल्ली—वि० जन, दैनिक
नियोगवाला श्रूत्य ।

कुल्हा—जाँघक ओ बाँहिक
जोड़ ।

कुश—सं. दर्भ ।

कुष्ठ—सं० चर्मरोगविशेष ।

कुष्ठी—सं० कुष्ठरोगी, कोँढ़ि ।

कुसमय—सं० अधलाह समय ।

कुसंयम—सं० संयम विरुद्ध ।

कुसिआर—इच्छु, ऊख हि० ।

कुसुम—कुसुम्भ, वस्त्ररञ्जक
पुष्पविशेष ।

कुसुमतता—लतापुष्पविशेष ।

कुसुमी—कुसुम सम्बन्धी (रङ्ग)

कुशोरि—धरना देव, कुश
बिछाए देवागारमे कामना
विशेष सँ पढ़ब ।

कुसोन्ह—नीक जकाँ नहि
सोन्हाओल ।

कुस्तमकुस्ता—परस्पर अधिक
कुस्ती ।

कुस्ती—वि० मल्लयुद्ध ।
 कुहकब—क्रि० कोकिलादिक बाजब ।
 कुहक-मचब—क्रि० कठिन सम-
 स्या उपस्थित होएब ।
 कुहकी—पक्षिविशेष ।
 कुहठ—सं० दुराग्रह ।
 कुहब—क्रि० कष्ट देब, क्लेशयुक्त
 करब ।
 कुहुकब—क्रि० कुहकब ।
 कुहुक-मचब—क्रि० कोकिलादिक
 अधिक बाजब ।
 कुहेस—कुज्झटिका, नीहार,
 धश्रोन ।
 कुहेसफाटव—क्रि० फट् + अब
 —नीहारक नाश होएब ।
 कूआ—कुब्जक, पुष्पक प्रभेद ।
 कूआँ—कूप ।
 कूचब—क्रि० कुच + अब
 —दाबब ।
 कूचलागब—क्रि० लग् + अब
 —घोड़ाक चलबाक काल
 पाएर में पाएर लागब ।
 कूटब—क्रि० कुट् + अब—
 कुहन, मुसलादिसँ आघात
 देब ।

कूटब-पीसब—क्रि० कुट् + अब,
 पिस् + अब—कुटनादि
 क्रिया ।
 कूड़—छोट डेरी, राशि ।
 कूड़ा—पैघ घैल ।
 कूड़ि—पट्टवाक पात्रविशेष ।
 कूड़ी—डेरी ।
 कूढ़—कुष्ठ, ओषधिविशेष ।
 कूढ़ब—क्रि० कुढ़ + अब—मनहि
 मन क्रोध करब ।
 कूतब—क्रि० कुत + अब
 अन्दाज सँ परिमाण करब ।
 कूथब—क्रि० कुथ + अब
 —सक्लेश अपान वायुकेँ
 गुदमार्ग दिस प्रेरित करब ।
 कूदफान—कूदब प्रभृति कीड़ा ।
 कूदब—क्रि० कुद् + अब
 —कूदना, फाँदना हि० ।
 कूप—सं० कूआँ ।
 कूवड़—उ० कुब्ज, स्त्री-कुवड़ी ।
 कूर } —राशि, डेर ।
 कूरी }
 कूहब—क्रि० कुहू - अब—क
 देब, क्लेशयुक्त करब ।
 कृपण—सं० मितम्पव ।
 कृपा—सं० दया ।

कृष्णकेतसी—पुष्पविशेष ।
 कृष्णजीर—सं० काला जीरा
 हि० ।
 कृष्णा हरिन—कृष्ण मृग ।
 कृष्णौत—गोआर जातिक एक
 प्रभेद ।
 केँ—अ० उत्तर काल ।
 केआरी—आलवाल ।
 केआल—तौलनिहार ।
 केआली—केआलक कार्य ओ
 वेतन ।
 केउआँ—शाक योग्य लुप-
 विशेष ।
 केओट—उ० शूद्र जातिविशेष ।
 खी० केओटनी ।
 केँ घुनिआएब—क्रि० केँ घुनी +
 अब—टेढ़ भए बढब ।
 केँ घुनी—हाथ ओ बाँहिक
 बिचला जोड़ ।
 केचुआ—कञ्चुकी, सापक परि-
 त्यक्त त्वचा १ स्त्रीक पहिर-
 बाक वस्त्रविशेष २ ।
 केचुआएब—ना० केचुआ सँ
 युक्त होएब (सापक) ।
 केतकी—पुष्पविशेष ।
 केथरा—गदेबा ।

केदन—अ० अपरिचित केओ ।
 केवली केराओ—मटर ।
 केवलौट—कुम्हारक हाथक
 पोछल माँटि ।
 केबाड़—कवाट ।
 केबाड़ो—छोट कवाट ।
 केरबा—पानि मे रहनिहार पक्षि-
 विशेष १ केरा सन लाम
 (आम) २ ।
 केरबी—केरा सन लाम छोट
 (आम) ।
 केरा—कदली ।
 केराओ—कलाय, द्विदल अन्न-
 विशेष ।
 केलिकदम्ब—कदम्बफूलक प्रभेद ।
 केस—केश, बाल हि० ।
 केसरि—काश्मीर, मृगमद;
 सुगन्धि द्रव्यविशेष ।
 केसौर—कसेरक, कन्दविशेष ।
 केहन—कीदश ।
 केहनदन—अधलाह ।
 केहुनी—कफोणि, हाथ ओ बाँहिक
 सन्धिक उच्च भाग ।
 कैएक } —अनेक ।
 कैक }
 कैच—कैची जेकाँ बाँसमे
 बान्हल बाँस ।

कैची—कतरी ।
 कैता—लताफलविशेष ।
 कैथिनि—स्त्री० कायस्थक स्त्री ।
 कैथी—रङ्गविशेष १ नागरी
 अक्षर २ ।
 कैल—कपिल, रङ्गविशेषयुत
 (बढ़द प्रभृति) ।
 को—कहरक बीजाधार ।
 कोइली—कोकिल १ अजोह
 आम्नबीज २ चाउरमे रोग-
 वशकारी भाग ३ ।
 कोकटी—रङ्गविशेष ।
 कोकटीबाङ्ग—कोकटी रङ्गक
 बाङ्ग ।
 कोकनव—क्रि० नि.सार होएब ।
 कोकिआएब—क्रि० कोकि +
 भव—को को शब्द करब ।
 कोख } —कुत्ति, पेट ।
 कोखि }
 कोच—वि० पर्यङ्कविशेष ।
 कोचव—क्रि० बलपूर्वक
 मध्यमे ठूसब ।
 कोचबन्द—डोड़क भूषणविशेष ।
 कोचबान—वि० बग्गी हँकनिहार
 कोचा—स्त्रीक पहिरन नूआमे
 बान्हल कोचिआओल भाग ।

कोचिला—कपीलु, उपविष फल-
 विशेष ।
 कोजागरा—सं० आश्विनक
 पूर्णिमा ।
 कोदि—सं० करोड़ हि० ।
 कोठवार—राब रखवाक स्थान ।
 कोठली—कोष्ठ, कोठाक वा घरक
 एकदेश ।
 कोठा—प्रासाद ।
 कोठि—कोष्ठ पेट ।
 कोठिघरा—कोठी रखवाक घर ।
 कोठिला—साज, भौड़ रखवाक
 उच्च आधार विशेष ।
 कोठिसारि—कोठी रखवाक घर ।
 कोठी—कुसूल, मृत्तिकानिर्मित
 अन्न रखवाक पात्र ।
 कोठुता } —छोट कोठी ।
 कोठुली }
 कोइव—क्रि० खनन ।
 कोइरा—कशा ।
 कोइहा—सामक चाउर १
 यन्त्रादि भूषणमे ताग पैसए
 बाक हेतु सच्छिद्र अवयव २
 मधुमाछीक छाता ३ ।
 कोइहिआएब—ना० कोइही +
 अब—कोइही सँ युक्त
 होएब ।

कोइही—कली १ फूल पातक
 अक्षर २ ।
 कोइो—ठाठक उपयोगी कृतच्छिद्र
 बौंस ।
 कोइ—अन्तःकरण ।
 कोइरुटू—जकर कनिण मे
 अन्तःकरण विदीर्ण हो ।
 कोइ-फाटव—क्रि० फट् +
 अब—अन्तःकरण विदीर्ण
 होएब ।
 कोइि—कुण्ठी १ आलसी २
 कोइिआ—कोइि + आ =
 अनादरणीय कुण्ठी वा
 आलसी ।
 कोइिला—कोमलतम तृणविशेष ।
 कोइी—कलिका ।
 कोत—अम्लसम्बन्धे तत्काल
 सकत वस्तु खएवामे अक्षम
 (दाँत) ।
 कोतबाल—रातिके गामक रक्षा
 कएनिहार ।
 कोतबाली—कोतबालक क्रिया १
 कोतबालक हेतु देय २ ।
 कोतर—कोली खेतक अंश ।
 कोतरा } मत्स्यविशेष ।
 कोतरी }

कोतहरदनि—छोट गरदनि
 वाला ।
 कोताही—कृपणता ।
 कोथ { —बरछी आदि अस्त्रक
 कोथी { अग्रभाग ।
 कोदवा—देहमे भेनिहार रोग-
 विशेष ।
 कोदरिकट्टा—कोदारि सँ काटल-
 काटल सन (मेघ) ।
 कोदारि—कुहाल, माटि कटवाक
 अस्त्र विशेष ।
 कोदैआ—कोयष्टिक, पत्तिविशेष ।
 कोदो—कोदव, कदन्नविशेष ।
 कोन—कोण १ कतर वा
 कतम २ ।
 कोनटवेध—अँगनक दोषविशेष,
 एक घरक कोणाभ्यन्तर दोसर
 घरक कोण ।
 कोनटा—घरक बहार कोन अगक
 भूमि ।
 कोनही—क्षेत्रक कोन ।
 कोना—अ० कोन प्रकारे, किस
 भाँति हि० ।
 कोनाकोनी—कोण सँ कोण दिश
 संमुख १ कोमहर सँ कोमहर
 २ ।

कोनिआँ—घरक दुहु पारवक
ठाठ १ घरक दुहु पारवक
ओसारा २ ।

कोनी—नेत्रकोण ।

कोनेकानी—कोणसहित सकल
स्थान ।

कोनैला—गाछी आक्षिककोन में
स्थित (वृक्षादि) ।

कोपड़ (र)—बाँसक अंकुर ।

कोपड़ा—पात्रविशेष ।

कोपहारि—बिना गोटी बहार भेने
पचीसीक हारि ।

कोबर—वरकन्याक सम्मेलन ।

कोबरा घर—कौतुकागार, वर
कन्याक सम्मेलनागार ।

कोवी—रान्हि कए खएवाक एक
फूल ।

कोमल—सं० मृदु ।

कोमहर } —अ० कोन दिस ।
कोम्हर }

कोर—कोष १ धोती आदिक
स्थूलभस्तुकृत दुहु कस्तक
प्राप्त २ ।

कोरदार—वि० कोरवाला ।

कोरबाह—अ० नेनाकेँ कोरमे
जेनिहार । स्त्री० कोरबाहिन ।

कोरबाहि—नेनाकेँ कोरमे लेब ।

कोरा—विनु धोयल (नवीन—
वस्त्र) १ काजमे नहिलागल
तहदज (वस्तु) २ सतुप
अन्न ३ ।

कोराएव—क्रि० कोर + अब—
पानि किनार होएव ।

कोराँटी—चर्म मध्यस्थ शङ्कु ।

कोरान—मुसलमानक धर्म-
शास्त्र ।

कोरि—उ० शूद्र जातिविशेष ।
स्त्री० कोरिनि ।

कोरिआनी—कोरिक टोल ।

कोरैआ—कुटज ।

कोरैला—उ० कोरमें लेवा योग्य
नेना, स्त्री० कोरैली ।

कोला—खेत समूहक एक खण्ड ।

कोलाकोली—खेतक प्रत्येक
खंड ।

कोलिपेती—नगदी बिना सबू-
तक खाप ।

कोलिसहू—रोगाह आम ।

कोली—छोट कोला ।

कोल्हु—सरिसओ कुसिआर प्रभृति
पेरवाक कल ।

कोल्हुआ—कोल्हुमे बहनिहार
(बड़द) ।

कोल्हुआपेरन—सतरज्जक मातु
विशेष ।

कोल्हुआड़ (र)—कोल्हु पेरवाक
स्थान ।

कोस—कोश, भूमिमानविशेष ।

कोसब—क्रि० गजन करब ।

कोसल करब—गुप्त धन संग्रह ।

कोसलिआ—गुप्त धन १ गुप्तधन
संग्रही २ !

कोसा—केराक फूल ।

कोसिआ—माटिक पात्रविशेष ।

कोसिआ भल्ला—शाकविशेष ।

कोहबर—कोबर ।

कोहा—छोट तौला, मृद् भाण्ड-
विशेष ।

कोही—छोट कोहा ।

कोअलि—पत्तिविशेष ।

कोआ—काक ।

कोआठारि—कोनो कोनो ठारिमें
फड़ल (आम)

कोआठुट्टी—क्रीड़ाविशेष ।

कोचालि—कोआक सदश वक्र
चालि ।

कौजङ्ग—उ० छोट पैघ पाएर
वाला, स्त्री० कौजङ्गि ।

कौटङ्ग—उ० छोट पैघ पाएर
वाला, स्त्री० कौटङ्गि ।

कौड़िआ—पीलुविशेष ।

कौड़िआकातर—उ० जे एक
कौड़ीक हेतु कातर हो, प्रति-
कृपण ।

कौड़ी—कपर्दक ।

कौड़ीटीप—कौड़ीक एक खेल ।

कौपी—कौपीन ।

कौपीन—सं० भगवा ।

कौशल—सं० नैपुण्य ।

वयोला—केओला, केतकी, पुष्प-
विशेष ।

क्रम—सं० प्रथमत्व द्वितीयत्वादि ।

क्रमशः—सं० अ० क्रमपूर्वक,
यथाक्रम ।

क्रिया—व्यापार ।

क्रोध—सं० कोप ।

क्लेश—सं०—कष्ट ।

क्वताही—कृपणता ।

ख

खइ—छोट आबादेख खेत ।

खपरा—रङ्गविशेष १ बकक
प्रभेद २ ।

खँओत—अन्तर्दाह ।
 खखड़हर—वरतनविशेष ।
 खखड़ी—बुस, चाउरसँ रहित धान ।
 खखाएब—क्रि० खख् + अब—
 धान्यक तुच्छ फड़ीसँ युक्त होयब ।
 खखार—खाट्कार, कण्ठागत
 कफादिक निःसारण ।
 खखारब—क्रि० कण्ठागत
 कफादिक निःसारित करब ।
 खखाह—खखड़ीसँ युक्त (धान) ।
 खगता—खगब, कार्यक
 अनुपपत्ति ।
 खगब—क्रि० कार्यक अनुपपत्ति ।
 खगरा—ओ तारक गाछ जे ने
 फुलाए ने फड़ए ।
 खगगी—खगता, कार्यक
 अनुपपत्ति ।
 खँघरब—क्रि० प्रवाहसँ कटब ।
 खँघारब—क्रि० प्रवाहसँ काटब ।
 खचखच् वाटब—क्रि० कट् +
 अब—अतितीक्ष्णतया छेदन ।
 खचर—गदहीमे घोड़ासँ जनमल
 जातिविशेष ।
 खजबा—कड़ा कोबाजा (कःहर) ।
 खजाञ्ची—वि० खजाना
 रखवामे नियुक्त ।

खजाना—वि० सुवर्ण रजत
 रत्नादि ।
 खजुड़ी—वाद्यविशेष ।
 खजुरिआएब—क्रि० खजुरि +
 अब—संकुचित पत्रादिक होयब
 खजुली—छोट खाजा ।
 खजूर—खजूर, फलविशेष ।
 खजतखोहर—अगण्य जनसमूह
 (निम्दामे) ।
 खजजन—सं० पक्षिविशेष ।
 खज्जमा—मालक रोगविशेष ।
 खटकब—क्रि० अनिष्टचिन्ता
 विषयीभवन ।
 खटकभी—शास्त्रोक्तक्रियानिरत ।
 खटक!—सन्देह ? अशौच ?
 खटकार—वैनट्य ।
 खटकाह—उ० सन्देही ।
 स्त्री खटकाहि ।
 खटखट करब—क्रि० खटखट
 शब्द करय १ अमङ्गल बाजब २ ।
 खटखटाएब—क्रि० खटखट् +
 अब—क्रोधेँ जोरसँ बाजय १
 खटखट शब्द करब २ ।
 खटखटाह—उ० कनिष्ठो टोकने
 क्रोध कएनिहार । स्त्री० खट-
 खटाहि ।

खटछप्पर—खाटक उपरका
 छप्पर
 खटनटाह—उ० नियम निष्ठा
 कएनिहार ।
 खटपट—वैमनस्य ।
 खटपटाएब—क्रि० खटपट् +
 अब—अमेल, विरोध होएब ।
 खटपारब—क्रि० शोकेँ पड़ब ।
 खटबताह—उ० ईपत् विस्मि ।
 खटवानर—वानर सदृश
 खटखटाह ।
 खटवारब—क्रि० शोकेँ पड़ब ।
 खटमिट्ठी—हि० चटनीक
 प्रभेद ।
 खटरस—छबो रससँ युक्त
 भोज्य ।
 खटरास—वैनट्य ।
 खटाक दए—अ० झट दए,
 अति शीघ्र ।
 खटाखटि—अ० झट झट ।
 खटाँस—रात्रिचर जन्तुविशेष ।
 खटिआएब—क्रि० खटि +
 अब—न्यून होयब ।
 खटुली—स्कन्धवाद्य एक सवारी ।
 खटकभी—हर्मठ, बाह्यण विहित
 दानादि छबो कर्म कएनिहार ।

खट्टी—फलव्यापारी जातिविशेष ।
 खँड़—खण्ड ।
 खड़कब—क्रि० अचेतन वस्तुक
 किञ्चित् आगाँ वा पाछाँ चल
 जाएब ।
 खड़खड़ाएब—क्रि० खड़खड़ +
 अब—खड़खड़ शब्द करब ।
 खड़खड़िआ—अनुपय वाद्य
 यानविशेष ।
 खड़गर—उच्च ।
 खड़ना—स्त्रेकर्तृक एकभुक्त ।
 खड़भड़—वैमनस्य ।
 खड़बड़ाएब—क्रि० खड़बड़ +
 अब—वैमनस्य होएब ।
 खड़बड़ी—वैमनस्य, भगड़ा ।
 खँड़मण्डल—खण्डमण्डल,
 कतहु उपजा कतहु नहि ।
 खड़रब—क्रि० तुणक अपाक-
 रणार्थ खड़रासँ बढारब ।
 खड़रा—व्रणविशेष १ करची
 आदिसँ रचित खड़राक
 साधन २ ।
 खँड़हर—प्रवाहेँ माटि कटलासँ
 नीच भूमि ।
 खँड़हरब—क्रि० प्रवाहेँ माटि
 कटब ।

खंडहरा—खंडहर ।

खंडही—लम्बा आँगुरसन मोट

टाटमे उपकारक तृणविशेष ।

खड़ा—हि० उत्थित, ठाढ़ ।

खड़ाइ—उच्चता ।

खड़ाओ } पादुका ।

खड़िका—पात लगाएब

इत्यादि कार्यमे उपकारक

मेही बाँसक कामि ।

खड़ी—खटी, कठिनी, भूमिलेखा-
दिसाधन ।

खड़की—भगवासँ पैघ नूआ ।

खड़—तृण ।

खड़कटा—गृहाच्छादक तृण
कटनिहार ।

खड़गर—अधिक खड़सँ युक्त ।

खड़होरि—खड़ उपजबाक
स्थान ।

खड़ी—खड़ही ।

खण्णओ } —पादुका ।

खण्णाम } —कागतक खण्ड ।

खण्णोत } —कागतक खण्ड ।

खण्णोत } —कागतक खण्ड ।

खण्ड—सं० अर्द्धभाग ।

खण्डमण्डल—चित्रवृष्टि ।

खण्डहर—प्रवाहें माटि कटलासँ

नीच भूमि ।

खण्डन—सं० निराकरण ।

खण्डित सं० खण्ड कएल ।

खत—वि० लिखा १ काटबसँ
चिह्न २ ।

खतब—क्रि० काण्ठादि

छेदनसँ चिह्न युक्त करब ।

खतबय—शिविकावाहक जाति-
विशेष ।

खतम—वि० समाप्त, अवसन्न ।

खतमी—वि० समाप्ति अवसान ।

खतरा—वि० जान जएबाक
शङ्का १ अङ्क छेदनमेदन २ ।

खतरी—जातिविशेष ।

खतार—खात, गत्त ।

खत्री—जातिविशेष ।

खदकब—क्रि० अग्नितापसँ
खजबज करब ।खदका } —पीसिकेँ बरकाओल
खदकी } खदकाओल ।

खदुका—रीन लेनिहार, अधमर्ण ।

खद्वर—चरखाक सूतसँ बीनल
वस्त्र ।

खद्वी—अत्यन्त अधलाह (वस्त्र)

खन—जग ।

खनखन करब—क्रि० अतिबहु-

चायुक्त होएब १ लेशतः ज्वरादि-

पीडित होएब ।

खनखनाएब—क्रि० खनखन +

अब—खनखन करब ।

खनिज—सं० खानिमे होएनिहार ।

खन्ता—खत्ता, पल्लव ।

खन्ती—खनित्र ।

खन्धक—गत्त ।

खपकी—नाराजगिरीसँ भृत्यक
सावधि कार्यवहिष्कार ।खपखप-काटब—क्रि० फट + अब
—निर्बाध छेदन ।खपटा—खपट, फुटल भाँड़क
खण्ड ।

खपड़िआ—बाबाजीक प्रभेद ।

खपब—क्रि० एक भागसँ कम
होयब ।खपरा—माटिक बनल पकाओल
घर छारबाक साधन ।खपर—कपाल, माथक उपर-
का गोल हाड़ ।खप्पा } —कीआ प्रभृति पात्रक
खप्पी } उपरका भाग ।

खवरि—वि० वार्ता १ सूचना २ ।

खवरिगिरी—वि० सावधानता ।

खवास - उ० टहन कएनिहार

शूद्र । खी खवासिनी ।

खवासी—खवाक क्रिया ।

खम्हार—खाद्य कन्दविशेष ।

खम्हेली—विना गाबल खाम्ह ।

खयरा—रङ्ग विशेष १ बकक
प्रभेद २ ।

खर—तीव्र ।

खरकटब—क्रि० जोरसँ सटब ।

खरखर—अशब्दचण ।

खरखराएब—क्रि० खरखर +
अब—आघतसँ तृणादिक

खरखर शब्द होएब १ खर

खरब + अब—खरखर शब्द
कराएब २ ।खरखराएन—प्रतरजमे तरा-
उपरी दूष्यादिक सहसँ मातु ।खरखराह—किंचित् खरखर १
महि पचनिहार (साग आदि)

खरखोँच—खोँचाह ।

खरखोँचब—क्रि० बाँसक अगा-
बीसँ खोँचारब ।खरखोँच-लागब—क्रि० लग +
अब—अनेक खोँच लग्न होएब ।

खरच—खर्च, व्यय ।

खरना—छीकतृक एकशुक्त ।

खरभुज } —लताक फल-
खरभुजा } विशेष, खरूज ।
खरभुसिआ—साधारण ।
खरमास—तीव्र मास, वैशाखश्रेष्ठ ।
खरलुची—प्रत्यन्त उकठ कय-
निहार ।
खराइन—दुर्गन्धविशेष ।
खराज—शाण ।
खराजब—क्रि० शाणसँ छीलब ।
खराप—वि० अधलाह ।
खरि—गोट रैँचीक सिट्टी ।
खरिआ-नोन—लवण विशेष ।
खरिहान—प्रन्न तैआर करवाक
स्थान, स० खल ।
खरिहानी—खरिहान बनएवाक
हेतु आदेय अन ।
खरुआन } —अगण्य नेनाक,
खरुहान } समूह (निन्दामे) ।
खरेहा—शशक ।
खरोसा—अन्वेषण ।
खर्च—व्यय ।
खर्चदारी—अधिक खर्च ।
खर्चोटा—निरप खर्च लिखबाक
(वही) ।
खल—खल्व, पाथरक गद्दीड़,
पिसबाक पात्र ।

खलखलहँसब—क्रि० स्पष्ट
हँसब ।
खलखलाएब—क्रि० खलखल-
—अब—सशब्द हँसब ।
खलपट } खलवाट
खलपट्ट }
खलब—क्रि० श्वासक तेजीसँ
नेनाक पेट दबब । औष-
धकँ खलमे पीसब २ ।
खलबल्लहरब—क्रि० तापसँ
जलादिक खलबल्ल शब्द
करब ।
खलबलाएब—क्रि० खलबल्ल—
अब—तापजन्य जलादिक
सशब्द सञ्चर ।
खलबली मचब—क्रि० चिन्ता
सँ अधिक अशान्ति होयब ।
खलरी—देक अशुष्क चाम ।
खल्ला—नेनाक पेट खलब रोग ।
खल्ल—उशीर, कतराक सीर ।
खल्लता—परता (खेत) ।
खल्लब—क्रि० पतन स्वलन ।
खल्लल—परता (खेत) । निप-
तित २ ।
खल्लता—खल्ल, बिनु आबाद
कएल (खेत) ।

खाउक—खाधुर अधिक खएँन-
हार ।
खाएब—क्रि० ख—अब—खादन
भक्षण ।
खाएर—खदिरसार १ खदिरघृत् २
खाँओ—मुसलमान ओकतोक
ब्रह्मणक उपाधि ।
खाक—वि० भस्म ।
खाँखड़ } —पोखरिमे धरिक,
खाँखर } निचला जलक उपरक
चारु दिसक भाग ।
खाँच—खिचार १ काठमे काठ
पैसबाक छिद्र २
खाजा—मिष्टान्नविशेष ।
खाँझमाझ—तारतम्य ।
खाट—खट्वा ।
खाँड़—छोट खज्ज । मिसरीक पैघ
खण्ड २ ।
खादी—परम्परा श्रेणी ।
खातिर—वि० कृपा ।
खाधि—गर्त ।
खाधुर—अधिक खएँनिहार ।
खानगी—वि० रहस्य ।
खानि—खनि, आकर, हीरा प्रभु-
तिक स्थान ।
खाप—जकर पीत जागए से (खेत) ।

खापट—खपर, फूटल माटिक
वासनक खण्ड ।
खापडि } —भुजबाक, अर्द्धभग्न
खापरि } माटिक वासन ।
खाम—लिफाफ ।
खामखाइ—अ० वि० अवश्य-
मेव ।
खामिन्द—वि० प्रभु ।
खामिन्दी—वि० प्रभुक कृपा ।
खाम्ह—स्तम्भ, बरीक आधार ।
खाम्ही—पादिक आधार स्तम्भ ।
खायब—क्रि० ख + अब—खादन,
भक्षण ।
खायर—खदिरसार १ खदिर-
घृत् २ ।
खार—छार ।
खारु—रोपल धानक बीआ ।
खार—खली ।
खाली—केवल १ रिक्त २ ।
खास—वि० स्वमात्रसम्बन्धी ।
खासा—प्रत्यन्त मेही (मलमल)
खाँहिस—वि० इच्छा ।
खिआएब—क्रि० खि + अब—
घर्पणसँ क्षीण होयब ।
खिखिर—खिखिर, जन्तुविशेष ।

खिचाव } —पादाघातसँ उत्पन्न
खिचार } थाळ ।

खिचारब—क्रि० थाळ उकटव ।

खिचडि—कृसर चाउर ओ
दाबि सहपक ।

खिजमतो—वि० कार्यमे आनल
(वस्त्रादि) ।

खिड़की—वातायन छोटकपाट ।

खिड़हरि—चटाइ ।

खिनखिनायब—क्रि० खिनखिन
+ अब-खिन होएब । किछु
किछु दुःखसँ युक्त रहब ।

खिनहरि }
खिन्हार } —चटाइ ।

खिन्हारा—पैघ चटाइ ।

खिरविट्टी—अत्यन्त कृश ।

खिरसा—फाटल दूधक सार-
भाग ।

खिरोधनी—कुम्हारक बासन
विशेष ।

खिलखिलाएब—क्रि० खिलखिल
+ अब-प्रच्छन्न भए हँसब ।

खिलतोड़—नव तोड़ल (जमीन)

खिलबट्टी—खिल्ली रखवाक
पनबट्टी ।

खिलाला—गजीफा खेलक हारि ।

खिल्लति—वि० पदवी ।

खिल्ली—खएबाक योग्य लगा-
ओल पान १ बड़दक पहिल
दौत २ अङ्गक जोड़ ३ ।

खिल्ली तोड़ब—क्रि० बड़दक
पहिल दौत तोड़ब ।

खिसि प्राएब—क्रि० खिसि +
अब—क्रोध करब ।

खिसिआह—उ० कोपन क्रोध-
शील, स्त्री० खिसिआहि ।

खिरसा—कथा, इतिहास, छोट
चरित्र ।

खीचब—क्रि० खिच + अब-कर्ण
खीर—खीरोदन दूधमे सिद्ध
तण्डुल ।

खीरमोहन—मिष्टान्नविशेष ।

खीरा—सोहाँस, त्रपुस ।

खीरी—फलविशेष ।

खील—कील ।

खीलनि—वणक कील ।

खीसा—कथा, इतिहास, छोट
चरित्र ।

खुखना—अतिरथूल (व्यक्ति) ।

खुटका—अशोक १ सन्देह २ ।

खुटकी—सन्देह

खुटब—क्रि० खुट + अब-घरक
भूमि खुटा गाड़ि सोझ करब ।

खुटरो—देवाजमे लागल वस्तु

खटकएवाक खुटा, नागद-
न्तिका ।

खुटआ—एक प्रकारक अङ्गा ।

खुटा—ठाठ फड़क गाए आदि
बन्हबाक स्तम्भ ।

खुटे—छोट खुटा १ भूषणविशेष २

खुडलुचची—एमहर ओमहर कए
लुचलुच कएनिहार ।

खुडर } —एक गोटाक
खुडरबट्टी } चलाबाक योग्य बाट ।

खुदरा—रूपैआसँ कम अठन्नी
आदि १ पचेसी खेबिमे

दूओ, सँछ धरि चित्त कौड़ी २ ।

खुदरिआ—कम द्रव्यसँ दोकान
कएनिहार ।

खुदिआह—खुदीसँ मिश्रित ।

खुदी—तण्डुलकण ।

खुभरी—जारनक छोट छोट
टुकड़ी ।

खुखुराएब—क्रि० खुरखुर +
अब—खुरखुर शब्द करब ।

खुचन—शुक्तिखण्पा, सितुआ ।

खुरचब—क्रि० खोजब ।

खुरझारी-काटव } —क्रि० कट
खुरझाही काटव } —अब ओढ़ना-
बिछाओनकेँ नोचब आदि ।

खुरदक—वाद्यविशेष ।

खुरदकिआ—खुरदक बजओनि-
हार ।

खुरपा—पैघ खुरपी ।

खुरपी—वास छिजबाक छोट
अस्त्रविशेष ।

खुरमा—मिष्टान्नविशेष ।

खुरलुचची—एमहर ओमहर कए
उरदव कएनिहार ।

खुरेठब—क्रि० खुरसँ धांगब ।

खुलता—अनावृत ।

खुलब—क्रि० खुल—अब-प्रकाश
करब १ शोभा देब २ ।

खुलासा—वि० स्पष्ट ।

खुटमख्याल—अत्याग्रह ।

खुसकी—स्वतन्त्र सवारी ।

खुसखुस-टुटब—क्रि० विना बलें
टुटब ।

खुसनामा—वि० खुसीक बात ।

खुसामद—वि० अनुवृजन ।

खुसी—वि० आनन्द, प्रसन्नता ।

खूट } वस्त्रादिक कोण ।

खूट }

खूटव—क्रि० खुट् + अब—घरक
भूमि खुट्टा गादि ठीक करव ।

खूब—वि० अत्यन्त ।

खूभी—दण्डक तीक्ष्ण अग्रभाग ।

खूर—खुर १ खुर २ ।

खूल्ब—क्रि० खुल् + अब—प्रकाश
करव १ शोभा देव २ ।

खूलि—गजीफा खेलिमे सभ हुकुम
खसव ।

खेआल—हास्यास्पद चेष्टा ।

खेआली—हास्यास्पद चेष्टाकारी ।

खेँस—अधिक हँसनिहार
(निन्दामे) ।

खेँखिआएव—क्रि० खेँखि + अब—
अधिक हँसव (निन्दामे) ।

खेँखी—अधिक हास्य ।

खेइही—मूँग द्विदल अन्नविशेष,
मुद्ग सं० ।

खेड़ा—क्रीडाविज्ञ ।

खेड़ि—क्रीडा ।

खेड़िआ—खेल कपुनिहार ।

खेत—क्षेत्र धान्यादि उपजावक
भूमि ।

खेतउत्तार—रोपनिक सन्नाप्ति ।

खेतकोना—आबाद नहि भेल
खेतक एक कोन ।

खेतमास—उरीद घटिहन द्विदल
अन्नविशेष ।

खेतिआहा } —खेत कपुनिहार
खेतिहर } गृहस्थ ।
खेतिहा }

खेती—कृषि, खेतक क्रिया ।

खेप—भावृत्ति १ खेपव २ ।

खेपव—क्रि० काल काटव ।

खेपी—भावृत्ति ।

खेबव—क्रि० नाओ चलएवाक
हेतु पानि टारव, नाओ
चलाएव ।

खेवा—आतर, तरणपण्य ।

खेल—क्रीडा ।

खेलओना—बाजक्रीडाक वस्तु ।

खेलओनिआ—हास्यप्रिय, चेतन
कै खेलओनिहार, पैव लोकक
हास्यविनोद में निरुक्त धूर्त ।

खेलधूप—क्रीडा आदि ।

खेलवाड़ } —खेलकपुनिहार,
खेलवाड़ी } क्रीडानिपुण ।

खेलाएव—क्रि० खेल + अब—
क्रीडा करव ।

खेलाएव-धुपाएव—क्रीडादि
करव, खेलिधूप ।

खेलाडी—खेड़िमें पटु ।

खेलि—क्रीडा ।

खेलौड़ि—बालकक क्रीडा ।

खेलौड़िआ—क्रीडासक्त ।

खेलौना—बालक्रीडाक सामान्य ।

खेसरा—माछक प्रभेद १ खेतक
नम्बर २ ।

खेसारी—खजारि, द्विदल
अन्नविशेष ।

खेहव—क्रि० खेह + अब—
तागक घाँटव ।

खेहार—पण्यक हेतु पाछों सँ
दौड़व ।

खेहारव—क्रि० पकड़वाक हेतु
पाछों सँ नै गाड़व ।

खै—छोट आडा देन क्षेत्र ।

खैक—सूचम शरय ।

खैचव—क्रि० आर्कषण ।

खैठी—शुष्क अमल विकार ।

खौँचा—फजक त्वक् ।

खौँछ—स्त्रीक बान्हल आंचर
जाहिमे अन्नादि लए जाए ।

खोखड़न—अस्त्राग्रघर्षण सँ
वियोजित [डाही आदि] ।

खोखड़व—क्रि० अस्त्राग्रघर्षणसँ
वियुक्त करव ।

खोखड़ना } —खोखड़वाक साधन ।
खोखड़नी }

खोंखी—काश, उकासी, खोंखी
हि० ।

खोंखीमसरखा—ओषधिविशेष ।

खोंची } —वस्तु रखवाक
खोड़ची } बालक पात्र ।

खोंच—त्वचाछेदनयोग्य तीक्ष्णाय
अवयव ।

खोंचड़ि—मध्यमे वस्तु रखवाक
हेतु दून् दिसि सँ बान्हल
तृणसमूह ।

खोंचारव—क्रि० दण्डाग्रसँ
आघात करव ।

खोंचाह—खोंचसँ युक्त ।

खोड़—खज, नाँगड़ ।

खोड़ } —असम्पूर्ण, खण्डित ।
खोड़ }

खोड़बन्ह—दुर्लभ बान्हक खाधि ।

खोड़संग—उचित चक्रवामे
असमर्थ लोकक सङ्ग ।

खोड़हा—पचेनी आदि खेड़िक हेतु
वस्त्रादि रचित घर ।

खोड़ेआ—अस्त्रविशेष, काती ।

खोड़ा—खोबहा, पचेसीआदिक
घर ।

खोता } —नीद, पक्षीक गृह ।
खोंता }

खोदहा—सूचीद्वारा काजरक प्रवेश

कराए देहमे बनावोज चित्र ।
 खोधव—क्रि० किञ्चित् खनन ।
 खोधा—खोदहा ।
 खोधामा—खोधिके बनावोज
 नकसा ।
 खोन—जकर ठोर कटल हो ।
 खोनही—आवृत स्थान, घरक
 कोन लगक स्थान ।
 खोना—अनादरणीय खोन ।
 खोनाठ } —प्रवृत्तित चेरा
 खोनाठी } आदि ।
 खोनू—आदरणीय खोन ।
 खोप—परवा रहवाक मनुष्य-
 निर्मित खोता ।
 खोपड़—भाषक उपरका भाग ।
 खोपड़ि—धान्यादि ओरवाक
 अति छोट घर ।
 खोपबन्ह—खोपा बन्हवाक डोरि ।
 खोपा—धस्मिल, केशपाश ।
 खोपी—छोट खोपा ।
 खोभ—मोट लकड़ीक तीक्ष्ण
 भाग ।
 खोभव—क्रि० खेतक विपन्न
 देशमे रोपव ।
 खोभाड़—सूगरक घर ।
 खोभी—माटि कोड़वामे उपयुक्त
 वंशादि निर्मित सूक्ष्माग्र यष्टि ।

खोम—मनमे श्रमगतक आशंका ।
 खोमाह—उ० खोम माननिहार ।
 खोरनाठी—दग्धाग्र जारन ।
 खोल—गेडुआ आदिक उपरका
 वस्त्र ।
 खोलव—क्रि० मोचन ।
 खोलेंसा—बड़द आदिक दृष्टि
 प्रतिबन्धक रूपना ।
 खोली—कन्तोड़ प्रभृतिक छोट
 कोष्ठ १ चसमा आदि रखवाक
 पात्र २ ।
 खोसव—क्रि० अन्तः प्रवेशन-
 पूर्वक अवलम्बित करव ।
 खोह—गुहा १ दाउनिक हेतु छोट
 धान्यादि २ ।
 खोहव—क्रि० कोड़व भीतर शुद्ध
 करव ।
 खोआ—खाधुर, अधिक
 खएनिहार ।
 खयाल—वि० स्मरण १ नाना
 चेष्टा २ ।
 खयाली—नाना चेष्टा कएनिहार ।
 —
 ग
 गए—अ० अनादरणीय स्त्रीक
 सम्बोधन ।

गएव—वि० अदृश्य ।
 गएव बाजी—परोक्षस्थितिपूर्वक
 खेडि सतरञ्जक ।
 गएर—मेघक घटा ।
 गएरह—वि० प्रभृति ।
 गओ—उपकरण, इष्टसिद्धि ।
 गंगा—स० जाह्नवी, नदाविशेष ।
 गंगाजल—गङ्गानदीक जल ।
 गंगाजली—गंगाजल रखवाक
 पात्र ।
 गंगौट—गङ्गाक मृत्तिका ।
 गच—रोड़ा-सुरखोसँ दड़ कएल
 मकानक सहन ।
 गच्छ—सजातीयक झुण्ड ।
 गछगर—गच्छ + गर—
 अधिक समांगवाला १ गाछ +
 गर—अधिक गाछसँ युक्त २ ।
 गछपकू—गाछमे पाकल फल ।
 गछव—क्रि० स्वीकार करव ।
 गछार—एक एकत्र बन्धन ।
 गछारव—क्रि० दू बोझ आदिक
 एकल कए बान्हव ।
 गछिअन—अधिक गाछी ।
 गछौनही—गाछक अधिक छाह ।
 गज—दू हाथक प्रमाण वस्त्रादिक
 नपना १ तत्परिमित

(वस्त्रादि) २ ।
 गज गज करव—क्रि० पानिसँ
 अधिक भिजने स्थलक अति
 कोमलीभाव ।
 गजपटाएव—क्रि० गजपट +
 अब—विजातीयसँ मिश्रित
 होयव ।
 गजपटी—विजातीयसँ साङ्कार्य्य ।
 गजपीपरि—गजविपली औषधि
 विशेष (महाबृक्ष) ।
 गजव—क्रि० मनमे आनन्द
 होयव ।
 गँजबाह—गँजसँ माछ मारनिहार
 गँजबाहि—गँजसँ माछ
 मारनाइ ।
 गजमुक्ता—सं० हाथीक मस्तक-
 मणि ।
 गजरथ—सं० हाथी-लागल
 रथ ।
 गजरा—मोट माला १ कन्द-
 विशेष २ ।
 गजिआ—घोड़ा, खजाना रखवाक
 कोरा ।
 गजीफा—क्रीड़ाविशेष ।
 गजुरा—अङ्कुरक पात ।
 गंजन—सं० भस्म ।
 गंजित—सं० भस्मित ।

गटगटगोड़व—क्रि० गीड़ +
अव—विना चित्रोनहि
[खाएव (निन्दामे)]
गट्टा—पहुँचा मणिवन्धक जोड़।
गड़कब—क्रि० घुमैत चलब।
गड़खइ—रिखा, घरक वेष्टन
गर्त।
गड़गड़ करब—क्रि० गड़गड़ +
अब—गड़गड़ शब्द करब।
गँड़गोआरि—इन्द्रवधूटी, सहस्र-
पाद पीलु।
गड़व—क्रि० निखात होयब,
कण्टकादिक प्रवेश।
गड़वड़—सन्दिग्ध १ अथथावत्
प्रवृत्त २।
गड़वड़ाएव—क्रि० गड़वड़ +
अब—सम्पन्न नहि होयब
अथथावत् होयब।
गड़वड़ी—सन्देह १ यथावत्
असम्पत्ति २।
गड़र—वृत्त विशेष १ पटिया
आदि बनएवाक प्रथम क्रिया २
गड़रब—क्रि० देह हाथक टटैनी
१ गाड़सँ सड़िकेँ खसय २।

गड़हा—गहीड़ गर्त।
गड़ही—आवृत राजाऽऽवास
भूमि।
गड़ार—गाड़क पीलु।
गँड़ास—अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र।
गड़िआएव—क्रि० गड़ि + अव
आँखिक दुखाएव।
गँड़िआह—पुरुषक सङ्ग मैथुन
प्रवृत्त पुरुष।
गड़िपेनी—गड़िआयब,
अस्त्रिवेदना।
गँड़िखुल्ला—निर्गन्ध बेहाया।
गँड़िथोभ—थोड़ पसरल जल।
गँड़िमोथी—मोथी तुल्य तृण-
विशेष।
गड़ुआ—उपधान।
गरु—कठिन।
गड़ेगड़े—क्रीड़ाविशेष।
गढ़—किला दुर्ग।
गढ़व—क्रि० भूषणादिक
निर्माण।
गढ़ा—गहीड़ खाधि।
गढ़ाइ—गढ़व १ गढ़वाक गेतन २।
गढ़ी—दुर्ग, राजाक देवालय
घेरल आवास।
गड़ुआरि—खी गुर्विणी।

गणगोआरि—इन्द्रवधू गँड़-
गोआरि।
गणास—अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र।
गणिआह—पुरुषक सङ्ग मैथुन
कएनिहार।
गणिखुल्ला—निर्गन्ध नम
(निन्दामे)।
गणिथोभ—थोड़ पसरल जल।
गणिमोथी—मोथी तुल्य तृण-
विशेष।
गणडा—चारि संख्याक १ जीव
शून्य (अण्डा) २
बढ़ी विशेष ३।
गतात—गतागत गमनागमन।
गतानव—क्रि० घोर सककत कए
खाट आदिकेँ सककत करब।
गतायात—गमनागमन।
गत्तर—गात्र, अङ्ग।
गत्ता—पुस्तकक रचाक हेतु मोट
आवरण।
गदह—कलह।
गदह पुराने—पुनर्नवाशाक-
विशेष।
गदह मचव—क्रि० घोलपूर्वक
बहुत भगड़ा करब।
गदहा—गदंभ।
गदहिआ—जातिविशेष।

गदही—खी० गदहाक खी।
गदा सं० अस्त्रविशेष
गदिआएव—क्रि० गदिअब +
अब—घातकेँ गदिसँ
रहित करब।
गदिगर—अधिक गादिवाला
(बॉस आदि)।
गदेला—छोट गद्दी कन्था।
गदौस—व्याज्य तृणादि कस्तर।
गद्गद—सं० आनन्दादिसँ
अस्पष्ट कएठ।
गदर—आसिन मे धेनिहार धान,
तादृश अन्न विशेष आँसु।
गदह—कलह, उच्चैः शब्दपूर्वक
भगड़ा।
गदह मचव—क्रि० बहुकर्तृक
उच्चैः शब्दसँ कबह होयब।
गद्दी—सतुल आस्तरण।
गनगनाएव—क्रि० गनगन +
अब—गनगन शब्द करब ?
उद्धृष्ट होयब, २।
गनगनी—गनगनाएव गनगन
शब्द।
गनगोआरि—इन्द्रवधूटी, सहस्र-
पाद पीलु।
गनव—क्रि० गणना।
गनिआरि—गणिकारिका, वृत्त-

विशेष ।

गन्ती—गणना ।

गन्धक—सं० धातुविशेष ।

गन्धकी—गन्धकी हि०

कुकरो धा ।

गन्धपलासी—श्लेषधिविशेष ।

गन्धपसारनि—गन्धप्रसारिणी,

श्लेषधिविशेष ।

गन्धकी—गन्धकी, हि. कुरो धा ।

गन्धकौआ—दुगन्धोपेत ।

गप } वार्तालाप ।

गप्प }

गप्पसप्प—वातचीत ।

गप्पी—मिथ्या गप्प कएनिहार १

अधिक गप्प कएनिहार २ ।

गप्पा—अङ्कुरी मूलक मध्यदेश ।

गफलति—वि० भूलचूक ।

गव—रोपवाक हेतु आँटी सँ फुटा-

ओल धान्यादिक बीआ ।

गवजेव—क्रि० ल + अब-प्रथमतः

धान्य रोपण ।

गवसूआ—पीलुविशेष ।

गवहा संक्रान्ति—गर्भहा संक्रान्ति,

कार्तिक मासक (संक्रमण ।

गवाह—वि० साक्षी ।

गवाही—साक्षिता ।

गवैया—गायक ।

गव्वर—मना कयलहु पर चुपे

रहि ओहि काजके नहि

छोड़निहार ।

गर्भ—धान्यादिक गर्भ ।

गर्भभ—क्रि० मालक गर्भ-

धारण करब ।

गर्भहासंक्रान्ति—कार्तिकक

संक्रान्ति ।

गभिनाएव—ना० गाभिन + अब-

गाभिन होएब ।

गमइ—छोट गाम ।

गमक—सौगन्ध्य ।

गमकब—क्रि० अपन सुगन्धि

पसारब ।

गमकी—सुगन्धि ।

गम खाएव—वि० क्रि० ख +

अब-तत्काल निवृत्त होएब ।

गमगम—किञ्चित् गरम १

सौगन्ध्य २ ।

गमगमाएव—क्रि० गनगम् +

अब-किञ्चित् उष्णता पाएब १

गमकब २ ।

गमब—क्रि० परीक्षा करब ।

गमरपन } —ग्रास्यता, अन-

गमरपना } मिश्रता ।

गमरपनी }

गमाएव—क्रि० गमब् + अब-

काल व्यतीत करब १ । विनष्ट

करब २ ।

गमागम—अत्यन्त सौगन्ध्य ।

गमार—ग्रास्य, अनभिज्ञ ।

गमै—छोट गाम ।

गमैआ—गामक (विषय) ।

गमैत्री—ग्रामन्तर गमन ।

गमैया—गामक विषय ।

गम्भीर—स्थिरान्तःकरणक, अच-

ञ्छलप्रकृतिक ।

गम्हड़ा—धान्यादिक गर्भ ।

गम्हड़ी—ब्रं हि, षष्ठिका ।

गम्हारि—गम्भारी ।

गर—गल, गरदिन १ ठोक बैस-

बाक योग्य भाग २ चारक

उत्तर ३ अवसर ४ ।

गरगट—गलगत गलेपतित,

बलाय ।

गरगोटा— } गलहस्त गरदनिक

ग गोटाआ } प्राणी पकड़ि डेलब ।

गरचुन्नी—मच्छक प्रभेद ।

गरदिन—ग्रीवा ।

गरदिनआँ—गलहस्त, ग्रीवाक

पछिला भाग पकड़ि डेलब ।

गरदा—धूलि ।

गरदाम } —गलदाम, मालक

गरदामी } गरदनिक डोरी ।

गरय—चारक क्रमिक उत्तर १

घरक उच्चता २ ।

गरयगर—उच्च गरय बाला (घर) ।

गरलगू—जे खयलासँ गरमे

जागिजाय ।

गर लागब—क्रि० गरक यथोचित

उच्चारणमे असामर्थ्य ।

गरसँ } —गलसम, भरि गर-

गरसँआँ } दिन (जख)

गरसब—क्रि० प्रसन राहू पराग ।

गरहत्था—गलहस्त ।

गरागरौबलि—परस्पर गारि ।

गरा लागब—क्रि० लग × अब-

गल विवरमे अटकब ।

गरीब—वि० दरिद्र ।

गरुड़—सं० पक्षिविशेष ।

गरुहन—गुरु धान्य, मालभोग

आदि, जे अधिक दिनें गाढ़मे

पाकए ।

गरू—कठिन श्रमसाध्य ।

गरै—माछक प्रभेद ।

गर्ज—वि० आवश्यकता १ मेघक

शब्द २ ।

गर्जू—वि० गर्जबाला ।

गर्द—घोल, कोलाहल ।

गर्दमघोल—अधिक घोल ।
 गर्दा—वि० धूलि, धूरा ।
 गर्व—सं० अभिमान ।
 गर्म—वि० उष्ण, गरम ।
 परिणाममे उष्णगुणक २ ।
 गलकट—गरदनि कटनिहार,
 दुष्ट ।
 गलगलाएव—क्रि० गलगल ×
 अब—शिशुशुकादिक अत्यन्त
 अस्पष्ट बाजव, प्रथम बज-
 वाक श्रारम्भ करव ।
 गलज्जर—घोल ? किंवदन्ती ? ।
 गलती—वि० हि० भूल ।
 गलफड़—ओष्ठक दुहू भाग ।
 गलफुल्ली—गालक फुल्लनाई,
 रोगविशेष ।
 गलफुल्ल—फूलज गालवाला ?
 अर्द्ध सिद्ध तण्डुल २ ।
 गलब—क्रि० द्रवीभूत होएव
 विज्ञय ।
 गलमोचनी—छोट गेडुआ ।
 गलमोछ—गाल पर्यन्त अवस्थित
 मोछ ।
 गलिगारी—गलती, सिकरत
 रास्ता ।
 गलौधी—गलबन्धनी, माथ गालमे

लपटएवाक वस्त्र ।
 गल्ली—रथ्या, सिकस्त वाट ।
 गल्लीकुचची—गलती प्रभृति
 सिकस्त जगह ।
 गस—वि० अचैतन्य, मूच्छा ।
 गसव—क्रि० दृढ़ सम्बद्ध करव ।
 गह—दोग ।
 गहकरन—ओषधि विशेष ।
 गहड़ि—लूरि, अवगति ।
 गहदाएव—क्रि० गहद + अब—
 अनास्था, उपेक्षा करव, गौरव
 करव ।
 गहन—ग्रहण, राहूपराग ।
 गहनमरू—गहनक कारण
 अज्ञभङ्गवाला ।
 गहना—भूषण ।
 गहना-गुरिआ—गहना आदि ।
 गहव—क्रि० गह + अब—जोरसँ
 पकड़व ? छिद्रक पूर्ति करव २ ।
 गहवर—ग्रामदेवताक गह्वर,
 आगमन गृह ।
 गहाकि—ग्राहक ।
 गहिड़का—गहीड़ प्रभेदक ।
 गहिड़ाइ—गंभीरता ।
 गहुआ—पकड़वाक यन्त्रविशेष ।
 गहुमन—कुण्ठपादाङ्कित सर्प ।

गहुमा—धानक प्रभेद ? रङ्ग-
 विशेष २ ।
 गहुमी—रंग विशेष ।
 गहुम—गोधूम, अन्नविशेष ।
 गाइनि—स्त्री, गायनी, गीत
 गओनिहारि ।
 गाँउज } —पेनाकार मुखादिक
 गाँउजि } विकार ।
 गाए—गौ हि० ।
 गाएव—क्रि० गव + अब—गान
 करव ? वि० अदृश्य २ ।
 गाओ—गाम ।
 गाओल—उपगीत ।
 गागर—माछक प्रभेद ।
 गाङ्ग—गङ्गा नदी ।
 गाछ—वृक्ष ।
 गाछी—बहुत गाछसँ युक्त स्थान ।
 गाँज—माछ मारवाक यन्त्रविशेष ।
 गाँजर—कन्दविशेष ।
 गाजर-बीजर—साफ नहि कयल
 ? मिश्र २ ।
 गाँजा—गङ्गा, भौंग सन ओषधि
 विशेष, जकर धुआँ पीअल
 जाइत अछि ।
 गाँभी—फलविशेष ।
 गाड़—निखनन ? पटएवाक हेतु
 करीनक पड़ाव २ ।
 गाड़व—क्रि० निखनन ।

गाड़ा—माटिमे गाड़ल मुरदा ।
 गाड़ी—पहिआयुक्त स्थान ।
 गाढ़—गील सँ आन मोट (दुग्धादि)
 गाँती—वस्त्र विशेष ।
 गाद } —जलमे बैसल मल ?
 गादि } बाँसक त्वचासँ भीतर
 भाग २ ।
 गाथनि—ग्रन्थन ।
 गाँथव—क्रि० गाँथ + अब—ग्रन्थन ।
 गान—संगीत गाएव ।
 गाधिस—वालुका सँ अमिश्रित
 माटि कुलालकामृत्तिका ।
 गाभ—राखल दूधक उपर जमल
 भाग ? धान्यादिक गर्भ २ ।
 गाभिनि—स्त्री० गर्भिणी, गर्भ-
 युक्त (गाए महीसि आदि) ।
 गाम—ग्राम ।
 गाय—गौ हि० ।
 गारव—क्रि० निगालन ।
 गारा—गारब आन्नादिक रस ।
 गारागारौबलि—रस्पर गारि
 देव ।
 गारि—गाली, दुर्वाक्यविशेष ।
 गारि देव—क्रि० द × अब—
 गाली प्रदान ।
 गारि पढ़व—क्रि० पढ़ × अब—

गारिक शब्द बाजव ।
 गाल—गल्ल कपोल ।
 गाल करव—क्रि० कर × अब—
 बात बनाएव ।
 गाल बजाएव—क्रि० बजव +
 अब—प्रधिक बाजव ।
 गाहकि—ग्राहक ।
 गाही—पञ्चप्रमाणक ।
 गिजटाह—संकीर्ण, परस्पर-
 सम्बद्ध गाज बीजर ।
 गिजब—क्रि० उनटाए-पनटाए
 अत्यन्त छुबव ।
 गिड़ब—क्रि० निगिलन, भक्षण ।
 गिदरनोच—आधा-छीधा फाटल
 नोचल काड़ा आदि ।
 गिद्ध—गृद्ध ।
 गिधनी—अत्यन्त छोटे (माछ) ।
 गिन्नी—सुवर्णमुद्राविशेष ।
 गिर गिट—पल्लो, गृहगोधा ।
 गिरथाइनि—स्त्री० गृहस्थायिनी,
 घरक मुख्य स्त्री ।
 गिरहकट—बान्हल गीरह कट-
 निहार ।
 गिरहबाज—परबाविशेष ।
 गिरहबात—वातरोगविशेष ।
 गिरि—ब्राह्मणविशेष ।

गिरिआइनि—गिरि जातिक
 स्त्री ।
 गिलगर—अधिक गील ।
 गिलट—धातुविशेष ।
 गिलटी—छट् छट् कएनिहार
 शरीरस्थ मांसपिण्ड ।
 गिलास—जलपानपात्रविशेष ।
 गिलेबा—पजेबापर पजेबा बैसए-
 बाक हेतु बनाओल गीब
 माटि ।
 गीजब—क्रि० गिज् × अब—
 उनटाए-पनटाए अत्यन्त
 छुबव । आलोइन ।
 गीड़ब—क्रि० गिड़ × अब—
 निगिलन, भक्षण ।
 गीत } सं—गानयोग्य राग-
 गीति } बद्ध पद्यविशेष ।
 गीदर—शृगाल ।
 गीरह—ग्रन्थि १ चारि अँगुर
 प्रमाण २ ।
 गील—अधिक पानिक सम्बन्ध
 परस्पर सम्बद्ध भातआदि ।
 गुग्गुल—गुग्गुल, धूपविशेष ।
 गुच्छा—गुच्छ, एकमे सम्बद्ध
 अनेक ।
 गुजर—वि० निर्वाह ।

गुज्जी—कानक मल ।
 गुठरी—गोलाकार सटल सकत ।
 गुड़कैल—मालक रङ्गविशेष ।
 गुड़खीर—गुड़चीर, गुड़क सङ्ग
 रन्हल भात ।
 गुड़चल्ला } —गूडा चालवाक
 गुड़चाला } भूरबाजा सूप ।
 गुड़रव—क्रि० अँखिक
 आस्फाजन ।
 गुड़ारव—क्रि० अँखि आस्फा
 लित करव ।
 गुडाह—गूडासं युक्त ।
 गुड़िआ—गुटिका, छोटे गोलाकार
 बनाओल ।
 गुड़म बाजा—वाद्यविशेष ।
 गुड़डी—क्रीडार्थ आकाशमे उड़य-
 वाक कागज ।
 गुण—सं० औदार्यादि प्रशंसा
 प्रयोजक धर्म १ द्रव्य गुण २
 गुणमन्त—गुणवान्, स्त्री०
 गुणमन्ति ।
 गुणी—सं० गुणोपेत, पण्डित ।
 गुथनी लागव—क्रि० लग् ×
 अब—एकमे वा एक ठाम
 सटल सटल बहुतक सम्बन्ध ।
 गुदगर—अधिक गुदासँ युक्त ।

गुदा } —फलादिक खचासँ
 गुदी } आवृत भाग ।
 गुन—गुण १ डोरीमे भत्ता २ ।
 गुनखराह—असम्यक् भत्ताबाला
 (डोरी) ।
 गुनबाह—नाओक गून (डोरी)
 धएनिहार ।
 गुनमन्त—गुणवान्, स्त्री०
 गुनमन्ति ।
 गुनी—गुणी ।
 गुपचुप—अप्रकाश ।
 गुप्ती—गुप्तास्त्रविशेष ।
 गुफा—गुहा ।
 गुम—अ० मौन, चुप ।
 गुमनामा—विना नामक (चीठी) ।
 गुमसड़ब—क्रि० गुमसड़ + अब—
 डेरीक तापसँ निःसार होएब
 गुमान—वि० अभिमान ।
 गुमार—गरमी ।
 गुमास्ता—वि० राजाधिकृत
 पुरुषविशेष ।
 गुम्म—अ०, मौन ।
 गुम्मा—पुछलासँ उत्तर नहि
 देनिहार ।
 गुरछा—गुच्छ ।
 गुरदी—अमापनोदक सुकाक

आघात ।
 गुरदी पारव — क्रि० श्रमानय
 नार्थ मुक्काक आघात करव ।
 गुरमही—गोडुम्बा, फलविशेष ।
 गुरमुठि—एकमुहडा ।
 गुरमुठि लागव—क्रि० गल् +
 अब—चारु दिस सँ एकत्र
 समाविष्ट होएव ।
 गुरम्ही—गोडुम्बा, फलविशेष ।
 गुरीच—गुह्वी लता, ओषधि-
 विशेष ।
 गुरू—गुरु, अध्यापक १ उचनय
 नमे आचार्य २ ।
 गुलगुल—पलपल, कोमल ।
 गुलगुलाएव—क्रि०, गुल गुल +
 अब—आआदिक कोमली भाव
 १ गुलगुल शब्द होएव ।
 गुलगुलाहटि } —गुलगुल
 गुलगुलाहटि } शब्द होएव ।
 गुलजाफरी—गेना फूलक प्रभेद ।
 गुलजामु—जामुक प्रभेद १
 सदाकर मिष्टान्नविशेष २ ।
 गुलदाबरी—फूलक प्रभेद ।
 गुलफा } नारिकेरक फलगत
 गुलफी } अङ्कुर ।
 गुलबिआ—गुलाबी प्रकारक रङ्ग
 १ ओहिसँ रंगल २ ।

गुलभण्टा—भौंटाक समान
 ओषधिविशेष ।
 गुलमेख—कौंटो, जकरा उपर
 थोपी हो ।
 गुलाब—शतश्री, गन्धाढ्या,
 पुष्पविशेष १, गुलाबसँ वासित
 जल २ ।
 गुलाबखाजा—मिष्टान्नविशेष ।
 गुलाबजामु—मिष्टान्नविशेष ।
 गुलाबपास—वि०, गुलाबसँ
 वासितजलपात्रविशेष ।
 गुलाबी—रङ्गविशेष ।
 गुलेंच—एक प्रकारक फूल ।
 गुलेती—गुल्ली फेंकवाक धनुष ।
 गुलेवा—वि०, गरब्जर ।
 गुल्लरि—उडुम्बर, फलविशेष ।
 गुल्ली—गुलिका, छोट वतुलीकृत
 मृत्तिकादि १ गुल्ली डंठा
 खेलिक छोटका खण्ड
 दण्ड २ ।
 गुल्ली डंठा—क्रीडाविशेष ।
 गुहकीरा—विष्टाक कीड़ा ।
 गुहचोरा—गुहचोर, खदपात
 चोरओनिहार सिंहा चोरसँ
 आन चोर ।

गुआ—गुवाक, पूगीफल ।
 गुआमाला लाचारचित माख्य
 विशेष ।
 गुड—गुड इचुक विकारविशेष ।
 गुड—क्रि० गुड + अब—
 हाथसँ—बुकव ।
 गुडा—कुटने तण्डुलादिसँ बह-
 राएल चूर्ण १ चूर्ण, २ ।
 गुडी—चूर्ण ।
 गुड—क्रि० गुथ् + अब—चुट-
 कीसँ खीचि—खीचि दद
 करव ।
 गु—गुण ।
 गुव—क्रि० गुन् + अब—
 गुणना ।
 गुला—सारङ्गी वाद्यविशेष ।
 गुव—क्रि० गुम् + अब—
 डेरीक तारसँ शिथिल
 होएव ।
 गु—विस्फोट वणविशेष ।
 गु—विष्टा ।
 गुव—क्रि० गुह + अब—ताग-
 मे ससारि ससारि फूल आदिक
 सटाएव ।
 गुहार—ग्रीवाभूषण ।
 गु—स० घर ।

गृहवाज—परवाक प्रभेद ।
 गृहस्थ—घरमे रहनिहार खेतीसँ
 निर्वाह कएनिहार ।
 गृहस्थाइ { खेतीपथारी कृषिकर्म ।
 गृहस्थी {
 गृही—गृहस्थ ।
 गेआँति—जाति सात पुरुषसँ
 उपर दशम पर्यन्त ।
 गेआन—ज्ञान ।
 गेआन पचेसी—क्रीडाविशेष ।
 गेंग—बकवाद ।
 गेंग जोतव—क्रि० जोत् + अब—
 बकवाद करव ।
 गेँट—तरा उपरी कए लगाओल
 काष्ठादिक डेरी ।
 गेँटव—क्रि० गेँट + अब—तरा
 उपरी कए एकत्र, करव ।
 गेँटिआएव—क्रि० गेँटिअब +
 अब—गेँट लगाएव ।
 गेँठ (ठि)—ग्रन्थि ।
 गेँठ जोड़वा—दम्पतिक वस्त्रद्वय
 मिलाए ग्रन्थि ।
 गेँठरी—हि० मोटरी ।
 गेँठि आएव—ना०, गेँठ + अब
 = गेँठिअब + अब—ग्रन्थिसँ
 युक्त करव ।

गेँठिआवात—वातरोगविशेष
 गेँठि कट { गेँठ कटनिहार ।
 गेँठिकट्ट {
 गेँठिवन—श्लेषविशेष, ग्रन्थि-
 पर्ण ।
 गेँडा—खड़ी, जन्तुविशेष ।
 गेँडी—काष्ठक खण्ड ।
 गेँडुआ—उपधान ।
 गेँडुली—बीड आदिमे सय्यवा ६ हेतु
 सूत्रादिनिर्मित गोलाकार वस्तु ।
 गेन—कन्दुक ।
 गेना—पुष्पविशेष ।
 गेनिआरि—गणिकारी, वृक्षविशेष
 गेन्हारी—तण्डुलीयक, गान्धारी,
 शाकविशेष ।
 गेरु—गैरिक ।
 गेरुआ—गेरुक रङ्ग ।
 गेलही } —फलविशेष ।
 गेलही }
 गैघरा—गोगृह, गोशाला ।
 गैच—घक्रताविशेष ।
 गैचव—क्रि० गैच् X अब—
 वक्रीभाव ।
 गैचाह—किञ्चित् वक् ।
 गैची—मत्स्यविशेष ।
 गैवार—गोधारक, गोरचार्य का

गैवारि—गोचक्रक क्रिया गाढ़क
 चराएवआदि ।
 गैसिही—मुद्राविशेष बटेर पकड़-
 बाक हेतु गोशृङ्गाकारग्रहण ।
 गो—गोबरक ढेरी ।
 गोअरटोली—गोअर ६ टोल ।
 गोअरनट—वस्त्रविशेष ।
 गोअरनटुआ—नर्तकविशेष ।
 गोअर—गोप जातिविशेष स्त्री०
 गोआरि ।
 गोआह—गबाह, साक्षी ।
 गोआही—साक्षीक क्रिया ।
 गोइठा—शुष्क गोमय (गोविष्टा) ।
 गोखुला—गोक्षुर, श्लेषविशेष ।
 गोंग—अवक्ता १ दुराग्रह २ ।
 गोंग जोतव—क्रि जोत् X अब—
 दुराग्रहक अत्याग ।
 गोंगिआएव—क्रि० गोंगि X
 अब—अस्पष्ट बाजव ।
 गोंगिआह—अस्पष्ट वक्ता ।
 गोड—अवक्ता १ दुराग्रह २ ।
 गोड जोतव—क्रि० जोत् X
 अब—दुराग्रहक अत्याग ।
 गोजर—कनगोजर, बीछ आका-
 रक वृक्ष कीट ।
 गोभनट—स्त्रीक पहिरन साड़ीक
 निम्नप्रान्त ।

गोट—सर्प १ विनु दडरल (द्विदल)
 २ व्यक्ति ३ ।
 गोटगर—अधिक व्यक्तिसँ युक्त ।
 गोटपगरा } —कचित् कचित्
 गोटपडरा } स्थित ।
 गोटरस—क्रीडाविशेष ।
 गोट—नूआमे खगएवाक सुवर्णा-
 दिक तारसँ निर्मित आध
 अ.डुर चाकर वस्तु ।
 गेटागोटी—प्र० एकाएकी,
 प्रत्येक ।
 गेटिना—काष्ठखण्ड ।
 गोटो—आपरूपी, देहक फोंका १
 सतरञ्ज प्रभृति खेडिक पात्र २
 गुञ्जिका ३ ।
 गोटैक—एक गोट ।
 गोट—गोष्ठी, एकत्र उपस्थित
 जनसमूह १ बैसलक नूआसँ
 वेष्टित धरसहित दुहु देहुन २ ।
 गोटदार—बान्हल पागक प्रभेद ।
 गोट मारव— } बैसलमे नूआसँ
 गोट लगाएव— } देहुन सहितक
 वेष्टन करव ।
 गोटिआएव—क्रि० गोष्ठांमे बैसब,
 एकत्र अनेकक उपस्थिति ।
 गोटुला—चिपरीगोष्ठाक घर ।

गोड़कट—पाएर पसारि सुतबाक
 अयोग्यता ।
 गोड़थरि } पाएर रखबाक स्थान ।
 गोड़थारी }
 गोड़ना—तेनाक पाएरक काड़ा ।
 गोड़पैच—गतायातव्यवहार ।
 गोड़रा—टाडबाला माछ ।
 गोड़लग्गी—प्रणाम ।
 गोड़हन—सुतनिहारक पाएर
 दिसक भूमि १ छोट बालकक
 काड़ा २ ।
 गोड़हन्नी—नामनाम पाथल
 सुखाएल गोबर ।
 गोड़ाइत—रुचहरीमे असामी
 बजएबाक हेतु नियुक्त पुरुष ।
 गोड़ा } पालकआधार बाछादि ।
 गोड़ानी }
 गोड़ी—पालक अवयव छोट आधार ।
 गोड़ैती—गोड़ाइतक काज ।
 गोड़लत्ती—गोड़िके गोंज टापि
 बनएबामे उपकारक लता-
 विशेष ।
 गोँदि—मत्स्योपजीवी जातिविशेष
 स्त्री० गोड़िनी ।
 गोँदिआरी—गोँदि जातिक
 टोल ।
 गोँत—माखक मूल ।

गोतव—क्रि० गोत + अव -
मालक मूत्रत्याग ।
गोत्र—सं० बीजी मुनि ।
गोधन—गोबरक बनाओल पुरु-
षाकार गोवर्द्धन पर्वत ।
गोधिआँ—पचेली प्रभृति खेड़िमे
एक सङ्ग हरि जीतक भागी ।
गोन—निम्बनिर्यास, नीमक
लस्सा ।
गोनरि (डि)—एकडोरिआ
बीनल पटिआ ।
गोप—सं० गोआर जातिविशेष ।
गोपलाएव—क्रि०, गोपल् + अव
- अदृश्य होएव ।
गोपालखत्ता—वस्तुविनाशकर्त्ता ।
गोपीचन्दन—गोपीतडागक
मृत्तिका ।
गोबर—गोमय ।
गोबरकदनी—स्त्री० गोबर
कढ़बामे नियुक्त स्त्री ।
गोबरगनेस—गोबरक गणेश,
अक्रमय ।
गोबरछत्ता—शिलीन्ध्र, छत्राकार
भूमिमे उत्पन्न ।
गोबराइन—गोबरक गन्ध सदृश
गन्ध ।

गोवराड—गोबर-एकट्टा करवाक
भूमि ।
गोवराह—किञ्चित् गोबरसँ
युक्त ।
गोवरौड़—गोबर माटि नूड
रखवाक पात्र ।
गोब्राह्मणी—यथा गाए ब्राह्मण-
केँ मारब वा गाय ब्राह्मणसँ
मरब दुहू अधलाह तथा
क्रियान्तर ।
गोर—उ० गौरवर्ण । स्त्री० गोरि ।
गोरका—उ० गौरप्रभेदक, स्त्री०
गोरकी ।
गोरब—क्रि० फलारिकेँ पकवाक
हेतु माटिक तर वा निमुन्न
बासनमे राखब ।
गोरहन्नी—नाम पाथल गोबर १
बोमक वाद्यविशेष २ ।
गोरहा—तराउपरो कय पाथल
सुखायल गोबर ।
गोराइ—गौरवर्णत्व ।
गोरि—स्त्री० गौराङ्गी ।
गोरिआ—गोपजातिविशेष ।
गोरु—बिनु बाहल गाय ।
गोरुआ—गोरलासँ पाइल
(फल) ।

गोरैआ

✽ मिथिलाभाषाकोषः ✽

गौआँ ६६

गोरैआ—गोआरक देवता ।
गोरोचन—गोरोचन, गाइक
कपारक पीअर रङ्ग ।
गोल—वतुल १ वर्तुलकाष्ठ २
वर्णविशेष ३ ताटल कपिश-
वर्णक माल ४ मण्डल ५
एकमतिआक समूह ६ ।
गोलका—गोलप्रकारक ।
गोलट—परस्परक बालककेँ
परस्पर अपन कन्यादान ।
गोलमाल—अज्ञात प्रकारेँ नष्ट ।
गोलरी—गहूम आदिक सीस
थकुचला पर अवशिष्ट गुठरी ।
गोलहत्थी—हरदि दय अधिक
पाइसँ रान्हल गोलाकार
भात ।
गोला—पैघ डेप १ अन्नक पैघ
दोकन २ ।
गोलाइ—वर्तुलता ।
गोलागोली—अनेक गोब, अनेक
विभिन्न मतक मण्डल ।
गोलालाठी—बन्धनविशेष ।
गोलालाठी भरब—क्रि० एक
विशेष प्रकारक बन्धन करय
यथा—हस्तद्वयबन्धन, पाद
द्वय बन्धन, बलयाकार हाथकेँ

जाहुक उपर देने प्रवेशन,
हाथक उपर देने दुहू जाहुक
मध्यमे याष्टक प्रवेशन ।
गोलिआएव—ना० गोलअबू X
गोलिअब X अव-धान्यादिक-
गोलाकार करब ।
गोली—गुब्बिका ।
गोलीताग—गोल भिडिआओल
सूत ।
गोलेस—जनसमूहक प्रधान ।
गोलैसी—एकवाक्यतापरन जन-
समूहक प्रधान व्यक्तिक
क्रिया ।
गोशाला—सं० गायक आवास-
स्थान ।
गोसबन्द—वि० उनी ओइनाक
प्रभेद ।
गोसबारा—अविभक्त, साझी
(धन) ।
गोसाईं—पु० गोस्वामी, देवता
१ बाबाजक उपाधि १ ।
गोसाउनि—स्त्री० कुलदेवी ।
गोह—गोबरक ढेरी ।
गोहारि—देवकृत रत्ना ।
गोहि—ग्राह ।
गौआँ—एकग्रामवासी ।

गौ आरय—एक ग्रामवासीक व्यवहार ।

गौछब—क्रि० दू बोझकेँ एकत्र बान्हव ।

गौज—मुहक लेरपोटा १ अतिवृद्धि वा कालातिक्रमसँ निष्कलीभूत (धान्यादिवृत्त) ।

गौजाएव—ना० गौज होएव, धान्यवृत्तादिक अतिवृद्धि वा कालातिक्रमसँ निष्कलीभाव ।

गौर—गौरी, पार्वती ।

गौरनेजा—गौरीपूजासामग्री ।

गौरव—सं० अहंकार १ गुरुता २ ।

गौरिआ—मालभोग घेराक प्रभेद १ मालभोग धानक प्रभेद २ ।

ग्रामित—ग्राममित्र, एक ग्रामवासी ।

ग्रिमहार—ग्रीवाक हार, कण्ठ-भूषणविशेष ।

घ

घओना—क्रन्दनविशेष ।

घघरा—नटुआक पहिरवाक वस्त्र-विशेष ।

घघापाल—सभ अंगकेँ लम्बा वस्त्रसँ आच्छादित कएने पुरुष ।

घघरी—कुमारि नेनाक पहिरवाक वस्त्रविशेष ।

घछफछाएव—क्रि० घछफछ + अब—तारतम्य करव ।

घटक—विवाहक घटनाकर्ता ।

घटकैती—घटकक क्रिया ।

घटघट पिअब—क्रि० पिब + अब—सशब्द पान ।

घटना—सं० योजना, यत्न ।

घटब—क्रि० श्लेष होयव ।

घटवार—उ० घाटपर अधिकृत (पुरुष) स्त्री० घटवारीनी ।

घटवारि—घाटक अधिकारीक क्रिया ।

घटही—निश्चय पार कएनिहार घाटपर स्थित (नौका) ।

घटाओ—घटा, मेघाडम्बर १ श्लेषीभाव २ ।

घटाटोप—आडम्बर, महत्त्वक प्रकाश ।

घटावर्जन—सर्वथा गतायासक निरोध ।

घटिआ—पुं० घाटमे नियुक्त (पुरुष) ।

घटिआएव—ना० घट्टी + अब—घट्टी होएव ।

घटुआर—मनघुटाह, अमसन्न ।

घटोसब—क्रि० घटोस् + अब—घटघट शब्दपूर्वक अधिक पिअब ।

घट्टी—न्यून ।

घठिहन—घाटिक योग्य अन्न (उरीद आदि) ।

घडकब—क्रि० स्थूल वस्तुक किञ्चित् विचलित होयव ।

घडखसाओने—वाइ खसओने बन्नबामे उदासीन ।

घडबड़ाएव—क्रि० घडबड़ + अब—कतव्यविमूढ़ होयव ।

घडबड़ी—हर्तव्यमूढ़ता ।

घडमोमड़ा } —मालक रोग-
घडमोमरा } विशेष ।

घडर—अति सम्बन्ध ।

घडर पारब—क्रि० पार + अब—जोरसँ निद्रामे शब्दविशेष करव ।

घडरा—नौकाक अनुकल्प घटादि-निर्मित तरण साधन ।

घडसूर—गरदनिक पछिला भाग

घडारी—घरक स्थान ।

घडौ—राबनि पर्व विशेष १

घटी एक दण्ड काल २ घटी-यन्त्र ३ !

घड़ीसाज—घड़ीक मरम्मत कएनिहार ।

घडेर करब—क्रि० कर + अब—कोनो उद्देशे वारंवार आगमन ।

घण्टा—पैघ घण्टी १ अठाए दण्ड काल २ ।

घण्टी—देवपूजाअर्थ वाद्यविशेष ।

घताह—उ० कृत्रिम बताह । स्त्री० घताहि ।

घन—सं० लग्न-लग्न, निविड़ ।

घनगीरह—लगलग गीरहवाला ।

घनघोर—तुमुल, सङ्कुल ।

घनपोर—लग्न लग गीरहवाला ।

घपचव—क्रि० आगाँ बढ़ाए हठात् खैवव ।

घपोल—सङ्कुचिताग्र (पात्र) ।

घवहा—उ० अनादरणीय घाओ-वाला । स्त्री० घवही ।

घवाह—उ० घाओवाला । स्त्री० घवाहि ।

घमण्ड—गर्व ।

घमर्थन—आओइन, अति विचार

घमला—फुल आदि रोपवाक पात्रविशेष ।

घमलौड़—अनेक वस्तुक वा शब्दक मिश्रण ।

घमसान—बहुत व्यक्ति बज- बाक घोल १ तुमुल २ ।	घरछरी—घरक छारनाह, गुहच्छादन ।
घमाएब—क्रि० घम्+अब घामसँ युक्त होयब १ घमब्+ अब—पघिलाएब २ ।	घरजना—प्रत्येक आश्रममे एक एक व्यक्तिसम्बन्धी (निम- न्त्रणादि) ।
घमाघट्ट } घमासान } —तुमुल, सङ्कुल ।	घरजमैआ—सासुरमे बसब जमाए ।
घमौरी—घर्मजन्य देहक फाँसरी	घरदेखी—विवाहसम्बन्धार्थ घरक देखनाह ।
घम्हौरी—फलविशेष ।	घरपैसा—घर पैसनिहार (चोर) ।
घम्हौरी दाना—घम्हौरी फल सदृश अलङ्कारण ।	घरपैसी—घरमे चौरवृत्त्या पैसब ।
घर—गृह ।	घरबान्ह—बन्धनविशेष ।
घरखसाओन—उत्साहशून्य ।	घरवैआ—घरकबोक ।
घरघराएब—क्रि० घरघर+अब —कफक आक्रमणादिसँ घरघर शब्द करब ।	घरमुहाँ—घरक समुख, (गम- नादि) ।
घरघुमना—उ० घर मात्रमे घुमनिहार, बहार नहि गेनि- हार । स्त्री० घरघुमनी ।	घरहञ्ज—आश्रममे सभ व्यक्तिक मृत्यु ।
घरघुसना } —उ० अधिक काल घरमे रहनिहार ।	घरहट } —गृह निर्माण, घरक छारब आदि ।
घरघोसरा } स्त्री० घरघुसनी, घरघोसरी ।	घरहटिया—गृहनिर्माणकार्य- कुशल ।
घरछरा—घर छारबाक (बाती बा जन) ।	घरही } अ० बरपीछ प्रत्येक घराघरी } घरमे ।
	घराडी—आवासभूमि ।
	घरान—वि० परिवार ।

घरि—घौर, केराक गाछसँ बह- राएल फलगुच्छ ।	घसमोड़ब—क्रि० घसमोड़+ अब = घाड़ ठेहुन मिलाए रहब ।
घरिआएब—क्रि० वरि+अब— दुःखसँ घर लेब ।	घसिआरा—हाथी प्रभृतिक घास कटनिहार ।
घरिआर—ग्राहविशेष ।	घसेट—घर्पण, रगड़ा ।
घरिआरी—कीटकृत मृत्तिकागृह	घसेटब—क्रि० घर्पण ।
घरिपक—घरमे पाकल (केरा) ।	घाँइ—तत्त्व बुझब में निविष्ट (निन्दामे) ।
घरेड़—अतिसम्बन्ध (निन्दामे) ।	घाइल—वि० अखसँ छिन्न ।
घरैआ—घरमे व्यवहार्य (कार्य आदि) ।	घाओ—घण ।
घरैत—उ० घरबासी, घरवाला ।	घाघस—बदरी, दुर्दिन ।
घरैतनी—खो० घरवाली ।	घाघड़ा—निविष्ट, परिपूर्ण, पटु ।
घसकटनी—खो० घास कट- निहारि ।	घाट—घट्ट, पोखरि प्रभृतिमे स्नानादिक स्थल ।
घसकट्टा—घास कटनिहार (लोक हांसू आदि) ।	घाटि—घटती, अल्पोभाव ।
घसकव—क्रि० बिनु कहने चल जाएब (निन्दामे) ।	घाँटी—घण्टी ।
घसब } —क्रि० घस+अब— घर्पण ।	घाठि—बेसन, द्विदलक शलचन चूर्ण ।
घँसब } —घर्पण ।	बाड़—घाटा, अवयवविशेष, ग्रीवा ।
घसबार—उ० घास कटनिहार । खो० घसबारनी ।	बाड़ी लगाएब—क्रि० लगब+ अब—उद्ग्रीब होयब, श्रवा- णादिक हेतु अवधान ।
घसबाह—उ० घास अननिहार । खो० घसबाहिनी ।	घानि—खानि ! आधिक्य २ ।
घसबाहि—घास कटनिहारक क्रिया = घास काटब ।	घानी—मघहम

भुजबाक वा कुटबाक योग्य (अन्न) ।	घुघनी-हि० बदामसँ बनाओल खाद्यविशेष ।
ग्राम-घर्म, स्वेद ।	घुघरू-डॉङ्क भूपणविशेष ।
घालव-कि० अखसँ छिन्न करव	घुटकब-कि० परबाक बाजव ।
घास-सं० पशुक खएबाक छिन्न	घुटमुटार-छोट गोलाकार ।
वृण-पुञ्ज ।	घुट्टी-एँडीक उपर पार्श्वक उच्च श्रवणव ।
घिआरी-कीटनिर्मित माटिक घर ।	घुट्टीसोहार-घुट्टीपर्यन्त (बोती) ।
घिकुमारि-धतकुमारी, ओषधि विशेष ।	अत्यन्त हेलमेज २ ।
घिनही-वृणविशेष ।	घुनखोकू-जकरा घून खएने हो ।
घिनाएब-कि० घिन्+अब=	घुनघुनाएब-कि० घुनघुन्+अब
घृणास्पद होयब १ घिनब+	अस्पष्ट मन्दमन्द बाजव ।
अब-घृणास्पद कार्यकरब २ ।	घुनलगू-जाहिमे घून लागज हो
घिनाह-उ० घृणास्पद । स्त्री	घुनसी-अतिसूक्ष्म जलकण, सीकर ।
घिनाहि ।	घुनाह-घुनलगू ।
घिरनी-नचनिहार यन्त्र ।	घुनेस-विवाहमे पागपर लटकएबाक
घिसिआएब-कि० घिसिअब+अब	भक्षणविशेष ।
घृष्ट करब, माटिक सम्बन्ध	घुमती-मार्गक वक्रता ।
करबैत घैचब ।	घुमब-कि० अमण १ परावृत्ति २
घिसिओड़-काटव-कि० कट्+अब	घुमान-वक्रता (मार्गक) ।
—चलबा-फिरबसँ अशक्त होएब	घुरघुरा-कीटविशेष ।
घिसोट-घर्षण ।	घुरछा } गुच्छ
घीउ-घृत ।	घुरछी }
घुघना-रोषसूचक मुखाकारविशेष ।	घुरछी लागव-कि० लग्+अब-
घुघना-लरकब-कि० दैन्यमुदायुक्त	एहमे अनेकक लागव ।
मुह नमरब ।	घुरती-अघुरबाक कालमे ।
	घुरपेन-घूर कोइबाक काठी ।

घुरव-कि० परावृत्त होएब ।	घूलव-कि० घुल्+अब-फलक
घुरमा } अमिरोगविशेष, माथक	परिणामवश कोमलीभाव ।
घुरमी } घुमनाइ जेम्हाँ लागव ।	घूस-हि० उत्कोच स्वकार्यार्थ
घुरमुडिआ-बहुतक एकमुखीभाव ।	प्रच्छन्न दान ।
घूमब २ ।	घृत-सं० घीउ ।
घुरिआएब-कि० घुरि+अब-	घेघ-गलगण्ड ।
पुनः पुनः ओहि स्थान वा	घेघहा उ० गलगण्डोपेत, अनादर
अवस्थामे आएब ।	णीय, स्त्री घेघही ।
घुरिओठ-घुरिआएब ।	घेघहू-पु० गलगण्डयुक्त आदर-
घुरेठ-पैघ घूर ।	णीय पुरुष ।
घुलव-कि० फलक परिणामवश	घेघाह-उ० गलगण्डयुक्त । स्त्री
कोमलीभाव ।	घेघाहि ।
घुसकब-कि० बैसले कनेक हँटब ।	घेँच-पत्नीक नाम गरदनि १ काछुक
घुसकुनिआ-चौकीमाजी बैसि	मुँह २ ।
आगाँ चलव ।	घेँचुल-इन्द्रविशेष ।
घुसहा-घूस लेनिहार ।	घेँट-घाड़, ग्रीवा ।
घुसा-हि० मुकाक अग्र ।	घेँटकट-कण्ठकटनिहार, आततायी ।
घून-घुण, कीटविशेष ।	घेथार-अनेकधा एकविषयक प्रश्न ।
घूमब-कि० घुम्+अब-अमण १	घेथारव-कि० अनेकधा एक
परावृत्ति २ ।	विषयक प्रश्न करब ।
घूर-धूमाद्यर्थ आगि ।	घेवर-मिष्टान्नविशेष ।
घूरब-कि० घुर+अब-परावृत्त	घेर-वेष्टन ।
होएब ।	घेरब-कि० वेदित करब ।
घूरवहोर-करब-कि० कर+अब	घेरा-कोशातकी, व्यञ्जनफलविशेष ।
वारवार आएब-जाएब ।	घैँचब-कि० घैँच्+अब-आकर्षण ।
घूरी-माजक छाया ।	घैर-आगाँ वा चारु दिससँ रोक ।

घैरव—क्रि० आगसँ वा चारु
दिसिसँ अवरोध करव ।
घैल—घट ।
घैलची—घैल रखवाक उच्च स्थान
घैलाढार—स्त्रीक त्याग (शूद्रादिमे)
घोकच } —सँकुचव ।
घोकच } —क्रि० सँकुचव, स.
घोकच } कुचित होएव ।
घोकड़िआ—ठेहुन ओ मुहक संयोग
घोकड़िआएव—क्रि० घोकड़ि+
अब—घोकड़ी लगाएव, ठेहुन
मुह दुनू मिलाएव ।
घोकड़ी—ठेहुनमे मुहक संयोग ।
घोकव } —क्रि० मन्चाबनसँ
घोकव } उद्धाटितमलयुक्त करव
घोँखब—क्रि० अवधारणार्थ वारं-
वार पढ़व ।
घोघ—अवगुण्ठन १ गालक निचला
भाग २ ।
घोघ-काढ़व—क्रि० कढ़+अब—
अवगुण्ठन करव ।
घोघट—मुखाच्छादन ।
घोघ-कुलब—क्रि० घोघक व्याधि-
विशेष ।
घोघर—बुइआ, क्रियम बिभीषा ।

घोँघारी } —क्षुद्रशङ्ख ।
घोड़ारी }
घोट—कण्ठविवरगत जलारि
हि० घूँट ।
घोटव—क्रि० जलादिक क
विवरमे प्रापण १ घर्षण २
घोड़—घोड़ा (निन्दामे) ।
घोड़करैत—सर्पविशेष ।
घोड़कलस—ग्रामदेवार्थ माहि
घोड़ा ।
घोड़घोड़ान—सतरजमे दू घोड़ा
सहेँ मातु ।
घोड़छान—बन्धनविशेष ।
घोड़न—गाछमे रहनिहार बुद्धि
सन पोआ कीट, र
पिपीलिका ।
घोड़मुहा—सर्पविशेष ।
घोड़सह—सतरजमे घोड़ाक सह ।
घोड़साम—नृणविशेष ।
घोड़सार—घोटकशाला, घोड़ा
रखवाक घर ।
घोड़ा—उ० घोटक। स्त्री घोड़ी ।
घोदमोद—गुच्छीभूत ।
घोर—दहोक पानि १ व्याकुल २
घोरजाउर—इहीक सङ्ग राहव
मात ।

घोरव—क्रि० द्रव पदार्थक
मिलाएव १ खाट आदिकेँ
नेवार आदिसँ संयुक्त करव २ ।
घोल—गोलाहल ।
घोसरब } —क्रि० विस्मरण
घोसरब } (निन्दामे)
घोसारब } —क्रि० विस्मरण
घोसारब } कराएव (निन्दामे) ।
घोसिआएव } —क्रि० घोँसि+
घोसिआएव } अब—पैसव ।
घोका—शाकविशेष ।
घौर—कदलीफलक गुच्छ ।
च
चएन—हि० निचेन, भङ्गश्रित ।
चओड़ा—हि० चाकर, नामाना-
मीक विपरीत, दीर्घ ।
चओड़ाइ—हि० चकराइ, नामा-
नामीक विपरीत, दीर्घ ।
चओर—चमर ।
चकचक—चाकचकयुक्त, तेज
किरणसँ युक्त (स्फटिकादि)
चकचकाएव—क्रि० चकचक्+
अब—चाकचकय प्रकाश करव ।
चकचकी—चाकचकय, तेजःकिर-
णयोग ।
चकचोँधी } —स्पष्ट दृष्टि प्रतिब-
चकचोनही } न्धक तेज सम्बन्ध

चकता पिडिका, कीटदंशादि-
जन्य फूजल वतुल मांस ।
चकती—सोहारी बेलवाक आधार-
विशेष ।
चकवा—उ० चक्रवाक । स्त्री०
चकवी ।
चकविदोर—अत्याश्रय ।
चकविदोर लागव—क्रि० लग्
+अब—अत्याश्रयक उद्भव ।
चकमा—गजीफाक एक प्रकारक
खेलि ।
चकरका—उ० चाकर प्रभेदक ।
स्त्री० चकरकी ।
चकरगर—अधिक चाकर ।
चकराइ—नामानामीक विपरीत
दीर्घ ।
चकरी—दालि दरइबाक पाथरक
चक्र ।
चकाचक } —अधिक चाकचकय
चकाचक } युक्त ।
चकुआएव—क्रि० चकु+अब—
चारु दिसि ताकव ।
चकुठा—शैलिक चोख अलङ्करण ।
चकुठी—छोट चकुठा १ तासक
एक रङ्ग २ ।

चकेवा—उ० चक्रवाह । स्त्री०
चकेवी ।

चकै—सूत दए खेजएवाक काठक
चक्र ।

चकोढ़—चक्रमर्द, क्षुपविशेष ।

चकोर—स० अग्निभक्षक पक्षि-
विशेष ।

चक्का—चाक, ताख, देवालमे
वस्तु रखव क स्थान १ गुहा-
दिक चक्राकार खण्ड २ ।

चक्की-मारव—क्रि० मार + अच्-
सौपक चक्राकार भए बैसव ।

चक्कू—चाकू, कटवाक छोट अस्त्र
विशेष ।

चक्र—सं० चाक ।

चक्रवर्ती—सं० समस्तपृथिवी-
शाशक ।

चँगला—पु० चरफर, शीघ्र काज
कएनिहार ।

चँगुरा—मड़िआओल एक प्रमा-
णक सूत ।

चँगुला—चँगुर, पक्षीक ढारि
पह्यवाक पाण्डक अन्तिम
अङ्ग ।

चँगेरा—वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चँगेरी—छोट चँगेरा ।

चङला—पु० चरफर, शीघ्र काज
कएनिहार ।

चङुरा—मड़िआओल एक प्रमा-
णक सूत ।

चङुला—चँगुर, पक्षीक पाण्डक
अन्तिमावयव ।

चङेरा—वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चङेरी—छोट चँगेरा ।

चचरा—मत्स्यविशेष ।

चचरी—मत्स्यविशेष ।

चञ्चल—सं० चपल ।

चञ्चु—चञ्चुसदृश जोहक कलम,
नीब ।

चट—माटिक बासन सँ अधिक
तापक कारण ओदरल चाए
भाग १ अ० शीघ्र २ ।

चटक—उड़ता पक्षीक खसव
विष्टा ।

चटकव—क्रि० माटिक बासनक
अवयवभङ्गपूर्वक चट शब्द
करव ।

चटकार—अम्ल वस्तुसम्बन्ध
मुखक शब्द ।

चटकुनी—बहुत छोट चटाइ ।

चटकी—शीघ्रता ।

चट दए } —अ० शीघ्र ।
चटपट }

चटपट-करव—क्रि० कर + अच्
—शीघ्र कार्य करव । मुहक
शुष्कोभाव २ ।

चटपटाएव—क्रि० चटपट + अच्
—द्रवरहित होएव ।

चटपटी—शीघ्रता १ शुष्कता २ ।

चटाइ—फट, खिड़हरि ।

चटाचटि—अ० शीघ्र शीघ्र ।

चटाचटी-उठव—क्रि० उठ + अच्
—चट्चट शब्द होएव ।

चटान—चत्वर ।

चटिया—चटाइ १ प्रारम्भिक
शिक्षाक छात्र २ ।

चटिसार—विद्यार्थीक पढ़वाक घर ।

चटुआ—डंठी लागल पिड़ही ।

चटु—सरदोसँ ओदरल माटि ।

चट दए—अ० शीघ्र ।

चटान—चत्वर ।

चटपट्टा—शिशुक क्रीड़ाविशेष ।

चट्टा-पड़व—क्रि० पड़ + अच्-कूप
हनारमे जलक अभाव होएव ।

चटैल—व्यञ्जनार्थ जताफलविशेष ।

चड़िआएव—ना० चाड़ि (यत्न)
सँ युक्त कर ।

चड़ै (रै) —पक्षी ।

चड़ै (रै) आ कन्द—ग्रौपधार
कन्दविशेष ।

चढ़नदार—बएलगाड़ीक पाछाँ
गेनिहार ।

चढ़न्त—अधिक होइत, वर्द्धमान,
चढ़ाइ ।

चढ़व—क्रि० चढ़ + अच्-आरोहण ।

चढ़ाइ—मागादिक उत्तरोत्तर
उच्चता १ चढ़व २ ।

चएठ—निर्दय ।

चएडाल—डोम १ क्रूरकर्मा
(अति निन्दामे) २ ।

चएडाली—अतिक्रूर कर्म ।

चएडुल—कृपण ।

चएडोल—सर्वोच्च भूमि ।

चतकार—दम्भ (स्त्रीक उक्तिमे) ।

चतकारी—दम्भकर्त्ता (स्त्रीक
उक्तिमे) ।

चतरव—क्रि० लतादिक प्रसार ।

चतरी कटगौनी—बृहती, ओष-
धार क्षुप ।

चतरी कन्ना—शाकविशेष ।

चतरी गेन्हारी—शाकविशेष ।

चतुर—सं० उ० पटु । स्त्री०
चतुरा ।

चतुरइ—चातुर्य ।

चतुरा—स्त्री० चतुर्यवती ।
 चतुराइ—चातुर्य ।
 चतुर्दशी—सं० चौदहम तिथि ।
 चदरा—वस्तु निर्माणार्थ लोहा
 दिपट्ट ।
 चहरि—उत्तरीय वस्त्र ।
 चनक—पक्षिविशेष ।
 चमकब—क्रि० अँडरी आदिक
 कोषक प्रस्फोट ।
 चनकलोनी—चनकामल ।
 चनकी—एरण्डविशेष ।
 चनचनाएब—क्रि० चनचन +
 अब—छोट नेनाक अधिक
 बाजब ।
 चननकाठी—चानन देवाक पात्र ।
 चननसितुआ—चानन रखवाक
 शुक्तिकाकार पात्र ।
 चनवा—विज्ञान ।
 चनवार—घरक दुहु कातक टाट ।
 चनसूर—चन्द्रशूर, मत्स्यविशेष ।
 चनोटा—चन्दनघर्षणशिला ।
 चन्दा—चन्द्रमा १ हि० बेहरी २ ।
 चन्द्रकला—पुष्पविशेष ।
 चन्द्रहार—भूषणविशेष चन्दा-
 कारयुक्त हार ।
 चन्द्रोटा—चन्दनघर्षणशिला ।

चन्ना—चन्द्रमा १ मत्स्यविशेष २ ।
 चपड़—दूध दुहवाक पात्रविशेष ।
 चपकन—पहिरवाक स्यूतवस्त्र-
 विशेष ।
 चपरा—सटवाक लाजापिण्ड ।
 चपेट } —करतल ;
 चपेटा }
 चपै—चपड़ दोहनपात्र ।
 चफर } —चालाक ।
 चफरा }
 चबुतरा—कुट्टिम, उच्च बद्धभूमि ।
 चमक—चाकचक्य ।
 चमकब—क्रि० चाकचक्य प्रकाश
 करव १ अङ्गक स्फुरण २ ।
 चमकी—गोब्र चापट भूषणविशेष
 १ स्फुरण २ ।
 चमगुदरी—घरैआ वादुर पत्नी ।
 चमचम—चिरस्थितिसं विकृत
 (तैलादि) ।
 चमचमी—चिरस्थितिसं विकार
 (तैलादिक) ।
 चमड़ा } —हि० प्राणीक त्वचा ।
 चमड़ी }
 चमत्कार—आह्लाद १ कौशल २ ।
 चमरउ—तिरहुतिआ चमारक
 बनाओल (जूता) ।

चरख—चरखामे टाकु रखवाक
 चामक आधार ।
 चरदिनाय—द्वन्द्वविशेष, सर्वदा
 रहनिहार दिनाय ।
 चरनक—अभ्यासवश दुर्गन्धक
 अग्राहक नासिकास युक्त ।
 चरवथुआ—बधुआसागक
 प्रभेद ।
 चरमाँछ—मत्स्यविशेष ।
 चरीगाए—चमरी, जकरा
 नाङ्गिक चामर हो ।
 चर—उ० चर्मकार, जाति-
 विशेष । स्त्री. चर्मैनि ।
 चली—मालती, पुष्पविशेष ।
 चलि—स्त्री० चर्मकारजाति-रखी ।
 चलिनि—ओषधिविशेष १
 कीटविशेष २ ।
 चली—बन्हवाक चाम ।
 चर—चम्पा फूल सन रङ्ग ।
 चर—चम्पक, पुष्पविशेष ।
 चरपुरी—गहुमक प्रभेद ।
 चरवीड़ी—पानक खिल्लोक
 प्रभेद ।
 चर—जातिविशेष ।
 —धान उपजवाक विस्तीर्ण
 बीच भूमि १ चोरके वस्तुक
 कानकहनिहार २ चामर ३ ।

चैरक—श्वेतकुष्ठ १ श्वेतवर्ण
 (बड़द) २ ।
 चरकट्टा—हाथीक चारा कट-
 निहार ।
 चरक फुटब—क्रि० फुट + अब-
 कुष्ठस्त्राव ।
 चरखकट्टी—चरखा काटब
 (चलाएब) ।
 चरखा—सूत कटबक यन्त्र ।
 चरखा काटब—क्रि० कट + अब
 —सूत बनएवाक हेतु चरखा
 चलाएब ।
 चरखी—चर चर वजनहार
 खेलओना १ बाँग सँ बँगौर
 बहार करवाक यन्त्र २ ।
 चरचराएब—क्रि० चरचर +
 अब—वृथा अधिक बाजब
 १ चरचर शब्द करव २ ।
 चरचा—चर्चा ।
 चर चौचर—बाधप्रभृति ।
 चरनमा—अधिक चरनिहार
 (माल) ।
 चरफर—उ० चलाक, शीघ्रकारी ।
 स्त्री चरफरि ।
 चरफरी—शीघ्रक्रियता ।
 चरब—क्रि० मालक वृत्ति-वृत्ति
 तृणभक्षण ।

चरबाह—उ० मालक चरओनि-
हार ओरकक । खी० चरबाहिनी ।
चरबाहि—चरबाहक क्रिया—
माल चराएब ।
चरल—मालसँ भलि । तृण १
तृण खाए चुकल माल २ ।
चरहन—चरमे उत्पाद्य (धान्य) ।
चरही—मोट हथजौड़ ।
चराई—मालक चरबाह भूमि ।
चराँत—मालक चरबाह भूमि ।
चरी—पशुपक्षीक भक्षण ।
चरुभर—वाउर सँ पूर्ण
(सीसक धान)
चरै (ढेँ)—पक्षी ।
चरै (ढेँ) आकन्द—औषध
कन्दविशेष ।
चर्चा—सं० कथन ।
चर्या—सं० क्रिया ।
चलचलाओ—चलबा कालक
संघटन बाञ्छल्य ।
चलता—प्रचलित ।
चलती—प्रचार ।
चलनसार—चलबायोग्य,
सम्भूत ।
चलप्रचल—सं० चलबाक हलचल ।
चलब—क्रि० चल + अब—
गमन ।

चलाक—उ० चतुर, स्फूर्तिशाली ।
स्त्री. चलाकि ।
चलाचलतो—अधिक प्रचार ।
चलान—सञ्चालन, प्रेषण ।
चल्हवा—मत्स्यविशेष ।
चसक—जोलुपता ।
चसकब—क्रि० जोलुप होइब ।
चसकी—जोलुपता ।
चसमा—वि० उपनेत्र ।
चह—वृक्षविशेष ।
चहक—फाट ।
चहकब—क्रि० किञ्चित् फाटब ।
चहटगर—कटवम्बलसँ
सुस्वादु ।
चहुपाला—शिविका ।
चाँई—आगँसँ वस्तु लग पड़ए
निहार ।
चाउर—तण्डुल ।
चाउँस—उरीदक चीकस ।
चाक—चक्र (कुलालक) ।
ताख २ ।
चाकर—चओडा १ भृत्य २ ।
चाकरी—नोकरी, दासता ।
चाँकि—सावधानता ।
चाखब—क्रि० खल् + अब—
स्वादपरीक्षा भक्षण ।

चाँगला—हि० चलाक ।
चाँगुर—पक्षीक पाएर ।
चाङला—हि० चलाक ।
चाङुर—पक्षीक पाएर ।
चाँच चलब—क्रि० चल + अब
जलाशयसँ बाहसँ बाहार
भय मालिक चलब ।
चाँचर—चरक प्रभेद ।
चाँचरि—गोश्वारक गीतविशेष ।
चाँछ—घर्षणसँ त्वचाक छेदन ।
चाँछब—क्रि० चँछ + अब—
घर्षणसँ त्वचा उछेद ।
चाट—चपेटा ।
चाटब—क्रि० चट् + अब—
अवखेहन ।
चाटी—चपेटा ।
चाटी चलब—क्रि० चट् + अब—
सपविषक उद्देश चपेटा
चलब ।
चाढ़—ओरक सरदार ।
चाण्डित्य—अयोग्य कौशल,
वेनय्य ।
चान—चन्द्रमा १ चन्द्राकृति
बाहुभूषण २ ।
चानन—चन्दन ।
चानि—साथक उपर भाग ।

चानी—रूप्यधातु ।
चान्हर—जलाघातजन्य खाधि-
बाला क्षेत्र १ कचित्कचित्
उपटलजजातिबाझा क्षेत्र २ ।
चापकली—अलङ्कारविशेष ।
चापट—चिपिट ।
चावुक—कशा ।
चाभ—बाँसक प्रभेद १ चव्य २ ।
चाम—चर्म ।
चार—गृहाच्छादन छदि ।
चारा—हाथीक प्रभृतिक भक्ष्य
हारिपात ।
चारि—चतुःसंख्यक ।
चारिचारि—कौडीक क्रीडाविशेष
चारिम—चतुर्थ ।
चाल—सञ्चालन १ देवसिंहासन-
विशेष २ ।
चालक—रेचक ।
चालता—फलविशेष ।
चालनि—चालनी ।
चालब—क्रि० चाल् + अब—
सञ्चालन १ चालनसँ
सूक्ष्मक निःसारण ।
चालाक—चतुर, शीघ्रता सँ कार्य-
कर्ता ।

चालि—गति । स्वभाव २
प्रचार १ ।
चालिचलन—स्वभाव श्रो
क्रिया ।
चालिसा—चालीस धारा (अन्नक
समूह)
चाली—कृमि ।
चालीस—४०, चत्वारिंशत्
चालीसम—चालीसक पूरक,
चत्वारिंशत्तम ।
चालीसा—चालीस धारासँ परि-
मित (अन्नक पुञ्ज) ।
चास—आबादी भूमि ।
चासव } क्रि० चस् + अब—
चाँसव } प्रथम बेर हरसँ जोतब ।
चाह—इच्छा १ ओषधिविशेष २ ।
चाहव—क्रि० इच्छा करब १
टभकी सँ माछ भाड़व २ ।
चाहा—चाप, पक्षिविशेष ।
चिकनइ—तेल ।
चिकनकर—उ० नीके वस्तुक
भक्षणशील । स्त्री० चिकनकरि ।
चिकनका—श्लक्ष्णप्रभेदक
चिकनइ—श्लक्ष्णता ।
चिकनाएव—ना० चिकनव + अब
—चिकन करव ।

चिकनाहा चिकनप्रभेदक ।
चिकनी—तृणविशेष ।
चिकनै—तेल ।
चिकरब—क्रि० चिकर + अब—
चाँकार, जोर सँ बाजब ।
हि० चिल्लाना ।
चिकस—रोटीक हेतु चाउर आदि-
क चूर्ण ।
चिकसा—वृक्षविशेष ।
चिकन—चिकण, श्लक्ष्ण ।
चिकन चुं मुन—श्लक्ष्ण-सुन्दर ।
चिकनि—बालसँ शून्य श्लक्ष्ण
(माटि) ।
चिकादरवरि—क्रिडाविशेष ।
चिखब—क्रि० चिख + अब—
आस्वादन ।
चिचाँढ़—निरर्थक चिन्ह ।
चिचाँढिकाटब—क्रि० वेकार
चाँचलीखब ।
चिचोढपारव—क्रि० वृथा रेखा
खीखन ।
चिचोढ़—चिञ्चाटक, क्षुपविशेष ।
चिचोढ़व—क्रि० चिचाँढ़ि
लिखब ।
चिट्ट—छोट पत्रखण्ड ।
चिट्टा—वस्तुनामावली ।

चिट्टी—व्यवहारिक वृत्तान्तपत्र ।
चितकवरा—चित्रवर्णप्रभेदक ।
चितकावर—चित्रवर्ण ।
चितङ्क—उत्तान ।
चितरा—चित्रा (नक्षत्र) ।
चिता—सं० मृतकाग्नि ।
चितिरचितिर—चित्र विचित्र,
नान वर्णक ।
चितौर—चित्रक, ओषधिविशेष ।
चित्त—उत्तान हृदय २ ।
चित्ता—व्याघ्रविशेष ।
चित्ती—कपटकक प्रभेद ।
चित्तोभा—सर्पविशेष ।
चित्र—सं० तलबीर ।
चित्रनष्टा—तारतम्य ।
चित्रविचित्र—नानारङ्गक ।
चिनगी—अग्निकण ।
चिनगारी—उड़ल चिनगीक समूह ।
चिनिआ—गुद्दाव फूल आदिक
प्रभेद ।
चिनुआर—गोसाउनिक उच्च भूमि ।
चिन्तव—क्रि० चिन्त + अब—
गुरुप अधीतक सतीत्यसँ
चिन्तना करब ।
चिन्ता—सं० साधनोपायचिन्तन
१ विषाद २ ।

चिन्तित—सं० विषयण ।
चिह्नब—क्रि० चिह्न + अब—परि-
चित करब जानब ।
चिहार—उ० परिचित । स्त्री०
चिन्हारि ।
चिपरी—पाथल शुष्क गोबर ।
चिप्पी—चाउरक नपना ।
चिचाएव—क्रि० चिबव + अबचर्चण
चिमाटि—अति दृढ़ ।
चिरका—विदग्ध ।
चिरचिरी—अपामार्ग, ओषधि-
विशेष ।
चिरब—क्रि० चिर + अब—
विदग्धन ।
चिराक—वि० दीप ।
चिराकदान } —वि० द्रव्य
चिराकदानो } रचित दीपा
धारपात्र ।
चिराको दीपक हेतु नित्य
नियत तेल ।
चिरिआइनि—केशमांसादि
जरबाक गन्ध ।
चिरुआ—चौरल, विदग्धित ।
चिरैत—किरात, ओषधिविशेष ।
चिरौंट—माछक रोगविशेष ।
चिरौजी—प्रियाब्ज ।
चिरौड़ी—विवाद ।

चिलका—स्तनन्धय छोट नेना ।
 चिलकाउर } —छी चिलका-
 चिलकारु } बाझी ।
 चिलतह—अस्त्रविशेष ।
 चिलम—धूमपानपात्र ।
 चिलमची—हस्तप्रक्षालनपात्र
 विशेष ।
 चिलमिल तृणविशेष ।
 चिलहोड़ि } —पक्षिविशेष । हि०
 चिलहोरि } चील्ह ।
 चिल्लड़ } —कीटविशेष ।
 चिल्लर }
 चिलहोड़ि } —पक्षिविशेष । हि०
 चिलहोरि } चील्ह ।
 चिहुँकब—क्रि० चिहुँक् + अब—
 चौँकब ।
 चिहुट—बॉसक ओदार ।
 चीक—मेही सरकी, वंशरचित
 जवनिकाविशेष ।
 चीकस—रोटीक हेतु चाउर
 आदिक चूर्ण ।
 चीखब—क्रि० चिख् + अब—
 आस्वादन ।
 चीच—डॉँड़ि, रेखा ।
 चीचकाटब—क्रि० रेखा खीखब ।
 चीच खैँचब—क्रि० रेखा
 खिखब ।

चीच फाड़ब—क्रि० फाड़ +
 अब—चीच लीखब ।
 चीठा—वस्तुक नामावली,
 फिहरिस्त ।
 चीठी—लिखा, पत्र, चिट्ठी ।
 चीन—चीनाक, अस्त्रविशेष ।
 चीनी—सिता ।
 चीन्हब—क्रि० चिन्ह् + अब—
 परिचित करब, जानब ।
 चीर—चीरब ।
 चीरब—क्रि० चिर् + अब—
 विदलन ।
 चीरा—पचेसीक ओ घर जतए
 गोटी नहि कटए ।
 चीरीचोत—अनेक ठाम फाटब ।
 चील्ह—वृक्षविशेष ।
 चुइव—क्रि० चुब् + अब—छिद्र
 सँ जलादिक निःसरण ।
 चुइल—चुव, छिद्रदि सँ निःसृत ।
 चुकती—प्रमाद ।
 चुकब—क्रि० चुक् + अब—प्रमाद
 सँ अकरण ।
 चुकरी—छोट मृत्पात्रविशेष ।

चुक—चुक ।
 चुकी—चुकरी, छोट माटिक
 बासन ।
 चुकीमाली—प्रौढ़शब्द ।
 चुगिलपन }
 चुगिलपना } —पिशुनता ।
 चुगिलपनी }
 चुगिला—पिशुन ।
 चुगिलाह—उ० पिशुन । स्त्रो०
 चुगिलाहि ।
 चुगिली—पैशुन्य ।
 चुटकी }
 चुटकुर } —अङ्गुष्ठकृत्यप्रसंयोग ।
 चुट्टा—पकड़बाक यन्त्रविशेष ।
 बड़का चुट्टी २ ।
 चुट्टी—छोटविशेष ।
 चुइलडु—ऐतवयुक्त चुड़ाक बड़ुक ।
 चुड़िला—काचनिमित्त बाहुभूषण-
 विशेष ।
 चुड़िहर } —चुड़िला बेचनिहार
 चुड़िहरा } जातिविशेष ।
 चुड़िन }
 चुड़िल } —भूतयोनिविशेष ।
 चुनचुनाएब—क्रि० चुनचुर् +
 अब—कण्डूजनक वेदना-
 विशेष ।
 चुनचुनी—कण्डूजनक वेदना-
 विशेष ।

चुनाएब—ना० चुन + अब—
 चुनब + अब—चूनसँ मिलाएब
 चुनिएब—क्रि० चुनिअब +
 अब—वस्त्रक प्रतिपरिधानसँ
 तानीभरगीक विचलन ।
 चुनेटब—क्रि० चुनेट् + अब—
 चूनसँ ढौरब ।
 चुनौटी—चून रखबाक छोट पात्र ।
 चुन्नी—रत्नविशेष ।
 चुप—अ० मौन ।
 चुपकी—अ० तूष्णीभावा ।
 चुपकी लाधब—क्रि० लध् +
 अब—तूष्णीभावावलम्बन ।
 चुपचाप—अ० पादाघातादि शब्द
 शून्य, मौन ।
 चुप्प—अ० मौन ।
 चुप्पा—मौनस्थायी ।
 चुभकब—क्रि० ह्वि ह्वि सुहुः
 स्नान ।
 चुमाओन—माङ्गलिक क्रिया-
 विशेष ।
 चुम्बक—अयस्कान्त, आकर्षक
 लोह ।
 चुम्बा }
 चुम्मा } चुम्बन ।
 चुरकी—माथमे दुहू कातक
 विन्यस्त केश ।

चुलहा } — चुहो ।
चुल्हा }

चुहार—चुद् चोर ।

चू—माथक राखल केग ।

चू-उतारब—क्रि० उतार + अब
—चू कटाएब ।

चूक—चुक ।

चूकब—क्रि० चुक् + अब—अन-
वधानसँ अकरण ।

चूकि—भूजि, अम ।

चूड़ा—चपिटाइ ।

चूड़ि—जालझरणविशेष ।

चून—शुक्ति भस्म ।

चूलिह—चुहो ।

चै खान—लसिगर वस्तुक पैघ
खण्ड ।

चैगा—मत्स्यविशेष ।

चैगौल—धान्यविशेष ।

चेडा—मत्स्यविशेष ।

चेडौल—धान्यविशेष ।

चेवन—जातबोध (मनुष्य) ।

चेतब—क्रि० चेत + अब—साव-
धान हाएब ।

चेथरा—रही पुरान वस्त्रखण्ड ।

चेन—स्वस्थ ।

चेह—चिह्न ।

चेप—कोदारिसँ काटल माटि ।

चेरा—चोरज जारन ।

चेरु—बलिच्छिन्न छागरक जाँघ ।

चेला—शिष्य ।

चेल्हवा—मत्स्यविशेष ।

चेष्टगर—क्रियामे समर्थ ।

चेष्टा—क्रिया १ हस्तादिव्यापार
२ ।

चेहरा—वि० आकार ।

चेहाएब—क्रि० चेह + अब—
सभ्रमयुक्त होयब ।

चैत—चैल मास ।

चैतावरि }
चैतार } — चैल सहित तत्स
चैतारि } मीप समय ।

चैती—चैत्रभव ।

चोआ—धुमनक तेज ।

चोकटब—क्रि० } —फजादिक
चोकड़ब—क्रि० } सङ्कुचितावय-
वक होएब ।

चोकड़ा भोस—कदलीफल
विशेष ।

चोकड़ि—रङ्कुचितावयवक
(आआदि) ।

चोकर—आटा चालला पर
चालनिमे जे रहि जाय ।

चोख—तीक्ष्णाग्र ।

चोखगर—अतितीक्ष्णाग्र ।

चोखा—आणा, साना ।

चोँगा—बाँसक पात्रविशेष ।

चोँगी—ताटझादधारक भूषण ।

चोडा—बाँसक पात्रविशेष ।

चोडा—ताटझादधारक भूषण ।

चौँच—चञ्चु, पस्तिमुखाग्र ।

चौँचा—पाँचाविशेष ।

चोट—आघात ।

चोटगर—साघात ।

चोटलागब—क्रि० लग् + अब
—आघात-सम्बन्ध ।

चोटाह—साघात (सर्पादि) ।

चोत—गोबर आदिक ढेरी ।

चोहराएब—क्रि० चोहर + अब
—आँखिक गरमी सँ चक-
चौँघा लागब ।

चोप—उपर मोट मढ़ल लाठी ।

चोपदार—वि० चोप रखबामे
राजनियुक्त ।

चोभव—क्रि० मुहमे लगाए
आकृष्टरसक कब

चोभा—मुहमे लगाए रसाकर्षण ।

चोभा-लगाएब—क्रि० लगब +
अब—रसाकर्षणार्थ मुहमे
लगाएब ।

चोर—सं० उ० स्तेन । स्त्री०
चोरनी ।

चोरकाँटी—छिमड़ा, तृणविशेष ।

चोरकोड़वा—बान्हल चार मे
पश्चात् देल काँदो ।

चोरचहार—चोरभृति ।

चोरनी—स्त्री० चोरओनिहार ।

चोरवत्ती—बातांमे तराउपरी
पैसाओल बाती ।

चोरहो—चौर्य ।

चोरा शिराक कड़ापन रोग १
अनादरणीय चोर २ ।

चोरानुकी—बालकीड़ाविशेष ।

चोरामुट्टी—बालकीड़ाविशेष ।

चोरि }
चोरी } —चौर्य ।

चोली—आँगीक प्रभेद ।

चोहारि—प्रसवानन्तर मालक
पेय औषधविशेष ।

चौ—दुहू कातक दाँत ।

चौअत्री—चतुराणकी, चारि,
आनाक राजमुद्रा ।

चौआलीस—४४, चतुश्चत्वारि-
शत् ।

चौआलीसम—चतुश्चत्वारिंशत्सम,
चौआलीसक पूरक ।

चौक—परस्पर सम्बद्ध चारि घर
 १ मध्यवर्ती अवकाशस्थान २ ।
 चौकठा—चौखूट बाँहिक भूषण ।
 चौकठि—द्वारशाखा ।
 चौकठी—छोट चौखूट बाहुभूषण
 १ तासक एक रङ्ग २ ।
 चौकनी—चौखूट स्थान ।
 चौकना—चारु दिस सावधान ।
 चौकव } —क्रि० भाकस्मात्
 चौकव } भयसँ डोलव ।
 चौकस—तेज (बड़दप्रभति) ।
 चौकिआएत्र—ना० चौकिअव +
 अव—चौकीसँ कृष्टक समी-
 करण ।
 चौकी—हलि, हँ गा, कृष्टसमीकरण
 काष्ठ १ पहरा २ ।
 चौकीदार—कोतवाल, ग्रामरक्षक ।
 चौकीमाली—प्रौढपाद, काकासन ।
 चौकोर—चतुष्कोण चौपहल ।
 चौखड़ी—चारि गोटाक हेड़ १
 एकटा होएवाक स्थानविशेष २ ।
 चौखूट—चतुष्कोण ।
 चौगाना—चारु दिशसँ सावकाश
 स्थान ।
 चौगामा—चारि गाम ।
 चौगिद } —चतुर्दिश ।
 चौगेन }

चौगला—चारि गोल ।
 चौघरा—चारि घर १ चारि घर-
 बाजा गाम २
 चौचक—चारु दिस दष्टि रख-
 निहार ।
 चौचङ्ग—चारु दिससँ दङ्ग ।
 चौचारा—चारि चारवाला (घर)
 चौठाइ—चतुर्थांश ।
 चौठि—चतुर्थी तिथि ।
 चौठिचन्द्र } —भाद्रशुक्ल चतु-
 चौठिचान } र्थाचन्द्र ।
 चौठी—क्रममाक चतुर्थांश प्रमाण
 चौठैया—चातुर्थिक (ज्वर) ।
 चौतीस—२४ चतुस्त्रिंशत् ।
 चौतीसम—चतुस्त्रिंशत्तम, चौती-
 सक पूरक ।
 चौदह—१४, चतुर्दश ।
 चौदहम—चौदहक पूरक ।
 चौदिस—चतुर्दिश ।
 चौधरि } —चातुर्धरिक, ब्राह्मण
 चौधरी } क उपाधि ।
 चौपट } —विनष्ट ।
 चौपट्ट }
 चौपड़ि—चतुष्पटी, क्रीड़ाविशेष ।
 चौपतव—क्रि० तह लगाएव, वस्त्र-
 क मोड़वाक प्रभेद ।

चौपति—पैघ चौपहल काठ ।
 चौपहल—चतुष्कोण काठ ।
 चौपहला—शिविका ।
 चौपाइ—सोलहमात्राक छन्दविशेष ।
 चौपाड़ि } —चतुष्पाटी, पाठालय ।
 चौपादि }
 चौपाला—शिविका ।
 चौपेत—मोड़ल (कपड़ा) ।
 चौपेतव—क्रि० मोरि मोरि छोट-
 बनाएव ।
 चौबट्टी—चारुदिस जएवाक बाट
 चौबन्न—५४, चतुष्पञ्चाशत् ।
 चौबन्नम—चतुष्पञ्चाशत्तम ।
 चौबन्हा—बन्धनविशेष ।
 चौबारि—चारु दिसक बसान ।
 चौबीस—२४, चतुर्विंशति ।
 चौबीसम—चतुर्विंशत्तम, चौबी-
 सक पूरक ।
 चौबुतरा—छोट कुट्टिम ।
 चौमास—चातुर्मास्य १ चारि मास
 जोतल खेत २ ।
 चौमासव—क्रि० लगातार चारि
 मास खेतक जोतव ।
 चौमासा—चारि मासक वर्णना-
 त्मक गीत ।
 चौमुख—चारि दिस मुखवाला (दीप)

चौमुहा—चारि मुखवाला (गृहादि)
 चौमुहान—हि० चौबट्टी ।
 चौमोहरा—सतरञ्जमे दुइ दिस
 दुइ दुइ पात्रक शेष ।
 चौरङ्गा—क्रीड़ाविशेष १ अक्षक्रीड़ामे
 पराजयविशेष २ ।
 चौरचन—चौरचन्द्र, चौरवत् अट्टस्थ
 चन्द्रमा, भाद्रशुक्ल चतुर्थीक चन्द्र ।
 चौरस—समतल (भूमि) ।
 चौरासी—८४, चतुरशीति ।
 चौरासीम—चतुरशीतितम, चौरा-
 सीक पूरक ।
 चौरी—लाक्षाविकार १ छोट चर २ ।
 चौसज्भा—चारि व्यक्तिक सामी,
 चतुःस्वामिक (धन) ।
 चौँ सट्टि—६४, चतुःषष्टि ।
 चौँ सट्टिम—चतुःषष्टितम, चौँ सट्टिक पूरक
 चौसारि—क्रीड़ाविशेष । [चय ।
 चौहदी—क्षेत्रक चारु भागक परि-
 छ
 छओ—षट्संख्यापरिमित १ अस्त्रसँ
 छेद २ ।
 छँओड़ा—उ० अनादरणीय, बालक ।
 स्त्री छँओड़ी ।
 छओमासा—छओ मासक वर्णना-
 त्मक गीत ।

छक—नासिकाभूषणविशेष ।
 छकछक—किञ्चित् उष्ण (गात्र)
 छकछकाएब—क्रि० छकछक+अब—
 गात्र किञ्चित् उष्ण होएब ।
 छकछकी—अङ्गक किञ्चित् उष्णता ।
 छकतोड़—छाकक अपूर्ति ।
 छक-दए-लागब—क्रि० लग्+अब—
 क्षणिक तेजःसम्बन्ध ।
 छकब—क्रि० अविरोधपूर्वक आनक
 क्रियासँ दबब ।
 छकड़बाजी } —नर्तकविशेष ।
 छकोड़बाजी }
 छकड़ि } छओ दौतक माल ।
 छकारि }
 छका—तास ओ गजीफाक छठम
 फर्द ।
 छका-छूटब—क्रि० छुट्+अब-दोष
 पाबि अभ्यास छूटब ।
 छका-वित्ता—क्रीडाविशेष ।
 छगुनता—चिन्ता ।
 छछलब—क्रि० छहलब, पिच्छलता-
 प्रयुक्त अनायास गमन ।
 छछारब—क्रि० टाट वा देबालक
 गोबर माटिसँ लेपन
 छछारी-काटब—क्रि० कट्+अब—
 भूमिमे निर्बस्त्र पोन रगड़ब ।

छजनी—गाछक उपरका अग्रभाग ।
 छजब—क्रि० अनुरूप होएब, वेष ओ
 क्रिया स्वसदृश होएब ।
 छज्जा—तार नारिकेर प्रभृतिक
 शाखा ।
 छटछट-करब } क्रि० चर्मक अन्तःस्थित
 छटछटाएब } अलग्न पिण्डक
 छुइलासँ इतस्ततः घुसकब ।
 छटपट-करब } क्रि० अङ्गसभ
 छटपटाएब } सञ्चालित करब,
 देहक भूयः संचालन
 छटपटाह—उ० अङ्ग स्थिर नहि
 रखनिहार । स्त्री० छटपटाहि ।
 छटपटी—अङ्गक अस्थैर्य ।
 छट्टा } छाँटल, कुट्टनसँ साफकयल
 छँट्टा } (चाउर) ।
 छठम } षष्ठ ।
 छठम }
 छठमी—षष्ठ अंश (हिस्सा) ।
 छठि—कार्तिकशुक्लषष्ठीसप्तमीक
 पाबनि ।
 छठिआर—जन्मसँ छठम रातिक
 कृत्य ।
 छठिआरी—छठिआरक वस्तुजात ।
 छड़ी—पातर हस्तधार्य यष्टिका ।

छड़ीदार—राजद्वारपाल ।
 छड़ीममरखा—ओषधिविशेष ।
 छण्ठा—छानल चरनिहार घोड़ा ।
 छत—कोठाक उपर भाग ।
 छतदुलारा—ओषधिविशेष ।
 छति—क्षति, हानि ।
 छतिबन—सप्तपर्ण, वृक्षविशेष ।
 छत्ता—छत्र १ मधुमक्षिका प्रभृतिक
 घर २ ।
 छत्तीस—३६, षट्त्रिंशत् ।
 छत्तीसम—षट्त्रिंशतम, छत्तीसक
 पूरक ।
 छत्र—सं० आतपत्र ।
 छत्रपुरी—असरफीक प्रभेद ।
 छत्री—क्षत्रियविशेष ।
 छदाम—पाइक चतुर्थांश ।
 छन—क्षण १ पहँचाक भूषणविशेष
 २ ।
 छनकट—विस्वासक अपात्र ।
 छनकब—क्र० शूर्पव्यापारविशेष १
 तृप्तिमे अल्पता २ ।
 छनका—वृष्टिसँ अल्प हाल १ कनेक
 गरम पेय औषध २ ।
 छनछनाएब—क्र० छनछन् + अब
 व्रणादिमे लवणादिसम्बन्धजन्य वेदना-
 विशेष १ छनछन शब्द करब २ ।

छनछनी—छनछनाएब ।
 छनुआ—घृतादिपक्क (सोहारीप्र-
 भृति) ।
 छनोटा—छण्ठा, छानल चरनिहार
 (घोड़ा) ।
 छन्द—दोहाप्रभृति ।
 छन्ना—दूधक फटोन ।
 छन्नावाड़ा—मिष्टान्नविशेष ।
 छन्नी—मृत्पात्रविशेष ।
 छपकब—क्रि० धर नम्र करब ।
 छपकाह—कम ऊँच (घर) ।
 छपकुनिआ—धर नम्र करब ।
 छपकुनिआँदेब—क्रि० दू+अब—
 धर नम्र करब ।
 छपब—क्रि० नुकाएब १ मुद्रित
 होएब २ ।
 छपरब—क्रि० जलसँ किञ्चित्
 व्याप्त होयब
 छप्पन्न—५६, षट्पञ्चाशत् ।
 छप्पन्नम—षट्पञ्चाशत्तम, छप्पन्नक
 पूरक ।
 छप्पय—छन्दविशेष ।
 छप्पर—हि० चार, छदि ।
 छप्परछप्पर—जलमे चलबाक
 ध्वनि ।
 छबरा—सौराप्रभृति माछक बच्चा ।

छवि—सं० कान्ति १ आकार २ ।

छब्बीस—२६, षड्विंशति ।

छब्बीसम—षड्विंशतितम, छब्बी-
सक पूरक ।

छयाह—क्षयाह, मरणदिवस ।

छर—लोहादिक दण्ड ।

छरनि—ठाठक प्रथम आवरण (खड्डी
प्रभृति सँ) ।

छरनौती—छारवाक (बाती) ।

छरपब—क्रि० फानब, कूर्दन ।

छरिआएब—क्रि० छरि+अब—
अङ्गछरिआएब ।

छरीला—शैलेय, शिलापुष्प, औषधि-
विशेष ।

छर्पा—बन्दूकक छोट-छोट गोली ।

छल—सं० कपट ।

छलरी—देहक अशुष्क चर्म ।

छह—त्रिवली ।

छहर—ऊँच ओ पैघ बान्ह ।

छहरदिबाल—प्राचीर, हिं० सैरदि-
बाल ।

छहरदेवाली—प्राचीर, डीहक चारु
कातक दिबाल ।

छहराएब—क्रि० छहर+अब—
छाहरिमे स्थित होएब ।

छहलब—क्रि० छहलब, पिच्छलता

प्रयुक्त अनायास घषणपूर्वक
अग्रगमन ।

छही—मत्स्यविशेष ।

छहोछित्त—बहुत ठाम फाटल ।

छाउनी—भीतक रक्षार्थ नाम चर
१ हिं० डेरा २

छाउर—राख, भस्म ।

छाक—जलपानसँ तृप्ति, एक स्नान
पेय ।

छाकी—एक धासँ भरि इच्छा दुष्क-
दिपान ।

छागर—पुं० छाग ।

छाँछ—दधिपात्रविशेष ।

छाँछी—छोट छाँछ ।

छाँट—त्याग १ कुट्टन २ कुट्टनसँ
त्यजित ३ ।

छाँटब—क्रि० छाँट+अब—अनु-
युक्तक हँटाएब १ कुट्टन
स्वच्छ करब २ ।

छाडन—नदीसँ त्यक्त भूमि ।

छाड़नि—

छाडब—क्रि० छाड+अब—त्याग
करब ।

छाड़ी—पहीरिकेँ त्यक्त (वस्त्र) ।

छात—छत, कोठाक उपर भाग

छाता—छत्र, आतपत्र ।

छाती—वक्षस ।

छान—घोड़ा प्रभृतिक अगिला
दू पाएरक बन्धन ।

छानद—क्रि० छन+अब—घोड़ाप्रभृ-
तिक दू पाएर बान्हब १
क्वत्वादिद्वारा निःसारित
करब, निगालन २ ।

छानि—उपरका भाग ।

छान्हि—

छाप—मुद्रा, मोहर आदिक चिन्ह ।

छापब—क्रि० छप+अब—मुद्रणा १
जालादिमे अभ्यन्तरीकरण २ ।

छापा—मुद्रित ।

छाबा—पाएरक उपर ठेहुनसँ नीच
देहाङ्ग ।

छार—क्षार, भस्मविशेष १ छारब,
तृणादिसँ आच्छादन २

छारतक—घोड़ाक जोरसँ दौड़नाइ ।

छारब—क्रि० छार+अब—आच्छादन

छाल—त्वक् ।

छालही—दहीक उपरका नेनु ।

छालही—

छिकब—क्रि० अकृत्रिम नासिका-
शब्द करब, क्षुत् ।

छिकनी—तृणविशेष ।

छिकार—स्थलगणितमे अल्प अवशिष्ट
अंश ।

छिषका—छिकब, अकृत्रिम नासा
शब्द ।

छिच्चा—सेचन ।

छिछरी पथिआ उठब—क्रि०
व्याकुल होएब ।

छिछिआएब—क्रि० छिछि+अब—
बारबार अधिक ठाम जाएब ।

छिछिऐनी—बारबार एमहर ओमहर
चलब (निन्दामे) ।

छिछिऐनी छागब—क्रि० लग्+
अब—बारबार इतस्ततः गमनमे यत्न ।

छिजब—क्रि० धान्यादिक सीससँ
खसब ।

छिटकब—क्रि० जेरसँ पृथक् होएब १
जलादिकणक उद्गमन ।

छिटका—उद्गत जल बिन्दु ।

छिटकिनी—छिटकी, केबाड़ लगाएवाक
यन्त्रविशेष ।

छिटकी—अर्गला, केबाड़ लगाएवाक यन्त्र
विशेष १ आनक पाएरमे

घुमाए लगाओल पाएर २ ।

छिटब—क्रि० विकीर्ण करब ।

छिट्टा—पथिआ १ छीटल (धान्या-
दि) ३ ।

छिट्टी—छोट पथिआ ।

छितनार—बीचमे उच्च (डाला आदि)

छितनी—छोट छिट्टा ।

छितराएब—क्रि० छितर + अब—
यत्रकुत्र होएब ।

छितरीबितरी } —असमीचीनतया
छितिरवितिर } यत्रकुत्रचित्
छित्तीबित्ती } स्थित ।

छिनभिन—छिन्नभिन्न ।

छिनब—क्रि० अनका हाथसँ बलातलेब

छिनार—उ० लम्पट, व्यभिचारी । स्त्री
छिनारि ।

छिनाह—टेढ़ फाड़ल वा चीरल ।

छिन्नाताकब—क्रि० छिन्नान्वेष ।

छिपब—क्रि० नुकाएब १ सत्वर
हँटाएब २ ।

छिपली—हि० छोट थारी ।

छिपाएब—क्रि० छिपब + अब—
आगाँ सँ नुकाए
राखब ।

छिपाह—उ० चोराएकेँ नुकाए
रखनिहार । स्त्री० छिपाह ।

छिमड़ि } —द्विदल अन्नक

छिम्मरि } बीजकोश ओ

छिम्मी } कदली फल शिम्बी ।

छिरिआएब—क्रि० छिरि + अब—

—विकीर्ण होएब । छिरि
अब + अब—विकीर्ण
करब ।

छिरिऐनी—छिरिआएब ।

छिलब—क्रि० तक्षण ।

छिल्ला—खुरपीसँ छीलल (घास
आदि) ।

छी—अ० गर्हयता ।

छीआ—अ० जुगुप्सा ।

छीक—अकृत्रिम नासाशब्द ।

छीकब—क्रि० छिक् + अब—
अकृत्रिम नासाशब्द
करब ।

छीका—छिक्का, अकृत्रिम
नासाशब्द ।

छीजब—क्रि० छिज् + अब—
धान्यादिक स्वतः सीससँ
खसब ।

छीट—चित्रवस्त्र ।

छीटब—क्रि० छिट् + अब—
विकिर ।

छीटा—पथिआ, छिट्टा १ छीटल
धान्यादि २ ।

छीनब—क्रि० छिन् + अब—
आनक हाथसँ बलात लेब ।

छीना—कपडाक धानक
समाप्तिचिह्न ।

छीप—बनसीद्वारा माछ मारबाक
दण्ड १ बाँस आदिक जड़ि
दिस छोड़ि अगिला भाग २ ।

छीपब—क्रि० छिप् + अब—नुका-
एब १ सत्वर हँटाएब २ ।

छीमड़ि } —छिम्मड़ि, शिम्बी, द्विदल
छीमरि } अन्नक बीजकोष १
छीमी } कोषसहित कदली फल २

छीरीबीती } —असमीचीनतया यत्र
छीरीबित्ती } कुत्रचित् स्थित ।

छीलब—क्रि० छिल्ल + अब—तक्षण ।
छुइब—क्रि० छुब + अब—स्पर्श
करब ।

छुइल—स्पृष्ट ।

छुछ—तुच्छ, रिक्त ।

छुछी—स्त्री० निन्दनीया १ विअ
निक फौफी २ ।

छुछरी—नेनाकेँ लिङ्गपर हाथ नहि
जएबाक हेतु तदाकार भूषण
१ विअनिक फौफी २ ।

छुछिआ—स्त्री० निन्दनीया ।

छुछुन—स्वल्पाकारताहेतुक अशोभमान

छुछुन्नर—उ० अति कुत्सित क्रिया
कयनिहार । स्त्री० छुछुन्नरि ।

छुछुन्नराइनि—छुछुन्नरिक गन्ध
सदृश (गन्ध) ।

छुछुन्नरि—छुछुन्दरी, गन्धमुखी,
मूषिकाकार जन्तु ।

छुछुम—स्वल्पाकारताप्रयुक्त अशोभन
छुटछुटाह—बन्द कएलापर कदा-
चित् स्वतः छुटनिहार ।

छुटब—क्रि० मुक्त होएब ।

छुट्टा—छुटल, बिनु लगाओल (पान
प्रभृति) ।

छुट्टी—क्रियाक विश्राम, कार्यकारीक
अवकाश ।

छुतका—स्तकावशौच ।

छुतब—क्रि० स्पर्शसँ दुष्ट होएब ।

छुनहर—छुतल घैल, आंगन आदि
लेपनार्थ अपवित्र घट ।

छुतुक—अशौच ।

छुतुकाह—उ० अशौचबाला । स्त्री०
छुतुकाहि ।

छुद्र—भुद्र ।

छुद्रविरही—अशुद्धवृत्ती, ओषधिविशेष

छुरछुर-मूतब } —क्रि० सशब्द मूत्र
छुरछुराएब } त्याग ।

छुलछुल-मूतब } —क्रि० लगले
छुलछुलाएब } लागल थोड़थोड़
मूत्रत्याग ।

छुलाह—उ० चोराएकेँ खाद्य बस्तु
खएनिहार । स्त्री० छुलाहि ।

छुछ—तुच्छ, तुच्च, शून्य, रिक्त ।

जगरना जागरण ।

जंगलाह—अनिविड़ वन ।

जंगलिआ } वन्य, वनमे

जंगली } रहनिहार ।

जंगार—उ० पैघ जाँघबाला,
अधिक चलनिहार ।जंग्रासब—क्रि० गतायातेन-
अनेकधा मार्गक परिच्छेद ।

जंग्रिआ—पहिरबाक वस्त्रविशेष ।

जङ्गलाह—ध्रुपादिसँ संकुल ।

जङ्गलिआ } — वन्य, बनेआ ।

जङ्गली }

जङ्गली खेड़हा वन्य मुद्ग ।

जङ्ग—वि० लड़ाइ, युद्ध ।

जङ्गल—वि० वन ।

जङ्गलभार—वनोपवन ।

जङ्गलिआ } — वन्य, वनभव ।

जङ्गली }

जङ्गली खेड़हा—वन्यमुद्ग ।

जङ्गी—वि० सैन्य ।

जङ्गर—पैघ, जाँघबाला, अधिक
चलनिहार ।जङ्गासब—क्रि० अधिक गतायातसँ
मार्गक परिच्छेद ।

जङ्गासल—गतायातसँ अभ्यस्त

(मार्ग) ।

जङ्घिआ—वस्त्रविशेष ।

जचनिहार—उ० परीक्षक ।

जजमनिका—याजन वृत्ति ।

जजमान—यज्ञ कयनिहार १ पात्र-
पुरोहितादिक आश्रय २ ।जज्जल—अनेक छिद्रादियुक्त
अनुपयुक्त (गृहादि) ।

जज्जाल—भक्त

जज्जीर—परपर सम्बद्ध शृङ्खला,
कड़ी ।

जट—छोट जटा ।

जटा—सं० सटल लम्बा केशसंघ ।

जटा-जटिनि—स्त्रीक क्रीड़ाविशेष ।

जटाधारी—पुष्पविशेष १ जटा
रखनिहार (साधु) २ ।जटामसी—जटामांसी, सुगन्धि
ओषधिविशेष ।जटित—खचित १ निश्चय रूपेँ
अवधृत २ ।

जटिल—दृढ़, कठिन, गूढ़ ।

जठर—अति शीत ।

जड़—अज्ञ ।

जड़काला—शीतकटु ।

जड़ब—क्रि० जटित करव ।

जड़ाउ

* मिथिलाभाषा कोषः *

जन्तु

१३१

जड़ाउ } — स्पर्णजटिन रत्न-
भूषण ।

जड़ाओ }

जड़ाओन—किञ्चित् शैत्ययुक्त
(वातादि) ।जड़ाह—उ० शैत्ययुक्त, अप्रियशै-
त्यस्वभावक (व्यक्ति) ।

जड़ि—वृक्षमूल ।

जड़िआएब—ना० जड़ि+अब—
जड़ि रोपब ।जड़िआठी—वंशादिक जड़ि दिसक
खण्ड ।जड़ी—रोगनिवारक मूल वा शाखाक
खण्ड ।

जढ़—अति अज्ञ ।

जतए—अ० यत्र, जाहिठाम ।

जतनी—जाहि अल्प परिमाणक ।

जतबा—जाहि परिमाणक, यावान् ।

जतय—अ० जाहिठाम, यत्र सं० ।

जतहि—अ० जाही ठाम, यत्रैव सं० ।

जतहु—अ० जाहूठाम, यत्रापि सं० ।

जतिगर } — उ० उत्कृष्ट जातिसँ
युक्त ।

जतिमन्त }

जती काल—जतबा काल, यावान्
समय ।

जतीखन—जतबा क्षण ।

जतुपुतहु—स्त्री० जाउमक पुत्रक

स्त्री ।

जतेक—जतबा, जाहि परिमाणक,
यावान् ।

जथगर—उ० धनशाली, पर्याप्त ।

जथा—धन ।

जन—सं० लोक १ दैनिककार्य-
नियुक्त २ ।

जनउ—यज्ञोपवीत ।

जनखइ—अधिक जन लागब ।

जनगर—अधिकलोकयुक्त १ अधिक
दैनिकनियुक्त २ ।

जनम—जन्म, उत्पत्ति ।

जानमब—क्रि० उत्पत्ति ।

जनमौटी—अल्पदिवसोत्पन्न (शिशु)
उत्तानशय ।

जनार—गौरैयाक हेतु दूध पिअब ।

जनारो—साधु सर्वाहिक भोज्य ।

जनि—अ० उत्प्रेक्षाव्यञ्जक ।

जनी—स्त्री० स्त्रीलोक ।

जनी जात—स्त्रीगण ।

जनु—अ० नहि ।

जनेर—अन्नविशेष ।

जनौ—यज्ञोपवीत ।

जनौरी—जन पर रुपैया ।

जन्तर—भूषणविशेष १ तान्त्रिक
यन्त्र २ ।

जन्तु—जानवर ।

जन्त्री—खाम्हेकेँ उपर उठएबाक
यन्त्र ।

जप—सं० मानस पाठ ।

जपब—क्रि० जप करब ।

जबकब—क्रि० जलादिक अधिक
संलग्नता होएब ।

जबकाह—जलादिसँ सार्ध (भूमि)

जबर—वि० जबर, अधिक
बलिष्ठ ।

जबरदस्त—वि० अधिक बलिष्ठ
(लोक) ।

जबरदस्ती—वि० बलाकार ।

जबरा—साजक रूपना ।

जबा—आंगुरक यवाकार चिह्न ।

जबाखार—झारक प्रभेद, यबझार सं०

जबाब—वि० उत्तर ।

जबाबी—वि० अपेक्षितोत्तरक ।

जबबर—वि० अधिक बलिष्ठ ।

जमकब—क्रि० द्रववस्तुक अधिक
सम्बन्ध १ यथेष्ट
अधिक पाएब २ ।

जमघट्ट—अधिक लोकक एकत्र
आस्मर्द, तुमुल ।

जमड़ी—मोट मए बैसल मल्ल ।

जमसिगर—पैघ जमाति ।

जमब—क्रि० भोजन १ नृत्या-
दिक उत्कर्ष २ मल्लदिक

दृढनया स्थिति ३ ।

जमल—उत्कृष्ट होइत (नृत्यादि) १
अधिक जमा भेल
(कजरी प्रभृति) २ ।

जमलखानी—गहूमक प्रभेद ।

जमा—वि० एकट्ठा भेल ।

जमाइनि—यवानिका, अन्नविशेष ।

जमाए (य) पुं० जामाता ।

जमाएजन—जमाएक सङ्ग रहनि-
हार लोक ।

जमाएब—क्रि० जमब+अब—
महत्वक प्रकाश करब १
एकत्र मन्थय करब २ ।

जमाति—बाबाजीक संघ ।

जमादार—वि० सिपाहीक मेउ ।

जमान—तरुण ।

जमानि—यवानी, अन्नविशेष ।

जमाय—पुं० जामाता ।

जमालगोटा—जापाल, जुलाबफल-
विशेष ।

जमुअठि—इनारक तली ।

जमुआ—जामुक लकड़ी १ कारी
रत्नक प्रभेद २ ।

जमुनिआ रङ्ग—रङ्गक प्रभेद ।

जमोट—जमाकेल, वस्त्रादि ।

जयकार—जयशब्दक उत्क्रांति ।

जयपन्थी—विष्णुपूजार्थक

जयपुरी—जयपुरमे निर्मित ।

जयवार—मैथिल ब्राह्मणविशेष,
अपञ्जीबद्ध ।

जर—जरायु १ ज्वर २ एकत्रित ३
सघ ४ ।

जरखोड़ { मालक ज्वर ।
जरखोर }

जरचौठि—दातव्यक चतुर्थांश ।

जरती—जरबासँ विनष्ट ।

जरती जाएब—क्रि० जू+अब—
जरबासँ विनष्ट होएब ।

जरदा वि० पानमे खएबाक
सुगन्धित तमाकू ।

जरन आन्तर दाह ।

जरनघरा—जारन रखबाक घर ।

जरनबाहि—जारनक सञ्चय ।

जरब—क्रि० दग्ध होएब ।

जरलगू—जकरा उवर लगैत होइक
जराइनि—मांस जरबाक गन्ध १ ।
ज्वरक गन्ध २ ।

जराह—वि० हड़जोड़ा ।

जल—सं० पानीय ।

जलकर—सं० जलसम्बन्धी कर ।

जलखइ—हि० जलपानार्थ भक्षण ।

जलगर—अधिक जलयुक्त ।

जलगेहारी—शाकविशेष ।

जलधर—जाहिमे जल अधिक
समाविष्ट हो से (करीन
इनार आदि) ।

जलजन्तु—जलमे रहनिहार
जानवर ।

जलपइ—फलविशेष ।

जलपान—जलखइ ।

जलफाँफी—अत्यन्त विरल बानक
(कपड़ा) ।

जलबाह—जाल फेकनिहार ।

जलबाहि—जालक व्यापार ।

जलमडै { —राजाम्रविशेष ।

जलमरै }

जलहस्ती—सं० हाथीसन
जलजन्तु ।

जलाशय—सं० पोखरि ।

जलदी—वि० शीघ्र ।

जल्ला—मकराक घर १ घासक हेतु
जाली २ ।

जस—यश ।

जसबा—धान्यविशेष ।

जसी—यशस्वी ।

जसोन्ह—भूषणविशेष ।

जस्ता—यसद ।

जहपटार—यन्त्रकुत्रचित पसरल ।

जहर—वि० विष ।

जहरकनैल—उपविषविशेष पुष्प-
वृक्ष ।
जहरबात—शोणितविकारज वात-
रोग ।
जहरमोहरा—सर्पविषशोषक गडुरक
मस्तकचर्म ।
जहरी—मत्स्यविशेष ।
जहल—कारा ।
जहलखाना—कारागार ।
जहाँ—अ० जतए ।
जहाद—हि० विशाल नौका ।
जहाँ दए—अ० यत्स्थानहेतुक ।
जहिं—अ० जाही हेतु ।
जहिआ—अ० यदा ।
जहिखन—अ० जाही काल ।
जहिना—अ० जाही प्रकारे ।
जहूद—वि० भारी ।
जहूरी—वि० रत्नव्यापारी ।
जा—अ० यावत् १ खेद २ ।
जाउत—पुं० स्वामीक भायक बालक ।
जाएब—क्रि० ज्+अब—गमन ।
जाएफर—सुगन्धि फलविशेष,
जातीफल ।
जाकड़—चिरस्थापित (वस्त्रादि)
जाकब—क्रि० जक्+अब—अवयव
शैथिल्यक हेतु एकत्र रखब ।
जाग—प्रबोध ।

जागब—क्रि० जग्+अब—जागरण ।
जागीर—वि० दत्तभूमि ।
जाह्व—ऊरु टेगहुनक उपरका अङ्ग ।
जाह्विल—पक्षिविशेष ।
जाच } —परीक्षा, तत्त्वनिर्धारण ।
जाँच }
जाचब—क्रि० जच्+अब—
जाँचब परीक्षा करब ।
जाट—काचक पात्रविशेष ।
जाठि—यष्टि, पोखरिक यज्ञयष्टि ।
जाड़ जाड़य, शैत्य ।
जाँत—पिसबाक यन्त्रविशेष, घट्ट १
दबाएब २ ।
जाँतब—क्रि० जँत+अब—दबाएब ।
जाति सं० सामान्य, ब्राह्मणत्व
घट्टवादि ।
जादू—वि० मारणादि प्रयोगविशेष
१ असत्यक दर्शन कराएब,
इन्द्रजाल २ ।
जादूगर—अद्भुत अन्यथा दर्शन
कारक, ऐन्द्रजालिक ।
जाधरि—अ० यावत्पर्यन्त ।
जान—वि० प्राण
जानजानी—अ० प्राणानपेक्ष ।
जानब—क्रि० जन्+अब—ज्ञान ।
जान्तवे—अ० ज्ञानानुसार ।

जापत्री—सुगन्धिपत्रविशेष ।
जातीपत्री सं० ।
जापाल—दुःसाध्य, अतिकष्टप्रद ।
जाफर—सुगन्धि फलविशेष,
जातीफल सं० ।
जाफरी—वंशनिर्मित सच्छिद्र
आवरण विशेष ।
जाबी—जालाकार फलादिपात्र
विशेष १ तदाकार बड़दक
मुखड़ा २ ।
जामा—स्यूत वस्त्रविशेष ।
जामिन—प्रतिभू ।
जामिनी—प्रतिभूकर्म ।
जामु—जम्बू ।
जामेबार—वस्त्रविशेष ।
जायफर—जायफल, सुगन्धि फल
विशेष, जातीफल सं० ।
जारन—इन्धन, आगिक हेतु काष्ठ ।
जारब—क्रि० जार्+अब—डाइब,
भस्मीकरण ।
जारी—वि० प्रवृत्त ।
जाल—सं० आनाय ।
जालबन्दी—लहठीक प्रभेद ।
जाला—भुस्सा लएबाक जालाकार
पात्र ।
जाली—आम्रादि रखबाक छोट
जाल, भोरी ।

जासूस—वि० गुप्तचर ।
जाह—अ० खेद ।
जिआरि—धान्यविशेष ।
जिगा—भूषणविशेष ।
जिच्च—वि० सिकस्त १ सतरञ्ज में
शत्रुक असम्मुख-स्थानशून्य
बादसाह २ ।
जिझसपर—जिझसाबाला ।
जिझासा—सं० बुझबाक इच्छा ।
जिझीर—लोहशृङ्खला ।
जितिआ—जीमूतबाइवतक पाबनि ।
जिदिआह—उ० दुराग्रही, स्त्री
जिदिआहि ।
जिद—वि० दुराग्रह ।
जिद लागब—क्रि० लग्+अब—
अधिक आग्रह होएब ।
जिद्दी—आग्रही ।
जिनिस—वि० उपजा अन्न ।
जिनिसी—जिनिससँ आमदनी ।
जिमड़ } —वृक्षविशेष ।
जिम्मड़ }
जिरतिआ—कृषिकार्य करएबामे
नियुक्त, जिरातक का
य कएनिहार ।
जिरात—वि० मालिकक क्षेत्र ।
जिला—वि० मण्डल, ग्रामसमूह ।

जिलेबी—मिथिलाविशेष ।

जिलो—बारातक जुलस ।

जिलद } —वि० बद्ध पुस्तक ।
जिल्ल }

जिल्लो—वि० जुलस ।

जिस्ता—वि० कागतक प्रमाण-
विशेष ।

जिहिआ—जिह्वोत्प्रेक्षनिका ।

जिहुलाह—उ० रसलोलुप । स्त्री
जिहुलाहि ।

जी—प्राण १ अ० वि० स्वीकार २ ।

जीअत—जीवित, (गूआप्रभृति) ।

जीत—विजय ।

जीतब—क्रि० विजय ।

जीन—पत्ययन, घोडापर बैसबाक
आसन १ म्लेच्छजातिक
भूत २ ।

जीबट—सिद्ध करबाक उत्साह ।

जीवन—स० प्राणधारण ।

जीर—स० जीरक, अन्नविशेष ।

जीह—जिह्वा ।

जीह पनिछाएब—क्रि० जीह
पानिसँ युक्त होएब, खयबाक
विशेष इच्छा ।

जुआन—जवान, तरुण ।

जुआनी—तारुण्य, यौवन ।

जुगुताएब—क्रि० ओरिआकेँ
राखब, सुरक्षित करब ।

जुगुति—युक्ति ।

जुगुलात—युक्त, नीक ।

जुटब—क्रि० एकत्रित होएब ।

जुटान—बहुत व्यक्तिक एकट्ठा हो
एब ।जुटिकाबन्धन—जूटिकाबन्धन, उप-
नयनक पूर्वदन राति में
कर्तव्य विशेष ।

जूटी—जूटी, वेणी ।

जुड़पित्ती—रोगविशेष ।

जुड़ब—क्रि० उपायसँ प्राप्त होएब ।

जुड़बन्ध—भूषणविशेष ।

जुड़ाएब—क्रि० जुड़+अब—ठण्डा
होएब ।जुतिआएब—ना० जूता+अब—
जुतिअब+अब—जूतासँ मारब ।

जुत्थ—यूथ, समूह ।

जुनेठब—ना० जुनेठ+अब—
जुनासँ बान्हब ।जुन्ना—तृणक एँठल एकगुणक
रस्सा ।

जुवान—स्वीकारवाक्य ।

जुवान देब—क्रि० दे+अब—
स्वीकारवाक्य कहब ।

जुबानी—मुखद्वार, कथिता,

मौखिक ।

जुमब—क्रि० अधिक प्राप्य होएब ।

जुमहुगर—अधिक जुमाहु ।

जुमाहु—अधिक प्राप्य ।

जुबन्ध—भूषणविशेष ।

जूआ—यूत ।

जूआसारि—यूतस्थान ।

जूटब—क्रि० जुट+अब—एकत्रित
होएब ।जूटिकाबन्धन—उपनयनाक पूर्व-
रात्रिकर्तव्य शिखामे जूटी
बान्हब ।

जूटी—वेणी ।

जूड़—उपरका खोपा १ शीतल २ ।

जूड़ा—क्रि० जुड़+अब—प्राप्य होएब

जूड़शीतल—जलक्रीड़ादिवस, मेघ-
संक्रान्तिक परात ।

जूड़ा—माथक उपरका खोपा ।

जूता—हि० उपानत, पनही ।

जूताजूतौबली } परस्पर जूता मारब
जूताजूती }

जूति—स्वाधीनता १ वीर्यवस्था २ ।

जूम—तमाकूक मात्रा ।

जूमब—क्रि० जूम+अब—प्राप्ति ।

जूमा—बटेरक युद्धक आकरण ।

जूस—यूष ।

जूही—यूधिका, पुष्पविशेष ।

जे—यद, सर्वनामा ।

जै—अ० जाहि कारण ।

जेकाँ—अ० सम, तद्वत् ।

जेजा—वि० नामक पाँछा तिरंगेखा

जेठ—ज्येष्ठ, अधिक वयसक १
ज्येष्ठमास २ ।जेठजन—उ० ज्येष्ठ व्यक्ति (पुत्र
प्रभृति) ।जेठजनी—स्त्री० ज्येष्ठा व्यक्ति
(कन्याप्रभृति) ।जेठरैअति—पुं० श्रेष्ठ असामी,
मालगुजारी ओसूलमे नियुक्त ।जेठसासु—स्त्री० पत्नीक जेठि
बहिनि ।

जेठाइ—ज्येष्ठता ।

जेठीमधु—यष्टीमधु, ओषधिविशेष ।

जेना—अ० जाहि प्रकारेँ, यथा ।

जेमब—क्रि० भोजन ।

जेमहर } —अ० जाहि दिसि ।
जेम्हर }

जेर—वि० समूह ।

जेरगर—अधिक समूह ।

जेहन—यादश, जकर सन ।

जेहनसन—अ० यादश अवसर ।

जेहरि—पादभूषणविशेष ।

जै—यवाकार अन्नविशेष, यवानी ।

जैओ—अ० यद्यपि ।

जैती—अ० जयबाक कालमे ।
 जैतुक—जौतुक ।
 जैधी—स्त्री० स्वामीक आताक कन्या ।
 जोआएब—क्रि० जो+अब—
 परिणत होबए ।
 जोआरि—समुद्रक तरङ्ग ।
 जौक—जलौमा ।
 जोकर—अ० योग्य ।
 जकटी } पेटमे फड़ल कीट
 विशेष ।
 जोकठी }
 जौकी—पेटक छोट छोट चोली ।
 जोख—तौल ।
 जोखब—क्रि० तौलब ।
 जोग—योग्य १ श्रोत्रियत्वयोग्य
 मैथिल २ औषधसहमिश्रण ३ ।
 जोग-टोन—तान्त्रिक क्रिया
 (वशीकरणदि) ।
 जोगाड़ (र) करब—क्रि०
 सामग्रीक सम्पादन ।
 जोगि—उ० पटबा जातिविशेष ।
 स्त्री० जोगिनि ।
 जोगिधा—ओड़हुल फूल ओ
 अण्डीक प्रभेद ।
 जोगिनि—स्त्री० पटबा जातिक
 स्त्री ।

जोगिनी—भूषणविशेष ।
 जो (यो) गी—योगाभ्यासी ।
 जोगी हड़ीर } —बिनु आँठीक
 जोड़ी हड़ीर } हड़ीर, छोटकी
 हड़ीर ।
 जोगौली—भूषणविशेष ।
 जोट—सर्पादिक मिथुनसम्बन्ध ।
 जोट लागब—क्रि० लग+अब—
 सर्पादि स्त्रीपुरुषक संयुक्त
 होएब ।
 जोड़—एककार्यकारी दू गोठ १
 सन्धि २ ।
 जोड़न—जनमबाक हेतु दूधमे देल
 दही ।
 जोड़ब—क्रि० योजन ।
 जोड़ा—हि० जोड़ ।
 जोड़ी—दू घोड़ा गाड़ी ।
 जोत—हलसँ कर्षण ।
 जोतब—क्रि० हलसँ कर्षण १
 अश्वदिक रथादिमे योजन २ ।
 जोतल—कृष्ट ।
 जोता—कृषीबल, खेत कएनिहार ।
 जोति—ज्योति, कान्ति ।
 जोतिस्त्री—ज्योतिविद् ।
 जोती—पालोमे बड़द बन्हबाक
 ढोरी ।

जोभ—तृणविशेष ।
 जोर—वि० बल ।
 जोरगर—उ० बलिष्ठ । स्त्री०
 जोरगारि ।
 जोरबन्द—सतरञ्जक लेखक एक
 प्रभेद ।
 जोर्रा—पाछाँसँ जोर देब ।
 जोलहा—तन्तुवाय, वस्त्र बिननिहार
 जातिविशेष ।
 जोलही—जोलहासँ निर्मित (वस्त्र) ।
 जोह—धारमे माछक गमन १
 अन्वेषण २ ।
 जोहब—क्रि० वस्तुक अन्वेषण ओ
 संग्रह ।
 जोहारि—समुद्रकतरङ्ग ।
 जौआँ—यमज, एक पेटसँ सहोत्पन्न ।
 जौड़—रज्जु, साबेक डोरी ।
 जौतुक—सं० वरकें देल वस्तुजात ।
 ज्ञाति—सं० सात पुस्तिसँ उपर दश
 पुस्ति पर्यन्त ।
 ज्ञान—सं० बोध ।
 ज्ञानपचीसी—क्रीड़ाविशेष ।
 ज्योति—सं० प्रकाश ।
 ज्वर—सं० बोखार हि० ।
 ज्वरी—सं० ज्वरयुक्त ।
 ज्वाला—सं० धाह, आगिक धधरा ।

भकभक—चाकचक्ययुक्त ।
 भकभकाएब—ना० चाकचक्ययुक्त
 देखि पड़ब ।
 भकाएब—क्रि० भकब+अब—
 ठारि डोलाए फलक
 पातन १ फल खसबाक
 हेतु गाछक आन्दोलन २
 भकास—सवात चिर-वृष्टि ।
 भकाभक } —बहुत चकचक ।
 भकाभक }
 भखनी—दैन्यचिन्ता ।
 भखनी लागब—क्रि० दैन्य चिन्ता
 सँ युक्त होएब ।
 भखब } —क्रि० औदास्य-
 भख मारब } पूर्वक दीनताक चिन्ता
 करब ।
 भखाएब—क्रि० भख+अब—
 किञ्चित् खजगमन ।
 भगड़—कलह ।
 भगड़ब—क्रि० कलहकरब ।
 भगड़ा—कलह ।
 भङ्गाड़ } —अति बृद्ध ।
 भङ्गार }

भक्तउ—भक्तौ, बहुधा विशीर्ण (कदलीपत्र)।

भक्तुह—जाहिसँ भरभर जल चुबए तादश (करीन आदि)।

भक्ताएब—क्रि० भक्त+अब—उच्चताप्रयुक्त जलक मन्द-गति।

भक्तौ—भक्तउ, बहुधा-विशीर्ण (केराक पात)।

भक्तभट—कार्यव्यग्रता, अनेककार्य-पात।

भट—अ० शीघ्र।

भटक—वायुवेगसँ तिर्यक्कृत वर्षा।

भटकब—क्रि० वायुवेगसँ तिर्यक् जलपतन।

भटका—अग्रभागक आघात।

भटकारब—क्रि० भटकार+अब—शीघ्र-शीघ्र डेग देब।—

भट-वए }
भट-पट } —अ० शीघ्र।
भोट-सन }

भट्टा—जाहि काटल धानक गाछसँ भाटिकेँ धान हटाओल गेल हो।

भठहा—फैंकिकेँ फल तोड़ब आदि कार्यहेतुक डप्टा।

भड़ (र)—नमेरक स्वयंपतितबीजसँ जनमल धान।

भड़ (र) ब—क्रि० उद्धूननसँ धूली प्रभृतिक ओ मन्त्रसँ सर्पविषादिक हटब।

भड़ुर—छोटका बड़ुर।

भड़ी—सवातवृष्टि।

भड़ी लाधब—क्रि० लघु+अब—सवात वृष्टिक चिरप्रवृत्ति।

भड़ोखा—कोठाक उपरका भाग।

भण्ठी—ठुठ, शाखारहित (वृक्ष)।

भनक—मालक व्याधिविशेष १ किञ्चित् विक्षेप २।

भनकब—क्रि० पाएर घँसैत मालक चलब १ पछबासँ धानक पाकब २।

भनकाह—उ० बताहसन।

भनभनाएब—क्रि० भनभन+अब—भनभन बाजब।

भन दए उठब—क्रि० हठात् भनत्कार शब्द होयब।

भनओन—भनोन, किञ्चित् मेघाच्छादित (समय)।

भनभन—अ० शीघ्र-शीघ्र।

भपट—पक्षीक आक्रमण।

भपटब—क्रि० पक्षीक चांगुरसँ वस्तु लेबाक आक्रमण।

भपना—भपबाक वस्तु, जाहिसँ भपल जाय।

भपसी—सवात मेही वृष्टि।

भपसी लाधब—क्रि० लघु+अब—चिरस्थायी सवात मेही वर्षण।

भपोन—भपओन, किञ्चित् मेघाच्छादित समय।

भप्पा—भप्पा, काष्ठमञ्जूषाक प्रभेद।

भवरब—क्रि० समन्तात् लटकब।

भवरा—जकरा रोइआँ भवरल रहए से (कुतुर)।

भवरी—धान्यविशेष।

भभहा—दूध नपबाक पैघ पात्र-विशेष।

भभही—दूध नपबाक छोट पात्र।

भमकब—क्रि० भमभम शब्द करब।

भमतगर—अधिक शाखाबाला (वृक्ष)।

भमाएब—न० भामजेकाँ शोका-दिसँ कारी होएब, शोकेँ दुर्वर्ण होएब।

भमानसँ खसब—क्रि० हठात् निराश होएब।

भमार—आन्दोलनजन्य भ्रान्ति।

भमारब—क्रि० भमार+अब—जोर सँ आन्दोलित करब।

भमेल—परिछौटमे विवाद।

भमेलिआ—परिछौटमे विवादस्व-भावक।

भम्पान—पृष्ठवाह्य यानविशेष।

भर—नमेरक स्वयंपतित बीजसँ जनमल धान।

भरक—ज्वालासम्बन्ध।

भरकब—क्रि० अल्प दाइ।

भरका लागब—क्रि० लग्+अब—धानक सुखैनी, रोगविशेष।

भरखरब—क्रि० बाद्धक्यसँ अति-कार्य।

भर-भमेल—लेन-देन कार्यमे विवादप्रभृति।

भरभराएब—क्रि० भरभर+अब—भरभर शब्द करब।

भरना—निर्भर, पर्वतीय क्षुद्र नदी।

भरनी—केश भारबाक बान्हल कामिसमूह।

भरब—क्रि० आन्दोलनसँ आप्ना-दिक पतन १ मन्त्रसँ विषा-दिक अपगम २।

भरवडूर छोटाका बडूर ।
 भरोखा—कोठाक अग्रभाग ।
 भलकव—क्रि० नैर्मल्यसँ चाकचक्यै
 युत होएब ।
 भलकी—नैर्मल्यजन्य चाकचक्य ।
 भलभल—परदा नहि कएनिहार
 पातर (वस्त्रादि) ।
 भलभली—विरलताप्रयुक्त अल्प
 आवरण ।
 भलफल—अल्प सुम्बवाक योग्य समय
 १ रोगादिवश सुस्पष्ट सुम्ब-
 वाक शक्तिहीन (नेत्र) २ ।
 भलफलाएब—क्रि० रोगवश सुस्प-
 ष्टदर्शन शक्तिशून्य होएब ।
 भलफली—अल्प सुम्ब, अल्प
 प्रकाश ।
 भलहेरि—नौकासँ जलक्रीड़ा ।
 भलाबोर—जलसँ बहुत दूर
 आच्छादित ।
 भलिबज्जा—भालि बजऔनिहार ।
 भलला—शाकविशेष ।
 भहर-भहर—भरना जेकाँ निरन्तर
 (जलादिक पतन) ।
 भहरव—क्रि० उपरसँ क्रमिक देबाल
 प्रभृतिक खसब ।
 भहार—नीचाँ पतनयोग्य भूमि ।

भा—ओभा, कतोक मैथिल ब्राह्मणक
 उपाधि ।
 भाँइ—अल्पसम्बन्ध १ दुराग्रह २ ।
 भाँइ उठव—क्रि० कोनो कार्यमे
 दुराग्रहक उत्थान ।
 भाँक—सुखएबाक हेतु जारनकेँ
 पजरल चूल्हिपर चढ़ाएब ।
 भाँकव—क्रि०—भाँक+अब—
 पाकपात्रसँ उद्धार कए पात्रान्तरमे
 भातक राखब ।
 भाँकी—भगवानक दर्शन ।
 भाखड़—लतादिसंकुल क्षुप ।
 भाँखी—गाछक पातर-पातर ठारि ।
 भाखुड़ } —लतादिसंकुल छोट
 भाखुर } गाछ ।
 भाँभ—भल्लरवाय १ अनेकच्छिद्र
 द्रव्यक दबी २ ।
 भाँभन—विदीर्ण कए पसारल बाँस ।
 भाँट—भाँटब ।
 भाँटव—क्रि० भाँट+अब—बारंवार
 उठाएकेँ पटकब ।
 भाँटि—क्षुपविशेष १ । तीव्रवायु २ ।
 भाङ्—अपाकरण १ वृक्षाकार
 शृङ्गारी वस्तुविशेष २ ।
 भाङ्-फूक—मन्त्रादिद्वारा रोग-
 विषादिक अपाकरण ।

भाङ्गव—क्रि० भाङ्+अब—
 आन्दोलन १ मन्त्रसँ
 अपाकरण २ ।
 भाङ्गि—जङ्गल ।
 भाङ्गी—भृङ्गारक, जलपात्रविशेष ।
 भाङ्ग—हि०, बाढ़नि, सम्मार्जनी ।
 भाँप—आच्छादन १ शिबिकाक
 स्थूत आवरणवस्त्र २ ।
 भाँपन—आवरण ।
 भाँपव—क्रि० भाँप+अब—आवृत
 करब ।
 भाँपा } —भम्पा, काष्ठरचित
 भापा } मञ्जूषाविशेष ।
 भावा—गुच्छ ।
 भाव—अधिक तोपसँ कारी भेल
 इष्टका ।
 भार—भारव १ सीसाक गुच्छ २ ।
 भारनि—दाउनिमे धानक भारव ।
 भार-फुनुस—बरिआत सजबाक
 भाङ्ग आदि ।
 भार-फूक—मन्त्रादिद्वारा रोगक
 अपाकरण ।
 भारव—क्रि० भार+अब—
 उद्धनन १ मन्त्रदिसँ
 रोगादिक अपाकरण ।

भालरि—गेहुआ प्रभृतिमे सौन्दर्यार्थ
 चारुकात धोकचाए लगाओल
 वस्त्र ।
 भालि—भल्लक, वाद्यविशेष ।
 भिँगुनी—भिक्षिनी, व्यञ्जनफल-
 विशेष ।
 भिङ्गुर—कीटविशेष ।
 भिमरी—अल्पछिद्रसमूह ।
 भिमभिमिआ—कानक भूषण-
 विशेष ।
 भिलम—व्यायामसाधनविशेष ।
 भिलमिली—वातायन ।
 भिलिआएब—क्रि० भिलिअब+
 अब—कोदारिसँ माटि
 सरिआएब ।
 भिल्ला—पक्षिविशेष ।
 भिल्ली—वषमि शब्दकारी लघु
 जन्तुविशेष ।
 भिल्लो—जलीय पक्षिविशेष ।
 भीक—जाँतमे पिसबाक हेतु देय
 एक मुट्ठी अन्न ।
 भीकव—क्रि० भिक+अब—
 आकर्षण ।
 भीकातीरी—परस्पर भीकव ।
 भीरो—तृणविशेष ।
 भील—जलमय, धान नहि
 उपजबाक योग्य चर ।

भीलो—एक प्रकारक कौड़ीक खेड़ि ।
 भीसी—सूक्ष्म जलकण ।
 भुकनी—तन्द्राहेतुक झुकव ।
 भुकव—क्रि० नम्र होएब ।
 भुकाह—एक भाग झुकल,
 एकभगाह ।
 भुमुआएब—क्रि० झु झु+ अब—
 अल्पता हेतुक असन्तोष ।
 भुमुआन—अल्प होएबाक हेतु
 असन्तोषास्पद (अन्नादि) ।
 भुटका } —फूटल माटिक बासनक
 भुटकी } बहुत छोट खण्ड ।
 भुट्टी—धानक सीसक जूटी ।
 भुडुर—भंखार, अतिवृद्ध ।
 भुण्ड—प्राणीक समूह ।
 भुत्थर—भंखार, अतिवृद्ध ।
 भुनकी—ठेंगाक वाद्य ।
 भुनखुना—शाकविशेष ।
 भुनभुना—झुनझुन बजनिहार
 नेनाक खेलओना ।
 भुनभुनी—चिरभाराक्रान्तिप्रयुक्त
 शोणितसञ्चारक अल्पतासँ
 क्षणिक वेदनासँ क्षणिक वेदना
 विशेष
 भुनभुनी भरव—क्रि० पूर्वोक्त
 वेदनासँ युक्त होएब ।

भुमक—झुमक, कानक भूषण-
 विशेष ।
 भुमका—ओड़हुल फूलक प्रमेद ।
 भुमकी—छोट झुमक ।
 भुमरि—अनेकनर्तकसम्पाद्य नृत्य-
 विशेष १ गीतविशेष २ ।
 भुम्मक—झुमक, कानक भूषणविशेष ।
 भुरकुटिआ—कदलीफलक एक
 प्रमेद ।
 भुरमुठ } —जोरसँ परस्पर पकड़व ।
 भुरमुठि }
 झुलब—क्रि० आन्दोलन ।
 झुल्ला—स्त्रीक स्यूत वस्त्रविशेष ।
 झुकव—क्रि० झुक+ अब—एकदिस
 नीच होएब १ नम्र होएब २ ।
 झुटव—क्रि० झुट+अब—जोरसँ
 आक्रमण ।
 झूर—कड़ा कए तरल (तरकारी
 आदि) ।
 झूला—हाथीक उपरक दुहु दिस
 नमरल कपड़ा ।
 झूलन—भगवानक झुलबाक शृङ्गार
 १ जे हाथी सतत झुलैत
 रहए २ झुलबा कालक
 गीत ३ ।

झूलव—क्रि० झुल+अब—आन्दो-
 लन ।
 भौक—कोठाक बाहरक छदि १
 जोर, आघात २ ।
 भौकव—क्रि० अधिक विनियोग ।
 भौका—भूताद्यपसारणार्थ अधिक
 धूप ।
 भौकारा—अधिक विनियोग ।
 भौकाह—उ० हठात् क्रियाक
 आवेगबाला (व्यक्ति) ।
 भौकी—हठात् क्रियाक आवेग ।
 भौखरव—क्रि० वाद्द्वयप्रयुक्त देहक
 हास ।
 भौभ—अप्रवेश्य मध्यमे अदृश्य
 जङ्गल ।
 भौट—बढ़ल समस्त माथक केशपुञ्ज
 भोटकी—भौट ।
 भोटहा—स्त्रीगण ।
 भौटाभौटी—परस्पर भौट पक-
 डव ।
 भोर—तीमनक एक प्रमेद १ तीम-
 नक जल २ ।
 भोरगर—अधिक भोरसँ युक्त
 (तीमन) ।
 भोरव—क्रि० मृगादिक वनमे
 अन्वेषण ।

भोरा(ड़ा)—वस्तु रखबाक स्यूत
 वस्त्रविशेष ।
 भोराएब—ना० भोरसँ युक्त करव ।
 भोरी—छोट भोरा ।
 भोल—चार आदिमे लागल धूमा-
 दिहृत विकार ।
 भोलव—क्रि० शुष्क चूणकेँ वस्त्र-
 पूत करव ।
 भोलरतू—भोलसँ मलिन ।
 भोलराह—नीच भेल (खाट आदि) ।
 भोली—भोलक विकार ।
 भौआ—वृक्षविशेष १ जम्बीर
 विशेष २ ।
 भौसब } —अत्यल्पतैलादिसँ धूआँ
 भौसब } बहकाए व्यञ्जन रान्हव ।
 ब
 बहाँ } —अहाँ, भवान् सं० ।
 बेहाँ }
 ट
 टउआएब—क्रि० टउ+अब—अनाथ
 भए इतस्ततः घूमव ।
 टक—एकतान दृष्टि ।
 टकगर—अधिक रुपैयाबाला ।
 टकटक करव—क्रि० अत्यन्त दुर्बल
 होएब ।

टकटक ताकव—क्रि० तक्+अब—
एकतान दृष्टिस्त ताकव ।
टकटकी—एकतान दृष्टि ।
टकटकी लागव—क्रि० लग्+
अब—दृष्टि एकतान
होएब ।
टकटोरव—क्रि० नहि देखैत हाथसँ
ताकव ।
टकटोरिआ—नहि देखैत भूमिमे
वारंवार हाथ राखव ।
टकटोरिआ देव—क्रि० द्+अब—
नहि देखैत भूमिमे
अनेकधा हस्तारोपण ।
टकबेल—मल्लीपुष्पक एक प्रभेद ।
टक लागव—क्रि० लग्+अब—
एकतान दृष्टि रहव ।
टकसाल—रूपैआक निर्माणस्थान ।
टकुआ—टाकु, तर्कु ।
टकुआ तान—टकुआजेकाँ सोम् ।
टकुरी—सूत कटबाक छोट यन्त्र-
विशेष ।
टकुरी काटव—क्रि० कट्+अब—
टकुरीद्वारा सूतक निर्माण
करव ।
टकोरा—आमक बहुत बच्चा फल ।
टकर—हि० आघात ।

टगव—क्रि० आबत्यनिद्रादिप्रयुक्त
झुकव ।
टग हानव—क्रि० हन्+अब—
आबत्यसँ झुकैत चलव ।
टगड़व }
टघरव } —क्रि० खवण ।
टघाड़ (र)—खवण ।
टघाड़ (र) व—क्रि० खुत करव ।
टङ्गर } --पैघ पाएरवाला,
टङ्गर } अधिक चलनिहार ।
टटउ—टाटवाला (घर) ।
टटकवाह—कर्षणाद्युत्तर बीजव-
पनादिमे विरामाभाव ।
टटका—तात्कालिक, अपर्युषित
(जल आदि) ।
टटबन्हा—टाट बन्हाक (जौड़) १
टाट बन्हनिहार (जन) २ ।
टटमजार—चैनट्य ।
टटहा—कागतक एक प्रभेद ।
टटाएव—क्रि० टट्+अब—सोहारी
आदि शुष्क भए कठोर होएब ।
टटैनी—शिराक वेदनाविशेष ।
टटौ—टाटक (घर) ।
टटू—छण्ठा घोड़ा ।
टण्टघण्ट—देखौआ पूजाक घड़ी-
घांटी ।

कनट * मिथिलाभाषाकोषः * टाका १४७

टनक—कान ओ माथक वेदना ।
टनकव—क्रि० कान वा माथ दुखा-
एव ।
टनकी—पक्षिविशेष ।
टनटनाएव—क्रि० टनटन्+अब—
टनटन शब्द करव १ रुग्ण
अवस्थासँ किछु उत्थानावस्था
पाएव २ ।
टनदए—अ० टन शब्द कए ।
टप—आवरणविशेष ।
टपकव—क्रि० अनवसरमे आगमन
(निन्दामे) १ स्वयं पक भए
आम्नादिक पतन २ ।
टपटप करव } —क्रि० अप्रस्तुत
टपटप बाजव } अनधिकार अनेकधा
वाजव ।
टपव—क्रि० गहीड़ आदिक लङ्घन ।
टप्पाटोइआ देव—क्रि० द्+अब—
अन्हारमे हाथ भूमिपर देने
चलव वा कोनो वस्तुक
अन्वेषण करव ।
टप्पू—टापू, उपद्वीप ।
टभकव—क्रि० पाकिँ फल आदिक
स्वतः खसव ।
टभका—माछ बभ्रुआक वंशनिमित्त
यन्त्रविशेष ।

टभकी—छोट टभका ।
टमटम—एक घोड़ावाला एकासँ
पैघ रथ ।
टरकारव—क्रि० टरकार्+अब—
किछु कहि टारव ।
टरव—व्याजपूर्वक चल जाएव ।
टरुआएव—क्रि० टरु+अब—आव-
त्यसँ झुकव ।
टर्राएव—क्रि० टर्+अब—वृथा
इतस्ततः घुमव ।
टलहा—द्रव्यान्तरमिश्रित रूप ।
टलिआएव—ना० टाल+अब—
टाल लगाएव ।
टहल—परिचर्या ।
टहल-टिकोरा—परिचर्याप्रभृति ।
टहलनी—स्त्री० परिचर्याकर्त्री ।
टहलव—क्रि० देहस्वास्थ्य हेतुक
मन्दमन्द चलव, बूलव ।
टहलू—पु० परिचारक पुरुष ।
टहुकी—वंशरचित माछ मारबाक
साधनविशेष ।
टाँक—सोन प्रभृतिक जोड़ करबाक
हेतु निर्मित मिश्रित धातु १
टाँकव २ ।
टाँकव—क्रि० टँक्+अब—दूर दूर
कए सीअव ।
टाका—रुपैया ।

टांकी—उपदेश, रोगविशेष ।
 टाकु—तर्कु, छिद्र करवाक साधन-
 विशेष ।
 टांग—पाए ।
 टांगव—क्रि० टांग्+अब—उपरका
 आश्रयमे लटकाएव ।
 टांगन—पैघ घोड़ा ।
 टांगर—चव्य, ओषधिविशेष ।
 टाङ्क—टांग, पाए ।
 टाङ्कव—क्रि० टङ्क्+अब—टांगव,
 उपरका आधारमे लटकाय
 संबद्ध करव ।
 टाट—तृणादिनिर्मित गृहादिक आव-
 रण ।
 टाँट—शुष्कताप्रयुक्त कर्षणायोग्य
 (क्षेत्र) ।
 टाटक—इन्द्रजाल ।
 टाटफरक—टाटप्रभृति ।
 टाँटि—क्षुपविशेष ।
 टाड़—बाहिक आभूषणविशेष ।
 टाड़ा—तैल घृत रखवाक, माटिक
 पैघ घटाकार पात्र ।
 टाड़ी—छोट टाड़ा ।
 टाप—घोड़ाक पादतल ।
 टापि—माछ मारवाक वंशरचित
 साधनविशेष ।
 टापू—द्वीप ।

टाभ—नेबोक प्रमेद ।
 टारव—क्रि० टार्+अब—हटाएव ।
 टारमटोर—किछु-किछु कहि काल-
 क्षपण ।
 टाल—जलसँ बँचवाक हेतु सुसजित
 तृणपुञ्ज १ समूह २ ।
 टाल ठोकव—क्रि० बाँहिपर कर-
 तलवनि ।
 टाल मारव—क्रि० मार+अब—
 कौशलसँ तौलबामे
 वञ्चना करव ।
 टिकटिकाएव—क्रि० टिकटिक्+
 अब—क्षीणतावस्थासँ
 किछु नीक स्थिति
 प्राप्त करव ।
 टिकटिकिआ—गिरगिट ।
 टिकरी—मिष्टान्नविशेष १ छोट
 रोटी २ ।
 टिकुला—बिना कोइलीक आम ।
 टिकुलिआ बीड़ी—ताम्बूलविशेष ।
 टिकुलि (ल)हारनी—स्त्री० टिकुली
 बेचनिहार जातिक
 स्त्री ।
 टिकुलि (ल)हारा—पुं० टिकुली
 बेचनिहार जातिविशेष ।
 टिकुली—कपारमें सटवाक नाना
 रूपक स्त्रीक अलङ्करण १

चित्रपतङ्ग, कीटविशेष
 २ ।
 टिकी—टिकरी, मिष्टान्नविशेष १
 छोट रोटी २ ।
 टिङ्ङा—क्रोड़ ।
 टिटकारव—क्रि० टिटकार्+अब—
 प्रतारणाबुध्या उत्साहक
 कथा कहव ।
 टिटकारी—प्रतारणाबुध्या उत्साहक
 वचन ।
 टिटही } —टिट्ठिभ, पक्षिविशेष ।
 टिटिही }
 टिण्डीबोह—शलभभृह, क्षुद्र-
 पक्षिगण ।
 टिपका—कचित्-कचित् प्रवृत्त
 (महामार्यादि) ।
 टिपकारी—कोठाआदिमे मसालासँ
 पजेवाक छिद्रपूरण ।
 टिपव—वाचा सहायता करव ।
 टिपोट—संक्षिप्त जन्मकालादिक
 लेख ।
 टिपौटी—असम्यक् नियोग ।
 टिप्पा—कौड़ीक एक प्रकारक खेड़ि ।
 टिप्पी—स्मरणार्थ गणनाक रेखा ।
 टीक—शिखा ।
 टीका—सं० व्याख्या ।

टीन—वि० धातुविशेष १ लौहरचित
 तेल आदिक पात्रविशेष २ ।
 टीप—टीपव १ बोनलमे तेल दार-
 वाक सच्छिद्र पात्रविशेष २
 कौड़ीक एक खेड़ि ३ ।
 टीपनि—जन्मपत्री ।
 टीपव—क्रि० टिप्+अब—क्रीड़ा
 प्रभृतिमे अनका विचारदेव ।
 टुअर—माए-बापसँ हीन (नेना) ।
 टुक—सुपारीक खण्ड ।
 टुकड़ा—खण्ड ।
 टुकड़ी—छोट खण्ड ।
 टुकना—दालि रन्हवाक पैघ पात्र
 विशेष ।
 टुकनी—छोट जलपानपात्र ।
 टुघड़ (र)व—क्रि० नेनाकप्रारम्भिक
 अल्प-अल्प चलव ।
 टुटव—क्रि० भग्न होएव १ अनेका-
 क्रमण २ ।
 टुट्टा—ट्टल, भग्न (तण्डुलादि) ।
 टुट्टी—कम्यविक्रयव्यापारमे हानि ।
 टुट्टी लागव—क्रि० लग्+अब—
 कम्यविक्रयव्यवहारमे हानि पहुँचव ।
 टुड़नी—वृक्षादिक अग्रभाग ।
 टुनमुन—छोट गोल (लोटाआदि) ।
 टुमटाम—छोटछीन गहना ।
 टुसकाएव—क्रि० टुसक+अब—

अनुचित क्रियामे प्रवृत्ति कराएब ।
 दुस्सा—शाखाप्रसं चल अङ्कुर ।
 दूअर—दुअर, मातृपितृहीन (शिशु) ।
 दूक—खण्ड ।
 दूट—कयविक्रयव्यापारमे हानि ।
 दूटफाँट—देहक अधिक दुखाएब ।
 दूटब—क्रि० दूट्+अब...भन होएब ।
 टेक—अवलम्बन १ गौरव; मर्यादा २ ।
 टेकना—अवलम्बनवस्तु ।
 टेकब—क्रि० अवलम्बन देब १
 अदृढ़बन्धन २ ।
 टेका—छोट सरल रेखा ।
 टेकुना—खाद्य कन्दविशेष ।
 टेँगरा—मत्स्यविशेष ।
 टेँगारी—छोट कुठार ।
 टेङरा—मत्स्यविशेष ।
 टेङारी—छोट कुठार ।
 टेँट चलब—क्रि० पातर दस्त
 होएब (निन्दामे) ।
 टेटर—चोट लगने वा आने प्रकारें
 उत्पन्न देहक उन्नत मांसपिण्ड ।
 टेँटाह—अप्रिय अप्रस्तुत बजनिहार ।
 टेँटिआ—सूगाक एक प्रभेद ।
 टेढ़—वक्र ।
 टेढ़का—वक्रप्रभेदक (खाम्हाआदि) ।
 टेढ़बकुली—अत्यन्त टेढ़ ।
 टेढ़िआ मालभोग—धान्यविशेष ।

टेढ़ी—वक्रता ।
 टेबब—क्रि० अन्वेषण कए पसिन्द
 करब ।
 टेम—दीपशिखा ।
 टेमब—क्रि० टाट आदिमे बातीकें
 सौभ रहबाक हेतु ठाढ़ बातीक
 सङ्ग बन्धन देब ।
 टेमी—वतिका, बाती, दीपक साधन
 विशेष ।
 टेर—आनन्दमे मगन ।
 टेरब क्रि० आनन्दपूर्वक वंशी
 बजाएब १ कथा स्वीकार करब २ ।
 टेरुआ—सुतरी वँटबक यन्त्रविशेष ।
 टेल्ह—छोट नेना ।
 टेल्हवाटेल्हवी—क्रीड़ाविशेष ।
 टेसु } --फलविशेष ।
 टेसू }
 टोइआ—घरक सर्वोच्च उपर भाग ।
 टोइआ करब—क्रि० --- बिनु
 टोइआ देब—क्रि० } देखने
 स्पर्शसं वस्तुक अन्वेषण करब ।
 टोक—टोकब ।
 टोकनि—ढेप फोड़ब ।
 टोकब—क्रि० मध्यहिमे प्रश्न कय
 देब, अकस्मात् पूछब ।
 टोंगब } --क्रि० वंशादिकें अनेक
 टोडब } खण्ड कए काटब ।

टोटल—वि० मोट संकलन ।
 टोटा—कोकें दण्डाकार वस्तु ।
 टोंमिआ—जल बहवाक अन्तिम
 खपरा ।
 टोटी—हृथहृदप्रभृतिक सन्निछद जल
 निःसरणाङ्ग १ ओल ओ
 कड़हरक उच्च अङ्ग २ ।
 टोन—लकड़ी वंशादिक खण्ड ।
 टोनब—क्रि० लकड़ी वंशादिक
 खण्ड काटब ।
 टोना—रोगादिक शामक वा उत्पा-
 दक मन्त्ररहित क्रिया ।
 टोनाडापर—टोनाप्रभृति क्रिया ।
 टोनाह—अल्प बलें भङ्ग होएबाक
 योग्य ।
 टोनी—लकड़ी आदिक खण्ड ।
 टोंप—गोरण्डीयक शिरोभूषण ।
 टोपडहंकार—डीलडाल, आडम्बर ।
 टोपड़ } --अङ्ग गरम रखबाक हेतु
 टोपर } मोट तुरयुक्त नूआ १
 बखारीक गोलाकार ओ
 बीचमे ऊँच चार २ ।
 टोपी—माथ भपवाक स्यूत वस्त्र-
 विशेष ।
 टल—गायक एकदेश ।
 टोलबैआ—टोलक वासी ।
 टलाटोली—अ० गामक प्रत्येक

भाग ।

टोली—छोट टोल ।
 टोह—पता, अनुसन्धान ।
 टोहिआएब—क्रि० टोहि+अब—
 पता लगाएब ।
 टौआएब—क्रि० टौ+अब—अनाथ
 भए इतरततः घूमब ।
 ठ
 ठक—वञ्चक ।
 ठकठक करब—क्रि० जाईँ दौतक
 शब्द करब ।
 ठकठकाएब—क्रि० ठकठक+अब+
 अब—भूमिमे ठँगा आदिक
 आघातसँ ठक ठक शब्द करब ।
 ठकठकिआ—ठकठक शब्द कए
 माल मारनिहार (मलाह) ।
 ठकठेना—ठकव, वञ्चना ।
 ठकदरुआ—गारि पढ़बाक योग्य
 सम्बन्धिक (श्यालादि) ।
 ठकपन } --ठकक क्रिया, वञ्चना ।
 ठकपना }
 ठकपनी }
 ठकब—क्रि० वञ्चना ।
 ठकबिदुरी लागब—क्रि० लग्+
 अब—आत्याश्चर्य लागब, आश्चर्य
 अवाक् रहब ।
 ठकुआ—कृतान्न पकमानविशेष ।

ठप्कर—ठप्कर, जोरसँ परस्पर आघात
ठट्टर—शरीर, शरीरपञ्जर ।
ठठरी—ठाँगिके पुस्तकादि रखवाक
साधनविशेष ।
ठठेर } —उ० बर्तनक व्यापारी
ठठेरि } जातिविशेष । स्त्री० ठठेरिनी
ठडर—ठरड़, निद्रामे जायमान नासा-
शब्द ।
ठडर पारब—क्रि० पार+अब—
निद्रामे नाकसँ शब्द करब ।
ठढका—एक प्रकारक ठाढ़ वस्तु ।
ठढकानर—अपेक्षितापेक्षया उच्च
कानर ।
ठढवत्ता—ठाटमे देल ठाढ़ बाती ।
ठढभगवा—भगवाजेकाँ पहिरल
पैघ वस्त्र ।
ठढ़िआ—एक प्रकारक साग ।
ठण्ढा—शीत ।
ठण्ढाठण्ढी—अ० केवल ठण्ढा समय ।
ठनक—शुष्क निहल भूमि १ मेघ-
ध्वनि २ ।
ठनकब—क्रि० मेघध्वनि ।
ठनका—विद्युत्, वज्र ।
ठमाएब—ना० ठमब+अब—अमु-
कस्थानस्थितत्वेन बुझब ।
ठरड़—ठडर, निद्रामे नाकक शब्द ।
ठरब—क्रि० शीत होएब ।

ठर ठेकान—स्थितिस्थानादि ।
ठस—सुटड़ ।
ठहक—ग्रामरक्षक कृिवा अनको
स्वसूचक शब्द ।
ठहकब—क्रि० ग्रामरक्षाकार्य स्वसूचक
शब्द करब ।
ठहक्का—उच्चैः शब्दपूर्वक हास्य ।
ठहक्का मारब—क्रि० मार+अब—
उच्चैः शब्दपूर्वक हसब ।
ठहरब—क्रि० हि० थम्हब, स्थिति ।
ठहराओ—ठहरब, स्थिति ।
ठहाका—ठहका ।
ठहाठही—अतिप्रकाश (इजोरिआ) ।
ठही—श्रम ।
ठहुरी—काटल छोट शाखा ।
ठाईपठाई—अ० आगामे लगले ।
ठाँओ—स्थान १ स्थानमे लेपन २ ।
ठाकुर—ब्राह्मण, सोनार, कमार ओ
नौआक उपाधि ।
ठाठ—गृहाच्छादनक ठट्टर १ आड-
म्बर २ ।
ठाँठ—बहिला (माल) ।
ठाठब—क्रि० ठठ+अब—ठाठ
बान्हब ।
ठाठवाट—परिच्छदादि बाह्य समग्री
१ आडम्बर २ ।
ठाढ़—उत्थित, स्थित, खड़ा हि० ।

ठाढ़िलाल—पचेसीमे पूरे दस वा
पचीसमे उठल (गोटी) ।
ठानव—क्रि० ठन्+ अब—अधिक
वा पैघ कार्यक प्रारम्भ ।
ठाम—स्थान ।
ठामठिम—अ० कोनो : कोनो
स्थानमे ।
ठार—शैत्य, ओस ।
ठारब—क्रि० ठार+अब—शैत्ययुक्त
करब ।
ठारि—शाखा ।
ठाहिपठाहि—अ० आगामे लगले ।
ठिकादार } —ठीका लेनिहार
ठिकेदार }
ठिकौती—ठीका ।
ठिठुरब—क्रि० शैत्यसँ अङ्ग सङ्कुचित
होएब ।
ठिक—दुरुस्त, प्रस्तुत, शुद्ध १
ठीकब २ ।
ठिकब—क्रि० ठिक्+अब—
सकलन ।
ठिका } —नियत आदेयपर
ठिकापट्टा } कार्यभार ।
ठुठ—शाखाशून्य (वृक्ष) ।
ठुठा—प्रादेश, प्रमृताङ्गुष्ठतर्जनी

प्रमाण १ ठुठ प्रभेदक (वृक्षादि) २ ।
ठुडरी—अत्यन्त काँच (लताम)
१ तामाक प्राचीन कक्षा २ ।
ठुनकब—क्रि० क्रन्दनविशेष ।
ठुनका—बद्धमुष्टिक अङ्गुष्ठसँ
आघात ।
ठुनकाएब—ना० ठुनका+अब+
अब—ठुनका मारब ।
ठुनका मारब—क्रि० मार+अब—
बद्धमुष्टिक अङ्गुष्ठसँ
आघात ।
ठुमुष्का—ठुनका ।
ठुमुष्का मारब—क्रि० ठुनका
ठुसब—क्रि० बलपूर्वक अन्तः
प्रवेशन ।
ठुसुआ—जकरा मध्यमे मसाला
ठुसल हो से (मेरिचाइ) ।
ठेक—ठेकना, अवलम्बन (इष्टकादि)
१ अवधि २ ।
ठेकनगर—अवगतस्थानक (वस्तु) ।
ठेकना—झुकवाक प्रतिबन्धक
अवलम्बन, अड़ानी ।
ठेकब—क्रि० उपरका स्थिर वस्तुक
माथमे संयोग ।
ठेकर—निरोधोत्तरो नहि
हटनिहार १ माथकै ठेस २ ।
ठेकान—पता १ अनुसन्धान २ ।

ठेकाना—पता ।
 ठेगा—यष्टिका, दण्ड ।
 ठेगी—लघु जलौका ।
 ठेघुन—जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।
 ठेघुनिआ—ठेघुनसँ गमन ।
 ठेघुनिआ देव—क्रि० ठेघुनसँ
 चलब ।
 ठेडा—हस्तधार्य दण्ड ।
 ठेडी—लघु जलौका ।
 ठेठ—निकृष्ट १ बन्ध्या (गाए
 आदि) २ ।
 ठेठपन—निष्ठता, नीचता ।
 ठेठा } —बहुत खिआएल
 ठेठी } (कोदारि हर आदि) ।
 ठेलगाड़ी—ठेलबसँ चलनिहार
 गाड़ी ।
 ठेलब—क्रि० पाछाँसँ पकड़ि आगाँ
 चलाएब ।
 ठेला—अङ्गमे घर्षणसँ दढ़ भेल मांस,
 क्रिण ।
 ठेस—पाएरमे चलबा काल स्थिर
 वस्तुक आघात ।
 ठेसगर—ठीठ, निर्भीक ।
 ठेसब } क्रि० चलबा काल
 ठेस लागब } पाएरमे आहत
 होएब ।

ठेसी—निर्भीकता, प्रौढ़ता
 (निन्दमे) ।
 ठेहुन—जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।
 ठेहुनिआ ठेहुनसँ गमन ।
 ठेहुनिआ देव—क्रि० ठेहुनसँ गमन
 करब ।
 ठोक—उपरसँ आघात ।
 ठोकब—क्रि० उपरसँ आघात ।
 ठोकर—सम्मुखसँ आघात ।
 ठोकरा—उखरिमे अन्न उसकएबाक
 खोभीयुक्तदण्ड १ तृणविशेष २ ।
 ठौंठ—ग्रीवाक अगिला भाग १
 गलरन्ध्र २ ।
 ठौंठ लागब—क्रि० स्वरबन्ध
 होएब ।
 ठौंठिआएब—ना० ठौंठिअब+
 अब—ठो ठपर हाथ दए
 बैलाएब ।
 ठोप—बिन्दु ।
 ठोर—ओष्ठ ।
 ठोर बिजुकब—क्रि० ओष्ठ विवृत
 होएब, कनबाक पूर्वरूप ।
 ठोरबिदुरा—विवृत ओष्ठबाला ।
 ठोराह—उ० उचित कथा अवश्य
 बाजि देनिहार । स्त्री० ठोराहि ।
 ठोस—दृढ़ ।

ड
 डकव—क्रि० उत्कट गन्धप्रकाशन ।
 डकरा—विषविशेष ।
 डकहा—मालक सांसर्गिक रोग-
 विशेष, मालक महामारी ।
 डकैती—डाकूक क्रिया, जान मारि
 वस्तु लए लेब ।
 डगड़ (र)—मालक जएबाक रास्ता
 १ एक प्रकारक ढोल २ ।
 डगड़गी—माटिक गङ्गाजली ।
 डगमग—डोलमाल, आन्दोलित ।
 डगमगाएब—क्रि० डगमग+अब—
 नौका आदिक आन्दोलन,
 डोलब ।
 डगमगाह—आन्दोलनशील (नौका
 प्रभृति) ।
 डगमगी—आन्दोलन ।
 डगर (ड़)—मालक गमनमार्ग १
 पर्वमे ढोलक प्रत्यङ्गणवादन २ ।
 डगरना—मचानक भारसह डटा १
 अग्रभागसँ निचला ठारि २ ।
 डगरी(ड़ी)—छोट सूप ।
 डगहर (ड़) } —मालक चलबासँ
 डघड़ } रास्ता ।
 डघर }
 डघड़ब—क्रि० मालक गमन ।
 डङ्का—युद्धक वाद्यविशेष ।

डटकी } —डण्टी, नाल, वृन्त ।
 डटकी }
 डँटगर—कड़ा रान्हल (भात) १
 डाँटसँ युक्त २ ।
 डटब—क्रि० सम्मुख सन्नद्ध होएब ।
 डँड़कट्टा—डणकट्टा १ डाँड़क व्रण-
 विशेष ।
 डँड़िआ—डणिआ, स्त्रीक स्यूत
 परिधानवस्त्रविशेष ।
 डँड़ेर—डणेर, बिचला धर ।
 डणकट्टा—डँड़कट्टा, डाँड़कव्रणविशेष ।
 डणिआ—डँड़िआ, स्त्रीक स्यूत
 परिधानवस्त्रविशेष ।
 डणेर—डँड़ेर, बिचला धर ।
 डण्टा—दण्ड, छोट लाठी ।
 डण्टी—डँटकी, नाल, वृन्त ।
 डनिपन—डानिक क्रिया ।
 डपउ—डपौ, कदलीबत्कल ।
 डपटब—क्रि० तर्जन, जोरसँ
 दबाइब ।
 डपोड़सङ्ग—बहुत कहि किछाँ
 नहि देनिहार (निन्दामे) ।
 डपौ—शुक कदलीक बत्कल ।
 डफरा—वाद्यविशेष ।
 डबरा—पल्लव, खत्ता ।
 डबरी—छोट डबरा ।

डब्बू—तीमन परसबाक पात्रविशेष ।	डाक—मारणपूर्वक धन हरण, डाकू क्रिया ।
डमखोड़—अशुक्त कदलीबल्कल ।	डाकनि—कान लग जोरसँ पढ़बाक सर्पविषहारक मन्त्र ।
डमरू—वाद्यविशेष । सं० डमरू ।	डाकनि देव—क्रि० कान लग जोरसँ मन्त्र पढ़व ।
डमाडोल—अति कम्पित ।	डाका—दस्युकर्म, डाक, मारणादि-पूर्वक बलात् धनहरण ।
डम्फ }	डाकू—दस्यु, जागलक बलात् धन-हरणकर्ता ।
डम्फा }	डाकू सफिआरा—दस्युप्रभृति ।
डम्भा }	डांग—डाङ, दंड, ठेंगा ।
डम्हा }	डांगर—डाङर, वाद्यविशेष, एकतारा ।
डर—भय, दर सं० ।	डाङ—डांग, दण्ड, डण्टा, ठेंगा ।
डरपोंक—भयशील (निन्दामे) ।	डाङर—डांगर, वाद्यविशेष ।
डरबुक—भयशील ।	डाँट—नाल १ वाचा निरोध २ ।
डराएब—क्रि० डर+अब—डराएब, भीत होएब ।	डाँटब—क्रि० डँट+अब—क्रोध-पूर्वक दबाइब, गंजन करब ।
डल—अनुचित आनक क्रिया, एकर केवल देख धातुक योगमे प्रयोग, 'देखू हिनक डल' ।	डाँटी—डँटकी, नाल ।
डसब—क्रि० दंशन ।	डाँड़—कटि, शरीरक मध्यप्रदेश ।
डहकन—गारि देबाक योग्य सम्बन्धिकक प्रति गारि १ गीबतबद्ध गारि २ ।	डाँड़ब—क्रि० डँड़+अब—दण्डन ।
डहकनुआ—गारि देबा योग्य सम्बन्धिक ।	डाँड़ि—रेखा ।
डहरगेन—अगण्य ।	डाढ़ी—दूध औँटलापर पात्रमे सक्कत भए दैसल दुग्धविकार ।
डहरा—सुगरक बच्चा ।	डाण—डाँड़, कटि ।
डाइनि—स्त्री० डाकिनी, मारणादि क्रिया कएनिहारि ।	डाणव—क्रि० डण्+अब—डाँड़ब,

दण्डन ।	अब—गाएप्रभृतिक शब्द करब ।
डाबर—स्नानादिक अयोग्य जला-शय, पैघ पत्तल ।	डिविआ—बन्द कए रखबाक छोट पात्रविशेष ।
डावा—माटिक पात्रविशेष ।	डिमहा } —कनीनिका, आखिक
डाभ—दर्भ, तृणविशेष १ काँच नारिकेर २ ।	डिम्हा } कृष्णगोलक ।
डाभी—दर्भ, तृणविशेष ।	डिहवार—डीहक अधिपति, ग्राम-देवता ।
डामरू—डमरू, वाद्यविशेष ।	डिहार—प्राचीन डीह ।
डाम्ह—डम्भा, पकबाक पूर्वरूपापन्न (फल) ।	डिहुली—छोट डीह ।
डारि—शाखा ।	डीक—अधिक अँटकल (जलादि) ।
डालना—कदीमा प्रभृति अनेक फलसँ सिद्ध तीमन ।	डीक लागब—क्रि० लग्+अब—अधिक जलादिक अँटकब ।
डाला—वंशरचित वितत पात्र-विशेष ।	डील—मोट देह ।
डाली—छोट डाला ।	डीलडोल—आडम्बर ।
डाँस—दश, माँछीसँ पैघ नत्तुत्य पतङ्गविशेष ।	डीलाडीली—जीवनपर्यन्त ।
डाँसब—क्रि० डस्+अब—दंशन, सर्पादिक काटब ।	डीह—वासभूमि ।
डाह—दाह १ असूया ईर्ष्या २ ।	डीही—डीहवाला १ ओहि डीहक प्राचीन वासी ।
डाहब—क्रि० डाह्+अब—दहन, जराएब ।	डुग्गी—वाद्यविशेष ।
डिगिस }	डुबकुनिआ—पानिमे निमग्न-चलब ।
डिगिस }	डुबकुनिआ मारब—क्रि० मार्+अब—पानिमे डूबिकेँ तरहितर हेलन करब ।
डिठौरी—दृष्टिदोषसँ जात व्रण ।	डुबव—क्रि० निमज्जन ।
डिँडिआएब—क्रि० डिँडि+	डुबाब—जलीय पक्षिविशेष ।

डुब्बा—पानिमे मुइल ।
 डुब्बी—डुबब, निमज्जन ।
 डुब्बी मारब—क्रि० मार+अब—
 पानिमे डुबबकेँ हेलब ।
 डुम्भरि—उदुम्बर, वृक्षविशेष ।
 डुम्ब—निमज्जन ।
 डुम्ब—क्रि० डुब+अब—निमज्जन ।
 डुम्ब—डुब, निमज्जन ।
 डुम्ब—क्रि० डुम्+अब—
 निमज्जन ।
 डेउदी—धनिकक निवासालय ।
 डेओढ़—अर्धविषम ।
 डेओढ़ा—आधा अधिक, डेढ़ बर ।
 डेओढ़ी—ज्योढ़ी, धनिकक निवासालय ।
 डेग—अग्रिम भूमिमे पादारोपण,
 चलबामे पादन्यास ।
 डेगची—तण्डुलपाकपात्रविशेष ।
 डेगाडेगी—अ० क्रमशः डेग बढ़-
 बैत ।
 डेगार—भट भट डेग देनिहार,
 तेज चलनिहार ।
 डेँगाएब—क्रि० डेँगब+अब—
 डाँगसँ मारब ।
 डेँगी—छोट नौका ।
 डेँगाएब—क्रि० डेडब+अब—

डाँगसँ मारब ।
 डेड्डी—छोट नौका ।
 डेढ़—आधा अधिक (रुपैया, सेर,
 मन आदि) ।
 डेढ़ बर—कोनो वस्तुक परिमाणसँ
 तकर आधा अधिक परि-
 माण बाला (वस्तु) ।
 डेढ़वा—मत्स्यविशेष ।
 डेढ़हत्थी—डेढ़ हाथक (अर्थात्
 छोटतय लाठी ।
 डेन—मणिबन्धक उपरका अङ्ग ।
 डेँफ—तृणशृङ्ख ।
 डेर—वक्रवीक्षणस्वभावक (आंखि)
 १ तादश अक्षियुत २ ।
 डेरा—आवास ।
 डेराएब—क्रि० डेर+अब—डराएब,
 भीत होएब ।
 डेरादार—भनसिआसँ आन पाका-
 लयमे नियुक्त ।
 डेली—माछ रखबाक पात्रविशेष ।
 डोक—स्वरभङ्ग ।
 डोक लागब—क्रि० स्वरभङ्ग प्राप्ति ।
 डोकहर—पक्षिविशेष ।
 डोका—क्षुद्रशङ्ख ।
 डोँडा } —अधिक लम्बा गँहीड
 डोणा } खेत, (मृत नदी पश्चात्
 डोँडा भयजाइल) ।

डोम तृणविशेष ।
 डोम—उ० चाण्डाल जातिविशेष ।
 स्त्री० डोमिनि ।
 डोमउ—डोमक बनाओल (वंशपात्र) ।
 डोमनी—दृथकल पैसएबाक केबाड़क
 यन्त्र १ नृत्यविशेष २ ।
 डोमरा—(डोम अनादर मे) ।
 डोमिनि—स्त्री० डोम जातिक स्त्री ।
 डोरा—सूत्र, ताग ।
 डोरि—अरघनी, वस्त्र टँगबाक
 लटकाओल डोरी वा
 बाँस १ खोपा बन्धबाक
 डोरी २ गमनसौकर्य ३ ।
 डोरिआ—अनेक सरल रेखासँ युक्त
 (वस्त्र) ।
 डोरिआएब—क्रि० सक्रमतासम्पा-
 दन ।
 डोरिगर—गमनागमनमे सुकर ।
 डोरी—साबय सन प्रभुतिक बाँटल
 रज्जु ।
 डोल—भूषणविशेष १ पानि सरबाक
 पात्रविशेष २ ।
 डोलब—क्रि० कम्पन ।
 डोलमाल—कम्पित ।
 डोली—दोली, शिबिका
 ड्योढ़—डेओढ़ ।
 ड्योढ़ा—आधा अधिक ।

ड्योढ़िआ—ज्योढ़ि क्रमक (टाट-
 आदि ।
 ड्योढ़ी—अन्तःपुर १ नृपालय २ ।
 ड
 डक स्वर्णादि तौलबामे रुपैया
 अठन्नी प्रभुतिक प्रतिनिधि
 परिमाण ।
 डकडक करब—क्रि० वस्तुक संचा-
 लनसँ तदभ्यन्तरस्थ वस्तुक डकडक
 शब्द करब ।
 डकडकाएब—क्रि० डकडक+अब—
 डकडक करब ।
 डकडोरब—क्रि० उठाए-बैसाए हड़-
 वड़ाए नाना वस्तु देखब
 (निन्दामे) ।
 डकढोल पैघ (निन्दामे) ।
 डकना सरबासँ पैघ तादश मृत्पात्र ।
 डकब—क्रि० मिथ्या आत्मप्रशंसा
 करब ।
 डका—सं० डफरा ।
 डङ्ग—चातुर्य, प्रकार, गहड़ि ।
 डङ्ग—उ० चतुर, अधिक गहड़ि-
 बाला ।
 डट्टा—डाठ, अवरोधक १ डाँड़मे
 आधा बान्हल धोती २ ।
 डट्टा मारब—क्रि० मार+अब—

आधा पहिरि आधा धोनी डाँड़मे बान्हब ।

ढठिआएब—ना० डाठसँ अवरोधन ।

ढाठी लागब (ढठिआइत अछि) २ ढाठी लगाएब (ढकिअबैत अछि) ३ ।

ढड़रा ओदरब—क्रि० दाहादिसँ चमड़ा ओदरब ।

ढनढनाएब—क्रि० ढनढन+अब—
ढनढन शब्द करब,
मेघध्वनि ।

ढनमन—अथवावत् स्थित (बासन आदि) ।

ढनमनाएब—क्रि० ढनमम+
अब—अयथोचित स्थित
होएब ।

ढनमनाह—अथवावत् रहनिहार (घैल आदि) ।

ढनमनी लागब—क्रि० लग्+
अब—वारंवार ढनमनाएब ।

ढबक—अधिक मोसिक पतन ।

ढबकब—क्रि० अधिक मोसि खसब ।

ढबकाह—अधिकलव (भूमि) ।

ढरक—क्रमिक नीच (भूमि) ।

ढरकब—क्रि० टघड़ब ।

ढरकाह—अधिकलव (भूमि) ।

ढरब—क्रि० जलादि द्रव वस्तु
पात्रद्वारा भूपतन १ शीतला
वणक अनुकूल होएब २ ।

ढरुआ—ढारिकेँ वन!ओल
(लौहिआ प्रभृति) ।

ढलइ }
ढलै } —मास्यविशेष ।

ढहनाएब—क्रि० ढहन+अब—
अयथोचितस्थितिक होएब ।

ढहब—क्रि० माउप्रभृति फाटिकेँ
उपरसँ खसब ।

ढहलेल—बूड़ि, मूड़ ।

ढाक—ढक्का, वाद्यविशेष ।

ढाकन—ढकना, मृत्पात्रविशेष ।

ढाकी—पैघ छिट्टा, धान्यादि
उद्दहनार्थ वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

ढाठ—मालक अवरोधक वंशादि ।

ढाठब—क्रि० ढठ्+अब—ढाठसँ
अवरोधन ।

ढाठी—रीति ।

ढाढ़—धान्यादि रखबाक वंशरचित
बृहदाकार पात्र ।

ढाढ़स }
ढाढ़स } —धैर्य ।

ढावा—कुटएबाक भेद ।

ढावा लगाएब—क्रि० लगब+
अब—परस्पर विरोधक
उत्पादन ।

ढाबुस—पैघ पीरा (बैंग) ।

ढार—उतार, ढ्रव ।

ढारब—क्रि० ढार+अब—द्रव वस्तु
(जलादि) तथा अन्नादिक पात्र
द्वारा अधःपातन ।

ढाल—तरवारिक निरोधक गेँडाक
चाम ।

ढाहब—क्रि० क्रमिक उपरसँ तोड़िकेँ
खसाएब ।

ढाही—माथमे परस्पर आघात ।

ढाही लड़ब—क्रि० माथसँ परस्पर
आघात करब (मेणाआदिक) ।

ढिकुरी—छोट मृत्खण्ड ।

ढिठपन—निर्भयता, प्रौढ़ता ।

ढिठाइ—हि० निर्भयता ।

ढिठिआएब—ना० ढीठ+अब—
ढीठ (प्रौढ़) होएब ।

ढिँडरी—स्त्री० जारपुरुषसँ गर्भवती ।

ढिढ़मदरा—केवल पेट भरनिहार
(निन्दामे) ।

ढिढुका—बीचमे उच्च भूमि ।

ढिढुकाह—मध्यमे उच्च भूमिसँ युक्त
(खेतआदि) ।

ढिढुकी—बीचमे उच्च माटि ।

ढिलढिल—शिथिल, संलग्न नहि
होएनिहार (औँठी-
प्रभृति) ।

ढिलढिलाह—कनेक ढिलढिल ।

ढिली }
ढिल्ली } —शिथिलता, मन्दता ।

ढीठ—निर्भय ।

ढीढ़—जारपुरुषसँ सगर्भ पेट ।

ढील—शिथिल १ संलग्न नहि भेल
(औँठी आदि) २ यूका;
केशकीटविशेष ३ ।

ढुकब } —क्रि० ढुक+अब—
ढूकब } हठात् प्रवेश करब ।

ढेउआ—पैसा, पण, पाइ ।

ढेउआही—एक ढेउआप्रमाणक
बटिखारा ।

ढेकरब—क्रि० उम्दार, कण्ठमागेँ
वायुनिःसरणशब्द करब ।

ढेका—पाछाँ दिस खोँसबाक वस्त्रक
प्रान्त ।

ढेकार—उद्गार ।

ढेकी—धान कुटबाक यन्त्रविशेष १
अखण्ड (हरदिप्रभृति) २ ।

ढेकुल—करीन आदिमे बाँसक
जड़िमे बान्हल स्थूल
वस्तु १ ढेकीमे

स मीबाला अङ्ग २ ।

हेंग }
हेङ्ग } —छोट तथा मोट लकड़ी ।

हेंढ—ढीँ ढूसँ जनमल, जारज ।

हेढबा—नदचेतन ।

हेप—मृत्तिकाखण्ड ।

हेपचेप—छोटपैघ सम प्रकारक हेप ।

हेपाओज—वारंवार हेप फेंकब ।

हेबा—भेदबुद्धि ।

हेबा लगाएब—क्रि० लगब+अब—
भेदबुद्धिक उत्पादन ।

हेबाहि—वारंवार प्रवृत्ति ।

हेबाहि लागब—क्रि० वारंवार एक
कार्यक प्रवृत्ति होएब ।हेर—राशि, पुञ्ज १ राशीभूत,
पुञ्जीभूत २ ।

हेरी—राशि, पुञ्ज ।

हेलमासु—जोरसँ हेप फेकबाक
रज्जुयन्त्र ।

हेला—हि० हेप ।

हेँसब—क्रि० मालक उकासी
करब ।

हेसरि } —मडुआप्रमृत्तिक सीस ।

हेसरी }

हेहा—आघात, वेगापन्नक संयोग ।

हेहिआएब—क्रि० हेहि+अब—
विना हेतुक इतस्ततः
करब (निन्दामे) ।

होंग—विशाल छोट काठक खण्ड ।

होंगा—पैघ वूड़ि, महामूढ ।

होङ—विशाल छोट काठखण्ड ।

होङा—पैघ वूड़ि, महामूढ ।

होंढ़—सर्पविशेष डुण्डुभ १ पैघ
होंढ़ी २ ।

होंढी—नामी ।

होल—पटह, वाद्यविशेष ।

होलक—सुदङ्गाकार वाद्यविशेष ।

होलकी—खजुरी, वाद्यविशेष ।

होलढाक—पटहढाकाप्रभृति ।

होलहो—मुनादी, ढोल बजाए
वार्ता देब ।

होलिआ—ढोल बजओनिहार ।

होली—दू सए पातक पानक मूठि ।

होही—बुड़िबक (निन्दामे) ।

हौर—पिठारक लेप ।

हौरब—क्रि० पिठारसँ लेपन ।

त

त—अ० स्वीकार, एहिमे अकार गुरु
चारण ।तँ—अ० विशेष, तु सं० १ तखन,
तदा सं० २ ।

तइओ—अ० तथाप ।

तकड़ार—वि० विवाद, भगड़ा,
विरोध ।

तकड़ारी—वि० विवादग्रस्त ।

तकथपोस } —वि० काठक खाट ।

तकथपोस्त }

तकथा—सिन्धुक आदि बनएबा
योग्य पातर ओ चाकर कए
चीरल काठ, पट्टा ।

तकथी—छोट तकथा, फलक ।

तकलोफ—वि० क्रेश ।

तकेआ—उपधान, गेडुआ ।

तक्र—सं० जीरलवणयुक्त मथल दही ।

तखन—अ० ताहि क्षणमे, तदुत्तर ।

तखनुक } —ताहि कालक ।

तखनुका }

तगड़—तगर, पुष्पविशेष ।

तगबा—सर्पविशेष ।

तगर—सं० पुष्पविशेष, तगड़ ।

तगादा } —वि० आदेयक माँग ।

तगेदा }

तग्गी—माल मारबाक यन्त्रविशेष ।

तङ } —वि० दिक्, व्याकुल ।

तङ्ग }

तच्छ—वायुसँ फूलल सकत (पेट) ।

तज—त्वक्, ओषधिविशेष ।

तड़क—चारक आधारभूत लकड़ी ।

तड़कब—क्रि० शब्द करब ।

तड़का—कानक भूषणविशेष ।

तड़की—कानक भूषणविशेष, छोट
तड़का ।तड़ख—तड़क, चारक आधारभूत
काष्ठ ।

तड़(र)गर—कड़ा ।

तड़(र)पब—क्रि० फानब ।

तड़फड़—अ० शीघ्र ।

तड़फड़ी—शीघ्रता ।

तड़िपत—तालीपत्र, बजरबदक पात ।

तड़ेरा—बनसीक डोरीमे बान्हल
कोढ़िला आदि ।

ततए—अ० ताहि ठाम ।

ततखनात—अ० तत्क्षणात्, ताहीं
क्षणमे ।

ततवा—ताहि प्रमाणक ।

ततनी } —ताहि अल्प

ततने } परिमाणक ।

ततमत—तारतम्य ।

ततमताएब—क्रि० ततमत+अब—
तारतम्य करब ।

ततमताह { —तारतम्य कए-
ततमतिआ { निहार ।
ततमा —जातिविशेष ।
तत मारि मारब—क्रि० ततेक
मारब ।
ततमिनी—स्त्री० ततमा जातिक
स्त्री० ।
ततय (ए)—अ० तत्र, ताहि ठाम ।
ततहि—अ० ताही ठाम, तत्रैव
सं० ।
ततहु —अ० ताहू ठाम, तत्रापि सं० ।
ततारब—क्रि० ततार+अब—
बड़क दूधप्रभृति लसिगर वस्तु
बेमाए आदिमे दए आगिक
ताओ देब ।
तती काल—ततेक काल ।
तती खन—ततेक क्षण ।
ततेक—ताहि परिमाणक ।
ततपर—सं० उद्भूयुक्त, सावधान ।
तनतन—पीजु आदिक पूर्णतासँ
वेदनाविशेष ।
तनतनाएव—क्रि० तनतन+अब—
पूर्वोक्त वेदनाविशेषयुक्त
होएब ।
तनतनी—पूर्वोक्त वेदना ।
तन्द्रा—आलस्यादिवश आँखि किछु

ताकब ओ किछु मुनब, आँखिक
सर्वथा मुद्रणक अभाव ।
तपत—तप्त, उष्ण ।
तपसी—तापसि ।
तब—रोटी पकएबाक लौहपात्र-
विशेष ।
तबक—पान आदिमे उपरसँ सटबाक
वस्तुविशेष ।
तबब—क्रि० तप्त होएब ।
तबला—वाद्यविशेष ।
तबालची } —तबला बज-
तबालची } ओनिहार ।
तबाह—वि० व्याकुल ।
तमकुलाइनि } —तमाकूक गन्ध १
तमकुलानि } तमाकूक गन्धसँ
युक्त २ ।
तमकुलाह—तमाकूक सम्पर्की
(गुआ आदि) ।
तमघैल—ताम्रघट १ द्रव्यक
घैल २ ।
तमतम करब—क्रि० क्रोधाकुल
होएब ।
तमनी—तामनि, तामब, कोदारिसँ
क्षेत्रमृत्तिकोद्घाटन ।
तमसगीर—तमासा देखनिहार ।

तमसाएव—ना० तामस+अब—
तामस(क्रोध)सँ युक्त
होएब ।
तमसाह—उ० क्रोधी । स्त्री०
तमसाहि ।
तमाकू } —तमाखु, खैनी ।
तमाकूल }
तमासा—वृत्त्याद्युन्सव १ अद्भुत
दृश्य २ ।
तमोलि—उ० पानक व्यवसायी
जातिविशेष ।
तमोलिनि—स्त्री० तमोलि जातिक
स्त्री ।
तमौर—सितार प्रभृतिक तुम्बा ।
तम्बू—उपकार्या, पटगृहविशेष ।
तर—तल, अभ्यन्तर १ वृक्षादि
आन्छादक वस्तुक नीच देश २ ।
तरउपरा—डाँड़क नीचाँ उपर दुहूमे
पहिरल स्त्रीसम्बन्धी (वस्त्र) ।
तरक—अत्युष १ तर्क २ ।
तरकट—तरमे जमल घृणादिक
विकार ।
तरका—तरमे स्थित ।
तरकारी—व्यञ्जन ।
तरक्की—वि० उन्नति ।

तरख—चारक आधारभूत काष्ठ-
विशेष ।
तरखाएव—क्रि० तरख+अब—
किञ्चित् शुष्क होएब ।
तर(ड़)गर—कड़ा (खढ़ आदि) ।
तरङ्ग—तरङ्ग १ आवेग २ ।
तरङ्गब क्रि० शुष्कतासँ खेत
जोतबा योग्य नहि रहब ।
तरङ्ग—सं० ऊर्मि १ आवेग २ ।
तरहत—वि० चिन्ता ।
तरपट—बीच, तारतम्य, अन्तर ।
तरफ—वि० दिश ।
तरब—क्रि० तैल वा घृतमे व्यञ्जनक
पाक ।
तर-वतर—अ० वि० समग्र देहमे
अधिक (घाम चलब) ।
तरबा चरणतल ।
तरबातारू—तरबा रंगड़ब प्रभृति
निखिल परिचर्या ।
तरबोरा—पश्चिम दिशाक इन्द्रधनुष ।
तरल—तैलादिपक्व (व्यञ्जन) ।
तरहृथी—हस्ततल ।
तरहरा—कृत्रिम खाधि, धरतीक
तर देने जयबाक कृत्रिम
अवकाश ।
तरहा—घोड़ाक गद्दी १ गद्दी ड

रहबाक स्थान २।

तराउपर } —अ० तर उपर कए
तराउपरी } राखल।

तराए—कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

तराजू—तुला।

तराटक } —त्राटक. आँखिक
तराटक } चिरकालिक एकाग्रता।

तराय—कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

तरास—अधिक पिआस।

तरासब—क्रि० तरास+अब—
उपरसँ काटब।तरी—वृक्षतल १ वृक्षतलक
उपजा २।

तरुआ—तरल (तरकारी)।

तरुआरि—करवाल, खड्ग, अस्त्र-
विशेष।

तरेगन—तारा।

तरेड़ा—बनसीक डोरीमे बान्हल
कोड़िला आदि।तरैआ—बानिक प्रभेद, तराएतुल्य
(बानि)।तरोटा—पौतीप्रभृति पात्रक तरका
खप्पा।

तर्क—सं० अनुमान।

तलवी—वि० आह्वान।

तलास—वि० अन्वेषण।

तलासब—वि० क्रि० तलास+
अब—अन्वेषण करब।

तली—वस्तुक तल, अधस्तल।

तल्ला } —जूताक निचला भाग।

तल्ली } अधस्तल २।

तसवीर—वि० चित्र।

तसमइ } —पायस, खीर, क्षीर
तसमै } पकाइ।

तसर—रेशमक प्रभेद।

तसला—पाकपात्रविशेष।

तसली—छोट तसला।

तह—मोड़ब, आवृत्ति।

तहदर्ज—वि० प्रथम चौपेतल, परम
नवीन (वस्त्रादि)।

तहसनहस—वि० छिन्न-भिन्न।

तहसील—वि० ओसूल।

तहसीलदार—वि० माल ओसूल
करबामे नियुक्त।

तहाँ—अ० ताहि ठाम।

तहिआ—अ० ताहि समयमे।

तहिना—अ० ताही प्रकारेँ।

तहुना—अ० ताहू प्रकारेँ।

ता—अ० ताबन्।

ताइ—दही पौरवाक वंशपात्र।

ताओ—ताप, ज्वाला १ अच्छिन्न
एक कागत २।ताक—समयक आनुकूल्य १ अन्वे-
षण २।

ताकति—वि० शक्ति, बल।

ताकब—क्रि० तक्+अब—
अवलोकन १ अन्वेषण २।

ताक-हेर } —खोजपुछारी, निरी-

ताकाहेरी } क्षण।

ताकूति—रक्षा।

ताकूती—तत्परता।

ताख—चक्का।

ताखी—ताज, एक प्रकारक टोपी।

ताग—सूत्र, डोरा।

तागब—क्रि० तग+अब—दूर दूर
कए सिअब।

ताँगा } —बड़दसँ रहित शकट,

ताङ्गा } गाड़ी।

ताज—वि० शिरोधार्य वस्त्रविशेष १
राजमुकुट २।

ताड़—तात्कालिक आवश्यकता।

तातकाल—अ० तत्काल, सम्प्रति १
ताहि काल २।

ताँति—चामक तन्तु।

तात्पर्य—सं० अभिप्राय।

तान—गीत गएबामे शब्दविशेष १
तानब २।

तानपूरा—वाद्यविशेष।

तानब—क्रि० तन्+अब जोरसँ
पसारि बान्हब [तम्बू तानल
अछि]।तानी वस्त्रनिर्माणक नामानामी
सूत १ एक यज्ञोपवीत २।तापसि—महादेवक पण्डा,
ब्राह्मणजातिविशेष।

तावत्—अ० सं० ता धरि।

ताबेदार—वि० नोकर, हुकुम
माननिहार।ताबेदारी—वि० नोकरी, हुकुम
मानब।

ताम—ताम्र, धातुविशेष।

तामदान—नरवाह्य वाहनविशेष।

तामब—तम्+अब—कोदारिसँ
माटि काटि केँ उनटाएब।

तामस—क्रोध।

तामा—चूड़ा चाउर नपवाक काष्ठक
पात्रविशेष।तामा मानब—क्रि० आज्ञाक
अङ्गीकार।

तामि—कालज्ञानार्थ यन्त्रविशेष।

ताम्बूल—सं० लगाओल पान १
वि० तारतम्य २ ।
तार—द्रव्यक तन्तु १ तालवृक्ष २ ।
तारकून } —काँच तालफल ।
तारकूल }
तारतम्य—सं० कर्तव्याकर्तव्य-
विचार १ अन्तर वैषम्य २ ।
तारब—क्रि० भिजल धानके
किञ्चिन् भुजब ।
तारभूज—लताफलविशेष ।
तारमताड़ } —अ० अविरामेण
तारमतार } वारवार ।
तारमूली—ओषधिविशेष ।
तारा—सं० नक्षत्र, तरेगन ।
तारी—तालमद्य ।
तारु—तालु ।
ताल—नाना हास्यास्पद चेष्टा १
सं० तान २ ।
ताल ठोकब—क्रि० बाँहि पर
करतलध्वनि करब ।
तालमखाना—ओषधिविशेष ।
तालमिसरी—बनाओल एक प्रकारक
मिसरी ।
ताला—यन्त्रिका, बन्द करबाक
यन्त्र ।

ताली हास्यास्पद नाना चेष्टा
कएनिहार ।
ताली देव—क्रि० आनके उद्देश
कर करतलध्वनि करब ।
तालीसपत्र—सं० ओषधिविशेष ।
तालुक—वि० अधीन ।
तालुका—वि० जमीन्दारीक दुकड़ा ।
तास—खेरुएबाक ५२ गोट मोट
कागतक पत्र ।
तासा—भेरी, वाद्यविशेष ।
तिअ—स्त्री० स्त्री ।
तिउरा—पुष्पविशेष ।
तिसुर—आँटाक प्रभेद ।
तिगरी—नास आदिक तेसर फर्द ।
तितपटली—तितपटोली, लताफल-
विशेष ।
तितपरली—लताफलविशेष ।
तिनब—क्रि० भीजब, जलादिसँ
सार होएब ।
तितरिम—वृक्षविशेष ।
तितर } —तितरि, पक्षिविशेष ।
तितीर }
तित्तिर }
तितुआ—तृणविशेष ।
तिनकनमाही—तीन कनमाक
(बहिखारा वा नपना) ।

तिनखण्डी—भूषणविशेष ।
तिनपड़ } —तीन पाओक
तिनपै } बटिखारा वा नपना ।
तिरछाह—तिर्यक्, असरल ।
तिरछी—वक्र ।
तिरछी काटव—क्रि० असरल मार्ग
जाएब ।
तिरतीआ—तृतीय तिथि ।
तिरपन्न—त्रिपञ्चाशत्, ५३, संख्या-
विशेष ।
तिरपन्नम—तिरपन्न संख्याक पूरण,
त्रिपञ्चाशत्तम ।
तिरमिराएब—क्रि० तिरमिर+
अब—आबलयसँ बहुधा
झुकब ।
तिरमुहानी—तीन मार्गक
सन्निध्यस्थल ।
तिरसट्टि—त्रिषष्टि, ६३ ।
तिरसट्टिम—तिरसट्टिक पूरण,
त्रिषष्टितम ।
तिरहुता—मिथिलाक अक्षर ।
तिरहुताम—मैथिलोचित (वेषादि) ।
तिरहुति—तीरभुक्ति, मिथिला ।
तिरहुतिआ—तिरहुतिमे भेल १
तिरहुतिवासी २ ।
तिराएब—क्रि० तिर+अब—तैआर

कएलापर धान आदिक मोन
पूरब ।
तिरान्नवे—त्रयोनवति, ९३ ।
तिरान्नवेम—तिरान्नवेक पूरण,
त्रिनवतितम ।
तिरान्नवेवे—त्रयोनवति, ९३ ।
तिरान्नवेवेम—तिरान्नवेक पूरण,
त्रिनवतितम ।
तिल—सं० अन्नविशेष ।
तिलक—सं० कपारक चानन ।
तिलका—वृक्षविशेष ।
तिलकोड़—लताविशेष, बिम्बफल ।
तिलठी—तिलयुक्त मिष्टान्नविशेष ।
तिलवा—तिलक मिष्टान्नविशेष १
तिलक, देहमे तिलाकार
बिन्दु २ ।
तिलरी—कण्ठक भूषणविशेष ।
तिलाठी—तिलक डाँट ।
तिलासँकराँति } —मकर-
तिलासँक्रान्ति } संक्रान्ति ।
तिलौरी—तिलमय बटी, व्यञ्जन-
विशेष ।
तिसिऔटा—तीसीक सनसँ
वीनल ।
तिसिऔरी—तीसीक बटी, व्यञ्जन-
विशेष ।

तीअ—तृतीया तिथि ।
 तीअर—जातिविशेष ।
 तीआ—तास आदिक तेसर फर्द ।
 तीख—तीक्ष्ण ।
 तीत—तिक्त ।
 तीतब—क्रि० तित्+अब—जलादिसँ
 आर्द्र होएब, भीजब ।
 तीन } —तिसंख्यक, ३ ।
 तीनि }
 तीमन—तेमन, भोर ।
 तीर—बाण १ सं० तट २ ।
 तीरब—क्रि० पकड़ि केँ धैँ चब ।
 तीरा—पुष्पविशेष ।
 तीसी—अतसी सं० ।
 तुअब—क्रि० तु+अब—बेलसि
 भए फलादिक पतन १ नक्षत्रक
 प्रवेशदिनमे किञ्चित् जलबिन्दु
 पतन २ ।
 तुतिआ—तुल्य ।
 तुनब—क्रि० चुटकीसँ तूरक
 विश्लेषण ।
 तुन्न—फुलल ।
 तुफान—वि० पैघ बिहारि, भारी
 उपद्रव ।
 तुमब—क्रि० तूरक विशकलन करब ।
 तुम्बा—सुखाएल सजमनिक ठट्टर ।

तुम्बी—सं० छोट तुम्बा १
 रक्तमोक्षणक यन्त्रविशेष २ ।
 तुम्मा—तुम्बा ।
 तुम्मी—तुम्बी ।
 तुरकान—तासक क्रीड़ाविशेष ।
 तुरन्त—अ० लगले, अविलम्ब ।
 तुरपीन—चीनी बनएबाक यन्त्र-
 विशेष ।
 तुरभरा—जाहिमे तूर भरल रहए
 से (दोहरि) ।
 तुरमारि—समयपर नहि बाहनिहारि
 दोसरा—तेसरावर्षमे गर्भ
 लेनिहारि (माल) ।
 तुरहा—जातिविशेष ।
 तुरही—वाद्यविशेष ।
 तुराइ—अधिक तूर देल ओढ़ना ।
 तुरुक—तुरुक, तुर्कदेशोद्भव, मलेच्छ ।
 तुरोड़ा } —नेनाक हेतु तूरबाल
 तुरोरा } छोट गद्दी ।
 तुल—सम १ तैआर २ ।
 तुलना—सं० सादृश्य, उपमा ।
 तुलब—क्रि० संनद्ध होएब ।
 तुलबुलिआ—चञ्चल (बालिका) ।
 तुलसी—सं० क्षुपविशेष ।
 तुसारी—माघक कुमारिकाक एक
 पावन ।

तूअब—क्रि० तु+अब—बेलसि भए
 फलादिक पतन १ नक्षत्रक
 प्रवेशदिनमे किञ्चित् जल-
 बिन्दुपतन २ ।
 तूँति—फलविशेष ।
 तूँती—पक्षिविशेष ।
 तूनब—क्रि० तुन्+अब—चुटकीसँ
 तूरक विश्लेषण करब ।
 तूनि—वृक्षविशेष ।
 तूमब—क्रि० तुम्+अब—तूरक वि-
 श्लेषण ।
 तूर—तूल, कपास ।
 तूल—सज्ज, प्रस्तुत ।
 तृणकुङ्कुमा—ओषधिविशेष ।
 तृतीया—सं० तेसर तिथि ।
 तैँ—अ० तस्मात् ताहि हेतु ।
 तेआगब—क्रि० तेआग्+अब—
 त्यागब, छोड़ब ।
 तेकठ—संश्लष्ट तीन काठ १ असरल
 कार्य २ ।
 तेकठी—तीन काठी वा बाँसकेँ जोड़ि
 बनाओल आधार ।
 तेकमिआ—तीन तीक्ष्णाग्र कामि-
 बाला अस्त्र ।
 तेकुसा—तीन कुशसँ बनाओल ।
 तेखार—तीन बेर जोतब ।

तेखारब—क्रि० तेखार्+अब—
 तेसर बेर जोतब ।
 तेगा—अस्त्रविशेष ।
 तेगाड़—तीन गाड़ (पटएबामे) ।
 तेगुन—त्रिवृत्त, त्रिगुण ।
 तेगुनाएब—ना० तेगुन+अब—त्रि-
 गुणीकरण ।
 तेघारब—क्रि० तेघार्+अब—वारं-
 वार पूछब ।
 तेज—वि० तीव्र १ तीक्ष्णवृद्धि २ ।
 तेजपात—पत्र सं० ।
 तेजब—क्रि० त्यागब ।
 तेजबल—ओषधिविशेष ।
 तेजाब—वि० गन्धकादिक सारांश
 तीक्ष्ण द्रव ।
 तेजी—वि० तीव्रता ।
 तेठठ—तीन ठाम निवासगृह ।
 तेड़ारि—पक्षिविशेष ।
 तेतर—पचेसीमे तीन खुदरेँ लाल
 होएबा योग्य (गोटी) १ तीन
 कन्याक उत्पत्तिक अनन्तर
 उत्पन्न (बालक) २ ।
 तेतरि—तिन्तिड़ी, वृक्षविशेष ।
 तेतलिआ—बएल गाड़ीक एक अङ्ग ।
 तेतार—तृणविशेष ।
 तेताल—तीन तालबाला (राग) ।

तै तालिसम—त्रिचवारिंशत्तम;
तै तालीसक पूरण ।
तै तालीस—त्रिचवारिंशत्, ४३ ।
तै तिस—त्रयस्त्रिंशत्, ३३ ।
तै तिसम—त्रयस्त्रिंशत्तम, तै तिसक
पूरण ।

तेधरिआ } —तीन धारीवाला
तेधारा } (पसीम्) ।

तेना—अ० ताहि प्रकारे ।

तेनु—तिन्दुफल ।

तेनुआ—व्याघ्रविशेष ।

तेपखा } —तीन पक्षमे होए-
तेपखिआ } निहार (गम्हड़ी) ।

तेपतिआ—शाकविशेष ।

तेपहर—तृतीय प्रहर ।

तेपाइ—वस्तु-जात रखबाक चारि
पादसँ युक्त तकथा (एहिमे तीनिक
बोधक 'ते' पद प्रयोगक
मूल विचारणीय) ।

तेबट्टी—तीन दिश जएबाक मार्ग ।

तेबर—त्रिवृत्त, त्रिगुण ।

तेबरखा—तीन वर्षक (गृहादि) ।

तेबासि—तीन दिनक पर्युषित (भात
आदि) ।

तेभाग—तीन भाग १ त्रिकोण

(क्षेत्रादि) २ ।

तेमहर—अ० ताहि दिस ।

तेमहल } —तीन महलवाला,
तेमहला } त्रिभूम (प्रासाद) ।

तेमसिआ—त्रैमासिक (शिशु)

तेरह—त्रयोदश, १३ ।

तेरहम—तेरहक पूरण ।

तेरहम चास—सर्वविरुद्ध बान
(निन्दामे) ।

तेरहा—दशाहाशौचांतरक (श्राद्ध) ।

तेरोदसी—त्रयोदशी तिथि ।

तेल—तैल ।

तेलगर—अधिक तेलसँ युक्त ।

तेलचट्ट—अधिक मैल ।

तेलबासा—तेल रखबाक चेंगी ।

तेलहन—तेल देनिहार अन्न
(सरिसओ प्रभृति) ।

तेलही—तेलमे पक्व (सोहारी-
आदि) ।

तेलारि—तृणविशेष ।

तेलाह—तैलसम्पर्की (तण्डुलादि) ।

तेलि—उ० तेलक व्यवसायी जाति-
विशेष, तैलिक । स्त्री० तेलिनि ।

तेलिआ—सर्पविशेष १ अनादरणीय
तेलि २ ।

तेलिआरी—तेलिक आलय ।

तेलिआह—तेलिवत् मलिनवस्त्रा
दिधारी ।

तेलिनि—स्त्री० तेल जातिक स्त्री ।

तेलिवभना—तेलिकें पुजओनिहार
ब्राह्मण ।

तेसज्झा—तीनि व्यक्तिक साझी ।

तेसर—तृतीय ।

तेसरी—तृतीय (हिस्सा) ।

तेसरुकाँ—अ० तेसर वर्षमे ।

तेहड़ा—तेहरा, पैघ कोइल तीन
शुमहाक चूल्ह ।

तेहत्तरि—त्रिसप्तति, ७३ ।

तेहत्तरिम—त्रिसप्ततितम, तेहत्त-
रिक पूरण ।

तेहन—तादश ।

तेहरा—पैघ कोइल तीन शुमहाक
चूल्ह ।

तेहराएब—क्रि० तेहर+अब—
तृतीयावर्तन ।

तेहल्ला—उदासीन, तटस्थ ।

तेहाइ—तृतीयांश ।

तैआर—वि० दुरुस्त, सज्ज, प्रस्तुत ।

तैआरी—वि० ओरिआओन, दुरुस्ती,
सम्पन्नता ।

तैओ—अ० तथापि ।

तैस—त्रयोविंशति, २३ ।

तैसम—त्रयोविंशतितम, तैसक पूरण ।

तो } —अनादरणीय सम्बोध,
तोहें } त्वम् सं० ।

तोकार—अनुचित व्यक्तिमे तो
शब्दक प्रयोग ।

तोड़—भाँक १ खेप २ ।

तोड़ब—क्रि० त्रोटन, खण्डशः करब
१ गाछसँ पुष्पादिक चयन २ ।

तोड़ा—रुपैया रखबाक जाली,
थैली ।

तोड़ी—रक्तसर्पप ।

तोतराएब—क्रि० तोतर+अब—
वर्णकेँ दोहराए-तेहराए
सेहराए बाजब ।

तोतराह—वर्णकेँ दोहराए-तेहराए
बजनिहार ।

तोनी—संयुक्त तर्जनी ओ अंगुष्ठाग्र,
चुटकी ।

तोप—बृहत् भुशुण्डी, अस्त्रविशेष ।

तोपब—क्रि० भाँपब ।

तोला—हि० दश मासा, परिमाण-
विशेष ।

तोसक—सुतबाक गद्दी ।

तोसखाना—वि० कोप ।

तौनी—उत्तरीय वस्त्र, प्रावार ।

तौल—तोलन, तुलासँ सम्मितकरण ।

तौलब—क्रि० तराजू आदिसँ परि-

माणज्ञान करब ।

तौला—माटिक पैघ पाकपात्र ।

तौलिया—हि० एक प्रकारक अँग-पोछा ।

त्याग—सं० छोड़ब ।

त्यागब—क्रि० त्याग+अब—छोड़ब ।

त्रयोदशी—सं० तेरहम तिथि ।

त्रिदोष—सं० सन्निपात (ज्वर) ।

त्रिफला—सं० अमोरा, हज्जीर, बहेड़ ।

त्रुटि—सं० हीनता, दोष, छूटब ।

त्रुटह—उपटाड, असङ्गत (कथा) ।

त्रुटह—उपटाड कार्यकर्ता ।

त्रोटि—विश्राम (बाजब आदिमे) ।

त्वचा—सं० त्वक् ।

त्वच्चाहृच्च—सं० वाचा कलहविशेष ।

थ

थउआ—थौआ, सचूर्णित ।

थकथकाएब—क्रि० थक+अब—स्तब्ध होएब ।

थकनी—परिश्रमजन्य वेदनाविशेष ।

थकरनी—केशमार्जनी, केश थकरबाक साधन, बद्ध कामिसमूह ।

थकरब—क्रि० केशक सम्मार्जन ।

थकुचब—क्रि० चूर्णन, चोटसँ

शिथिलावयव करब ।

थकुचा—थकुचल, चोटसँ

शिथिलावयवीकृत ।

थन—स्तन, स्त्रीक पयोधर ।

थनैल—नारीक स्तनमे दुग्धाधिक्य-प्रयुक्त भेनिहार रोगविशेष ।

थपड़ाएब—ना० थपड़ब+अब—थापड़सँ मारब ।

थपड़ी—करतलध्वनि, ताली ।

थपुआ—चापट कोर मोड़ल (खपड़ा) ।

थम्भ { —कदलीकाण्ड, स्तम्भसदृश
थम्ह { कदलीवृक्षाङ्ग ।

थम्हगर—थम्ह सकनिहार, भारसह, दढ़ ।

थम्हव—क्रि० स्थित रहब, रुकब, ठहरना हि० ।

थर—पैघ माछक बच्चा ।

थरथर—सकम्प ।

थरथराएब—क्रि० थरथर+अब—कापब, कम्पन ।

थरथरी—कम्प ।

थरि—माल बन्दहाक स्थान ।

थल—स्थल ।

थलकमल—स्थलकमल, कमलसन पुष्पविशेष ।

थलगर—अधिक थालसँ युक्त ।

थलथल—भितर जलमयताप्रयुक्त पाएरसँ दबि गेनिहार (भूमि) ।

थलाह—थालसँ युक्त ।

थलिआएब—ना० थलिअब+अब—थाला (आलवाल) सँयुक्त करब ।

थाक देरी, समूह ।

थाकनि—थकनी, श्रान्ति ।

थाकब—क्रि० थक्+अब—परिश्रान्त होएब ।

थाकर धान्यविशेष ।

थान—कपड़ाक परिमाणविशेष १ देवादिक स्थान २ ।

थाना—राजकीय पदातिक स्थान ।

थाप—व्यवस्था १ निर्भरता स्थापन २ ।

थापड़—चपेटा, ताड़नोदयत करतल ।

थापना—स्थापन (देवादिक) ।

थापब—क्रि० थप्+अब—स्थापित करब ।

थापा—स्थासक, सम्पूर्ण करतललग्नपिष्टातककुङ्कुमादिक चिह्न ।

थापी—चाकर मुडरी ।

थार—पैघ थारी ।

थारी—भोजन करबाक कांस्यादि-पात्र ।

थारू—जातिविशेष ।

थाल—कर्दम, कीच ।

थाल-खीच—कर्दमादि ।

थाला—आलवाल १ पुष्पादिक बीजवपन २ लगबाक हेतु वृक्षक गाड़ल खुट्टी ३ ।

थाह—तलस्पर्शयोग्य (जलाशय) ।

थाह पाएब—क्रि० पब+अब—तलस्पर्श करब ।

थाहव—क्रि० थाह+अब—तलस्पर्शयोग्यताक परीक्षा करब ।

थिति—अवस्था, स्थिति १ सम्पत्ति २ ।

थितिगर—विभवशाली ।

थिर—स्थिर ।

थिराएब—क्रि० थिर+अब—मालक आर्तवप्राप्ति ।

थीर—स्थिर ।

थुकरब—क्रि० थूकरण, मुखस्थ वस्तुक वेगपूर्वक उद्गिरण ।

थुकहा—तृणविशेष ।

थुक्कम-थुक्का { --निष्टुट कलह ।

थुक्कम-फमैती

शुथनाएव—ना० शुथनव+अब—
शुथूसँ आघात देब ।
शुथुन } —पशुक सुखाग्रभाग ।
शुथून }
शुमहा—कृत्रिम मृपिण्डविशेष ।
शुलथुल—अधिक स्थूल ।
थूक—मुखोत्पन्न जल ।
थूकव—क्रि० थूक+अब— थूक
फेकब ।
थूरव—क्रि० थूर+अब—स्थूलयष्टि-
मुखसँ चूरब ।
थेथर—दुनिवार अनेक निवारणहु
नहि माननिहार (निन्दामे) ।
थेथरिआ देब—क्रि० निराकरणहु
वारंवार याचनादि ।
थेहगर—अक्षमताशून्य ।
थैली—रूपेआप्रभृति रखवाक जाली ।
थोड़—अल्प ।
थोड़वए—अ० अल्पे ।
थोड़वओ—अ० अल्पो ।
थड़क—अल्प ।
थोथरब—क्रि० उत्पीड़नजनक
दुलार करब १ तीक्ष्ण अप्रक
मूर्च्छित होएब २ मूर्च्छित
करब ३ ।

थोप-थाप लगाएव—क्रि० लगव+
अब—कोनहुना कलहादिक
तात्कालिक निवृत्ति करब ।
थोपव—क्रि० कार्य समर्पित करब १
आच्छादित करब २ ।
थोपी—फुदनाबाला खोपाक डोरि ।
थोपी ममरखा—पानिक कानमे
होनिहार चौपतिआक
जड़ि, ममरखाक प्रभेद ।
थोभ—स्तोभ, समता, जलक गति-
निवृत्ति ।
थोभ लागव—क्रि० लग+अब—
जलद्वयसमताप्रयुक्त प्रवाहहीन
होएब ।
थोम-थाम लगाएव—क्रि० थोप-
थाप लगाएव, कलहादिक
तात्कालिक कार्यचिन्त शान्ति
करब ।
थोर—थोड़, अल्प ।
थौआ—थउआ, संचूर्णित ।
थौका—फलविशेष ।
द
दए—अ० दय, प्रसङ्गे, माए ।
दओन—करीनक कृत्रिम पनिबह ।
दओना—पुष्पविशेष ।

दओनाकदम्ब—कदम्बपुष्पविशेष ।
दक—तेजाब आदि तीव्र वस्तुक
दाप ।
दकचब—क्रि० अनेक ठाम छओ
देब १ वृथा लिखब २ ।
दक्षिण—सं० अवाची दिश ।
दक्षिणा—सं० कर्मप्रतिष्ठार्थ उत्सृष्ट ।
दक्षिणी अडाँची—गुजराती एला,
छोटी लाँयची हि० ।
दक्षिणी सुपारी—पूगीविशेष ।
दगदग—हृदयक कम्प ।
दगदगाएव—क्रि० दगदग+अब—
छातीक कम्पन ।
दगदगी—हृदयकम्प ।
दगध—दग्ध ।
दगधव—क्रि० व्याकुलीभाव ।
दगधल—व्याकुल (मन आदि) ।
दगनी—बाछा दगवाक लौहनिर्मित
अङ्कुश ।
दग्ध—सं० जरल ।
दङ्ग—वि० दिक्, चिन्ताऽकुल ।
दच्छिन—दक्षिण दिक् १ दक्षिण
देश २ ।
दच्छिन भर—दक्षिण दिशा ।
दछिनवरिआ—दक्षिणदिगवस्थित
प्रभेदक (गृहक्षेत्रादि) ।
दछिनवारि—दक्षिण दिशामे स्थित

(गृहादि) ।
दछिनहा—दक्षिणदेशभव
(अनादरमे) ।
दछिना—दक्षिणा ।
दछिनाहा—दछिनहा ।
दछिनाहुत—समीप दक्षिणस्थित ।
दछिनी अँडाची—उपकुक्षिका,
एला,छोटकी अँडाची ।
दड़रव—क्रि० चकरीसँ दलिहनकेँ
विदलित करब ।
दड़ारि—दीर्घ फाट ।
दड़िमी—धान्यविशेष १ कोषरहित
आमक (आमिल) २ ।
दण्ड—सं० सजाए १ ठेँगा २
व्यायामविशेष ३ कालक परिमाण-
विशेष, २४ मिनट ४ ।
दण्डताल—वदयविशेष ।
दण्डपरमाम } —दण्डवत् पतन-
दण्डप्रणाम } पूर्वक प्रणाम ।
दण्डपरनाम देव } —क्रि० घरसँ
दण्डप्रणाम देव } आरम्भ कए
देवालयपर्यन्त
बराबरि दण्ड प्रणाम करैत जाएब ।
दण्डी—तराजूक दण्ड १ सं०
संन्यासी २ ।
दण्डीतराजू—तारात्रितयविशेष ।

दँतकड़रि—दाँत कड़कड़ओनिहार ।
दँतखिसोट—बहुत पानर असज्जद
(कपड़ा) ।

दँतगर—उ० बलिष्ठ दाँतसँ युक्त ।
दँतवेथा—दन्तव्यथा, दाँतक दर्द ।

दँतमनि—दन्तधावन, दन्तकाष्ठ ।

दँतमनि करब—क्रि० दन्तमार्जन,
दँतमनिसँ दाँत साफ करब ।

दँतारि—दन्तव्यथा, दाँतक दर्द ।

दँतिआएब—ना० दँति+अब—
दैत्यसँ दाँत देखाएब ।

दँतुल—दन्तुल, पैघ दाँतबाला
(मनुष्य) ।

दँतुलाह—उ० किञ्चित् दन्तुल ।

ददरी—डाहल शुक्तिकादि ।

दन—जलमार्ग, दओन १ अ०
विशेषरूपेँ अज्ञायमान,
चित् सं० कश्चित् [यथा केदन,
ककरादन, कोनादन] ।

दनदनाएब—क्रि० दनदन्+अब—
दनदन शब्द करब १
सस्फूर्ति रहब २ ।

दनफन—रगड़-भगड़ ।

दनादन—बन्दूक आदि शस्त्रध्वनिक
अनुकरण १ अ० झटझट २ ।

दनासी—कचिआ हाँसूक दाँत ।

दनूफ—द्रोणपुष्प ।

दनौरी—पोस्ता दानाक बड़ी,
व्यञ्जनविशेष ।

दन्तकथा—पुस्तकमे अलिखित
कथानक ।

दन्तभर—स्वारस्य ।

दन्तार—पुं० दाँतबाला (हाथी) ।

दन्ति—कौडीक सोड़हम अंश ।

दपटब—क्रि० दबाड़ब, वाचा
तर्जन ।

दपाएब—क्रि० दपब+अब—अप-
हरणक हेतु मन करब १
दर्प करब २ ।

दफदर—वि० बहीआदिक मोटा ।

दफदरी—दफदर बनओनिहार वा
रखनिहार ।

दफादार } —वि० कोतबाल
दफेदार } समक सरदार ।

दबओट—दाब, दबाएब, प्रतिरोध ।

दबकब—क्रि० प्रञ्ज होएब १
सङ्कुचित होएब २ ।

दबव—क्रि० नीच होएब, हारब,
न्यूनहोएब १ प्रच्छन्न होएब २ ।

दबाओट—प्रतिरोध ।

दबाड़—वाक्तर्जन ।

दबाड़ब—क्रि० दबाड़+अब—वाचा

गजन करब ।

दबिला—वाँसकाठ कटबाक काता,
अस्त्रविशेष ।

दम—वि० शक्ति, बल १ प्राण,
श्वास २ ।

दमक—दमस, शब्दविशेष ।

दमकब—क्रि० दमसब, मेघादिक
शब्द ।

दमकड़हू } —दाम टुटि गेलापर

दमकड़हू } नहि बिकाएल(माल)

दमकल } —पानि पटाएबाक

दमकला } यन्त्रविशेष ।

दमकाला }

दमगर—अधिक दामक, मूल्यवान् १
अधिक दम्भक, बलवान् २

अधिक भारी ३ ।

दमड़ी—कच्चाक चतुर्थांश ।

दमस—मेघ आदिक शब्द ।

दमसब—क्रि० मेघादिक शब्द
करब ।

दमाइनि—खाद्य कन्दविशेष ।

दमाएब—ना० दमव+अब—दाम
लगाएब, मूल्यनिर्णय करब ।

दम्पोरुत—वि० एकप्रकारक-
तीमन ।

दम्पोसिआ—दाम कए पोसबाक

हेतु देल (माल) ।

दय—अ० हेतु, प्रसन्न [यथा राम
दय कहल, अर्थात् रामक प्रसन्न
कइल] ।

दया—सं० कृपा ।

दयाद—देआद, दायाद सं० ।

दयादिनी—स्त्री० स्वामीक भ्राताक
पत्नी ।

दर—भाओ, विक्रयमूल्य ।

दरक—विदीर्णता, फाट ।

दरकब—क्रि० विदीर्ण होएब ।

दरखास्त—वि० निवेदनपत्र ।

दरजिआही—दरजीक टोल ।

दरजी—बल सिउनिहार म्लेच्छ
जातिविशेष ।

दरड़ब—क्रि० दलिहनकेँ चकरीसँ
विदलित करब ।

दर-दरमाहा—मासिकवेतनप्रभृति ।

दरदरबार—खुसामदीप्रभृति ।

दरदराएब—क्रि० दरदरव+अब—
दरदरशब्दपूर्वक भक्षण ।

[यथा माल नार दरदरबैत अछि]

दरब—द्रव्य, कांस्यादि धातु ।

दरबाजा—वि० घरक अग्रिम सहन ।

दरबार—वि० सुसज्जित स्थानमे
राजदर्शन, राजसभा ।

दरबारी—वि० राजानुग्रहपात्र,

अधिक काल राजाक
समीप गेनिहार ।
दरमाहा—वि० मासिक वेतन ।
दरस—दर्शन १ धान्यविशेष २ ।
दरसनी—दर्शनोत्तर देय फल-
द्रव्यादि ।
दरसा—मत्स्यविशेष ।
दरसूदि—वि० सूदिक सूदि ।
दरही—मत्स्यविशेष ।
दराड़ि—भूतलक फोट ।
दराध—सर्पविशेष ।
दराधिनी—एक जड़ी, मूर्वा सं०
जकर गुणसँ मौवी बनैत
अछि ।
दरिआओ—वि० पैघ गर्त ।
दरिद्र—सं० निःस्व, गरीब ।
दरी—सतरजी, आस्तरणविशेष ।
दरेराह—वि० सकलसाधारण रास्ता,
जाहि देने अधिककाल
लोक चलैत हो ।
दरोगा—एक राजकर्मचारी १ कार्य
करएबामे नियुक्त २ ।
दर्प—सं० गर्व ।
दर्शन—सं० देखब ।
दर्शनी—दर्शनोत्तर चढ़ौआ ।
दल—झुण्ड १ तुलसीक पात २

बांसक गादि ३ ।
दलकव—क्रि० डोलब, उपरनीचां
कम्पन ।
दलगर—अधिक गादिसँ युक्त
(बांस) ।
दलदल—पादादिक आघातसँ नीचां
उपर होएनिहार (भूमि) ।
दलदलाएब—क्रि० दलदल+अब—
पादादिक आघातसँ
डोलब ।
दलदली—पादादिक आघातसँ
डोलब ।
दलपदा—वि० वस्त्रक आवरण १
धोखा देब २ ।
दलमल—आन्दोलित ।
दलमलाएब—क्रि० दलमल+अब—
दलदलाएब ।
दलमलित—आन्दोलित ।
दलमली—आन्दोलन ।
दलान—वि० चतुःशालसँ बहिर्भूत
वैसबाक घर, बहरघरा ।
दलाल—वि० क्रयविक्रय करओ-
निहार तदुपजीवी ।
दलाली—दलालक क्रिया वा वेतन ।
दलिपिट्टी—कृतान्नविशेष ।
दलिपुरी—दालिक फूँटिदए बनाओल
पूरी ।

दलिभिस्त—मिष्टान्नविशेष ।
दलिसगा—दालि ओ साग एकत्र
रान्हल ।
दलिहन—दालिबाला अन्न (राहड़ि
आदि) ।
दललू—बानरक सरदार, बानरी
सेनाक अधिपति ।
दश—सं० दस, दशसंख्यापरिमित ।
दशम—सं० दशक पूरण ।
दशमी—सं० दशम तिथि १
आश्विनक नवरात्र २ ।
दशहरा—सं० ज्यैष्ठ शुक्ल दशमी ।
दशा—सं० अवस्था ।
दशावतार—सं० मत्स्यादि दस
अवतार ।
दशाह—सं० मरणाशौचक दस दिन ।
दस—दश, १०, १ पचेसीमे सभ
पट एक चित्त कौड़ी २ ।
दसखत—वि० हस्तक्षर ।
दसगजा—दस गजक (धोती आदि)
दसगर—नीक शारीरकस्थितिबाला
(व्यक्ति) ।
दसडु—पचेसीमे पबहारिसँ दशम
घर ।
दसम—दशम ।
दसा—दशा, अवस्था ।
दसाही—दशदिनोत्तर श्राद्ध ।

दसोत—विवाहमे दस सभवासँ
निष्पाद्य तान्त्रिक क्रिया ।
दसौन्ही—भाट, वन्दी ।
दस्त—वि० पुरीषोत्सर्ग ।
दस्तगदा—वि० हथपै च ।
दस्ताना—वि० प्रत्येक अँगुरीमे
पहिरबाक हस्ताकार व-
स्त्रविशेष ।
दस्तावेज—वि० प्रमाणपत्रविशेष ।
दस्ती—वि० कलमदान ।
दस्तूर—वि० चालि, स्वभाव, सरह ।
दस्तूरी—वि० कार्य कएनिहारसँ कार्य
करओनिहारक नियत
आदेय ।
दस्सी—सूताक भीड़ी ।
दह—हृद १ पुरैनि २ ।
दहकव—क्रि० किञ्चित् जरब ।
दहलव—क्रि० अनिष्टचिन्ता,
अधीर होएब ।
दहाएब—क्रि० दह+अब—उत्प-
वन, जलसँ आघातित भए
विनष्ट होएब ।
दहार (ड)—जलाप्लावनसँ आक्रान्त ।
दहिगन—पक्षिविशेष १ क्षुप-
विशेष २ ।
दहिन—दक्षिण ।
दहिबाड़ा—मिष्टान्नविशेष ।

दही—दधि ।
 दहेज—जौतुक ।
 दहोदिस } —दसो दिस, सम-
 दहोदिसा } न्तात् ।
 दहोदिसिआ—दुनू पक्षक अनु-
 गामी (व्यक्ति) ।
 दहोबहो—अ० धाराप्रवाहरूपे
 (नोर खसब) ।
 दाइ—स्त्री० स्त्रीक उपाधि, देवी ।
 दाउन } —मेधिमे अनेक वृषभ
 दाउनि } जोड़ि धान्याद्युपम-
 दर्नार्थ धुमाएब ।
 दाउनि (न) चढ़ाएब—क्रि० दाउ-
 निमे वृषभयोजना ।
 दाओ—अलगचित्त आदि मल्ल-
 क्रिया १ अवसर २ ।
 दाख—द्राक्षा ।
 दाखिल—वि० समर्पित ।
 दाग—वि० चिह्न, कालिमादिस-
 म्बन्ध ।
 दाड़िम—सं० अनार हि० ।
 दाढ़—दंश, दंशस्थान १ पैघ
 दाढ़ी २ ।
 दाढ़ी—चिबुक, मुहक निचला उच्च
 अङ्ग १ चिबुकमे जनमल केश ।
 दाँत—दन्त ।

दाँत कीचव—क्रि० क्रोध ओ
 कार्पण्यक द्योतक दन्तप्रकाशन ।
 दाँत खिसटब } —क्रि० दैन्यसू-
 दाँत खिसोटब } चक दन्तप्र-
 दाँत निपोड़ब } काशन ।
 दाँतव—ना० दाँत+अब—मालक
 दाँतसँ युक्त होएब ।
 दाँतमनि—दन्तकाष्ठ ।
 दाता—सं० दानी ।
 दाँती—रोगतः दाँतपर दाँत जोरसँ
 बैसब, हनुस्तम्भ ।
 दाँती लागब—क्रि० रोगवश दाँत-
 पर दाँत बैसब ।
 दाँतुल—दन्तुल ।
 दादा—पितृव्यादि गुरुजन ।
 दादी—पितृव्यादि गुरुजनपत्नी ।
 दादु(रु)हरदि—दारुहरिद्रा, वृक्ष-
 विशेष ।
 दान—सं० देब ।
 दाना—हाथी आदि पशुपक्षीक भक्ष्य
 धान्यादि १ प्रत्येक अन्न*२ ।
 दाप—धौं क, दाब, दूरसँ तीव्र तेजः
 सम्बन्ध ।
 दाब—अवरोध, आक्रमण ।
 दाबव—क्रि० दब+अब—भारा-
 क्रान्त करब, उपरसँ आक्रमण ।

दाबा—पाएसँ दाबि-दाबि बना-
 ओल मिति जाहिपर टाट रहए
 वा जे ओसाराक अग्रभाग हो ।
 दाबा बान्हव—क्रि० बन्ह+अब—
 खेतमे धसना बचएबाक
 हेतु दाबा देब ।
 दाबि—वंशकाष्ठनिर्मित दर्वी ।
 दाबिल—ओषधिविशेष ।
 दाबी—वि० आदेयकथन १
 अभिमान २ ।
 दाम—मूल्य ।
 दाम तोड़ब—क्रि० मूल्यनिर्णय
 करब ।
 दामस—शीतलासम्बन्धी रोगविशेष ।
 दारु—धोती खिचब प्रभृतिक हेतु
 स्थापित काष्ठ ।
 दाखहरदि—दारुहरिद्रा ।
 दारु—मद्य ।
 दालि—दड़ल दलिहन, विदलित
 द्विदल अन्न ।
 दालिचीनी—त्वक्, एक प्रकारक
 वृक्षक त्वचा ।
 दालिपाक—कृताञ्जविशेष ।
 दास—सं० सेवक ।
 दासिनि—स्त्री० संन्यासिनी ।
 दाह—मृतकसंस्कार ।
 दाहा—तास प्रभृतिक दशम फर्द १

मुसलमानक तजिआ २ ।

दाही—धान्यादिनाशक जलाधिवय ।
 दिअठि—दीप रखबाक काष्ठादि-
 रचित पात्र ।
 दिअर } —नदीक बीचमे जलसँ
 दिअरि } जागल भूमि, द्वीप ।
 दिआ—दीप १ अ० द्वारा २ ।
 दिआवाती—दीपावली, सुखरात्रिक
 दीपोत्सव ।
 दिक्—वि० तङ्ग, व्याकुल ।
 दिक्साधन—दिशाज्ञानक यन्त्र ।
 दिगर—वि० अन्य, उदासीन ।
 दिघोच—जलीय पक्षिविशेष ।
 दिन—सं० वासर ।
 दिनगर—अधिक दिन ।
 दिनजौड़—समयपर नहि खएनि-
 हार ।
 दिन-दुपहर—अ० दिनक दोपह-
 रिआ ।
 दिन-देखार—अ० दिनक प्रका-
 शमे ।
 दिनवेकाल—अधलाह दिन ।
 दिनाए—द्वद्रु ।
 दिनुक } —दिनमे भेल ।
 दिनुका }

दिनेक—अ० कोनो दिन ।
 दिब—दिव्य, सुन्दर ।
 दिबड़खौकू—जकरा यकित्ति
 भागमे दिबाड़ खएने रहए ।
 दिबड़ाक भीड़—बल्मीक ।
 दिबड़ाह—दिबाड़क सम्बन्धवाला ।
 दिबाड़—कीटविशेष ।
 दिबाड़ी—माटिक छोट दीप ।
 दिवाल—इष्टकाभित्ति ।
 दिलमोटाओ—वि० वैमनस्य ।
 दिलमइ (मै)—वि० विस्वास ।
 दीअठि—दीप रखवाक काष्ठादि-
 रचित पात्र ।
 दीअर } —नदीक बीचमे जल-
 दीअरि } त्यक्त भूमि, द्वीप ।
 दीआ—दीप ।
 दीआवाती—सुखरात्रिक दीपावली ।
 दीठि—दृष्टि ।
 दीप—सं० दीपपात्र ।
 दीपनाड़—शोभार्थ दीपवृक्ष ।
 दीपदान } —दीपाधारपात्र ।
 दीपदानी }
 दीवान—वि० लेखमे नियुक्त राज-
 पुरुष ।
 दीर्घसूत्री—सं० चिरकरी ।

दुइ—दू, द्विसंख्यक २ ।
 दुख } —दुःख १ रोग २ ।
 दुःख }
 दुखनामा—दुःखवार्ता कहब ।
 दुखबेकाल—दुःखकृत वैकल्य ।
 दुखाएब—ना० दुख+अब—दुख
 (पीड़ा) सँ युक्त होएब ।
 दुखित } —दुःखसँ युक्त १ रोग-
 दुःखित } युक्त २ ।
 दुखिताह—उ० किञ्चित् रोगयुक्त ।
 दुखी—दुःखयुक्त ।
 दुग्गी—नास आदिक दोसर फर्द ।
 दुतिआ } —द्वितीया, दोसर
 दुतीआ } तिथि ।
 दुद्धा दांत—शिशुक प्रथमोपन्न
 दांत ।
 दुद्धी—वृक्षविशेष १ धान्यविशेष २
 भोस केराक प्रभेद ३ ।
 दुधगरि—स्त्री० अधिक दूध देनि-
 हारि ।
 दुधपीवा—दूध पिउनहार (शिशु)
 १ शिशुकें दूध पिएबाक
 पात्रविशेष २ ।
 दुधभरा—दूधसँ भरल (धान्यादि) ।
 दुधमुंगर—फलविशेष ।

दुधमुह—शिशु, स्तनन्धय ।
 दुधवार—जातिविशेष ।
 दुधिआ—शाकविशेष ।
 दुधिआ भोस—कदलीविशेष ।
 दुन्ना—द्विगुण ।
 दुपत्ता—दू पातसँ युक्त ।
 दुबर—उ० दुब्बर, दुर्बल । स्त्री
 दुबरि ।
 दुबराएब—ना० दुबर +अब—
 दुबर (दुर्बल) होएब, देहें कृश
 होएब ।
 दुब्बर—उ० दुर्बल । स्त्री दुब्बरि ।
 दुम्मा—पर्वतीय मेषविशेष ।
 दुरगमनिआ—द्विरागमनसम्बन्धी
 (वस्तुजात) ।
 दुरछी—अ० धिक्कार ।
 दुरदुट—दुर्दृष्ट, दुर्मुख, अधलाह
 कथा बजनिहार ।
 दुरागमन—द्विरागमन ।
 दुराहु—किछु दूर ।
 दुरि करब—क्रि० अनुपयुक्त करब,
 नष्ट करब, बिगाड़ब ।
 दुरि जाएब } —क्रि० अनुपयुक्त
 दुरि होएब } होएब, नष्ट होएब,
 बिगाड़ब ।
 दुरुस्त—वि० प्रस्तुत, सज्ज, सर्वा-

ङ्गपूर्ण ।

दुरुस्ती—सजीकरण ।
 दुर्गति—सं० कष्टक अवस्था ।
 दुर्गा—सं० देवताविशेष ।
 दुर्निवार—सं० जकर निवारण नहि
 कएल हो ।
 दुर्भगा—सं० स्त्री० विधवा ।
 दुर्भिक्ष—सं० रौंदी आदिसँ अन्नक
 अभाव ।
 दुर्मति—सं० अधलाह बुद्धि ।
 दुलकब—क्रि० किञ्चित् उपर-नीचा
 डोलब, कम्प ।
 दुलहा—पुं० वर ।
 दुलहिनि—स्त्री० नवविवाहिता
 बधू ।
 दुलार—लालन ।
 दुलारा—ओषधिविशेष ।
 दुलारू—दुलारसँ पालित ।
 दुलह—हि० वर ।
 दुष्ट—सं० खल १ शत्रु २ ।
 दुसब—क्रि० दूषण, दोषक उल्लेख
 करब ।
 दुसाध—उ० चाण्डाल जातिविशेष ।
 स्त्री० दुसाधिनी ।
 दुसाधी—दुसाधक वृत्ति (चोरि) ।
 दुहब—क्रि० दोहन ।

दू—द्विसंख्यक ।

दूआ—क्रिड़ामे दूसंख्यावाला (तास आदि) ।

दूध—दुग्ध ।

दूधा दात—शिशुक प्रथमोत्पन्न दात ।

दूबर—द्विगुण १ कृश २ ।

दूबि—दूर्वा, तृणविशेष ।

दूर—स० विप्रकृष्ट ।

दूरि करब—क्रि० नष्ट करब, बिगाड़ब ।

दूरि जाएब } —क्रि० नष्ट होएब,
दूरि होएब } बिगाड़ब ।

दूर्वाक्षत—स० आशीर्वादार्थ दूबि ओ अक्षत ।

दूसब—क्रि० दुस्+अब—दूषण, दोषक उल्लेख ।

दूहब—क्रि० दुह+अब—दोहन, गाए आदिक स्तनसँ दूध बहार करब, चुटकीसँ पुनः पुनः निःसारण ।

दैआएब—क्रि० दू+अब+अब—दापन, दानं कराएब ।

देआद—दायाद ।

देआदिनी—स्त्री० पतिक आतृ-पत्नी ।

देओर—पुं० देवर, पतिक छोट भाए ।

देखनुक—दर्शनीय, रमणीय ।

देखब—क्रि० दर्शन ।

देखसी } —देखलासँ उत्पन्न

देखाँउस } अनुकरणक इच्छा ।

देखादेखी—पारस्परिक दर्शनजन्य प्रवृत्ति ।

देखार—दृश्य, अनावृत, प्रत्यक्ष ।

देन—दातव्य ।

देने—अ० स्पर्श करैत [यथा, काशी देने प्रयाग गेलाह] बाटेँ, [यथा, एम्हर देने चल] ।

देब—क्रि० दू+अब—दान ।

देबडघड़—आकाशमे मार्गाकार सूक्ष्मतारासमूह ।

देवता—स० स्वर्गवासी इन्द्रादि ।

देवतासारि—धान्यविशेष ।

देवदारु—स० वृक्षविशेष ।

देवनागर—देवाक्षर ।

देवालय—स० देवताक स्थान ।

देवी—स्त्री० स्त्रीदेवता ।

देरी—वि० विलम्ब ।

देश—स० प्रान्त ।

देशी—स्वदेशसम्बन्धी ।

देसकोस—प्रान्त ।

देसरिआ—धान्यविशेष ।

देसांतर—देशान्तर, अन्य देश ।

देसिला—स्वदेशमे उत्पन्न ।

देह—स० शरीर ।

देहगर—उ० पैघ देहसँ युक्त । स्त्री देहगरि ।

देहफुल्ली—देहक फुलब ।

देहरि—देहली, द्वारकाष्ट ।

देहात—नगरसँ भिन्न जनस्थान ।

देहाती—नगरसँ भिन्न स्थानमे रहनिहार १ देहातसम्बन्धी २ ।

देहादेही—अ० यावज्जीवन, डिलाडिली ।

देही—व्यावहारिक, खिजमती (वस्त्रादि) ।

दैव—स० अदृष्ट, पूर्वजन्माजित धर्माधर्म ।

दैवी—दैवकृत ।

दोअन्नी—दुइ आनाक मुद्राविशेष ।

दोअम्मा—एक डँटकीमे फड़ल आम ।

दोआति—वि० मोसिआनी, मसीपात्र ।

दोआदसी—द्वादशी तिथि ।

दोआरा—द्वारा ।

दोआरि—द्वार ।

दोआरै—अ० (निन्दामे) हेतुएँ ।

दोआली—बेरमा घुमएवाक यन्त्र-

विशेष ।

दोएम—मध्यम श्रेणीक ।

दोकठ } —दू काठक अभ्यन्तर ।
दोकठी }

दोकड़ा—पाइक चतुर्थांश ।

दोकन्धा } —दू डारिक सन्धि-
दोकन्हरा } स्थान ।

दोकमिआ—दुइ कामिसँ युक्त भो कबाक अस्त्र ।

दोकान—विक्रयालय ।

दोकानदार—वणिक, दोकान कएनिहार ।

दोकानदारी—वाणिज्य ।

दोकिस्त—वि० अ० दुइ बेरि कए देय ।

दोखड़ब—क्रि० बहुत मोट-मोट पीसब ।

दोखड़ा—मोट-मोट (बाल आदि) ।

दोखाह—उ० दोषयुक्त । स्त्री दोखाहि ।

दोग—दुइ वस्तुक मध्यस्थ अवकाश ।

दोगमिआ } —अगिला पुस्ति-
दोगामी } पर्यन्त ।

दोगासी—दोग ।

दोगोला } —मतभेदँ भेल दू
दोगोली } दल ।

दोचारा } —दू चारबाला
दोचारी } (घर)।

दोचोपा—दू चोपबाला (तम्बूक)।

दोछब्बी—अ० दू छओ कए।

दोजनिआ—दू व्यक्तिक उपयोग-योग्य।

दोटप—तम्बूविशेष।

दोटप्पी—अ० बहुत थोड़ काल।

दोठठ—दोहराएकँ ठाठव, दोहरौनी।

दोतर—पचेसी खेड़िक से गोटी जे दू खुदरामे लाल हो।

दोदाउन } —दू कड़ामसँ
दोदाउनि } दाउनि।

दोनबोर—उ० जातिविशेष।

दोना—पत्ररचित पुटक १ पुष्प-विशेष २।

दोनाइ—बीस पर्यन्त अङ्ककेँ दस पर्यन्त अङ्कसँ गुणनाक पाठ।

दोना कदम्ब—पुष्पविशेष।

दोपट्टा } —दू पाठसँ युक्त ओढ़-

दोपट्टा } बाक वस्त्रविशेष।

दोपट्टिआ—दू पाठिसँ युक्त (साड़ी आदि)।

दोपत्ता } —दू पातसँ युक्त।
दोपत्ती }

दोपहरबा—मध्यरात्रमे उगनिहार एक तारा।

दोपहरि } —मध्याह्न।
दोपहरिआ }

दोफका—दुइ फाँक कएल।

दोफसिला—वि० दू फसिल जाहिमे उपजए से (खेत)।

दोफाँक—दू फाँक भेल।

दोवगली—वि० अ० दुनू कातमे।

दोवट्टी—से बाट जतएसँ दुइ दिस बाट गेल हो।

दोबर—द्विगुण।

दोबरखा—दुइ वर्षक।

दोबराएब—ना० वस्त्रादिक द्वारा वृत्त करब।

दोविधा—विधाद्वय, संशय।

दोम—आन्दोलन।

दोमझिला—वि० दू महलबाला (कोठा)।

दोमब—क्रि० आन्दोलित करब।

दोमस—अ० दोसर हेतु।

दोमसिआ—दू मासक जनमल (नेना)।

दोमहला—दू महलबाला (कोठा)।

दोमांगि } —दू सीमापर स्थित

दोमाछि } स्थान।

दोमोनी—दू मोनक (नपना वा ब-टिखारा)।

दोयम—मध्यम श्रेणीक।

दोखी—दोबर राबबाला (भूषण-विशेष)।

दोस } —जाहिमे किछु बाल ओ

दोसि } किछु चिकन माटि दुनू मिलल हो से (भूमि)।

दोलैंग } —धान्यविशेष।

दोलैगी }

दोलैङ }

दोलैडी }

दोलाइ—अल्प तूरसँ भरल ओढ़ना।

दोलू—वि० गजीफामे एक फर्द राखि अगिला हुकुम फर्द।

दोलेब—दोसर खेपक लेबब।

दोलै—ऐकारक मात्रा (ॐ)।

दोष—सं० अपराध, दूषण।

दोष देब } —क्रि० दोषक

दोष लगाएब } आरोप करब, दोष कहब।

दोषभागी—सं० दोषक आश्रय।

दोषी—सं० दोषयुक्त।

दोसज्भा } —दुइ व्यक्तिक

दोसज्मी } सम्मिलित (धन)।

दोसर—द्वितीय।

दोसराइत } —द्वितीय सहायक।
दोसराति }

दोसरा साँझ—पहिल सन्ध्याक बाद भलफल समय।

दोसह } —सतरज्जमे तेहन स्थानसँ

दोसहा } लगाओल सह जाहि सँ दोसरो गोटी बीन्हल जाइत हो। एक गोटीक दू गोटी पर साममुख्य।

दोसंभी—अ० दुनू साँझमे।

दोसाहा—दोसह।

दोसीरा—वि० मालिक ओ रैअति दुनूक अंशबाला (वृक्षादि)।

दोसेरा—दू सेरक बटिखारा वा

दोसेरी नपना।

दोस्त—वि० मित्र।

दोस्ती—वि० मित्रता।

दोहठ—एक व्यक्तिक दू ठाम बास।

दोहन—मिश्रित दू अन्न।

दोहमति—वि० मिथ्या दोषारोपण।

दोहराएब—क्रि० दोहर+अब—पुनः होएब।

दोहराएब—क्रि० दोहरब+अब—पुनः करब।

दोहरि—दोलाइ, अल्प तूरबाला ओढ़ना।

दोहरौनी—दोहराएब ।

दोहसाएब—क्रि० दोहसब+अब—
एके बातक प्रसङ्ग दुइ
बेरि टोकब ।

दोहा—शपथ १ छन्दाविशेष २ ।

दोहाइ—दीनवात्सल्य ।

दोहाइ देब—क्रि० 'दोहाइ' शब्द
कहि दैन्य प्रकाश
करब ।

दोहारा—दुइ तहसँ युक्त (अङ्ग, फूल
इत्यादि) ।

दोहारि—दोआरि, द्वार ।

दौगब—क्रि० दौड़ब, धावन ।

दौड़—धावन ।

दौड़धूप—इतस्ततः अधिक धावनादि

दौड़ब—क्रि० दौगब, तीव्र गतिसँ
चलब, धावन ।

दौड़ब-धूपब—क्रि० धावन-कूर्द-
नादि क्रिया ।

दौड़बरहा—वारंवार दौड़ब ।

दौहित्र—उ० दुहिताक पुमपत्य ।

दौहित्री—स्त्री० दुहिताक स्त्री
अपत्य ।

द्वादशी—सं० बारहम तिथि ।

द्वारि—गृहप्रवेशमार्ग ।

द्वारि छेकाओन—वर-कन्याक द्वारि
छेकबाक पारितोषिक ।

द्वितीया—सं० दोसर तिथि ।

द्रव्य—धातु १ रूपैआ कक्षाप्रवृत्ति २ ।

ध

धओन—नीहार, कुहेस ।

धओना—गर्दनिक धारिणी शिरा ।

धओना खसब—क्रि० गर्दनिक
धारिणी शिराक पतन ।

धकधकाएब—क्रि० धकधक+अब—
जोरसँ बारवार हृदय कापब ।

धकरी—तृणविशेष ।

धकिआएब—ना० धकिअब+अब—
धक्का देब ।

धकेलब—क्रि० जोरसँ धक्का देब ।

धक्कमधक्का—अनेक व्यक्तिक

धक्कमधुक्का—पारस्परिक धक्का ।

धक्का—आघात, अनका ठेलब ।

धक्का देब—क्रि० लोककेँ ठेलब ।

धखछुट्टू—जकरा धाख छूटि गेल
छेक से ।

धखाएब—क्रि० धख+अब—धाखसँ
युक्त होएब ।

धछेक—किञ्चित् शेष (दिन) ।

धड़धड़—वारंवार (हृदयक) कम्पन
१ अ० शीघ्रतापूर्वक २ ।

धड़धड़ाएब—क्रि० धड़धड़+अब—

वारंवार (हृदय) कम्पित होएब १

धड़धड़ शब्द करब २ ।

धड़धड़ी—हृत्कम्प ।

धड़फड़—अ० शीघ्रतापूर्वक ।

धड़फड़ाएब—क्रि० धड़फड़+अब—
शीघ्रताजन्य चञ्चलतासँ युक्त होएब ।

धड़फड़ी—शीघ्रता ।

धड़हर—अत्युच्च प्रचीन डीह ।

धड़हेर—मध्यमे आबि युद्धक नि-
रोध ।

धड़हेरिआ—धड़हेर कएनिहार ।

धड़ाक—बन्दूक आदिक शब्दक अ-
नुकरण ।

धड़ेर—धड़हेर, मारि-भगड़ाक मध्य-
मे आबि निरोध ।

धतपत—अ० कनेक, पूर्ण रूपेँ
नहि ।

धधकब—क्रि० धधरासँ युक्त होएब,
प्रज्वलित होएब ।

धधरा—अग्निशिखा ।

धन—सं० वित्त ।

धनकटनी—धानक काटब ।

धनकट्टा—धान कटनिहार १ जाहिसँ
धान काटल जाए से (हाँस) २ ।

धनखेती—धानक खेत ।

धनगर—अधिक धानसँ युक्त १ अ-
धिक धनसँ युक्त २ ।

धनचर—अनेक कार्यक युगपत्
प्राप्ति ।

धनछ—पक्षिविशेष ।

धनछूहा—पक्षिविशेष ।

धनपनिआ—धान ओ धानक अनु
सार पानि ।

धनपापड़—ओषधिविशेष, पर्पटी ।

धनबधा—धानक बाध ।

धनमन्त—उ० धनवान् । स्त्री
धनमन्ति ।

धनमी—धनुष ।

धनरोपनी—धानक रोपब ।

धनस—पक्षिविशेष ।

धनसन—अ० उपेक्षाबुद्धि ।

धनसीस—मकैक उपरका सीस ।

धनहर—धान उपजएबाला (खेत) ।

धनहा—धानसँ युक्त (चूड़ा आदि) ।

धनिआँ—धान्यविशेष ।

धनिक—उ० सं० अधिक धनसँ
युक्त । स्त्री० धनिकाइनि ।

धनिकठेँठ—अभिमानि धनिक ।

धनी—धनी, धान्यक सं० ।

धनुकाइनि—स्त्री० धानुक जातिक
स्त्री ।

धनुख—धनसी ।

धनेसरी—मालसरी १ धान्यविशेष
२ ।

धन्धा—चिन्ता १ कार्य २ ।
 धन्वन्तरि—आदिवैद्य १ ओषधि-
 लताविशेष २ ।
 धपाड़ब } —क्रि० जलकेँ सञ्चा-
 धपारब } लित कए
 तरङ्गिन करब ।
 धबब—क्रि० उजरी आदिक कनेक
 प्रकट होएब ।
 धवाएब—क्रि० धबब+अब—
 प्रच्छन्न भए चोरक प्रतीक्षा
 करब ।
 धमक—मेघादिक गम्भीर घोष १
 धमधम पादादिशब्द २ ।
 धमकब—क्रि० गम्भीर घोष करब
 १ धम-धम शब्द करब २ ।
 धमकी—धम-धम शब्द १ अथ-
 प्रदर्शन २ ।
 धमगज(ज)र—आसर्द ।
 धर—हस्तधार्य आवरण-पट १
 शरीरक मूडीसँ निचला भाग २
 पकड़ब ३ ।
 धरकट—पुं० लोभातिशय अपन
 अपमानक विचार नहि कए-
 निहार, निवृष्ट ।
 धरखन—गृध्रुता ।
 धरखनाह—उ० गृध्रुतायुक्त । स्त्री०
 धरखनाहि ।

धरछन—दू जनसँ माटि आदि
 उघवाक साधनविशेष ।
 धरती—धरित्री, पृथ्वी ।
 धरना—शरीर-पातन, पृथिवीशयन,
 प्रायोपवेश ।
 धरना देव—क्रि० कोनो कार्यक
 उद्देश्ये पृथिवी-शयन,
 प्रायोपवेश करब ।
 धरनि—बड़ेरीक भार थम्हनिहार
 गृहाङ्ग काष्ठाविशेष ।
 धरनिआ—धरना ।
 धरपड़न—शरीर-पातन ।
 धरब—क्रि० धारण १ स्थापना २
 पकड़ब ३ दर्शन ४ ।
 धरम—धर्म ।
 धरमदोष—धर्मदोष ।
 धरहेर—मरतरिआक बीच आबि
 डुहू पक्षक लोककेँ बटाएब ।
 धरहेरिआ—पुं० धरहेर कएनिहार ।
 धरहोरि—जिम्मा राखल (वस्तु) ।
 धरानी—कष्ट ।
 धराह—उ० धरबाक स्वभावबाला
 (कुकुर आदि) । स्त्री० धराहि ।
 धरि—पोखरिक चारु कातक
 जलसँ उपर भाग १ अ० अवधि,
 पर्यन्त २ ।
 धरिआ—कौपीन ।

धरिका—अमोटक लम्बाकार खण्ड ।
 धरिकार—उ० जातिविशेष ।
 धरी—धारा तौलल ।
 धरोहर—न्यास, जिम्मा लगाओल
 (वस्तु) ।
 धर्म—सं० पुण्य ।
 धर्मात्मा—सं० धार्मिक ।
 धरौंहि—श्रेणी ।
 धरौंहि लागब—क्रि० पंक्तिबद्ध
 होएब ।
 धसना—जलादिमे धसल भूमि-
 खण्ड ।
 धसब—क्रि० भूमिक नीच होएब ।
 धसमस—तारतम्य ।
 धसमसाएब—क्रि० धसमस+अब—
 तारतम्य करब ।
 धसमसी—दोबिधा, तारतम्य ।
 धाई—ओषाधिविशेष ।
 धाए—स्त्री० नेनाकेँ नित्य अपन
 दूध पिअओनिहारि माएसँ भिन्न,
 धात्री सं० ।
 धाकर—विना दागल साँढ़ ।
 धाख—वि० संकोच, गुरुबहुद्ध्या
 उचितो कहबामे भय ।
 धांगब—क्रि० धंग्+अब—चरणसँ
 अक्रमण करब ।
 धांगर—उ० जातिविशेष ।

धाङ्कब—क्रि० धाङ्क+अब—धाँ-
 गब ।
 धाङ्कर—जातिविशेष ।
 धात्री—सं० अबोरा ।
 धाधर—अशुभ ।
 धान—धान्य, अन्नविशेष, शालि
 सं० ।
 धानी—पीत-हरित (रङ्ग) ।
 धानुक—उ० शूद्रजातिविशेष ।
 धाप—ओसारा १ पैघ डेग २ ।
 धाबा—धोषाधिविशेष, धव सं० ।
 धामन—सर्पविशेष ।
 धामा—दाँसक पात्रविशेष ।
 धामि—मन्त्र-यन्त्र जननिहार जा-
 तिविशेष ।
 धाय—स्त्री० धाए, धात्री सं० ।
 धार—खड्गादिक तीक्ष्ण भाग १
 नदी २ धारब ३ ।
 धार फुटब—क्रि० जलक धारा वा
 अन्नक धार स्फुट होएब २ ।
 धारब—क्रि० धार+अब—अपरि-
 शोधित ऋणक धारण करब
 १ शुभप्रद होएब २ ।
 धारा—दुइ पसेरीक परिमाण १ सं०
 प्रवाह २ ।
 धारी—पंक्ति ।
 धाह—ताप ।

धिआ—स्त्री० कन्या ।
 धिआ-पूता—छओँ झा-छओँ डीसम,
 छोट नेनासब ।
 धिपब—क्रि० तप्त होएब ।
 धिपल—तप्त ।
 धिपलकोँ दि—अति आलसी ।
 धिम्मर—उ० धीवर, जातिविशेष ।
 स्त्री० धिम्मरि ।
 धिरकार—धिकार ।
 धिरकारब—ना० धिकार देब ।
 धीआ—स्त्री० कन्या ।
 धीआ-पूता—बालिकाबालकसमु-
 दाय ।
 धीपब—क्रि० धिप्+अब—तप्त हो-
 एब ।
 धीमर—उ० जातिविशेष ।
 धुँआएब—ना० धुँ+अब—धूआँसँ
 युक्त होएब ।
 धुकधुक—मन्द-मन्द प्रज्वलन ।
 धुकधुकाएब—क्रि० धुकधुक+अब—
 मन्दमन्द प्रज्वलित होएब ।
 धुकधुकी—भूषणविशेष १ हृदय-
 वातक गति २ आतङ्क ३ ।
 धुथहू—सीँ गा, वाद्यविशेष ।
 धुथुरमूहा—उ० अप्रसन्नमुख ।
 स्त्री० धुथुरमूही ।
 धुथूर—धतूर सं०, पुष्पविशेष ।

धुधुआएब—क्रि० धूधू+अब—
 धूधू शब्द करब ।
 धुधुनमूह—उ० अप्रसन्नमुख । स्त्री०
 धुधुनमूहि ।
 धुनब—क्रि० तूरक विश्लेषण करब ।
 धुनि—ध्वनि १ शीतज्वरक चर-
 मावस्थाक ताप २ चिन्ता ३ ।
 धुनिआँ—तूर धुनिनिहार स्लेच्छ-
 जातिविशेष ।
 धुनी—बाबाजीक पैघ घूर ।
 धुनेठ—तूर धुनवाक यन्त्र ।
 धुपकाठी—धूपार्थ रचित शलाका ।
 धुपछाँह—वस्त्रविशेष ।
 धुपदानी—धूपक आधारपात्र ।
 धुपब—क्रि० केरा आदिकेँ धूमसँ
 पक करब ।
 धुपबत्ती—धुपकाठी ।
 धुमन—सर्जनियास, शालग्रशक
 लस्सा ।
 धुमनाइनि } —धुमनक सदृश
 धुमनाह } गन्धबाला ।
 धुमस अनेक बालकक कलह-
 क्रीडा ।
 धुमसाह } —धूमस कएनिहार
 धुमसिआ } (नेना) ।

धुमसुर—आघात दए माटि बैसए-
 बाक डण्टा लागल काष्ठखण्ड वा
 लौहपिण्ड ।
 धुमूह—उ० धूआँसन मुहबाला ।
 स्त्री० धुमूही ।
 धुरकिल्ली—धूरीमे पैसाओल जए-
 बाक किल्ली ।
 धुरखुड़ } —दोआरिकेँ कानक
 धुरखुर } भित्ति ।
 धुरबन्हू—वलिक हेतु बान्हल (छा-
 गादि) ।
 धुरिआएब—ना० धु रि+अब—धू-
 रासँ युक्त करब ।
 धुसब—क्रि० गञ्जन ।
 धुसरी—धान्यविशेष १ पुष्पवि-
 शेष २ ।
 धूआँ—धूम ।
 धूआँकस—धूआँ बहरएबाक कृत्रिम
 कोठाक अङ्ग ।
 धूतब—क्रि० धुन+अब—तात्तिक
 ताड़नसँ तूरक विश्लेषण करब ।
 धूनि—चिन्ता, भावना १ शीतज्वरमे
 शीतावस्थानन्तर उत्तापावस्था २ ।
 धूप—सं० सुगन्धित धूम ।
 धूपदानी—धूपाधारपात्र ।
 धूपब—क्रि० धुप्+अब—धूआँक

गरमीसँ पक करब १ धूपक
 सौरभसँ युक्त करब २ ।
 धूमन—यक्षधूप, सालनिर्यास ।
 धूमधाम—पैघ आयोजनक कोला-
 हल ।
 धूम मचब—क्रि० पैघ आयोजनक
 कारण अधिक कोलाहल होएब ।
 धूमा खेड़हा } —धान्यविशेष ।
 धूमा खेड़ा }
 धूर—कट्ठाक बीसम अंश १ सफटै-
 तीमे उपजल हरक अंश ।
 धूरा—धूलि ।
 धूरा माटि—माटिक धूरासँ मेनिहार
 खेल ।
 धूरी—गाड़ीक पहिआक आधार लौ-
 हदण्ड, अक्ष ।
 धूर्त—सं० प्रपञ्चसँ स्वकार्यसाधनमे
 पटु, परिहासपण्डित ।
 धूर्तबाज—गारियुक्त परिहासक
 योग्य व्यक्ति, सार बहिनोए
 प्रभृति ।
 धूर्ता—गारियुक्त परिहास ।
 धूसब—क्रि० धुस्+अब—भर्त्सना
 करब ।
 धेनु—नव बिआएलि गाए ।
 धेनुआर—पूर्ण दूध देनिहारि बिआ-
 एलि गाए ।

धैरज—धैर्य ।
 धोआ—धोआओल नव वस्त्र ।
 धोआइ—धोबिके देय कपड़ा धोए-
 बाक वेतन ।
 धोएब—क्रि० धो+अब—प्रक्षालन ।
 धोकड़ा—छोट बोरा, छोट अक्खा,
 गोणी सं० ।
 धोकड़ी—छोट धोकड़ा ।
 धोखरब—क्रि० जलसंयोगसँ अप-
 गत होएब ।
 धोखा—भ्रम, प्रमाद ।
 धोखारब—क्रि० धोखार+अब—
 जलक आघातसँ अपगत करब ।
 धोँछ—उ० अनुचितकार्यकरणशील ।
 स्त्री० धोँछि ।
 धोँछिआ—स्त्री० अनादरणीय धोँ-
 छि ।
 धोटकी—ओछपुट ।
 धोटकी लगाएब—ओछपुटसँ धरब ।
 धोतिआहा—दरभङ्गाराजकीय धौ-
 त परीक्षादे उत्तीर्ण मय
 धोती पओनिहार(पण्डित) ।
 धोती—धौतवस्त्र, पुरुषक परिधा-
 नीय ।
 धोधर } —कोटर ।
 धोधरि }

धोधि—मेदवृद्धिसँ स्थूलभूत उदर,
 तुन्द ।
 धोधिगर } —धोधिबाला (व्य-
 धोधिल } क्ति), तुन्दिल ।
 धोधैल—पैघ धोधिबाला ।
 धोनि ढेकार—विपाकजन्य विकृत
 रसगन्धसँ युक्त ढेकार ।
 धोपब—क्रि० भाँपब ।
 धोबि—उ० धावक, वस्त्र धोएनि-
 हार जातिविशेष । स्त्री०
 धोबिनि ।
 धोबिआही—धोबिक टोल ।
 धोबिघट्टा—धोबिक वस्त्र धोएवाक
 घाट ।
 धोबिनि—स्त्री० धोबि जातिक
 स्त्री ।
 धोयब—क्रि० धो+अब—प्रक्षा-
 लन ।
 धौरबी—स्त्री० रखौली, नियुक्त
 पुंश्रुली ।
 धौला—पक्षिविशेष ।
 ध्यान—सं० स्मरण ।
 न
 न—अ० निषेध ।
 नएन—मत्स्यविशेष १ नेत्र २ ।

नओ—नवसंख्यापरिमित, ९ ।
 नओतिमना—नओ तीमनसँ युक्त
 भोज्य ।
 नओरतन—नओ दाँतबाला (बड़द)
 १ नवरत्नयुत २ ।
 नकछिक्की—तृणविशेष ।
 नकटा—पक्षिविशेष ।
 नकटी—नाकक शुष्क मल,
 सिंघाण सं० ।
 नकडुबाब—जलचर पक्षिविशेष ।
 नकदड़री—आतुरतापूर्वक नितान्त
 प्रार्थना ।
 नकबसा—दुनू नासिकापुटक
 मध्यम अवयव ।
 नकवेसरि—भूषणविशेष ।
 नकमुन्नी—नासिकाक भूषणविशेष ।
 नकल—वि० अनुकरण ।
 नकली—वि० अनुकृत, अवास्तविक
 १ अवास्तविक रोदनादि काए-
 निहार २ ।
 नकलोल—पक्षिविशेष १ बूड़ि २ ।
 नकसा—वि० कोठा खेत आदिक
 चित्र १ खोधाया २ ।
 नकार—नक, जलीय हिंस जन्तु-
 विशेष्ट ।
 नकारि—नासिकाव्रण ।

नकुब्बा } —नाकसँ युक्त (आम) ।
 नकुब्बी }
 नकुनी—नोक, तीक्ष्ण अग्रभाग ।
 नक्की मुट्ठी—कौड़ीक एक खेड़ि ।
 नक्कू—पैघ नाकवाला ।
 नखनखी—ओषधिविशेष ।
 नखसिख—नखसँ शिखापर्यन्त अङ्ग ।
 नखास } —द्रव्यक उपर खोधिके
 नखासी } चित्रनिर्माण ।
 नग—मोतिक मध्यमे रखबाक
 मणिविशेष १ औंठीखाचित
 मणि ।
 नगद—तात्काल देल रुपैया इत्यादि ।
 नगदा-नगदी—अ० विना उधार,
 सयः मूल्य दए (क्रयविक्रय) ।
 नगनिपी—द्विरागमनक एक विधि
 जाहिमे नाग (वस्त्रवेष्टित भूमि)
 नीपल जाइत अछि ।
 नगर—सं० पुरी, ग्रामसमुदाय १
 आपणादियुक्त देश २ ।
 नँगड़ा—नङ्गा, ओषधिविशेष १
 अनोहन नाँगड २ ।
 नँगड़ाएब—क्रि० नँगड+अब—
 खज्जगल्या चलब, स्खलितगति ।
 नँगड़ा खेसारी—अन्नविशेष ।
 नँगड़ि-मोड़ देव—क्रि० लोभवश

पुनः पुनः इष्टवस्तुक
सन्निधिमे धूमव (निन्दामे) ।
नंगाड़ा—वाद्यविशेष, डका ।
नङ्गाड़ा—नंगाड़ा, खंज (अनादरमे) ।
नङ्गाड़ाएव—नंगराएव, स्खलितगति ।
नङ्गाड़ा—नंगाड़ा, डका ।
नङ्गाचङ्को—अशान्ति ।
नङ्गोड़—नखक्षत ।
नङ्गोड़व—क्रि० नखसँ क्षत करव ।
नट—उ० असभ्य जातिविशेष ।
स्त्री० नटिनि ।
नटखट—अशुभोक्ति ।
नटखटाह—उ० शुचिताक विषय
कनेको अन्यथा भेलासँ
क्रोधशील । स्त्री० नटख-
टाहि ।
नटखटिआ—अलिङ्ग, नटखटाह ।
नटिनि—स्त्री० नट जातिक स्त्री ।
नटुआ—नर्तक ओ नर्तकी ।
नठव—क्रि० अपलाप ।
नठाल—अकिञ्चन ।
नडाएव—क्रि० नङ्ग+अव—त्याग ।
नडिरा—गहूमक ओ यवक एक
प्रभेद ।
नटुरी—स्त्री० परपुरुषगामिनी ।
नडेआ—गिदर, शृगाल ।
नटैर—पुं० परस्त्रीगामी ।

नटैरी—परस्त्रीगमन ।
नतिनिजमाए—नातिनिक स्वामी ।
नत्थी—नाथव, सूचीवेधपूर्वक बन्धन ।
नथ } —नाकक भूषणविशेष ।
नथिआ }
नथुती }
ननदि—स्त्री० ननान्दा, स्वामीक
बहिनि ।
ननदोसि—पुं० ननदिक पति ।
ननिआ सासु—स्त्री० स्वामीक
मातामही ।
नन्दोसि—ननदोसि, ननदिक
पति ।
नन्हवस्सी—छोटछोट घास ।
नपना—जाहिसँ नापल जाए (से
पात्र) ।
नपुंसक—सं० बलगोबिना, क्रीव ।
नफगर—वि० जाहिमे नफा हो से,
लाभप्रद ।
नफा—वि० लाभ ।
नव—सं० नूतन ।
नवकमी—कर्मठ ।
नवका—उ० नवीन प्रकारक ।
स्त्री० नवकी ।
नवग्रह—भूषणविशेष १ सूर्यादि
नवो ग्रह २ ।

नवति—वि० तोरणवाद्य १ अव-
स्था २ ।
नवतिखाना—वि० तोरण ।
नवम—नवोक्त पूरण ।
नवमी—सं० नवम तिथि ।
नवसिस्त्रा } —नवशिक्षित ।
नवसिखुआ }
नवान } —नव अन्नक प्रथम
नवान्न } भोजन ।
नवाव—वि० मुसलमानक राजा १
तीसीक लस्सा २ ।
नवाबी—वि० नवाब सदृश विला-
स ।
नवाबी छाँटव—क्रि० नवाब जेकाँ
केवल आज्ञा चलाएव,
कोनो काज नहि करव ।
नवारी—यौवन ।
नवासी—एकानवति ८९ ।
नवासीम—नवासीक पूरण, ऊनन
वतितम ।
नव्वे—नवति, ९० ।
नव्वेम—नवतितम, नव्वेक पूरण ।
नमघोड़—घोड़ाजेकाँ लाम ।
नमहुरती } —लम्बाकार ।
नमघोर }

नमती—लम्बाइ ।
नमव—क्रि० नत होएव १ माल-
क पानि पिअव २ ।
नमरव—क्रि० नम्र होएव १ घँ चने
लम्बा होएव २ ।
नमहर—पैघ, दीर्घ ।
नमाइ—लम्बाइ, दैर्घ्य ।
नमूना—वि० आदर्श, अनुकार्य ।
नमेर—स्वयं क्षेत्रपतित धानक गाछ ।
नयन—मत्स्यविशेष १ नेत्र २ ।
नर—व्याधक छीप १ पुमान् (पक्षी-
प्रभृति) २ ।
नरइ—छोट गाछी ।
नरकटि—तृणविशेष ।
नरासाहि—आपकीर्ति, निन्दा ।
नरी—सूतक प्रमाणविशेष ।
नरेठी—गर्दनिक शिरा ।
नरैठी—गर्दनिक पाछाँ भाग ।
नल—सं० कृत्रिम कए बनाओल
लघु जलप्रवाहपथ ।
नली—छोट नल ।
नह—नख ।
नहकट्टी—अशौचनिमित्तक नख-
च्छेदन ।
नहकेश—अशौचनिमित्तक नखके-
शच्छेदनकर्म ।
नहंगा—साड़ीक तर पहिरबाक

छोट नूआ ।
 नहरनी — नह कट्वाक अस्त्र ।
 नहरि — नदीसँ सम्बद्ध कृत्रिम दीर्घ बाहा ।
 नहसूर — नखाच्छादक चमड़ा ।
 नहाए — अयोधन, लौहादि पिटवाक लौहनिर्मित आधार ।
 नहाएब — क्रि० नह+अब — स्नान ।
 नहाएब-सोनाएब — क्रि० स्नान-भोजनादि क्रिया ।
 नहि — सं० अ० निषेधयुक्त ।
 नहू-नह — अ० मन्द-मन्द, शनैः शनैः ।
 नहेरि — उ० लहेरि, लाक्षाभरणकारी जातिविशेष ।
 स्त्री० नहेरिनि ।
 नाउच — अनुच ।
 नाओ — नौका ।
 नाओ — नाम ।
 नाओ काढ़ब — क्रि० कढ़+अब — नौका खेबब ।
 नाओ काढ़ब — क्रि० कढ़+अब — मन्त्र द्वारा चोरक नाम जानब ।
 नाओ काढ़ा — चोरक नाम कढ़-निहार मान्त्रिक ।
 नाक — नासिका ।

नाकर-नूकर — अ० निषेधप्राय, अस्पृष्ट निषेध ।
 नाग — सं० उ० सप । स्त्री० नागिनि ।
 नांगट — उ० नगन । स्त्री० नांगटि ।
 नांगड़ — उ० खज । स्त्री० नांगड़ि ।
 नांगड़ि — लाङ्गूल, पुच्छ १ खज (स्त्री) २ ।
 नागफेनी — कण्टकमय चापट पत्र-हीन क्षुपविशेष ।
 नागरी — हिन्दी अक्षर १ हिन्दी भाषा २ ।
 नागा — जातिविशेष ।
 नागिनि — स्त्री० सर्पिणी ।
 नागेश्वर } — पुष्पमहावृक्षविशेष,
 नागेश्वर } नागकेश्वर सं० ।
 नाङट — उ० नगन । स्त्री० नाङटि ।
 नाङड़ — उ० खज । स्त्री० नाङड़ि ।
 नाङड़ि — लाङ्गूल, पुच्छ १ खज (स्त्री) २ ।
 नाच — नृत्य ।
 गाचघर — नृत्यभवन ।
 नाचब — क्रि० नच+अब — नर्तन ।
 नाचार — विवश, उपायहीन, ला-

चार हि० ।
 नाटक — अभिनय ।
 नाड़ी — सं० शिरा ।
 नाढ़ी — स्त्री० व्यभिचारिणी ।
 नाति — उ० नसा, अपत्यक अपत्य, पौत्र ओ दौहित्र । स्त्री० नातिनि, पौत्री वा दौहित्री ।
 नादड़ी — गजीफाक अन्तिम छोट फर्द ।
 नाथ — मालक नासारज्जु १ वेधन २ ।
 नाथब — क्रि० नथ+अब — मालक नासिकामे छेद करब १ वेधन २ ।
 नादि — मालकेँ गूड़ासानी देबाक पात्रविशेष ।
 नानन — वृक्षविशेष ।
 नाना — अ० सं० अनेक १ मातामह २ नानाभैआ — नेनाक नवम दिनमे कर्तव्य योग टोन ।
 नानी — स्त्री० मातामही ।
 नान्दन — मत्स्यविशेष ।
 नान्हीटा — स्वरूपेँ बहुत छोट ।
 नाप — परिमाण ।
 नापजोख — परिमाणादिक्रिया ।
 नापता — जकर पता (स्थितिस्थान) केओ नहि बुझैत हो ।

नापब — क्रि० नप+अब — नाप करब ।
 नापल — मित, जकर नाप कएल गेल हो ।
 नाभरोस — निराश ।
 नाभी — सं० डोँड़ही ।
 नाम — सं० आख्या १ लाम, लम्बा २ ।
 नाम काढ़ब — क्रि० कढ़+अब — नाओँ काढ़ब ।
 नामनबैसी — नामावलीक उल्लेख ।
 नामावली — सं० श्रेणीबद्ध नाम ।
 नामी } — विख्यातनामा ।
 नाम्बर }
 नाम्बरी — नामक विख्याति ।
 नायक — कीर्तनिआँ नटुआक प्रधान पुरुषपात्र १ सं० नेता २ ।
 नार — धान आदिक नाल, धानक डँटकी ।
 नारङ्गी — नेबौक प्रभेद १ रङ्ग-विशेष २ ।
 नारदी भजन — भगवानक भजन जे भालि पर गाओल जाइत अछि ।
 नाराज — वि० अप्रसन्न, क्रुद्ध ।
 नाराजगिरी — वि० सेवकपर

मालिकक क्रोध ।
 नारि—नारी, स्त्री ।
 नारिकेर } —नारिकेल ।
 नारिकेरी }
 नारिकेरी—नारिकेरक लोखड़ा जकर ओढ़िका ओ हुका बनैत अछि ।
 नाल—सं० कमल आदिक डौट १
 खिआए नहि तदर्थ जूता ओ घोड़ाक टापक तरमे देय लौह-निर्मित वस्तु २ ।
 नाला—पनिबट, इष्टकादिबद्ध पानि बहवाक मार्ग ।
 नालायक—वि० अयोग्य (व्यक्ति), बूढ़ि ।
 नालिस—वि० न्यायालयमे वादीक विज्ञप्ति ।
 नाश—सं० विनाश ।
 नास—हलाङ्ग, हरकटक अगिलाभाग ।
 नासकार—वि० अस्वीकार, नठब ।
 नासपाती—अमृताहु, रुचिफल, अमृतफल ।
 नासी—मृत नदी ।
 नाह—नाथ, स्वामी १ नौका २ ।
 नाहक—वि० अ० वृथा ।
 नाहा—तास आदिक नवम फंद ।
 निकती—स्वर्णादि तौलबाक छोट

तुला ।
 निकलुआ—निष्कासित ।
 निकम्मा—वि० अधलाह ।
 निकलब—क्रि० निकल्+अब—निःसृत होएब ।
 निःकसरि—सर्वथा शुद्ध, दोषमुक्त (स्वर्णादि), सर्वथा रोगमुक्त (व्यक्ति) ।
 निकहा—नीक प्रभेदक ।
 निकाएब—क्रि० निकब्+अब—मत्स्यादिके छेदनादिसँ रन्धनोपयुक्त करब ।
 निकाओन—निकाएसँ त्याजित हेय अंश १ निकओनिहारकेँ देय २ ।
 निकायब—क्रि० निकब्+अब—निकाएब ।
 निकालब—क्रि० निकाल्+अब—निष्कासन ।
 निकास—वि० घरक लग फैल जगह १ रुपैया आदि देबाक हुकुम ।
 निकेँ—खुखेँ, सुखपूर्वक ।
 निकेँना—अ० नीक रीतिएँ ।
 निखड़ब—क्रि० स्फुट रूपेँ अङ्कित होएब ।
 निखरुस—वि० सर्वाङ्गपूर्ण, अवि-

कल ।
 निखाड़ब—क्रि० निखाड़+अब—स्पष्ट रूपेँ अङ्कित करब ।
 निघटब—क्रि० सधब, अनवशेष होएब ।
 निधारब—क्रि० निधार+अब—निभालन, निहारब ।
 निघास—निघेस, मालक भक्षिता-वशिष्ट ।
 निघुरब—क्रि० नत होएब ।
 निघृष्ट—सं० अत्यन्त अधम ।
 निघेस—निघास, मालक भक्षिता-वशिष्ट ।
 निचका—निचला, नीचस्थित ।
 निचगर—अधिक नीच ।
 निचला—नीचस्थित ।
 निचामि—नीचात्मा ।
 निचास—नीच चास, नीच खेत ।
 निचेन—निरुपद्रव, शान्त, कार्यभारमुक्त ।
 निचोड़—निष्कर्ष ।
 निचोरब—हि० क्रि० गारब ।
 निछाउर—इनाम, न्यौछावर हि० ।
 निछाएब—क्रि० निछब्+अब—तृणक संशोधन ।
 निछाओन—तृणादिक संशोधनसँ त्याजित अंश ।

निछावरि—इनाम ।
 निछायब—क्रि० निछब्+अब—तृणक संशोधन ।
 निछार(ड़)—सर्वथा गर्भमुक्त (धान्यादि) ।
 निछोह—अ० निच्छोह, वेगपूर्वक (दौड़ब) ।
 निजगुति—निश्चय ।
 निट्टाह—उ० प्रबल, दढ़ । स्त्री० निट्टाहि ।
 निट्टुर } —उ० निष्टुर । स्त्री०
 निट्टुर } निट्टुरि ।
 निडर—उ० निडुर, निर्भय । स्त्री० निडरि ।
 निडारब—क्रि० निडार+अब—आंखिक आस्फालन ।
 निडुर—उ० निर्भय । स्त्री० निडुरि ।
 नित्त—अ० नित्य, प्रतिदिन ।
 नितराएब } —क्रि० नितर्+अ-
 नितरायब } ब—गर्वसँ अगरी-
 एब ।
 नित्त } —अ० नित्य, प्रतिदिन ।
 नित्य }
 निधार—निराधार ।

निधूह—निर्द्धूम ।
 निधोख—धोखासँ रहित, निःशङ्क ।
 निन—निन्द, निद्रा १ निद्रित २ ।
 निनाइ—पेटक वायुविशेष ।
 निनाइ उखड़ब—क्रि० उदरवायुक
 स्थानत्याग ।
 निनान्नब्बे—एकोनशत, ९९ ।
 निनान्नब्बेम—एकोनशततम ।
 निन्दित—सं० निन्दास्पद ।
 निन्न—निद्रित १ निद्रा २ ।
 निपट—निपट्ट, अन्ध ।
 निपटब—क्रि० फरिछोट होएब,
 विवादक पर्यवसान होएब ।
 निपटाएब—क्रि० निपटब+अब—
 फरिछोट करब, विवादक
 पर्यवसान करब ।
 निपट्ट—अन्ध ।
 निपब—क्रि० लेपन ।
 निबहता—निर्वाह ।
 निबहब—क्रि० सम्पन्न होएब १
 निर्वाह करब २ ।
 निबाह—निर्वाह ।
 निबाहब—क्रि० निबाह+अब—
 सम्पादित करब, नि-
 र्वाहण ।
 निभरोस—निराश ।
 निमकी—साँस नेबोक मसाला-

रहित अँचार ।
 निमन—निम्न, उत्तम ।
 निमरसखा } —अनवशेष, जकर
 निमरसेखा } शेष नहि रहए ।
 निमहता—निर्वाह ।
 निमुठ हाथ—मुट्टी बान्हल हाथ-
 क परिमाण ।
 निमुन } —सर्वथा मुद्रित ।
 निमुन्न }
 निमोछिआ—मोछसँ रहित ।
 निम्नन—निम्न, उत्तम ।
 नियत—सं० निश्चित ।
 नियति—वि० स्वभाव ।
 निरघिन—निर्घृण, घृणास्पद, अ-
 श्रद्ध ।
 निरदिस—अकिञ्चन, असहाय ।
 निरधार—निर्धारण, निश्चय, स-
 न्तोष ।
 निरधारब—क्रि० निरधार+अब—
 सन्तोषपूर्वक निश्चय करब ।
 निरधोख—निःशङ्क ।
 निरपराध } —अपराधहीन ।
 निरपराधी }
 निरमाल—निर्माल्य ।

निरमोही—स्नेहशून्य ।
 निरस—नीरस, रसहीन १ आधासँ
 न्यून(अश) २ ।
 निरसब—क्रि० त्याग
 निरस्त—आशाहीन ।
 निरहट—शासनक उल्लङ्घन कए-
 निहार ।
 निराओ—नीरब, निर्वात (समय) ।
 निरादर—सं० अनादर ।
 निराल—शुद्ध, केवल, अमिश्रित
 (जलादि) ।
 निराश—सं० हताश ।
 निरुद्योग—सं० उद्योगशून्य ।
 निरुपाय—सं० जकर उपाय नहि हो ।
 निरैठ—अनुच्छिष्ट ।
 निरोग—नीरोग, रोगहीन ।
 निरोध—सं० रोकब ।
 निरोधी—सं० रोकनिहार ।
 निरघिन—घृणास्पद, दर्शनसँ चित-
 विकारोत्पादक ।
 निर्दय—सं० दयाशून्य ।
 निर्दिस—असहाय, अकिञ्चन ।
 निर्दोष—सं० दोषशून्य ।
 निर्दोख—धोखासँ शून्य, अशङ्क ।
 निर्वाह—सं० भरण-पोषण ।
 निर्विकार—सं० विकारहीन, ल-
 जाहीन ।

निर्विसी—उच्चटा, ओषधिविशेष ।
 निर्व्यग्र—सं० व्यग्रतारहीन ।
 निःशब्द—सं० शब्दशून्य ।
 निशा—राति ।
 निशाकाल—मध्यरात्र ।
 निश्चय—सं० निर्णय ।
 निश्चिन्त—सं० चिन्ताशून्य ।
 निसङ्क—निःशङ्क ।
 निसबद—निःशब्द ।
 निसाँ—मशपानजन्य मद ।
 निसादर—ओषधिविशेष ।
 निसाफ—वि० न्याय ।
 निसाफी—वि० न्यायी ।
 निसास—निःश्वास ।
 निस्तार—सं० समाप्ति, १ सम्पन्न-
 ता २ ।
 निहत्य } —जकर हस्तगत धन
 निहत्य } खर्च भए गेल हो
 से, रिक्तहस्त ।
 निहल—हाल (आर्द्रता) सँ शून्य
 (खेत) ।
 निहारब—क्रि० निहार+अब—
 साकाङ्क्ष भए ताकब ।
 निहुल्लब—क्रि० देवादिक उद्देश्ये
 राखब ।
 निहुरब—क्रि० नम्र होएब ।
 नीक—उत्तम, भल ।

नीच—सं० अधम १ नत (भूमि-
आदि) २ ।
नीचाँ—अ० नीच देशमे ।
नीपब—क्रि० निप्+अब—लेपन ।
नीपब-पोतब—क्रि० लेपनादि ।
नीपल—उपलिप्त ।
नीपा—उपलेपन ।
नीम—निम्ब ।
नीमन—उत्तम ।
नील—सं० हरिअर ।
नीलकण्ठ—सं० नील कण्ठबाला
पक्षिविशेष ।
नीलकमल—सं० इन्दीवर ।
नीलम } —नीलमणि, वैडूर्य ।
नीलमणि }
नीर—मन्त्रोपहित जल ।
नीरविभूति—मन्त्रोपहित जल
विभूत्यादि ।
नुकाएब—क्रि० नुक+अब—प्रच्छ-
न होएब १ नुकव+अब—
प्रच्छन्न करब २ ।
नुड़िआएब—ना० नूड़ जेकाँ आ-
चरण करब, अर्थात् इतस्ततः
पाछाँ लागल चलब १ औ
वस्त्रादिकें संकुचित कए
राखब २ ।

नूआ—वस्त्र ।
नूज—न्युञ्ज ।
नूड़—उपलेपनक हेतु आकुक्षित
वस्त्रादि ।
ने—अ० निषेध १ कोमलालाप २ ।
नेआर—क्रिया करबाक इच्छा ।
नेआरभास—नेआरप्रभृति ।
नेआरब—क्रि० नेआर+अब—
क्रिया करबाक इच्छा करब ।
नेओँत—निमन्त्रण ।
नेओँता—अ० निमन्त्रणमे ।
नेड़हा—तार कटहर औ मकैक
लम्बाकार फलाभार ।
नेढ़ लागब—क्रि० पिला-पिलीक
उनटा जोट लागब ।
नेन—मत्स्यविशेष ।
नेनओन—नेनासन ।
नेनपन } —नेनाक क्रिया, शिशु-
नेनपना } त्व ।
नेनपनी }
नेनमति—नेनाक सन मति ।
नेनमतिआ—नेनाक सन बुद्धि-
बाला ।
नेना—अलिङ्ग—शिशु ।
नेनाक रोग—पूतनादिकृत बालग्रह ।
नेनु—नवनीत ।

नेनुआ भोस—कदलीविशेष ।
नेनोन—नेनाक सन ।
नेप चुबब—क्रि० क्रन्दनविशेष ।
नेपाली—नेपालदेशोद्भव ।
नेपुर—नूपुर, चरणक भूषणविशेष ।
नेबार—खाट घोरबाक सूनसँ निर्मित
लम्बा पटविशेष ।
नेबारि—नवमालिका, पुष्पविशेष ।
नेबेद—नैवेद्य ।
नेबो—जम्बीर ।
नेम—नियम (व्रतादिक) ।
नेमटेम—व्रतादिक नियमक आड-
म्बर ।
नेरसराए—नेत्रक आवरणक रोग-
विशेष ।
नेरू—अलिङ्ग, गायक छोट बाछ-
बाछी ।
नेसब—क्रि० दीपप्रज्वालन ।
नेह—स्नेह ।
नेहाइत—वि० अत्यन्त ।
नेहाए } —अयोधन, लौहादि
नेहाय } पिटबाक लौहनिर्मित
स्थूल आधार ।
नेहारू—सोनारक हथिआरविशेष ।
नेहारुन—अल्पसँ अल्प १ हुताश २ ।
नेहाल—वि० अत्यन्त उपकृत, कृ-

तार्थ ।

नेहोरा—दैन्यपूर्वक प्रार्थना ।
नैआ—नौवाइक, नाओ खेबनिहार,
नाविक ।
नैवेद्य—सं० भगवन्निवेदित (फल
पक्वान्नादि) ।
नैवेद्यपत्री—सं० भोजनकालिकनैवे-
द्याधारपात्र ।
नैहर—पितृगृह (स्त्रीक) ।
नोक } —तीक्ष्ण अस्त्राग्र ।
नोकनी }
नोकर—उ० वि० दास, चाकर ।
स्त्री० नोकरानी ।
नोकरी—वि० दास्य ।
नोकसान—वि० क्षतिग्रस्त ।
नोकसानी—वि० क्षति ।
नोख—उत्तम, सुन्दर ।
नोखगर—सुन्दर ।
नोचनी—कुड़िऐनी, कण्डूति ।
नोचनी लागब—क्रि० कण्डूतिप्राप्ति ।
नोचब—क्रि० वक्रवस्तुक अग्रभाग-
सँ घर्षण ।
नोतर—पचेसीमे नवम स्थान ।
नोन—लवण ।
नोनगर—अधिक नोनसँ युक्त १
नोनसँ युक्त २ ।

नोनचट—सपक्ष मशकाकार अति-
छोट कीटविशेष ।

नोनझराह } —लवणयुक्त सन ।
नोनझाह }

नोनथरा—लवणनिर्माणस्थल ।

नोनफड़—नोनिआह भूमिविशेष ।

नोनिआ—उ० जातिविशेष ।
स्त्री० नोनिआनि ।

नोनिआह—नोनी लागल (भूमि) ।

नोनी—शाकविशेष १ भित्त्यादिक
रोगविशेष २ ।

नोर—अश्रु ।

नोराएब—ता० नोर+अब—नोर-
सं युक्त होएब ।

नोसकड़—अधिक नोस लेनिहार ।

नोसि—नस्य ।

नोसिदानी—नस्यपात्र ।

नौआ—उ० नापत । स्त्री० नौ-
आइनि ।

नौआइनि } —स्त्री० नापित-
नोआनि } स्त्री ।

नौगृही } —भूषणविशेष ।
नौग्रही }

न्यार—क्रिया करबाक इच्छा ।

न्यारब—क्रि० न्यार+अब—क्रिया
करबाक इच्छा करब ।

न्यो—भित्त्यादिक आधारभित्ति ।

न्योत—निमन्त्रण ।

न्योतब—ना० निमन्त्रित करब ।

न्योतपिहान—निमन्त्रणादि ।

न्योतहारी—निमन्त्रित व्यक्ति ।

न्योतां—अ० निमन्त्रणमे ।

प

प' } —पक व्रणक छेदन ।
पअ }

पइतो—पवित्र, निर्मित कुशविशेष ।

पए—वि० अङ्गक दोष ।

पएजामा—वि० अधरोरुक ।

पएताबा—वि० पादत्राणवस्त्र ।

पएदार—वि० अङ्गक दोषसं युक्त ।

पएरधरी—आर्त्तिसँ पादग्रहण ।

पओ—एक थर आगाँ चलबाक हक
(पकेसीमे) ।

पओने—पादोन (सख्या वा परि-
माण) ।

पकठाएब—क्रि० पकट+अब—क-
ठोर होएब ।

पकठोस—उ० बजबामे प्रौढ़ ।
स्त्री० पकठोसि ।

पकड़व—क्रि० ग्रहण ।

पकपकाएब—क्रि० पकपक+अब—
मनहिमन प्रोभाकुल होएब ।

पकमान—पक्काच, सालपूआ
प्रभृति ।

पकाओ—घटक परिष्कार ।

पकोहा—छुक आध्रवीज ।

पका—हि० निश्चित रह ।

पकी—वि० असली, वास्तविक ।

पक्सा—पाखा, कोठा आदिक
पार्श्वभाग ।

पक्ष—सं० चान्द्रमासक कृष्ण-छुक
भेदसँ पूर्वपर खण्ड १
मत २ दल ३ ।

पक्ष—पक्ष, चान्द्रमासक अधिविषय ।

पखरा खाएर खादिरनियसिक
प्रभेद ।

पखाओज—वायुविशेष ।

पखारव—क्रि० पखार+अब—
प्रक्षालन ।

पखिआ बीड़ी—लगाओल पानक
बीड़ीक प्रभेद ।

पखिगर—जुटल पाँखिसँ युक्त ।

पखिना—गृहादिक उभयपार्श्वक
अङ्ग ।

पखेव—मालक देवाक औषधविशेष ।

पगहा—हलादिक डोरी, बनसीक

डोरी ।

पगाड़—कुसिआरक अग्रभाग ।

पघड़िआ—हाँसक प्रभेद ।

पघाँस—मस्यविशेष ।

पघिलव—क्रि० दबीभाव ।

पङ्खा—व्यजनविशेष ।

पङ्खी—छोट पङ्खा ।

पङ्खा—सामुद्रलवण ।

पचकटारि—दुब्बर ।

पचकट्टा—धानक रोगविशेष ।

पचकनमाही—पाँच कनमाक
नपना ।

पचकब—क्रि० क्वचित् अवयवसँ
द्वय, आघातसँ कोनो
भागमे निम्नताप्रति ।

पचकारब—क्रि० पचकार+अब—
तैलादिक अधिक लिम्पन ।

पचखण्डी—भूषणविशेष ।

पचनिआ—पाच कएनिहार ।

पचनोना—पक्षलवण ।

पचपच करब—क्रि० किञ्चित्
वान्तिशङ्कायुक्त होएब ।

पचपचाएब—क्रि० पचपच+अब
—वमनक शङ्कासँ
युक्त होएब ।

पचपची—वान्तिशङ्का ।

पचपन	} पञ्चपञ्चाशत् ।	पचौन्ह—पञ्चवधन ।
पचपन्न		पन्नर—बैठ आदि दृढ़ करवाक हे देल किल्ली ।
पचपन्नम—पञ्चपञ्चाशत्तम ।		पचचा—दूआ—अ० पाँचमे दू अंश
पचपौनिआ—पञ्चकाहकी, पाँचो पसारी ।		पचची—भूषणमे बालुकादिक अन प्रवेशन ।
पचव—क्रि० पेटमे अन्न पक्व होएब ।		पचछ—पक्ष ।
पचबनिआ—भूषणविशेष ।		पचिद्रम—पश्चिम ।
पचमी हिस्ता—पञ्चमांश ।		पचिद्रम भर—पश्चिम देश ।
पचमेर—पाँच प्रकारक मधुर ।		पचझी—पक्षी ।
पचहत्तरि—पञ्चसप्तति ।		पछता—पश्चाद्भव ।
पचहत्तरिम—पञ्चसप्ततितम ।		पछताएब—क्रि० पछतव्+अव पश्चात्ताप ।
पचरंगा	} पाँच रङ्गसँ रङ्गल (कपड़ा) ।	पछवा—पश्चिमसँ आगत (वायु) ।
पचरङ्गा		पछवारि—पश्चिम दिग्वस्थित (गृहादि) ।
पचरङ्गा		पछाड़ी—पश्चाद्भाग ।
पचहर—स्त्रीक पयखाना, कुत्रिम पुरीमालय ।		पछाति—अ० पश्चात् ।
पचागि—पञ्चाग्नि (व्रत) ।		पछारव—क्रि० पछार+अव प्रतिद्वन्द्वीकेँ तर कए उपर आएब ।
पचास—पञ्चाशत् ।		पछिमहा—पश्चिम देशभव [ब्राह्मण] ।
पचासम—पञ्चाशत्तम ।		पछिमा ब्राह्मण—पश्चिमदेशभव ।
पचासी—पञ्चाशीति ।		पछिमा कायस्थ—कायस्थविशेष ।
पचासीम—पञ्चाशीतितम ।		पछिमा ढार—पश्चिमलव ।
पचीस—पञ्चविंशति ।		पछिमाहा—पछिमहा ।
पचीसम—पञ्चविंशतितम ।		पि.माहुत्त—समीपपश्चिमदेशस्थ ।
पचुसर—किञ्चित् ऊँस युक्त (भूमि)		
पचेसी—क्रीड़ाविशेष ।		

छिला—पश्चाद्भव । पश्चात् स्थित २ ।	पञ्चक्रोशी—सं० पाँच कोसक परिक्रमा (काशीमे) ।
छुअति—घरक पछिला चार ।	पञ्चगरास—} —भोजनक पूर्व
छुआ—भूषणविशेष ।	पञ्चप्रास—} पाँचघेर सम-
छुआएब—ना० पाहू होएब ।	न्वअन्नभक्षण ।
छुआड़—घरक पश्चिम अवकाश ।	पञ्चदीप—सं० पाँच सुहवाला दीप ।
छुआड़ी बान्ह—समुद्रक बन्धनविशेष ।	पञ्चपात्र—सं० सूर्यादिपञ्चदेवता-पूजनार्थ जलपात्रविशेष ।
छुलगुआ—पाछाँ रहनिहार अनादहणीय १ शूद्रक लौक पछिला स्वामी सँ जनमल बन्ना २ ।	पञ्चमी—सं० पाँचम तिथि ।
छोर—अनुगमन ।	पञ्चमुखी—पाँचसुहवाला (दीपपात्रादि) १ ओछुल फूलक प्रभेद २ ।
जरब—क्रि० प्रज्वलन ।	पञ्चाशब्दे—पञ्चनवति ।
जरवार—पार्श्वक गर ।	पञ्चाशब्देस—पञ्चनवतितम ।
जरमोड़ (र)—पाँजक वेदना-विशेष ।	पञ्चैती—पक्षक क्रिया (ऋयाय) ।
पजारव—क्रि० पजार+अव—प्र-ज्वालन ।	पञ्ज—पूर्णवयरक घेड़ा १ बि० अखर-धीन २ ।
पँजिआड़—पञ्जीकार ।	पञ्जीकार—पँजिआड ।
पँजिआड़ी—पञ्जीकारक क्रिया ।	पञ्जीवद्ध—जकर नाम पँजिमे प्रारम्भसँ अछि ।
पजेवा—इष्टका ।	पट—आवरण १ सँ० वस्त्र २ ।
पँजौड़—पाँजमे गृहीत (धान्यादि) ।	पटइ—भार लटकएवाक वंशदण्ड-विशेष ।
पम्माएब—क्रि० पम्मा+अव—मि-ष्ठाएब ।	पटकब—क्रि० पातन ।
पञ्च—मानल वादनिर्णय ।	पटका—पतन ।
पञ्चकल्याण—घोड़ाक शुभ लक्षणविशेष, चारु पाएर ओ	पटकापटकी—परस्पर पातन ।

पट दण—अ० भट्ट दण, भट्टति, लगले ।
 पटदेहरि—चौकठिक उपर देवाक तकथा ।
 पटव—क्रि० वृद्धिवादिक् जलसँ युक्त होएब १ सौमनस्य रहब, विरोध नहि होएब २ व्याप्त होएब ३ ।
 पटवरिका—पटवारीकक्रिया (रसीद कटबामे नियुक्ति) ।
 पटवा—जातिविशेष ।
 पटवारी—पोतक रसीद कटबामे नियुक्त ।
 पटम्बर—पट्टाम्बर ।
 पटरानी—स्त्री० राजाक प्रधान पत्नी ।
 पटरी—काष्ठादिक छोट पट्ट ।
 पटरी बैसब—क्रि० मिलान होएब (लाक्षणिकशब्द) ।
 पटल—सं० प्रक्रिया ।
 पटसार—जकर मथनी उचितसँ अधिक नीच हो से (घर) ।
 पटांस—तृणविशेष ।
 पटिआ—परतानसँ निमित्त कट ।
 पटुआ—जकर सन होइछ से वृक्ष विशेष ।
 पटुआ साग—शाकविशेष ।

पटेर—तृणविशेष ।
 पटोटन—विना बातीक खट्टं चारक आच्छादन १ धरना २ ।
 पटोर—पट्टवस्त्र ।
 पटौटी—भोजनार्थ बिछाओल पात ।
 पटौनी—उद्धृत जलसँ भूमिक आग्रावन ।
 पट्ट—देवमन्दिरक कवाट १ सं० पाट, उर्ण २ ।
 पट्टा—हि० भरल पक्की दू, मोनक बोरा ।
 पट्टी—अंश १ औषधयुक्त व्रणक आच्छादनपट २ ।
 पट्टीदार—वि० स्वर्वांशभागी ।
 पट्टीबन्दी—वि० भूमिक अंश विभाजन ।
 पट्टीबाज—वि० धोखा देनिहार ।
 पट्टीवाजी—वि० धोखा देगाइ ।
 पट्टू—उर्णवस्त्रविशेष ।
 पट्टा—पहलमानक शिष्य ।
 पठरु—अलिङ्ग, बकरीक बच्चा ।
 पठाएब—क्रि० पठव्+अब—प्रेषण ।
 पठिआराम—पठिआरसन ।
 पठिआर—अपञ्जीबद्ध ब्राह्मणक ग्रामसम्बन्ध ।
 पडव—क्रि० आधार पर एक भाग सँ सर्वाङ्गसंयोग १ विषयीभवन,

यथा वृक्ति पडल, सुनि पडल २ आवश्यक प्राप्ति, यथा जाय पडल ३ संबद्ध होयब ४ ।
 पडरु—अलिङ्ग, महिसिक बच्चा ।
 पडाएब—क्रि० पड+अब—पलायन ।
 पडाएन—पलायन, वासत्याग ।
 पडाँचब—क्रि० आद्योपान्त कथन ।
 पँडुकी } —पक्षिविशेष ।
 पडुकी }
 पडोर—पटोल ।
 पडोरिआ—पटोलफलाकारक (कपाटमुद्रक) ।
 पडोस—गृहसमीपक आवास ।
 पडोसी—सं० गृहसमीपवासी व्यक्ति । स्त्री पडोसिनि ।
 पडोनाइ—अध्यापन ।
 पडनाइ—अध्ययन ।
 पडव—क्रि० अध्ययन ।
 पडव—गूनव—क्रि० अध्ययनादि ।
 पडाइ—हि० पाठन ।
 पठाएब—क्रि० पठव्+अब—अध्यापन ।
 पडिआ—पाडिबाला (धोती साढ़ी) ।
 पडुआ—छात्र ।
 पणाचब—क्रि० पणाच्+अब—आद्योपान्त कथन ।

पणुकी—पँडुकी, पक्षिविशेष ।
 पण्डा—तीर्थक ब्राह्मण ।
 पण्डित—सं० विद्वान् ।
 पण्डिताइ—पाण्डित्य ।
 पण्डिताम—पण्डितोचित (पांग आदि) ।
 पण्डितारय—पण्डितक व्यवहार, पाण्डित्य ।
 पतकट्टा—धानक रोगविशेष ।
 पतकाहु—कूर्मक प्रभेद ।
 पतकोबी—बिना फूलक कोबी ।
 पतगर—अधिक पातबाला ।
 पतचट्टा—खएबाक काल पातपर्यन्त चटनिहार (निन्दामे) ।
 पतडा—पञ्चाङ्ग, तिथिपत्र ।
 पतडी—खडिका लगाय अनेक पातसँ बनाओल भोजनपात्र ।
 पतनुकान—गाछक पातमे सुकाएब, भयादिसँ प्रच्छन्न होएब ।
 पतनोना—पतलोना, पातपर परसल नोन ।
 पतरका—उ० पातर प्रकारक । स्त्री० पतरकी ।
 पतरधना—पातर धान, मेही धान ।
 पतराएब—ना० पतरव्+अब—पातर करब ।
 पतसीभ—पसीभ ।

पता—स्थितिस्थानपरिचय, प्राप्ति-
स्थान ।

पताका—सं० वैजयन्ती ।

पताल—पाताल ।

पता लागव—क्रि० प्राप्तिस्थानक
अवगमन ।

पतासी—मत्स्यविशेष ।

पति—प्रतिष्ठा १ सं० स्वामी २ ।

पतिआ—प्रायश्चित्त ।

पतिआएव—क्रि० पति+अव—
प्रतीत करव, विद्वास ।

पतिआनी—पाँती, पङ्क्ति ।

पतिआनीजोड़ (र)—पङ्क्तिबद्ध ।

पतिकरनी—प्रतिष्ठाकारार्थ अत्यल्प
क्रिया ।

पतित—सं० महापातकी ।

पतिता—अनादरणीय पतित ।

पतिव्रता—स्त्री० सं० साध्वी ।

पतौटी—भोजनार्थ बिछाओल पात ।

पतौड़ी } —ताम्बूलादि रखवाक
पतौरी } पत्रपुटक ।

पत्तर—लौहपत्र ।

पत्ता—पात १ पता २ ।

पत्ती—छोट पात ।

पत्र—लौहपत्र १ सं० चीठी २
पात ३ ।

पथरखड़ी—खड़ी, कठिनी ।

पथरचूर—क्षुपविशेष ।

पथराएव—ना० पाथरपर पिजा-
एव ।

पथरी—मृदाशयस्थित पाथरसन दृढ़
मांसपिण्ड, रोगविशेष ।

पथरौटी—पाथरक बाटी ।

पथार—वस्तुक समन्तात् पसार ।

पथिआ—बाँस वा बेंतक बग्याओल
धान्यादिपात्रविशेष ।

पथेरि—पजेवा पथवाक स्थान ।

पदन्धोती—पादपर्यन्त पहिरल
धोती ।

पदमकाठ } —वृक्षविशेष, सं०
पदमकाठ } पद्मक ।

पनखोका—उ० अधिक पान खए-
निहार । स्त्री० पनखोकी ।

पनपथिआ—पान रखवाक एक-
हरा छोट पथिआ ।

पनयट्टा—पुट्टयात्मक पान रख-
वाक पैव पात्र, करदु ।

पनयट्टी—छोट करदु ।

पनवसन्ता—पान बासवाक ओ
रखवाक पात्र ।

पनसा—पर्णाकारचिह्नित रत्नवर्ण
नामक फर्द, लाल पान ।

पनरह—पञ्चदश ।

पनरहम—पञ्चदश संख्याक पूरक ।

पनहाएव—क्रि० पनह+अव—
मालक वा ओकर स्तनक
दुग्धदानोन्मुख होएव ।

पनहाओन—महिसिक बाहवाक
पूर्वरूप ।

पनहाओन देव—क्रि० बाहवाक
पूर्वरूपप्राप्ति ।

पनही—जूता ।

पनहैनी—पनहाओन ।

पनारा—ऊपरसँ मुद्रित पनिबह ।

पनि—करीनसँ पटएवाक पनिबट ।

पनिअओरा—फलविशेष, पनिओ-
रा ।

पनिआएव—ना० पानि+अव—
पानिसँ युक्त होएव ।

पनिआगर—जलसँ रक्षार्थ ठाठक
उपर अग्रभागमे देल खढ़क टट्टी ।

पनिआ दराध—सर्पविशेष ।

पनिआरी—अधिक वृष्टि ।

पनिआह—पानिसँ युक्त ।

पनिआहा—पानिसँ युक्त (मेघ) ।

पनिओरा—पनिअओरा, फलविशेष

पनिकनरा } —करीनसँ पटएवामे
पनिकानर } जलक सामीप्य,
करीनकेँ जल-

सान्निध्य ।

पनिकौआ—काकविशेष ।

पनिगर—अधिक जलसँ युक्त १
अधिक तेजीसँ युक्त २ ।

पनिघट—पानि भरवाक घाट ।

पनिचडै—जलपक्षी ।

पनिचहट—जाहिमे पानिक सम्बन्ध-
सँ आर्द्रता बनल रहए से (खेत) ।

पनिआएव—क्रि० पनिछ+अव—
स्वादिय वस्तु खएवाक हेतु

जिह्वा जलसँ युक्त होएव ।

पनिछेक—पानिक छेकब, जलगति-
निरोध ।

पनिजत्तू—पानिसँ जाँतल, अधिक
समय धरि पानिमे डुबल
(धान्यादि) ।

पनिफाओ—पोखरिक जलमय
प्रदेश ।

पनिफाली—धान ।

पनिडुबो—पानिमे डुबल रहनिहार
प्रेत ।

पनितोआ } —मिश्रानविशेष ।
पनितौआ }

पनिदुहुर } —जलोदर व्याधि ।
पनिदुहुर }

पनिपत लेव—क्रि० अधिक पानि

रुबाक कारणे पानिक भरे
भान्यादिक पत्रक पतन ।
पनिपिआइ—जलखइ, जलपान,
जलपानार्थ किछु भोजन ।
पनिबट } —पानि बहवाक नीच
पनिबह } मार्ग ।
पनिभर—उ० पानि भरबामे
नियुक्त । स्त्री० पनिभरनी ।
पनिभरु—किश्तशुल्क तृणकाष्ठादि
१ मन्द-मन्द काज
कएनिहार २ ।
पनिसह—अधिक पानि सइनिहार ।
पनिसाला—प्रपा, पानीयशाला ।
पनिसोखा—इन्द्रधनुष ।
पनिशोह—जलप्रचुर अल्पमधुर
(लताम आदि) ।
पनीर—औषधविशेष ।
पनुगव—क्रि० पनुघव, निष्पन्न भए
पुनः शाखाइकुर लाभ
करव ।
पनुगा } —वृक्षक शाखा चलवाक
पनुगी } अकुर ।
पन्द्रह—पनरह, पञ्चदश ।
पन्द्रहम—पञ्चदशसंख्याक पूरक ।
पम्ना—स्वर्णक प्रभेद १ चूत ओ
मेही सुरखी मिलाओल २

मरकतमणि ३ ।
पन्नी—चालमे शोभार्थ सट्वाक
चाकचायुत चित्रपत्र ।
पन्हाएव—क्रि० पम्ह+अब—पन-
हाएव ।
पन्हान—महिसिक गर्भधारणक
पूर्वपक्षविशेष ।
पपड़ा } —पापड़सइश मृत्तिकादि ।
पपड़ी }
पपिआह—उ० असह्य व्यक्ति ।
स्त्री० पपिआहि ।
पपीहा—पक्षिविशेष ।
पबनाह—पावनिक वस्तुजान ।
पबनोट(ठ)—पावनिक वस्त्र ।
पवन्नी—एक पक्क हेतु लाल नहि
सेल पक्कीक गोठी ।
पवहारि—पक्कीमे पओ पड़लासँ
घरमे गोठी बहराएव ।
पवही—एक पाओ प्रमाणक नपना ।
पवाइ—ज्वा खडामक जोड़ाक
एक टा ।
पवै—पक्षिविशेष ।
पमरिआ—पमारा पड़ि नचनिहार,
जातिविशेष ।
पमारा—पुत्रजन्मादिक । उत्सवक
गीतविशेष

पम्ह—मोछक पूर्वपक्ष ।
पय—वि० काणत्वादि शरीरक दोष ।
पयखाना—वि० पुरीषोत्सर्गालय ।
पयजामा—वि० अधरोरुक् ।
पयतावा—वि० पादत्राणवस्त्र ।
पयदार—वि० काणत्वादिदोषयुक्त ।
पयरधरी—पाएर पकड़व ।
पयरपोछा—पाएर पोछवाक (वस्त्र)
पयरबजार—बिना कण्टकादिक
रास्ता ।
पयरसंकर—चरणक भूषणविशेष ।
पर—पाँखि १ उपर २ सं० अन्य ३ ।
परकाल—गोल रेखा लिखवाक
यन्त्र ।
परगास—प्रकाश ।
परगोत्री—असगोत्र ।
परचार—प्रचार ।
परचारब—ना० परचार+अब—
प्रचार करव १ अपराधी
व्यक्तिक 'पुनः एना जनु
करी' ई कहव २ ।
परजाति—स्वजातिसँ भिन्न ।
परञ्च—सं० अ० परन्तु, पूर्वोक्तसँ
विशेष ।
परतर—उपमा, सादृश्य ।
परता—बिना जोतल (खेत) १
व्यापारमे लाभ २ ।

परता—अ० परत्व सन्ताँ, परमे
रहलासँ ।
परताएव—क्रि० परतव्+अब—
नीक अधलाह जचवाक
हेतु क्रिया ।
परतान—पठिआ आदि बिनबाक
सच्छिद्र यष्टि ।
परतार—समय (एक परतार आम
अधिक फड़य) ।
परतारब—क्रि० परतार+अब—
प्रतारणा ।
परती—बिनु जोतल भूमि ।
परतीत—प्रतीति, विश्वास ।
परती-परतित—परतीप्रभृति ।
परथन—परसन, खएवाक हेतु
खाद्य वस्तुक पुनरादान ।
परदा—वि० पर्दा, अन्तर्धा, आवरण
परदेश—अन्यदेश, विदेश ।
परदेसिआ } —विदेशमे
परदेशी } रहनिहार वा
होनिहार ।
परधान—प्रधान ।
परनाति—उ० प्रपौत्र वा दौहित्र-
पुत्र । स्त्री० पर-
नातिनि ।
परनाम—प्रणाम ।
परन्तु—सं० अ० किन्तु ।

परपन्न—प्रपन्न, श्रद्धास्पद ।
 पर-परोसी—गृहसमीपी तथा
 तत्समीपी उभय ।
 परव—पर्व, ग्रहणादि ।
 परवतिआ } —पर्वतमेरुहनिहार
 परवती } वा होएनिहार ।
 परवरस—वि० भरणपोषण ।
 परवल—प्रबल ।
 परवा—पारावत, पक्षिविशेष ।
 परवापाँखि—धान्यविशेष ।
 परवाहि—वि० चिन्ता ।
 परवेश—प्रवेश ।
 परभूत } —प्रभुत्व, प्रभुता,
 परभूता } सामर्थ्य ।
 परमाद्—प्रमाद्, उचितो अप्रिय
 कहबामे संकोच ।
 परमानगी—वि० आज्ञा ।
 परमाना—वि० आज्ञापत्र ।
 परमान्न—खीर, पायस ।
 परमेसर—परमेश्वर ।
 परसन—प्रसन्न १ पुनः परिवेषित
 खाद्य वस्तु २ ।
 परसमनि—स्पर्शमणि, जकर स्पर्शसँ
 धातु सोन भय जाय ।
 परसुक } —परसू मेल (विषय),
 परसुका } एकान्तरितदिनभव ।

परसू—अ० परस्वः, एकदिनान्तरित
 पूर्व वा पर दिनमे ।
 परसूत—प्रसूत रोग ।
 परसूती—स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
 परसूत—प्रसूताक रोग ।
 परसूती—स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
 परहेज—प्रहेज, अपराधसहन १
 पुनः अकरण २ ।
 परात—प्रभात १ अग्रिम दिन २ ।
 पराती—प्रभात कालमे गेय गीत ।
 परान—प्राण ।
 परि—अ० सदृश, [अन्याय कएने
 रावणक परि होएत]
 परिकव—क्रि० लोभे पुनः पुनः
 प्रवृत्ति ।
 परिक्रमा—सं० प्रदक्षिणगमन ।
 परिचय—सं० नामादिज्ञान ।
 परिचित—सं० नाम रूप आदिसँ
 ज्ञात ।
 परिचा—परीक्षा ।
 परिछनि—स्त्रीकृतृक एक प्रकारक
 शुभविधि ।
 परिछव—क्रि० वर आदिक परि-
 छनिविधि करब ।
 परिपाटी—सं० रीति ।
 परिमित—सं० अल्प परिमाणसँ युक्त
 परि लोगव—क्रि० लग्+अब—

प्राप्त होएब ।

परिह्व—क्रि० पहिरब, परिधान ।
 परुकाँ—अ० परुत्, अव्यवहित पूर्व
 वा पर वर्ष ।
 परेखव—क्रि० प्रेक्षण ।
 परेत—प्रेत, देवयोनिविशेष ।
 परेम—प्रेम ।
 परेसान—वि० हरान, परिश्रान्त,
 अतिप्रयत्नयुत ।
 परेसानी—वि० हरानी, अत्यायास ।
 परोक्ष } —अप्रत्यक्ष ।
 परोक्ष }
 परोपट्टा—प्रान्त, समन्तात् समीप
 देश ।
 परोमिन—असम्बन्धिक ।
 परोस—समीपस्थ देश ।
 परोसिआ } —समीपवासी व्यक्ति ।
 परोसी }
 पर्दा—आवरण १ आवरक पट २ ।
 पर्व—सं० ग्रहणादिक समय ।
 पर्वत—सं० पहाड़ ।
 पर्वतिआ } —पर्वत पर रहनिहार
 पर्वती } वा होएनिहार ।
 पर्वी—पर्वक खर्च ।
 पल—सं० कालक मानविशेष १

आखिक आवरण २ ।

पलइ—बड़का माछक पेट दिशक
 खण्ड ।
 पलखति—अवकाश ।
 पलगर—अधिक पल्ला, दूरस्थित ।
 पलङ्ग—पत्यङ्क ।
 पलटन—परिवर्त्तन १ वि० सैन्य २
 पलटब—क्रि० पूर्वस्थितिक पुनर्लाभ
 पलथा—पद्मासनादि ।
 पलथा मारब—क्रि० मार्+अब—
 पद्मासनादि लगाएब ।
 पलपल—अति कोमल (आम्रादि) ।
 पलपलाएब—क्रि० पलपल्+अब—
 अति कोमल होएब ।
 पलवा—मत्स्यविशेष ।
 पलरा—तराजूक पृथक् पृथक् उभय
 अङ्ग ।
 पलाएब—क्रि० धान्यादिक अधिक
 पत्रसँ युक्त होएब ।
 पलाओ—मांसादिसँ रचित कृताञ्ज-
 विशेष ।
 पलाँकी—शाकविशेष ।
 पलार—उच्चप्रदेशसँ प्रवाह ।
 पलार फेँकब—क्रि० वर्षासँ उपरसँ
 पानिक प्रवाह ।
 पलास—पलाश, पुष्पविशेष ।
 पलासपीपरि—ओषधिविशेष ।

पलासी—पलासक बीआ ।
 पलिआ—धान्यविशेष ।
 पलित—अपवित्र ।
 पलिताह—उ० घृणास्पद वा अपवित्र
 काज कएनिहार ।
 स्त्री० पलिताहि ।
 पलिताही—स्त्री० घृणास्पद काज
 कएनिहारि निव ।
 पलै—बड़का माछक पेट दिशक खण्ड
 पलथा—आसनबन्ध ।
 पलथा मारब—क्रि० मार+अब—
 आसनबन्ध लगाएब ।
 पल्लव—सं० पत्र ।
 पल्ला—दूर १ केबाड़ तराजू आदि
 गुग्मवस्तुक एक अङ्ग २ ।
 पवित्री—पवित्रतासम्पादक औंठी ।
 पसओना—जाहिसँ माँड़ पसाओल
 जाए ।
 पसर—रात्र्यन्तमे महिसिक प्रसरण-
 समय ।
 पसरब—क्रि० प्रसरण ।
 पसाएब—क्रि० पसब+अब—
 प्रसावण, पात्रकेँ
 झुकाए माँड़ आदिक
 खसाएब १ मण्डादि
 खसाए भात आदिकेँ
 संस्कृत करब २ [प्रथम

अर्थमे माँड़ कर्म, दोसरमे
 भात] ।
 पसार—प्रसार, विस्तार ।
 पसारी—नियत रूपेँ परिवारक कार्य
 कएनिहार व्यवसायी, यथा
 धोबि, नौआ इत्यादि ।
 पसाहनि—स्त्रीक कपारमे शोभाय
 चित्ररचना ।
 पसाही—भूमिस्थ तृणमे परम्परा
 सम्बन्धक कारण अग्निक
 प्रसरण ।
 पसीम—कण्टकमय शाखायुक्त
 क्षुपविशेष ।
 पसेना—घाम, स्वेद ।
 पसेरी—पञ्चसेटकी, मनक अष्टमांश
 मान ।
 पस्त—वि० दबल, धसल ।
 पहटब—क्रि० काष्ठकेँ समतल
 करबाक हेतु छीलब ।
 पहटा—माछ मारबाक साधनविशेष ।
 पहथ—एक लप परिमाण ।
 पहपटि—दुराग्रह (शिशुक) ।
 पहपटिआ—दुराग्रही (शिशु) ।
 पहर—प्रहर, कालक परिमाणविशेष
 पहररतिआ—रातुक चारिमः पहरमे
 उगनिहार (तारा) ।
 पहरा—पहर-पहरमे रक्षकक सतर्कता,

रक्षा ।
 पहरिआ—पहरद्वार ।
 पहल—स्तम्भादिमे समन्तात अनेक
 समतलीकृत भाग ।
 पहलमान—मल्ल ।
 पहलमानी—मल्लक कार्य ।
 पहलेज—लताफलविशेष ।
 पहाड़—पर्वत ।
 पहाड़ी—पर्वतीय ।
 पहाड़ी मेना—मेनाक प्रभेद ।
 पहिआ—रथचक्र ।
 पहिआएब—पहि+अब—पाहि ल-
 गाएब ।
 पहिगर—गतायातयोग्य (स्थान)
 पहिने—अ० प्रथमतः ।
 पहिरना—परिधानीय ।
 पहिरब—क्रि० परिधान ।
 पहिल—प्रथम ।
 पहिल-सौम—सन्ध्याक प्रथम भाग
 पहिलुक—प्राथमिक ।
 पहिलुका—प्रथमप्रकारक ।
 पहिलोठि—स्त्री० प्रथमप्रसूता
 (गाए आदि) ।
 पही—माछ मारबाक साधनविशेष ।
 पहु—स्वामी (गीतमे) ।
 पहुआ—पक्षिविशेष ।
 पहुँच—प्राप्ति ।

पहुँचनामा—प्राप्तिपत्र ।
 पहुँचब—क्रि० प्राप्ति ।
 पहुँचा—मणिबन्ध १ मणिबन्धक
 भूषणविशेष २ ।
 पहुँचाएब—क्रि० पहुँचब+अब—
 प्रापण ।
 पहुँची—मणिबन्धक भूषणविशेष ।
 पहुनघरा—अतिथिगृह ।
 पहुना—शूद्रक जामाता ।
 पहुनाइ—पाहुन होएब ।
 पहुलाठ—डाँड़ ओ जाँघक सन्धिस्थल
 पाइ—पण, कच्चा, आनाक चतुर्थांश,
 पैसा ।
 पाइट—हर बड़बामे एक बड़दकेँ
 दोसर बड़दक सङ्ग ।
 पाउजि—रोमन्ध ।
 पाएब—क्रि० पब+अब—प्राप्ति १
 अरक्षित वस्तुक ग्रहण २ ।
 पाएर—चरण ।
 पाओ—सेरक चतुर्थांश परिमाण,
 पाद ।
 पाओज—रोमन्ध, पाउजि ।
 पाक—सं० महानस, रान्हव १
 भत्ता २ वि० उद्धृत,
 निर्दोष ३ ।
 पाँक—पङ्क, थाल ।
 पाकड़ि—पर्कटी, वृक्षविशेष ।

पाकव—क्रि० पक्+अब—शरीरमे
अभिनक संयोग होएब १
पक् होएब २ ।
पाँकी—जलक सङ्ग आबि बैसक
श्लक्ष्ण (माटि) ।
पाखडि—धान्यविशेष ।
पाखण्डी—नास्तिक ।
पाखा—पार्श्व ।
पाँखि—पक्ष, पक्षीक उड़बाक साधक
अङ्ग ।
पाँखुर—बाँहिक ओ कान्हक जोड़ ।
पाग—उष्णीष, वस्त्ररचित शिरो-
भूषणविशेष ।
पागव—क्रि० पग+अब—चीनीक
सिरकासँ युक्त करब ।
पाच—सूचीक अग्र वारंवार भोँकि
औषधकेँ त्वचाक तर पहुँचाएब
पाँच—पञ्चसंख्यायुत ।
पाँचम—पञ्चम ।
पाछाँ } —पृष्ठदेश १ अ०
पाछू } पश्चात् २ ।
पाँज—वस्तु पकड़बामे वर्तुलीकृत
बाहु ।
पाँजर—पेटक दुहू भाग ।
पाँजि—पञ्जी, वंशानुक्रमेँ पुरुषक
नामावली ।

पाजी—वि० बदमास, दुष्ट ।
पाट—पट्ट १ धोबीक दाढ़ २ ।
पाटव—क्रि० पट+अब—पजेबा
आदिसँ आच्छादित करब १
व्याप्त होएब २ ।
पाटल—जलादिसँ व्याप्त १ पजे-
बासँ आच्छादित समतल
छदिसँ युक्त २ ।
पाटापाटी—मतभेदप्रयुक्त दू दल
होएब ।
पाटि लागव—क्रि० लग+अब—
बड़दक शिक्षार्थ प्रारम्भिक
हलप्रहण ।
पाटी—शिक्षार्थ काष्ठनिर्मित लेखपट
१ केशविन्यासविशेष २ ।
पाठ—सं० पढ़ब ।
पाठक—सं० उपाधिविशेष १ पाठ
कएनिहार २ ।
पाठा—सं० ओषधिविशेष १ मल्लक
शिष्य, पट्टा २ ।
पाठी—बिनु बाहलि छागी ।
पाँड़रि पाटला, वृक्षविशेष ।
पाड़ा—उ० महिसिक बच्चा । स्त्री०
पाड़ी ।
पाँड़ि पाण्डेय, ब्राह्मणक उपाधि-
विशेष ।
पाढ़ डाँड़क भूषणविशेष ।

पाढ़ि—विभिन्न वर्णक वस्त्रक अन्तिम
अवयव ।
पग्न—पत्र ।
पातड़ि—भगवतीक हेतु क्षीरपाकादि
१ खड़िकासँ अनेक पातकेँ
जोड़िबनाओल भोजनक
पात २ ।
पातर—कृश, सूक्ष्म ।
पाँतर—कान्तार, प्रान्तर, निर्जन
पैघ भूमि ।
पाता—निमन्त्रणपत्र ।
पाति—स्त्रीक बाहुक अलङ्करण-
विशेष ।
पातिल—भात रन्हबाक योग्य पैघ
मृत्पात्र ।
पाँती—पङ्क्ति ।
पाँतीजोड़ (र)—पङ्क्तिबद्ध ।
पात्र—सं० कष्टहा, श्राद्धमे पुजओनि-
हार ब्राह्मण १ योग्य २ वस्तु
रखबाक आधार ३ ।
पाथव—क्रि० पथ+अब—स्थिर
कए राखब [चिपड़ी बनसी
वा कान पाथू] ।
पाथर—प्रस्तर ।
पाथेय—सं० बाटमे खाद्य, बटखर्चा ।
पादव—क्रि० पद+अब—अपान-
वायुत्यागशब्द ।

पान—पर्ण, नागवल्ली १ ताम्बूल २
पानापत्ती—ओषधिविशेष ।
पानापोठी—लताविशेष ।
पानि—पानीय, जल ।
पाप—सं० अधर्म ।
पापड़—कृतान्नविशेष ।
पापी—सं० पापयुक्त ।
पाबनि—पावनी तिथि, व्रतपूजादिक
विशिष्टतिथि ।
पाबनितिहार—पाबनिप्रभृति ।
पाय—अङ्गक दाँष ।
पायर—पाएर, चरण ।
पाया—इष्टकास्तम्भ ।
पार—धारक अपर तट १ पर्यायेँ
प्रवर्तमान क्रियाक हेतु ककरो
प्राप्त अवसर २ ।
पार उत्तरव—क्रि० धारक अपर
तट जाएब ।
पारना—पारणा, उषवासोत्तर भोजन
पारव—क्रि० पार+अब—कुठारा-
दिक्रिया ।
पारवारी—पारावारक क्रिया,
तटान्तरगमन ।
पारा—पारद, धातुविशेष ।
पारी—पर्यायप्राप्ति, पर्यायतः प्राप्त
अवसर ।
पाल—नौकाक गुणवृक्षक कपड़ा ।

पालकी—शिविकाविशेष ।

पाल खाएब—क्रि० ख+अब—
घोड़ीक बाहब ।

पालन—प्रतिपाल ।

पालब—क्रि० पाल्+अब—पालन
करब ।

पाला—हिम, बर्फ ।

पालिस—वि० श्लक्ष्ण लेप, दढ़
लेपविशेषसँ रखब ।पालिस्तर—वि० सुरखीचून प्रभृ-
तिक दढ़ लेप ।पालो—हरक अवयव जे बड़दक
कान्हपर रहैछ ।पास—कोदारि प्रभृतिक छिद्रयुक्त
अङ्ग ।पासँग } —तुलाक असाम्य, दुनू
पसङ्ग } पल्लाक उठओला पर
असमानता ।

पासनि—खुरपी ।

पासवान } —दुसाधक उपा-
पासमान } धि ।पासा—देवनाक्ष, चौपड़ि आदि
क्रीड़क उपकरणविशेष ।पासि—खाट आदिक चारु कातक-
अङ्ग ।

पासी—मद्यव्यापारी जातिविशेष ।

पाहि—हलादिसँ धएल क्षेत्रभाग १
मूलक पता, भाँजि २ ।पाहि लागब—क्रि० लग्+अब—
हलादिसँ धएल भागक कर्षणादिक
समाप्त होएब १ प्रकरणसमाप्ति २
चोर आदिक गेल मार्गक चिह्न-
ज्ञान होएब ३ ।पाही } —ग्रामान्तरक अ-
पाहीपट्टी } सामी ।

पाहुँच—मणिबन्ध, पहुँच ।

पाहुन—प्राधुण, अतिथि ।

पाहुन-परक—प्राधुणादि ।

पाहुर—सूगरक बच्चा ।

पाहुर कीचब क्रि० किच्+अब—
ठोरपर दाँत बैसाए कौधमुद्रा
करब ।

पिअ—प्रिय (गीतादिमे) ।

पिअब—क्रि० पिब्+अब—पान

पिआजु—पलाण्डु ।

पिआर—जलादिपुष्ट ।

पिआस—पिपासा ।

पिआसल—पिपासित ।

पिआहुर—जलपुष्ट धान्यादिवृक्ष ।

पिउसा—पुं० पितृव्यसुस्वामी, पि-
उसिक पति ।

पिउसि—स्त्री० पितृव्यसा, पिताक

बहिनि ।

पिउसी—स्त्री० पितृव्यसा (सम्बो-
धनमे) ।

पिक—तमाकू आदिक थूक ।

पिकदान } —थूकारपात्र ।

पिकदानी }

पिक्की—पुक्की, मुखध्वनिविशेष ।

पिचड़ा—दबलासँ चिपिटाकार ।

पिच्चड़ि—धान्यविशेष ।

पिच्छड़(र)—पिच्छल ।

पिछड़(र)ब—क्रि० पिच्छलता-
प्रयुक्त पादस्खलन ।

पिछू—अ० प्रत्येक ।

पिजओना—जाहिपर अस्त्र पिजा-
ओल जाए ।पिजड़ा } —पञ्जर, पालित पक्षीकेँ
पिजड़ा } बद्ध रखबाक वस्तु ।पिजाएब—क्रि० पिज्+अब—
अस्त्रक वर्षणसँ तीक्ष्णी-
करण ।पिजुआएब—ना० पिज्+अब—
पीजुसँ युक्त होएब ।पिटना—जाहिसँ बारंवार पीटि
भूमि सरि कएल जाए ।

पिटुआ—पीटिकेँ बनाओल

(लोहिआ आदि) ।

पिट्टा—वृक्षविशेष ।

पिठकट—मत्स्यादिक पीठ दिशक
खण्ड ।

पिठबन—पृष्ठिपर्णी ।

पिठार—पिछाड़क, पानि दए पीसल
चाउर ।

पिठिआ—अव्यवहित जनमल (नेना)

पिठिआ घाओ—पीठक व्रणविशेष ।

पिठिआ ठोक—पाछाँसँ दौड़ब ।

पिड़ही—पीड़ी, भोजनकाल बैसबाक
काष्ठपीठ ।पिड़ाएब—ना० पिड़्+अब—पीड़ासँ
युक्त होएब ।

पिड़ार—फलविशेष ।

पिड़ुकिआ—कृतान्नविशेष ।

पिड़िआ—छोट पिड़ही ।

पिण्ड—सं० पितृकर्मक हेतु वर्तुली-
कृत अन्न ।

पिण्डखजूर—खजूरक एक प्रभेद ।

पिण्डस्याम—ईषद्गौर ।

पित—पित्त ।

पितड़ि(रि)आ—पित्तल ।

पितपापड़—पर्पटी ।

पितमरू—सहनशील, श्रमसह,
अक्रोधन ।

पितर—मृत पिता आदि ।

पितरपच्छ—पितृपक्ष, आश्विन-
कृष्णपक्ष ।
पितराइनि—स्त्री० मृत माता आदि ।
पिता—जनक, बाप ।
पिताएव—क्रि० पितृ+अब—क्रोध-
युक्त होएब ।
पिताह—उ० क्रोधस्वभावक ।
स्त्री० पितहि ।
पितिआइनि—स्त्री० पत्नीक स्त्री,
पितृव्यपत्नी ।
पितिआक—अ० पितृव्यसम्बन्धी
(धनादि) ।
पितिऔत—उ० पितृव्यक अपत्य ।
स्त्री० पितिऔति ।
पितौकिआ—पुत्रजीव, वृक्षविशेष ।
पित्त—सं० उदरस्थ प्राण्यङ्गविशेष ।
पित्तिड़ि(रि)—पित्तल, पीतलोह ।
पित्ती—पु० पितृव्य, बापक भाए ।
पिनकी—हफ्मी खएलासँ झुकनी ।
पिपनी—पक्ष, औखिक भपनाक
केश ।
पिपर—पिप्पल, वृक्षविशेष ।
पिपरपत्ता—पिप्पलपत्राकार कर्ण-
भूषण ।
पिपरमिण्ट—वि० क्षुपाविशेष ।
पिपरा—अन्नविशेष ।
पिपरामूल—पिप्पलीमूल, ओषधि-

विशेष ।
पिपरि—पिप्पली ।
पिपही—शिशुक वासविशेष १
बीजसंलग्न छोट आ-
मक गाछ २ ।
मिरबटनी—पीरक मध्यमे देवाक
काठी ।
पिरी—प्रिय ।
पिरीति—प्रीति ।
पिरोजा—फलविशेष ।
पिरोछ—किञ्चिन्मात्र पीतवणक ।
पिलपिलाह—उ० कृश, अपुष्ट
(जीव) । स्त्री० पिलपिलाहि ।
पिलही—झीहा, पेटक रोगविशेष ।
पिलिआ—कुकुरक स्त्री ।
पिलुआ—पीलु, पिपीलिका ।
पिल्ला—उ० कुकुर । स्त्री० पिल्ली ।
पिशाच—सं० देवयोनिविशेष ।
पिसब—क्रि० पेषण ।
पिसाओन—पिसबाक वेतन ।
पिसाँच—पिशाच, देवयोनिविशेष ।
पिसिआ—स्त्री० पिउसि, बापक
बहिन, पितृव्यसा (संबोधन-
मात्रमे) १ पेषणकर्म २ ।
पिसिआ सासु—स्त्री० पतिक
पिउसि ।
पिसिऔत—उ० पिउसिक अपत्य ।

स्त्री० पिसिऔति ।
पिसिमाल—अत्यन्त पिष्ट ।
पिस्ता—फलविशेष ।
पिहकारी—उच्चतर मुखध्वनि ।
पिहना—कोठीक उपरका भपना ।
पिहानी—प्रहेलिका ।
पिहुआ—पक्षिविशेष ।
पीअब—क्रि० पिबू+अब—पान
करब ।
पीअर—पीत-वर्ण ।
पीअर दुइस—अत्यन्त पीतवर्ण ।
पीआ—होलिकाकीङ्गार्थ पीअर जल ।
पीअब—क्रि० पिबू+अब—पान करब
पीक—ताम्बूलादियुक्त त्याज्य मुख-
जल ।
पीचब—क्रि० पिच्+अब—जोरसँ
दाबब ।
पीछू—प्रत्येक, [घर पीछू एकक
रुपआ बाँट] ।
पीजु—पूय, व्रणक विकार ।
पीटब—क्रि० पिट+अब—ताड़न ।
पीठ—पृष्ठ ।
पीड़ा—सं० कष्ट ।
पीड़ित—सं० कष्टयुक्त ।
पीढ़ी—बैसबाक काष्ठपीठिका १
वंशपरम्परा २ ।
पीताम्बरी—पीत पट्टवस्त्र ।

पीनी—धूम्रपानसाधक तमाकूक
पिण्ड ।
पीपर—पिप्पल, वृक्षविशेष ।
पीपरि—पिप्पली, ओषधिविशेष ।
पीर—सूत कटवाक हेतु सुसज्जित
भिड़िआओल तूर ।
पीरा—पीतवर्णप्रकारक ।
पीरावाँस—वंशविशेष ।
पीरी—किञ्चित् पीतिमा ।
पीलु—पिपीलिका ।
पीसब—क्रि० पिसू+अब—पेषण ।
पीसीमाल—अत्यन्त पिष्ट ।
पुकार—वि० सोर करब, आह्वान ।
पुकारब—वि० क्रि० पुकारू+अब—
सोर करब ।
पुक्की—उच्चैःपूकार, 'ऊ' इत्यादि
उच्चतम ध्वनि ।
पुक्की पारब—क्रि० पारू+अब—
जोरसँ 'ऊ' इत्यादि
ध्वनि करब ।
पुक्ख—पुष्प (नक्षत्र) ।
पुच्छ—सं० लाङ्गूल ।
पुच्छड़(र)—पाछाँ पुच्छजेकाँ लागल
पुछब—क्रि० प्रदन करब ।
पु,ारी—प्रदत्तपूर्वक अन्वेषण ।
पुजाएब—क्रि० पुजबू+अब—पूजा
कराएब ।

पुजैगिरी—पूजाकर्त्ता ।

पुटपुड़ } —आँखि ओ कानक
पुटपुड़ी } मध्यभाग ।पुड़हर—पुरःस्थाप्य घट (विवाहादि
माङ्गलिक विधिमे) ।पुड़िआ—औषधादिक छोट कागजसँ
बनाओल पुटक ।पुतखौकी—स्त्री० पुत्रजग्थी, अपन
बेटाकेँ खएनिहारि (गारि) ।पुतरी—पुत्तलिका, शालभञ्जिका,
बालक्रीडार्थ छोट मनुष्यक
मूर्ति १ आँखिक डिम्भा,
कनीनिका २ ।

पुतली—कनीनिका, कृष्णतारक ।

पुतहु—स्त्री० पुत्रवधू ।

पुत्ती—मीडल मडुआ आदिक तुष ।

पुदीना—शाकविशेष ।

पुन—अ० पुनः, फेर ।

पुनगा } —वृक्षमे ठारि चलबाक
पुनगी } अङ्कुर ।पुन्याह—प्रजासँ कर ओसूल आरम्भ
करबाक पुण्यदिन ।

पुवरिआ—पूर्वमे स्थित ।

पुवाहुत—समीप पूर्वस्थित ।

पुरओना—पूर्तिकारक ।

पुरजी—तात्कालिककार्यवाही पत्र-

विशेष ।

पुरजी काटव—क्रि० कट्+अब—

पुरजी लिखब ।

पुरना—प्राचीन, पुरातनप्रभेदक ।

पुरब—क्रि० पूरण ।

पुरबा—पूर्व देशसँ अवैत (बसात) ।

पुरबासाहि—मुखोत्तर, परोक
कथाक मुखतः परिबोधन ।

पुरबी—रागिनी विशेष ।

पुरश्चरण—सं० अनुष्ठान ।

पुरश्चरणिआ—पुरश्चरणमे
नियुक्त ।

पुरहर—माङ्गलिक पुरःस्थाप्य घट ।

पुरहरी—भूषणविशेष ।

पुराएब—क्रि० पुरब+अब—पूर्ण
करब ।

पुरान—प्राचीन, जीर्ण ।

पुरानए—पुनर्नवा ।

पुरिबा—पूर्वदेशागत (वायु) ।

पुरुखा—पूर्वज पुरुष ।

पुरुखाह—पौरुषशाली ।

पुरैनि—कमलवृक्ष ।

पुरैनिक दह—समूलनाल कमल ।

पुरोहित—सं० देवपित्रादिकर्म कर
ओनिहार ।पुरोहिती—पौरोहित्य, पुरोहितक
कार्य ।

पुरोत } —पूर्ण होएबाक निमित्त

पुरौत } देल (अज्ञादि) ।

पुर्निमा—पूर्णिमा, पौर्णमासी ।

पुर्नी—पुष्पी ।

पुसोठ—नेनाक प्रथम पूसमे कर्तव्य
एक विधि ।पुस्ति—वि० निचला पुरुष (वंशपर-
म्परामे) ।पुस्तिपुस्तान—वि० समस्त निचला
पुरुष (वंशपरम्परामे) ।

पुहबी—धान्यविशेष ।

पू } —अपूप, पक्वान्नविशेष ।

पूअ }

पूआ }

पूछ—पुच्छ १ प्रश्न २ ।

पूछब—क्रि० पूछ्+अब—प्रश्न
करब ।

पूजा—सं० पूजन ।

पूजाघर—पूजा हेतुक घर ।

पूजापाठ—पूजाप्रभृति नित्यक्रिया

पूजी } —मूलधन ।

पूँजी }

पूठ—मालक लाङ्गलारम्भस्थलक
उभयपार्श्व ।

पूड़ा—पत्रादिरचित पुटक ।

पूड़ी—धातुरचित पुटक ।

पूत—पुत्र ।

पूब—पूर्वदेश ।

पूबा—पूर्वदेशभव अनादरणीय
व्यक्ति ।पूबाढाढ़—पूर्ववृक्षमशः पूब-पूब
भागै नीच ।

पूभर—पूर्वदेश ।

पूर—पूर्ण ।

पूरब—क्रि० पूर+अब—पूर्ण करब ।

पूरा } —पर्याप्त ।

पूर्ण }

पूर्णकलस—सं० जलपूर्ण घट ।

पूर्णमा—सं० शुक्लपक्षक अन्तिम
तिथि ।

पूल—सेतु ।

पूस—पौष (मास) ।

पृथिवी—सं० धरती ।

पेआली—नपबाक चौँगा ।

पेखब—क्रि० प्रेक्षण ।

पेँच—धुमाए-धुमाए पैसएबाक
शङ्कु ।

पेँचकस—पेँच कसबाक यन्त्र ।

पेँचिल—प्रपञ्चद्वारा स्वकार्यसाधन-
पटु ।

पेँची—कन्दविशेष ।

पेंचुल } —प्रपञ्चद्वारा स्वकार्य-
पेंचू } साधनपटु ।

पेट—उदर ।

पेटकान्ह लाधब—क्रि० लधु+अ-
ब—आहार त्यागिके पड़ब ।

पेटकुनिआ—पेटक भरै अवस्थिति ।

पेटगर—पैघ पेटवाला, अधिक
खएनिहार ।

पेटपोसा—पेट पोसनिहार, उदर-
भरणपरायण अनादरणीय ।

पेटपोसू—उदरभरणपरायण ।

पेटफुल्ली—वायुसँ पेटक फुलब ।

पेटबद्धी—भूषणविशेष ।

पेटबाहि—अतिसार ।

पेटार—जलीय तृणविशेष १
मज्जूषा २ ।

पेटारा—मध्यवर्तिदीपप्रकाशसँ
आकाशमे उड़बाक कागजक
बनाओल पुरुषादिमूर्ति ।

पेटारी—छोट मज्जूषा ।

पेटाह—अधिक खएनिहार, भोजन-
लोहप ।

पेटी—लौहादिरचित मज्जूषा ।

पेटू—पेटाह, खएबापर अधिक ध्यान
रखनिहार ।

पेंड़—गाछ ।

पेड़ा—मिष्टान्नविशेष १ एकबट्टी २ ।

पेण—गाछ ।

पेणा—पेंड़, मिष्टान्नविशेष ।

पेंतालीस—पञ्चचत्वारिंशत् ।

पेंतालीसम—पञ्चचत्वारिंशत्तम ।

पेन—बासन आदिक तरका भाग ।

पेना—हर जोतबाक ठेजा ।

पेनाठ—यष्ट्यादिक निचला स्थूलभाग ।

पेनिआएब—क्रि० पेनी+अब—
पाछाँ-पाछाँ लागब ।

पेंप } —स्थूल अङ्गुर ।
पेंपी }

पेमाल—पिसीमाल, परिश्रान्त ।

पेरब—क्रि० उत्पीड़न ।

पेसतोल—वि० अस्त्रविशेष, अति-
ह्रस्व भुशुण्डी ।

पेसब—क्रि० पैसाएब ।

पेस्तर—वि० पूर्व, पहिने ।

पैघ—दीर्घ, महान् ।

पैघत्व—महत्त्व ।

पैच—विना सुदिक शृण ।

पैचब—क्रि० शूर्पक्रियाविशेष ।

पैचहार—पैच लेनिहार ।

पैचाड़—पैच लेबदेबक व्यवहार ।

पैड़ी—पैरी, स्त्रीचरणक भूषणविशेष ।

पैता—पवित्र, लगाओल कुशविशेष ।

पैत्रिक—पितृवासभूमि ।

पैनि—करीनक पट ।

पैरबी—वि० कार्यसिद्धिमे नाना
प्रकारँ सहायता पहुँचाएब ।

पैली—चोंगा आदि नपना ।

पैसब—क्रि० प्रवेश ।

पैसा—कच्चा, डेरआ ।

पैसाएब—क्रि० पैसबू+अब—प्रांवल
करब ।

पोआ—सापक बच्चा ।

पोआर—पलाल ।

पोखराज—मणिविशेष ।

पोखरि—पुष्करिणी ।

पोखरिभाँखरि—पोखरिप्रभृति
भयस्थान ।

पोखरिआ—पोखरिमे उपजाओल
(बीजवृक्ष) ।

पोचारा—ढौर, भित्तिक उपलेपन ।

पोछब—क्रि० प्रोच्छन्न, प्रक्षालन ।

पोटरी—पोट्टली ।

पोटा—नासाकफ ।

पोठी—प्रोष्ठी, मत्स्यविशेष ।

पोत—माल, भूमिकर १ लेप २ ।

पोतब—क्रि० लेपब ।

पोतभरिआ—राजकरक भारबाहक ।

पोथा—बहुत पैघ पुस्तक ।

पोथी—पुस्तक ।

पोथीपतड़ा—पोथीपतड़ाप्रभृति ।

पोन—नितम्ब ।

पोनखस—अल्पनितम्बक ।

पोनचटक—पोनमे मारब ।

पोनचटक देब—क्रि० पोनमे मारब ।

पोंपाँ—वाद्यशब्दक अनुकरण ।

पोर—वशादिक ओ अङ्गुरीक पर्व ।

पोरगर—दूर-दूर पोरवाला ।

पोरो—शाकविशेष ।

पोळ—वि० रहस्य ।

पोलखाह—यत्किञ्चित् भागमे निम्न
(लकड़ी आदि) ।

पोलो—परिमाणविशेषसँ युक्त सूत,
पूल सं० ।

पोलाओ—दृष्टान्तविशेष ।

पोस—पोषण ।

पोसपूत } —कृत्रिमपुत्र ।
पोसपुत्र }

पोसब—क्रि० पोषण ।

पोसा—पोसल (कुकुर आदि) ।

पोसाओन—पोसबाक केतन ।

पोसिआ—पोसबाक हेतु देल (माल)

पोसिआ लगाएब—क्रि० लगबू+
अब—पोसबाक हेतु देब ।

पोस्ता—धुपविशेष ।

पोस्तादाना—पोस्ताक अन्न ।

पौआ—कुड़प, सेर आदिक चतु-

थांश मान १ खाटक	कएनिहार ।
स्तम्भ २ ।	प्रभाच्छए—प्रभाक्षय, अप्रतिभत्व ।
पौआही—एक पौआ प्ररिमाणक	प्रमाद—सं० अनवधानता १ उचितो
नपना ।	क्रिया भयसँ नहि करब २ ।
पौछ—केराक छोटा गाल ।	प्रसक्ति—सामर्थ्य ।
पौती—वंशरचित मञ्जूषाविशेष ।	प्रसाद—सं० प्रसन्नता १ नैवेद्य २ ।
पौत्र—उ० सं० पुत्रक अपत्य ।	प्रहेज—परहेज, निवृत्ति, निरोध ।
स्त्री० पौत्री ।	प्राचीन—सं० पुरातन ।
पौथान—पादस्थान, सुतबामे पाए	प्राण सं० जीवनवायु ।
जेमहर रहए से स्थान ।	प्रात—प्रभात ।
पौर—पौरव ।	प्रातःकाल—सं० प्रभात समय ।
पौरव—क्रि० दहीक हेतु पात्रामे	प्राण— प्राण ।
दुग्धप्रक्षेप ।	प्रिय—सं० प्रेमास्पद, मनोऽनुकूल ।
प्रकाश—सं० प्रकट, आलोक ।	प्रियगर—अधिक प्रेमास्पद ।
प्रकार—सं० प्रभेद, रीति ।	प्रीति—सं० प्रेम, अनुराग ।
प्रकोप—सं० उपद्रव, अधिक क्रोध ।	प्रेत सं० परेत, भूतयोनिविशेष ।
प्रचण्ड—सं० उद्धत, तीव्र ।	प्रेम—सं० प्रीति ।
प्रण—प्रतिज्ञा ।	प्रेमी—सं० प्रिय, प्रेमपात्र ।
प्रणाम—सं० नति ।	प्यादा—वि० पदाति १ सतरज्जक एक
प्रणामी—प्रणाममे देल (द्रव्य) ।	गोटी २ ।
प्रति—एकादशाहमे काम्य उ.सुष्ट	प्याद-प्यादान—वि० सतरज्जमे दू
वस्तु १ अ० सं० प्रसङ्ग २ ।	प्यादाक सहेँ मातु ।
प्रतिपाल—सं० भरणपोषण, रक्षा ।	प्यादसह—सतरज्जमे बादशाहकेँ
प्रतीत—सं० ज्ञात ।	प्यादाक साम्मुख्य ।
प्रधान—सं० प्रमुख ।	प्याली—पेआला, नपनाक प्रभेद ।
प्रपञ्च—सं० प्रच्छन्न क्रियाजाल ।	प्यूसा पुं० पितृष्वसृपति, पिताक
प्रपञ्ची—सं० प्रच्छन्न अधिक क्रिया	बहिनिक पति ।

प्यूसि—स्त्री० पितृष्वसा, पिताक	फकिरना—फकीरकेँ देल जागीर ।
बहिन ।	फकीर—वि० उ० बैरागी, परलोक-
फ	साधकविशेष । स्त्री० फकिरनी ।
फइल—विस्तृत असंकीर्ण (स्थान) ।	फफकच—उ० व्यवस्थाशून्य अधिक
फकचोद—असंगत विवाद ।	बजनिहार ।
फकफक करब—देहमे हृदयवायु-	स्त्री० फवकचि ।
मात्रक सञ्चालन ।	फक्कर—अकिञ्चन ।
फकफकी—देहमे हृदयवायुमात्रक	फक्की—औषधक फाँकब ।
चलन ।	फगुआ—फागु, फागुनक अन्तिम
फक्का—फाँका ।	समय ।
फटकदाली—अनुचित नफा उठए-	फगुनहट(टि)—फागुन तथा
बाक हेतु प्रौढ़ मिथ्याभाषण ।	तत्समीप समय ।
फटकफन्द—प्रच्छन्न रूपेँ उप-	फचफच बाजब—क्रि० असङ्गत
स्थापित बाधा ।	अधिक बाजब ।
फकड़ा—पिहानीतुल्य बालविनोदार्थ	फचारि—फचफच बजनिहार ।
प्रचलित अतात्पर्यक वाक्य ।	फजहति—वि० गञ्जन ।
फकसिआर—जन्तुविशेष ।	फजूल—वि० व्यर्थ ।
फकसिआरी काटब—क्रि० फक-	फभति—वि० भर्त्सन ।
सिआर जन्तु जेकाँ दीन	फटक—आलयवेष्टनभित्तिक कपाट,
शब्द बाजब । देहक	फाटक ।
अक्षमतामे परिचारकहीन	फटकब—क्रि० सूपसँ संशोधन ।
व्यक्ति दीन शब्द बजैत	फटकाओन—फटकबसँ त्याजित १
अछि “अओ, केओ पानि	फटकबाक वेतन २ ।
दिअ ऐन्हि !” इत्यादि ।	फटकार—आडम्बर ।
फकारि—कखनहु-कखनहु मेघक	फटकारब—क्रि० फटकार+अब—
टुकड़ासँ वृष्टि ।	तुच्छबुद्ध्या वाचा निरा-
	करण ।

फट दए—अ० शीघ्रतया ।
 फटफट करब—क्रि० असमीचीन
 निधोख बहुभाषण ।
 फटफटार—वेष-भूषादिसँ सुसजित
 (निन्दामे) ।
 फटाक दए—अ० शीघ्रतया ।
 फटिक—स्फटिक ।
 फटोन—फाटल दुग्धविकार १ फाटल
 सन २ ।
 फट्टा—बाँसक फाड़ल अधबाड़,
 बीचसँ फाड़ल खण्ड ।
 फट्टी—छोट फट्टा ।
 फड़कब—क्रि० प्रस्फुरण १ लेन-देनमे
 शेष ।
 फड़की—कपाटस्थानीय वंशनिर्मित
 द्वारावरण ।
 फड़गोड़—विशेष चलनिहार ।
 फड़ब—क्रि० गाछ फलयुक्त होएब
 १ कीटक उत्पत्ति २ ।
 फड़बन्ही—परिकर, बद्धकक्षता ।
 फड़भी—फरभी, भूजल यव, धाना
 सं० ।
 फड़हर—परस्पर असंलग्न (भात) ।
 फड़हरी—सिकस्ती, रुपैआक
 अभाव ।
 फड़ुआ—फाड़िकेँ बनाओल
 (तौनीप्रभृति) ।

फतिङ्गा } —शलभ ।
 फतिङ्गी }
 फनकी—छोट फँसरी ।
 फनगर—अधिक फानक (सूति,
 पाति प्रभृति) ।
 फनफनाएब—क्रि० फेनयुक्त हो-
 एब ।
 फनफनी—तैलादिमे फेनोद्गम ।
 फनिगा } —शलभ ।
 फनिगी }
 फनैत—अधिक चलब बाजबबाला
 (निन्दामे) ।
 फन्ना(न्नी)—फनकी ।
 फनफनाएब—क्रि० फनफन्+अब—
 बाँतर वस्तु खेलासँ घाओक
 वृद्धि ।
 फबब—क्रि० नैपुण्यसँ क्रिया सफल
 होएब ।
 फर—फल (आम्रादि) १ आरु २ ।
 फरक—अन्तर, विभेद ।
 फरकभरा } —विरल (धान्य-
 फरकभार } वृक्षादि)
 फरकब—क्रि० फड़कब, प्रस्फुरण
 फरकी—फड़की, वंशरचित द्वारा-
 वरण ।

फरकोस—प्रौढ़ (चलबा-फिरवामे) ।
 फरजी सतरञ्जमे बादसाहक प्रधा-
 न पात्र १ वि० अनका नामेँ
 उल्लिखित भूमि २ ।
 फरता—फरसार, फरनिहार (आम्र-
 वृक्षादि) ।
 फरफराएब—क्रि० फरफर+अब—
 फरफर शब्द करब, जलादिबद्ध
 खगादिक पक्षधूनन शब्द ।
 फरफैसी—मिथ्या दोषारोपण ।
 फरब—क्रि० फड़ब, उद्गतफलयुक्त
 होएब ।
 फरभी—फड़भी, मृष्टयव, धाना
 सं० ।
 फरमा—वि० फार्म १ साँच,
 डाँचा २ ।
 फरमाइस—वि० मनोऽनुकूल
 वस्तुनिर्माणक आज्ञा ।
 फरमाएब—वि० क्रि० आज्ञा देब ।
 फरमान—वि० राजाज्ञा ।
 फरस—वि० राजासनक तर
 विस्तीर्ण सुन्दर आस्तरण ।
 फरसा—अस्त्रविशेष ।
 फरसार—जे गाछ फड़ैत हो ।
 फरहर—फड़हर, असंपृक्त (भात) ।
 फराक—पृथक्, पृथग्भूत ।
 फराकित—फाल, भूमिक असङ्की-

र्णता ।

फराठी—मोट ठेंगा ।
 फरि गाड़ीक भारसह वंशद्वय ।
 फरिआएब—क्रि० फरि+अब—
 विवाद टूटब [फरिओइत अछि]
 १ फरिअब+अब—विवाद
 तोड़ब [फरिअबैत अछि] २ ।
 फरिङ्ग—निर्मल, प्रकाश ।
 फरिछोट—फरिआएब ।
 फरी—पैघ माछ ।
 फरीछ—निर्मल, प्रकाश ।
 फरुसा—अस्त्रविशेष ।
 फरुहा—आरु आदि लतीक फड़ ।
 फरुहात—वि० अप्रासङ्गिक, बाइली
 फरेब—वि० विवादमे मिथ्या व्यवहार
 फर्द—वि० प्रत्येक पत्र ।
 फर्दवाल—वि० घोड़ाक तीव्रगति ।
 फर्सा—वि० तम्बू-कनात लगओ-
 निहार म्लेच्छविशेष ।
 फरौस—वि० स्फूर्तिशील (चलब-
 फीरबमे) ।
 फल—सं० प्रयोजन १ आम्रादि २ ।
 फलकब—क्रि० विकसन ।
 फलकर—आम्रादि फलक कर (देय) ।
 फलका—बगड़ासन आरण्यक पक्षी ।
 फलगू—अङ्गाच्छादक भालरि लागल
 कनभपा टोपी ।

फलना—अमुक ।
 फलना-चिलना—अमुकप्रभृति ।
 फल फलहरी—फलकन्दमूलादि ।
 फलहारी—फलमात्र खएनिहार ।
 अन्नभिन्न फलहारोप-
 युक्त खाद्यवस्तु २ ।
 फलानेन—वस्त्रविशेष ।
 फँसब—क्रि० फाँस, पाँक आदिमे
 बद्ध होएब ।
 फसरी—फाँस, पाश, बन्धकमूत्र ।
 फसाद—वि० उपद्रव ।
 फसिआरा—फाँसी लटकओनिहार
 (चाण्डाल) ।
 फसील—वि० उपजा ।
 फहराएब—क्रि० पताकाक उद्धून्न ।
 फाँक—अर्धखण्ड (गूआ प्रभृतिक) ।
 फाँकब—क्रि० फँक+अब—अनाद्र
 लाबा प्रभृति मुहमे दए
 खाएब ।
 फाँकी—फक्किका, क्रिष्टार्थक संक्षिप्त
 लेख १ भोतिअओनाइ,
 धोखा देब ।
 फाँका—फक्का, चुरूमे गृहीत
 फाँकिके खाद्य लाबा प्रभृति ।
 फागु—फागुनमे गेय गीत ।
 फागुन—फाल्गुन (मास) ।
 फाजिल—वि० परिमितसँ अधिक १

कार्यवाहीसँ भिन्न २ ।
 फाट—विदरण ।
 फाँट—अंश ।
 फाटक—सैरदिबालककपाटयुत द्वार ।
 फाटचीट—विदरणादि ।
 फाटब—क्रि० फट्+अब—विदरण ।
 फाँटब—क्रि० फँट्+अब—विभक्त
 करब ।
 फाटब-चीटब—क्रि० विदरणादि ।
 फाँटि—लक्ष्यता ।
 फाँटि चड़ब—क्रि० लक्ष्य होएब ।
 फाँड़—पुरुषक पहिरल वस्त्रक ठेढ़न
 लगक प्रान्त (किन्तु स्त्रीक
 खोँछि) ।
 फाड़ब—क्रि० फाड़्+अब—फाँड़
 बाला नेवो आदिक विदारण ।
 फाँड़ब—क्रि० फाँड़ाक वियोजनार्थ
 विदारण ।
 फाँड़ा } —नेवो आदिक भीतर
 फाणा } त्वचासँ युक्त अनेक
 अवयव ।
 फान—उल्लङ्घन १ बाहुआदिक स्थूल-
 ताक मान २ ।
 फानब—क्रि० फन्+अब—उल्ल-
 ङ्घन ।
 फानी—पक्षी आदि बभ्रएबाक छोट
 फाँस ।

फाँफ—अधिक असत्य कथा बज-
 निहार, अव्यवस्थित ।
 फाँकड़(र)—फाँड़ ।
 फार—फाल, हलाङ्ग ।
 फारक—करक बेमाक रसीद ।
 फाँस—पाश ।
 फाँसब—क्रि० फँस+अब फाँसमे
 बद्ध होएब ।
 फाँसी—मनुष्यकेँ मारबाक पाश ।
 फाहा—लेखाद्यर्थ अग्रमे तूलादियुत
 पातर काठी ।
 फिचकारी—पित्तलादिधातुकृत
 जलप्रक्षेपयन्त्र, फुचुका ।
 फिटकिरी—स्फटिका, उपरसविशेष ।
 फिरता—आपस १ मार्गक खुमान २
 फिरती—अ० आपस अएबाक
 समयमे ।
 फिरब—क्रि० प्रतिनिवृत्ति ।
 फिरिस्ति—वि० सूची, वस्तुनामा-
 वलीलेख ।
 फिरोजा—रत्नविशेष ।
 फिलङ्ग—सतरङ्गक एक प्रकारक
 खेड़ि ।
 फिलफिलान—सतरङ्गमे दू फिलक
 सहस्र (मातु) ।
 फिसकरन—उत्साह दए हँटि
 गेनिहार (निन्दामे) ।

फिहरिस्ति—वि० फिरिस्ति, वस्तु-
 नामावलीलेख ।
 फीता—एक-दू आंगुर चाकर
 बन्धनाद्युपयोगी सूत्रनिर्मित
 लम्ब वस्तुविशेष ।
 फीरब—क्रि० फिर+अब प्रत्या-
 वर्तन ।
 फील—वि० हाथी ।
 फुकब—क्रि० फूटकरण ।
 फुचकुचाह—उ० छोटो विषयपर
 क्रोध कए बाजि उठनिहार ।
 फुचुका—वशनर्मित फिचकारी ।
 फुच्च—क्रोधसँ हल्ल ।
 फुच्ची—दूध नपबाक बहुत छोट
 पात्र ।
 फुजब—क्रि० बन्धनमुक्त होएब ।
 फुटकब—क्रि० पृथक् भए जाएब ।
 फुटकर—पृथगवस्थित ।
 फुटकुटिआ—अल्प पूजीक (दो-
 कान) ।
 फुटब—क्रि० भग्न होएब १ पृथक्
 होएब २ ।
 फुटार—कचित् दोसरो रङ्गसँ युक्त
 (छागर पाठी) ।
 फुटाह—किञ्चित् पृथक् स्थित ।
 फुटिआ—शाकविशेष ।

फुट्टा—फूटल, भग्न(बरतन आदि) ।
 फुदना—अलङ्करणमे लटकल विन्य-
 स्त सूत्रपुञ्ज ।
 फुद्दी—अति छोट पक्षिविशेष ।
 फुनगी—वृक्षक सर्वोच्च अग्रभाग ।
 फुनगुनी—उद्भूत अति सूक्ष्म अप्रि-
 कण ।
 फुनगुनी उठव—क्रि० डाह, हृदय
 मे अप्रिय लागव ।
 फुफकार—सापक फूकार ।
 फुफकार काटव—क्रि० बारंवार
 सर्पक फूकरण ।
 फुफकारब—क्रि० फुफकार+अब—
 सुहुः सर्पफूकार ।
 फुफड़ब—क्रि० दही प्रसूति उपरमे
 विकारयुक्त होएब ।
 फुफड़ा—दही आदिमे कालक
 आधिक्यजन्य उपरका
 विकार ।
 फुफड़ी-पड़व—क्रि० फुफड़ीक
 संप्राप्ति ।
 फुफुआर—फुफकार ।
 फुफुआर काटव—क्रि० बारंवार
 सर्पक फूकरण ।
 फुफुकार—सर्पक फूकार ।
 फुफुकार काटव—क्रि० बारंवार
 सर्पक फूकार ।

फुकुस—फुकुस, उदरस्थ वायुनि-
 सरणयन्त्र ।
 फुरब—क्रि० स्फूर्ति, वाक्प्रतिभा ।
 फुरसति—वि० अवकाश, छुट्टी ।
 फूर्ति—शीघ्रता १ शीघ्रकारिता २ ।
 फुलकी—फूलल (सोहारी) १ काश-
 पुष्प २ ।
 फुलकोवी—कं बीक प्रभेद ।
 फुलगर—अधिक फूलबाला ।
 फुलचठैल—नहि फड़निहार चठैल ।
 फुलभरी } —कृत्रिम पुष्पवृक्षादि
 फुलभार }
 फुलडाली—डूल रखबाक डाली ।
 फुलतोडा—फूल तोड़बाक हेतु डाली ।
 फुलतोड़ी—पुष्पक तोड़ब ।
 फुलफुलाह—उ० फूलल-सन ।
 फुलब—क्रि० ऊच्छूनता प्राप्ति ।
 फुलबन } —पुष्पोपवन ।
 फुलवाड़ी }
 फुलवाँस—वंशाकार वृक्षविशेष ।
 फुलहत्था—यष्टिविशेष, खराजल
 तथा रँगल यष्टि ।
 फुलहा } —फूल (उत्तम काँस) सँ
 फुलही } निर्मित (थारी बाटी) ।
 फुलाएब—क्रि० फुल+अब—पुष्पित

होएब ।
 फुलेल सुगन्धित तेल ।
 फुलौकी—भारमे उपयुक्त चँगैराक
 प्रभेद ।
 फुल्ला—नेत्ररोगविशेष ।
 फुल्ली—कल्ली, कलिका ।
 फुसराइटि—परश्रवणागोचर परस्पर
 संलाप ।
 फुसिआएब—ना० फुसिअब+अब—
 फूसि कहि विद्वस्त
 करव ।
 फुसिआह—उ० मिथ्याभाषण
 स्वभावक ।
 फुसुर-फुसुर—अ० अत्यन्त मन्द-
 मन्द (बाजब) ।
 फुहराम—कार्यदक्ष लघु शरीरक
 (मनुष्यादि) ।
 फुहाड़ा } यन्त्रद्वारा विकीर्य-
 फुहारा } माण जलकण ।
 फूक—फूकरण ।
 फूकब—क्रि० फूक+अब—फूक-
 रण ।
 फूजब—क्रि० फूज+अब—बन्धन-
 मुक्त होएब ।
 फूरब—क्रि० फूर+अब—बजवामे
 शीघ्र युक्तिक स्फूर्ति ।

फूर्ति—शीघ्रकारिता १ मत समर्थन-
 मे युक्तिक शीघ्र अनुसन्धान २ ।
 फूल—पुष्प ।
 फूलब—क्रि० फूल+अब—उच्छून
 ताप्राप्ति ।
 फूला—फूला, नेत्ररोगविशेष ।
 फूसि—मिथ्या ।
 फूसि-फाँसि—मिथ्या तथा अनु-
 पादेय ।
 फूह—फूही, जलकण ।
 फूह-फाह—किञ्चिन्मात्र जलवृष्टि ।
 फूहर—उ० खर्चपरध्यान नहि रख-
 निहार, स्वेच्छाचारी (निन्दामे) ।
 स्त्री० फूहरि ।
 फूही—आकाशपतित जलकण ।
 फेकब } —क्रि० प्रक्षेप ।
 फेकब }
 फेँट—मिश्रण ।
 फेँटब—क्रि० मिश्रण ।
 फेँटा—पाग ।
 फेन—सं० ।
 फेनब—क्रि० सार्द सूक्ष्म वस्तुक
 घुमाए-घुमाए हाथसँ आमर्दन ।
 फेना—मिष्टान्न-विशेष ।
 फेनाएब—ना० फेनसँ युक्त होएब ।
 फेफस—हड्डीलगक विना शोणितक

मांस ।
 फेर अ० पुनः १ घुमान २ ।
 फेरव—क्रि० आपस करब १ उँनट-
 पुनट करब २ घोड़ाक एमहर-
 ओमहर चलाएब ३ ।
 फेरि—अ० फेर, पुनः ।
 फेरी—उनटपुनट ।
 फेहम—बुझनिहार ।
 फेल—असंकीर्ण, विस्तृत (भूमि) ।
 फेलहारी—(भूमिक) असंकीर्णता,
 पर्याप्तता ।
 फौक—अन्तःशून्य (यष्टिप्रभृति) ।
 फौकचा—मत्स्यविशेष १ मालक
 अवयवविशेष २ ।
 फोकराइनि } —दूधक दोष उत्पन्न
 फोकरानि } दही-दूधक गन्धविशेष
 फोका } —बुदबुद १ विस्फोटक
 फौका } २ ।
 फोटार—टिप्पा ।
 फोटो—वि० यन्त्रद्वारा रचित स्फुट
 चित्र ।
 फोड़न—छौंकबाक मसाला ।
 फोड़ब—क्रि० स्फोटन, भञ्जन ।
 फौड़ा } —त्रणविशेष ।
 फोणा }

फौफ काटब } —फौ फौ शब्द
 करब, सशब्द
 फौफिआएब } श्वासप्रश्वास
 (निन्दामे) ।
 फोफी—व्यजन आदिक डण्ठीमे
 पैसल घुमाएबाक छुच्छी ।
 फोलब—क्रि० खोलब, उद्घाटन १
 बन्धनमोचन २ ।
 फौसरी—देहमे उत्पन्न मडुआसन
 शोणित-विकार ।
 फौदार—बि० सिपाहीक सरदार ।
 फौदारी—वि० परकृत उपद्रवक
 नालिस ।

व

वइआह—खएलापर वायुप्रकोपकारी
 १ वातरोगी २ ।
 वएर—बदर ।
 वएस—वयस ।
 वएसगर } —अधिक वएसबाला
 वएसहु }
 वओना—छदिस्थापनायर्थ भित्ति
 यष्टि १ अनादरणीय
 वामन २ ।
 वक—सं० पक्षिविशेष ।
 वकलुलरू—बालक्रीड़ाविशेष ।

वकलुल लागव } —क्रि० उत्कट
 वकलुहुल लागव } लागव ।
 वकभौ भौ—नेनाकेँ पृष्ठपर लेब ।
 वकटेट—बूड़ि ।
 वकटे टाह—उ० अण्ट-बण्ट बज-
 निहार बूड़ि ।
 वकतब—क्रि० लागल भूतक व्यक्त
 वचन ।
 वकतुति—वृथा बकवाद ।
 वकधेआन लगाएब—क्रि० बकवत्
 ध्यान करब ।
 वकब—क्रि० अण्ट-बण्ट बाजब ।
 वकबक करब } —क्रि० अप्रस्तु-
 वकबक बाजब } त बहुभाषण ।
 वकवाद—निःसार विवाद ।
 वकरिहारा—पुं० बकरीक व्यव-
 सायी जाति, बकरीक
 चरबाह ।
 बकरी—अजा १ तृणविशेष २ ।
 बकलेल—बूड़ि, मूढ़ ।
 बकस—वि० मञ्जूषाविशेष ।
 बकसब—क्रि० अभयदान देब ।
 बकसीस—वि० इनाम ।
 बकहुल—सं० पुष्पविशेष ।
 बकाइन—ओषधिविशेष ।
 बकाची—मत्स्यविशेष ।

बकार—बोल ।
 बकार फुटब—क्रि० बोल स्फुट
 होएब ।
 बकिअओता }
 बकिओता } —अवशिष्ट आदेय ।
 बकुची—ओषधिविशेष १ मत्स्य-
 विशेष, बकाची २ ।
 बकुच्चा } —पीठ पर बान्हि लादल
 बकुच्ची } वस्तु ।
 बकुटब—ना० बाकुटसँ पकड़ब ।
 बकुल—सं० भालसरी ।
 बकेन } —स्त्री० वक्यणी, चिर-
 बकेनि } प्रसूता दुग्धदात्री (गाए-
 महिसिप्रभृति) ।
 बक—बक ।
 बक्कर—बकर ।
 बक्खो—उ० जातिविशेष । स्त्री०
 बखोनी ।
 बखड़ोइआ—बकल ।
 बखरा—प्रत्यंश ।
 बखार—पैघ बखारी ।
 बखारी—धान्यगृह ।
 बखेआ—सीअनिक प्रभेद ।
 बखेड़ा—बाधा ।
 बखेड़िआ—भमेलिआ, बखेड़ा

कएनिहार ।

बखो — उ० बखो । स्त्री० बखोनी ।

बखोड़ } — कदलीस्तम्भक

बखोड़ेओ } अशुक् बत्कल ।

बगए — आकार ।

बगए-बानि — आकारप्रभृति ।

बगड़ा — कलविद्ध, गृहमे रहनिहार पक्षिविशेष ।

बगड़ी — बगड़ासन बाधवनमे रह-
निहार पक्षिविशेष ।

बगदब — कि० विरुद्ध होएब ।

बगबग करब } — कि० मिश्रितमे

बगबगाएब } स्फुटतया दृश्य
होएब ।बगबार — उ० बागक रक्षक । स्त्री०
बगबारनी ।बगबारि — बागक रक्षा १ बागक
रक्षाक वेतन २ ।

बगय — बगए, आकार ।

बगल — वि० काँख १ पार्श्व २ ।

बगली — बटुआ ।

बगहा — वातविकार तथा आबल्य
जन्य शिराक स्तब्धता १
बाओगबाला (धान्यादि) २ ।बगहा लागब — कि० वातविकार
तथा आबल्यसँ शिराक स्तब्धता-

प्राप्ति ।

बगुला — बक ।

बगेआ — कृतान्तविशेष ।

बगेड़ी — बगड़ी ।

बग्गी — दू घोड़ाक रथ ।

बग्घा — बगहा ।

बघछाल (ला) — व्याघ्रचर्म ।

ठाबजर — व्याघ्रभयजन्य उवर ।

बघण्डी — बँघेड़ा ।

बघदुलार — बोधजकाँ दुलार, सो-
त्पीड़न लालनो ।

बघधरू — बाघक धएल ।

बघनहा } — व्याघ्रनख ।

बघनही }

बघनोच — गिदरनोच, अधलाह
(कपड़ा) ।

बघम्बर — बघछोला ।

बवा — शिराक स्तब्धता ।

बघारि — मत्स्यविशेष ।

बघुआएब — कि० बघु+अब—
क्रोधपूर्वक ताकब ।

बघेड़ी — क्षुपविशेष ।

बङ्गठी — बाङ्क सुखाएल डाँट ।

बङ्गलहा — लाक्षाभूषणविशेष ।

बङ्गला — सम चौचाराक घर ।
बङ्गालक भाषा

पानक प्रभेद ३ ।

बङ्गलाही — कण्टकवृक्षविशेष १

लाक्षाभूषणविशेष २ ।

बङ्गाला — बङ्गाल ।

बङ्गालिनि — स्त्री० बङ्गदेशीया स्त्री ।

बङ्गाली — पुं० बङ्गदेशोद्भव पुरुष ।

बङ्गौर — बाङ्क बीआ ।

बङ्गड़ा — बड़ बजनिहार ।

बङ्गा — वीर १ भूषणविशेष २ ।

बङ्गट — उ० बट । स्त्री बङ्गटि ।

बङ्गाली — बङ्गदेशज नर ।

बङ्गेड़ी — बँघेड़ी ।

बच — बचा, ओषधिविशेष ।

बचओनाइ — बचाएब १ किछु
उगारिकेँ राखब २ ।

बचता } — नफा, लाभ ।

बचन्ता }

बचन्ती }

बचब } — कि० अबैत उपद्रवसँ

बचब } वञ्चित होएब १

बचब } अवशिष्ट होएब २ ।

बचबा — वाच, मत्स्यविशेष ।

बचुआओ — आक्रमणसँ परिहार ।

बचुआ — अलि० शिशु ।

बचखा — ओषधिविशेष ।

बचुआ — पुं० बत्सतर ।

बचुआ — अलि० बाछा ओ घाली ।

बछेड़ा — उ० घोड़ाक बच्चा । स्त्री०
बछेड़ी ।बजओना — वाद्य, बजएबाक
साधन ।

बजकड़ — अधिक वक्ता (निन्दामे) ।

बजनिआँ } — बाजकार, वाद्य

बजनिगा } बजओनिहार ।

बजन्ता — अधिक बजनिहार ।

बजबज करब } — कि० जलस-

बजबजाएब } म्बन्धेँ भूमि-

बजबजी } क लसलसी ।

बजर — बज्रसन १ बज्र २ अत्यन्त
(यदि विशेषणरूपेँ प्रयोग हो,
यथा 'बजर बहिर', बजर भुस-
कौल) ३ ।

बजरकेराइ — वृक्षविशेष ।

बजरगोठ — सकत ग्रन्थि ।

बजरब — कि० आपतित होएब ।

बजरबटू — ताड़ीवृक्षक फड़ ।

बजरा — पटका, बजारब १ अन्न-
विशेष २ ।जरा-बजरी — परस्पर भूमिपा-
तन ।जाएब — कि० बजब+अब — आ-
ह्वान १ वादन २ ।

जाँड़ी — कन्दबाला क्षुपविशेष,

ओषधिविशेष ।
 बजार—आपण ।
 बजारब—क्रि० बजार+अब—
 बलात् भूमिपातन ।
 बजारू—बजारक (वस्तु) ।
 बज्झा कोबी—बिना फूलक कोबी ।
 बज्ज—सं० कुलिश ।
 बज्जकील—सक्कत कील ।
 बज्जगैठ—सक्कत गैठ ।
 बज्जलेप—सं० से लेप जे बज्जवत्
 दृढ़ भए जाए, पापर जोड़-
 बाक लेप ।
 बभ्रव—क्रि० जालादिमे फँसब ।
 बभ्रना—सं० प्रतारणा ।
 बटकर—काँच केराओक भोर ।
 बटकदुबा—बाट देखओनिहार ।
 बटखर्चा—बाटक खर्चा, पाथेय ।
 बटगबनी } —बाटमे गेय गीत,
 बटगमनी } अभिसार ।
 बटवार—बाटमे अधिकृत ।
 बटबारा } —विभाजन ।
 बटबारी }
 बटबारी—बाटमे चलैत लोकक
 उपद्रव ।
 बटलोहिआ } —बटुकक आकारक
 बटलोही } पितङ्गिक पाक-
 पात्रविशेष ।

बटाइ—आधा उपजापर लगाओल
 (खेत) ।
 बटाम—वि० बटम ।
 बटारी—कोणशुद्धि जँचबाक कमा-
 रक उपकरणविशेष ।
 बटिआरी—नीपल बाट ।
 बटिखारा—अन्नादि तौलबाक
 साधन (सेर प्रभृति) ।
 बटुआ—पटपुट, कपड़ाक धोकड़ी-
 जेकाँ बनाओल अनेक खलक
 सरोता सुपारी प्रभृति रखबाक
 पात्रविशेष ।
 बटुक—मोट ओ गोल दालिक
 पाकपात्र १ पञ्चवर्षाधिक
 बालक २ ।
 बटेर—वर्तिका, पक्षिविशेष ।
 बटैआ—बटाइ ।
 बटोही—पथिक, मोसाफिर ।
 बट्टा—पैघ बाटी ।
 बट्टी—रुपैया प्रभृति भजएबामे देय ।
 बट्टुक—स्थूल द्विदलपाकपात्र-
 विशेष ।
 बड़—अधिक १ तैलसिद्ध व्यञ्जन-
 विशेष २ वट, वृक्षविशेष ३ ।
 बड़का—उ० पैघ प्रमाणक १ श्रेष्ठ
 (पुरुष) २ । स्त्री० बड़की ।
 बड़की अड़ाँची—स्थूलएला ।

बड़की माछी—सामान्य माछीसँ
 पैघ माछी ।
 बड़गोआर—उ० गोपजातिविशेष ।
 स्त्री० बड़गोआरि ।
 बड़द—वर्द्ध, बेल हिं० ।
 बड़दवार—वर्द्धवारक, वृषभचारणमे
 नियुक्त ।
 बड़दनोनी—शाकविशेष ।
 बड़र—यौवनमे भेनिहार व्रण-
 विशेष ।
 बड़री—कमलक बीजकोष ।
 बड़रुख } —वटवृक्षक जटा ।
 बड़रुख }
 बड़हर—लिकुच, फलविशेष ।
 बड़हरी—भूषणविशेष ।
 बड़िआ—वटिका ।
 बड़िजना—कृषिमे अधीनीकृत
 भृत्य ।
 बड़ी—छोट बड़ १ जड़ीविशेष २ ।
 बड़ी काल—अधिक समय ।
 बड़ीखन—अधिक क्षण ।
 बड़ी जड़ी } —ओषधिविशेष ।
 बड़ीमाइ }
 बड़का—छोट डावा ।
 बड़ेरी—दू चारक उपरका आधार-

काष्ठ ।
 बड़ु—वड़, बहुत ।
 बड़्ढी—अधिक ।
 बड़नुक—वर्द्धिष्णु ।
 बड़न्ती—कमिक वृद्धि ।
 बड़डा—क्रि० वर्द्धन ।
 बड़ारन—सम्मार्जनत्याज्य ।
 बड़ारन-सोहारन—सम्मार्जनादि-
 त्याज्य ।
 बड़ारब—क्रि० बड़ार+अब—स-
 म्मार्जन ।
 बड़ारब-सोहारब—क्रि० सम्मा-
 र्जनदि ।
 बड़िआँ—उत्तम ।
 बड़िआएब—क्रि० बड़ि+अब—
 बड़्ढी होएब ।
 बतकट—बातके असम्यक् कट-
 निहार ।
 बतकुटौबलि } —निरर्थकविवाद ।
 बतकुट्टनि }
 बतरख—वर्त्तिरक्षक, खोल कएल
 बाँसक आधाफाँक जाहिमे टाटक
 बाती पैसाओल जाए ।
 बतसू—बातीक सुइआ ।

बतहभण्ड } विक्षिप्तप्राय ।
बतहलण्ड }

बतह्हा—उ० अनादरणीय बतही ।
स्त्री० बतही ।

बतहिआ } —स्त्री० अनादरणीय
बतही } बताहि ।

बताना—पाग भरबाक हेतु दोसर
छोट पाग ।

बतारी—समवयस्क ।

बतासा—मिश्राक्षविशेष ।

बताह—उ० विक्षिप्त । स्त्री०
बताहि ।

बतिआ—उद्वंत छोट फल (सोहं-
सप्रभृति लताक) १ लताफल
विशेष २ ।

बतिआएब—क्रि० बति+अब—
बतिआसँमुक्त होएब ।

बतीसा—केराक प्रभेद ।

बत्तक—वर्तक, पक्षिविशेष ।

बत्तर—उ० अविचारी । स्त्री०
बत्तरि ।

बत्ती—बत्ति, सूतक बनाओल दीपक
वर्तिका ।

बत्तीस—३२, द्वात्रिंशत् ।

बत्तीसम—द्वात्रिंशत्तम ।

बत्तू—बधिआ नहि कएल अशिशु
अज ।

बथान—माल बैसबाक नियत
स्थान ।

बथुआ—शाकविशेष, वास्तूक ।

बद—दुष्ट, उत्पाती ।

बदनाम—दुर्यश ।

बदपन—कूरता ।

बदब—क्रि० वरण, क्रीड़ाक व्यवस्था ।

बदनामी—दुष्कीर्तिभागी ।

बदमास—कूर, दुष्ट ।

बदमासी—कूरता, दुष्टता ।

बदरी—मेघाच्छन्न प्रवृत्तवृष्टिक
समय ।

बदल—वि० परिवर्तन ।

बदलब—क्रि० परिवर्तन, विनिमय ।

बादला परिवर्तन ।

बदला-बदली—पारस्परिक विनि-
मय ।

बदलेन—परिवर्तनमे देल वा लेल ।

बदहा—बिनु खुट्टीक पादुका-
विशेष ।

बदान—युद्धक आकरण ।

बदाम—चणक, अन्नविशेष १ मेवा-
फलविशेष, कागजी बदाम २ ।

बदामी—रङ्गक प्रभेद १ भूषण-
विशेष २ ।

बदामी गोखुला—गोधुर, औषधि-
विशेष ।

बदि कृष्णपक्ष ।

बदिअल—बद ।

बद—बदमास, क्रूरकर्मा, उत्पाती ।

बही—मही, बदब, क्रीड़ाके व्यवस्था ।

बदक—दस्त रोकबाक औषध ।

बद्री—देवोत्सृष्ट गरामे पहिरबाक
सूत ।

बधना—मुसलमानक जलपात्र-
विशेष ।

बधवारि—बाधक रक्षा ।

बधहा—बदहा, बिना खुट्टीक खड़ा-
मविशेष ।

बधाइ—जन्मोत्सव ।

बधावा } —जन्मोत्सवदेय ।

बधैआ }

बन—सं० जङ्गल १ लाक्षालङ्करण-
विशेष २ अङ्गामे बन्हबाक लट-
कल अवयवविशेष ३ ।

बनउरीद—बनैआ माष, माषपर्णी ।

बनकर—बनक कर ।

बनखेटी—बनैआ मूँग ।

बनगोइठा—बनमे सुखाएल
गोबर ।

बनजमानि—बड़का जमानि,

अजमोदा ।

बनपोरो—पोरो सागक प्रभेद ।

बनबा—क्रि० निर्मित होएब १
मेल होएब २ ।

बनगिलाड़—पुं० बनैआ मार्जार ।

बनमानुख—बनैआ मनुष्याकार
जन्तुविशेष ।

बनमुरगी—आरन्यक कुक्कुट ।

बनरनी—बानरजातिक स्त्री ।

बनरफाँस—पाशविशेष ।

बनरवान्ह—ग्रन्थिविशेष ।

बनरमाछी—बानरक माछी ।

बनस—गोहि आदि मारबाक बड़का
बनसी ।

बन-सपेता—पक्षिविशेष ।

बनसी—बड़िह, माछ मारबाक
अस्त्रविशेष ।

बनसीम—आरण्यक शिम्बी ।

बनसो } —बनक सोहसँ युक्त
बनसोह } भूमि ।

बनहरदि—हरिद्राविशेष ।

बनहुलुक—वग्य जन्तुविशेष ।

बनात वस्त्रविशेष ।

बनिआ—उ० वणिक् । स्त्री०
बनिआनि ।

बनिओज—वाणिज्य ।

बनिऔटी } —बनिआक कार्य,
बनिऔती } बाणिज्य ।

बनिजब —क्रि० बनिआक क्रिया ।
बनिजाली—माल बन्हबाक एक प्रकारक डोरी ।

बनिसार—बन्धशाला ।

बनिहार—उ० बनि लए कार्यकर्ता । स्त्री० बनिहारनी ।

बनैआ—आरण्यक (शूकरादि) ।

बनैआ जीर—आरण्यक जीर ।

बनैआ सूगर—आरण्यक शूकर ।

बन्द—वि० अवरुद्ध, मुद्रित ।

बन्दूक—भुशुण्डी, युद्धक अस्त्र-विशेष ।

बन्दोबस्त—वि० प्रबन्ध ।

बन्धक—ता ऋण आदाय सदि-क तरदेल खेत ।

बन्धकी—ता आदाय विश्वासार्थ देल भूषणादि ।

बन्धा कोबी—पतकोबी ।

बन्धक—बन्धक ।

बन्हन—बन्धन ।

बन्हा—नियत ।

बन्हिसार—बन्धनशाला, कारा ।

बन्हेज—सामाजिक बन्धन ।

बन्होटा—बन्हले रहनिहार

(घोड़ा) ।

बपखौकी—स्त्री० बापकेँ खएनिहारि (स्त्रीक उक्तिमे गारि) ।

बपहारि काटब—क्रि० 'बाप रे बाप' इत्यादि बाजब ।

बपौती—बापक धन, मरौसा सम्पत्ति ।

बप्पाबैरी—अन्यकृत बापक शत्रुता ।

बबूर—बर्बर, वृक्षविशेष ।

दब्बर—व्याघ्रविशेष ।

बभनगामा—ब्राह्मणक ग्राम ।

बभनगोष्ठी—ब्राह्मणक गोष्ठी ।

बभनटोली—ब्राह्मणक टोल ।

बभनभोजी—ब्राह्मणक भोजन ।

बभनाह—ब्राह्मणम्पादित (जल-पुपादि) ।

बभनी—धानक रोगविशेष ।

बभनैठी—ब्राह्मणयष्टिका, ओषधि-विशेष ।

बभनोज—ब्राह्मणक हठ, ब्रह्मण-वतल गारि भएकेँ पड़ब ।

बमकब—क्रि० चुप रहैत एकाएक जोरसँ बाजब ।

बमकी—बमकब ।

बमगोला—उत्सवादिसूचक महा-शब्दकारी गोला ।

बमछब—क्रि० क्रोधेँ जोरसँ बाज

उठब ।

बमन—सं० वान्ति ।

बमरेदुआ } —बामा हाथेँ का-
बमरौटिआ } ज कएनिहार १
अ० बामा हाथेँ २ ।

बयस—जीवनसमयपरिमाण ।

बयसगर—उ० अधिक बएसक ।
स्त्री० बयसगारि ।

बयसाहु—अलि० अधिक बयसक ।

बयाद—कन्दविशेष ।

बर—स्वामी १ विवाह कएनिहार २

गुण (यथा 'एक बर' 'दू बर'; यदि संख्यासँ उत्तर प्रयोग हो) ३ मा-लक ओषध्यर्थ छुपविशेष ४ ।

बरइ—बरै, पर्णव्यापारी जाति विशेष ।

बरकब—क्रि० अग्नितापसँ सशब्द पाक ।

बर करब—क्रि० दीप मिभाएब ।

बरकस—चौपालाप्रभृतिक बाँसमे कसबाक डोरी ।

बरख—वर्ष ।

बरखा—वृष्टि ।

बरखास्त—वि० पुरुषशून्य १ मो-कूफ, निष्कासित २ ।

बरखी—वार्षिक श्राद्ध, एकोदित ।

बारछा } —अस्त्रविशेष ।

बारछी

बरजग—क्रि० वर्जन ।

बरजीत—पराजयसँ पूर्व पराजयो-त्तरकालिक परस्पर देयादेयक प्रतिज्ञा ।

बरतन—धातुनिर्मित पात्र ।

बरतोड़—रोड़उपाड़ ।

बरदनोनी—शाकविशेष ।

बरदवार—बड़दक चरबाह ।

बरदहसा—वर्षा समयमे दक्षिणसँ अबैत बसात ।

बरदाएब—क्रि० बरद+अब—प्रतिबन्धकवशात् कार्यसँ निवृत्त रहब ।

बरदेखी—विवाहार्थ बरक देखनाइ ।

बरदोठ—प्रतिबन्धकवशात् कार्य करबासँ निवृत्ति ।

बरनब—क्रि० वर्णन करब ।

बरनि—हरक कील ।

बरनिआ—पुं० वरण कएल (स्व-स्तिवाचकादि) ।

बरफ—वि० जमल जल, पाला ।

बरब—क्रि० मृत्तिकाक शिवलिङ्ग बनाएब ।

बरबंगा—बाङ्क प्रभेद ।

बरबराएब—क्रि० बरबर+अब—

अनर्थक बात बाजब ।

बरबरी—बरबराएब ।

बरबा—छन्दोविशेष ।

बरमा—छिद्र करवाक यन्त्रविशेष,
बेरमा ।

बरहगामा—अनेक गाम ।

बरहदरी—मनुष्यवाह्य यान
विशेष ।बरहधना—मिश्रित अनेक प्रकारक
धान ।बरहवट्टू—जाहिसँ सबलोक काज
कर लेअए तादृश अरक्षित (वस्तु) ।बरहबर्दा—जमीनक प्रमाणपत्र-
विशेष ।बरहमासा—बारह मासक वर्णना-
त्मक गीत ।बरहरूपा—बहुरूपा, अनेक रूप
देखओनिहार ।

बरहसिंहा—हरिणक सिंह ।

बरहा—मोट रस्सा १ बारह दिन
(श्राद्ध) २ ।बारहा-बारही—मोट बरहाक भीका
तीरी क्रीड़ा ।

बारही—तक्षा, कमार ।

बराइत—बरागत, वरक दिसक
लोक ।

बराँट(ठ)—पैघ बह्ना ।

बरावरि—अ० अनवरत १ तुल्य २ ।

बराहिल—गाममे असामी बजएबाक
हेतु नियुक्त (व्यक्ति) ।बरिआत } —बारान, वरक सङ्ग
बरिआती } मेनिहार लोक,
ढोल बजनिआ
प्रभृति ।

बरिआर—बला, ओषधिविशेष ।

बरिसन्धन—एक पाबनि ।

बरिसबा—क्रि० वर्षण ।

बरिसाइत—वटसावित्रीव्रत ।

बरिसात—वर्षा समय ।

बरिसाति—वटसावित्रीव्रत ।

बरिसाती—वृष्टिपात बचओनिहार
कोठामे नमरल छदि १ बरिसात
मे उपकारक वस्तु २ ।बरी—बड़ेरी, चारक मथनीक आ-
धार-काष्ठ ।

बरु—अ० वरम् ।

बरुआ—माणवक ।

बरुका—बड़का, डाबासँ छोट तत्स-
दृश मृत्पात्रविशेष ।

बरेब—पानक लताक घर ।

बरै उ० पर्णविक्रोता जतिविशेष ।
स्त्री० बरैनि ।

बरैनि

* मिथिलाभाषाकोषः *

बसताएब २५१

बरैनि—हरक कील १ बरै जातिक
स्त्री २ ।बरोत—घर छारबामे बरी लगक
उपरका बाती ।

बरोबर—धान्यविशेष ।

बर्खा—वृष्टि ।

बर्खी—वार्षिक श्राद्ध, एकोद्विष्ट ।

बर्छा—अस्त्रविशेष, शूल ।

बर्जब—क्रि० वर्जन ।

बर्जाति—बह स्त्री ।

वर्ण—सं० गौरपिण्डश्यामादि शरी-
रक रङ्ग १ ब्राह्मणादि चारि
जाति २ ।

वर्तन—धातुक पाकपात्र ।

वर्फ—वि० जमल जल ।

वर्ष—सं० बारह मास ।

वर्षभोज्य—एक वर्ष खएबाक
सकल सामान्य (दानार्थ) ।

वर्हो—ब्राह्मी जड़ी ।

वल—सं० शक्ति, बुद्धि ।

बलकुचाह(हि)—बालयुक्त (माटि) ।

बलगर—उ० अधिक बलसँ युक्त ।

बलगोबिना—नपुंसक ।

बलजोरी—अ० बलात्कार ।

बलतोड़—रोड़ उपाड़ ।

बलदाउनि—असङ्गत आग्रह ।

बलधकेल—अ० बलात्कारपूर्वक
धकेलिके ।बलधरा } —चारमे बल देबाक
बलधारा } हेतु बनाओल खाम्ही ।बलबलाएब—क्रि० बलबल+अब—
द्रवपदार्थक भितरी विकारक
ऊद्धर्बमुख होएब ।बलम—चानीसँ सौँसे मढ़ल थोप-
बाला छड़ी ।

बलमन्त—बलवान् ।

बलहिँ—अ० बलात्, ध्यर्थ ।

बलही—दू जुन्नाबाला पैघ बोझ ।

बलहुत्थ—निहँतु अत्याग्रह ।

बलि—मांसक उपहार ।

बलिकट्टा—देवताक उत्सृष्ट छागबलि
कटनिहार ।बलिदान—सं० छागादि बलि-
प्रदान ।

बलेल—बूढ़ि, मूढ़ ।

बल्ला—गाड़ीक अङ्गविशेष ।

वंशलोचन—ओषधिविशेष । वंश-
रोचना ।

वस—अ० निरोधयोजक ।

वसगीद—अनेक संनद्ध बस्ती ।

वसतोएब—ना० बसात+अब—
बसातसँ चिरस वा शुष्क होएब ।

बसनी—ठाढ़ कानक घैल ।
 बसन्त—पुष्पविशेष १ सं० चैत-
 बैसाख मोसद्वय २ ।
 बसन्ती—रक्तक प्रभेद ।
 बसकट्टा—बाँस कउनहार ।
 बसकट्टी—बाँस काटब ।
 बसब—क्रि० निवास ।
 बसवारि—वंशवाटी ।
 बसविट्टी—बाँसक बीटसमूह ।
 बसहा—जटाबाला बड़द १ नेपा-
 लक (कागत) २ ।
 बसाडि—वंशवाटिका ।
 बसाँदी—मत्स्यविशेष ।
 बसात—वात, हावा ।
 बसिआएब—ना० बासि+अब—
 बासि होएब ।
 बसिन्दा—बासी ।
 बसिला—बास्या ।
 बंसी—वंशी ।
 बंसीप्रेम—पुष्पविशेष ।
 बसुरी—वंशी ।
 बसुली—वंशी ।
 बसैला—बाँसक (खाम्ही) ।
 बस्ता—नूआमे बान्हल बहीप्रभृति
 कागजसब ।
 बस्ती—वसति, ग्राम ।
 वस्तु—सं० पदार्थ ।

वस्तुजात—सं० वस्तुसमूह ।
 वह—सीरसँ जनमल गाछ ।
 वहवार—हर बहवामे समर्थ
 (बड़द) ।
 वहकब—क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।
 वहटारब—क्रि० बहटार+अब—
 मन प्रसन्न करवाक निमित्त कोनो
 आन क्रियामे लागब ।
 वहतर—उ० वाद्धव्यादिप्रयुक्त
 जकरा बजबाक ठेकान नहि हो ।
 वहतरा—अनादरणीय वहतर ।
 वहता—बहैत (जलादि) ।
 वहताओन—तेल पेरबाक वेतन ।
 वहती—छोट बाहा ।
 वहत्तरि—द्विसप्तति, ७२ ।
 वहत्तरिम—द्विसप्ततितम ।
 वहन्तू—बाहवाक योग्य, सम्भावि
 ऋतुकालक (गाएआदि) ।
 वहपोत—अनुचित विस्तार ।
 वहपोर—दूर दूर पोरावाला (टेछा,
 लाठी) ।
 वहव—क्रि० सवण १ वहन [बड़द
 गाड़ीमे बहैत अछि] २ ।
 वहबाँड़ि—अनुचित बहुवक्ता ।
 वहबाणि—
 बहरघरा—चतुःशालसँ बाहरक घर ।

बहरपेन—जकर जड़ि घरसँ बहार-
 दिस झुकल हो ताइश (खाम्ही) ।
 बहराएब—क्रि० बहर+अब—
 बहिर्भवन ।
 बहरिआ—रजस्वला ।
 बहरी—वाह्य देश ।
 बहलमान—बड़दक गाड़ी हँकनि-
 हार ।
 बहलाएब—क्रि० बहलब+अब—
 बहल गप्प करब ।
 बहसब—क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।
 बहाँड़ } —अङ्गुल्यन्तबाहु-
 बहाण } प्रमाण ।
 बहादुर—वि० वीर ।
 बहाँदुरी—वि० वीरता ।
 बहाना—वि० छल ।
 बहार—बहिर्देश ।
 बहारब—क्रि० बहार+अब—
 संमार्जन ।
 बहाल—वि० नियुक्त ।
 बहाली—वि० नियुक्ति ।
 बहिआ—उ० दास । स्त्री०
 बहिकरनी ।
 बहिआँ—बाहीँ, काँसाक बनाओल
 लहठीस्थानीय भूषण ।
 बहिकरनी—स्त्री० दासी ।

बहिक्रम—वयस् ।
 बहिखत—दासताक पत्र ।
 बहिँगा } —मार उठएबाक
 बहिङा } चिपिट दण्ड ।
 बहिङासारि—भान्यविशेष ।
 बहिनजमाए—पु० भगिनीकन्या-
 पति ।
 बहिनधी—स्त्री० स्त्रीक बहिनक
 कन्या ।
 बहिनि—स्त्री० भगिनी ।
 बहिनो } —भगिनीपति ।
 बहिनोए }
 बहिनौत—उ० मौगीक बहिनक
 पुत्र ।
 बहिन्वे—भगिनीपति ।
 बहिर—वधिर ।
 बहिरी—पक्षिविशेष ।
 बहिला—बन्ध्या (माल) ।
 बही—पैघ आकारक आयव्ययादि-
 स्मारक बान्हल पत्रसमूह ।
 बहीनि—स्त्री० भगिनी ।
 बहु—स्त्री० वधू, जाया ।
 बाहुआसिनि—बहुवासिनी, पुत्र-
 पौत्रादिक जाया ।
 बहुगुना—अनेककार्योपयोगी पात्र-

विशेष ।

बहुत—अधिक, अनेक ।
 बहुत पक्ष—अ० अधिक सम्भूत ।
 बहुत रास—अधिक परिमाणक ।
 बहुवात—अनेकमय ।
 बहुरिआ—स्त्री० बधूटिका, नवीन पुतोहु ।
 बहुरूपा—पुं० बरहरूपा, अनेक रूप देखओनिहार ।
 बाहेड़—बिभीतक ।
 बा—सं० अ० अथवा ।
 बाइ—वायु ।
 बाइनि—वयन ।
 बाइभिरिङ्ग—विङ्ग ।
 बाइली—अतिरिक्त, बाह्य ।
 बाइस—द्वाविंशति, २२ ।
 बाइसम—द्वाविंशतितम ।
 बाउ—पुं० बटुक, बत्स ।
 बाउली—वापी, अल्पजलाशय-विशेष ।
 बाएव—क्रि० बच्+अब—व्या-दान ।
 बाओग—बीजवपन ।
 बाओन—वामन ।
 बाँक—भूषणविशेष ।
 बाकरा—अधिक बजनिहार ।
 बाकल—वत्कल ।

बाकस—वासा, ओषधिविशेष ।
 बाकसरस्सी—इथिआरविशेष ।
 बाँकी—अवशिष्ट ।
 बाकूट—विरल कए संकुचित कएल हाथक पञ्चाङ्गलि ।
 बाखुबी—वि० अ० सर्वथा ।
 बाग—हि० उद्यान ।
 बागड़—मिश्रित (अन्न) ।
 बागनर—कदलीप्रभेद ।
 बागडोरि—रथरश्मि ।
 बाघ—उ० व्याघ्र । स्त्री० बाघिनि ।
 बाघगोटी—क्रीड़ाविशेष ।
 बाघिनि—स्त्री० व्याघ्रजाति स्त्री ।
 बाघी—वेदनायुक्त कालक गिलटी ।
 बाङ—कार्पास ।
 बाचव—क्रि० बच्+अब—आपत्ति-सँ स्पृष्ट नहि होएब ।
 बाँचव—क्रि० बच्+अब—चोटी पुराणादिक पठन १ अवशिष्ट होएब २ ।
 बाछव—क्रि० बछ्+अब—मिश्रित-सँ हटाएब ।
 बाछा—उ० वत्सतर । स्त्री० बाछी ।
 बाछी—स्त्री० वत्सतरी ।
 बाज—श्वेन, दोसर पक्षीकेँ भूपटि

पकड़निहार पक्षिविशेष १ बाद्य २ ।
 बाजकार—वेतनपर बाजा बजओ-निहार, बजनिआ ।

बाजन—वाद्य ।
 बाजब—क्रि० बज्+अब—भाषण, शब्द करब ।
 बाजब-भूकब—क्रि० भाषण हा-सादिक्रिया ।

बाजा—वाद्य ।
 बाजाभूकी—बाजब प्रभृति व्यव-हार ।

बाजी—क्रीड़ाकाण्ड ।
 बाजी लगाएब—क्रि० क्रीड़ाका-ण्डसंनाइ १ एक क्रीड़ाकाण्ड समाप्त करब २ ।

बाजू—बाहुभूषणविशेष ।
 बाजूबन्द—भूषणविशेष ।
 बाँझ—बन्ध्य (वृक्षादि) ।
 बाँझव—क्रि० बम्+अब—जाला-दिमे बद्ध होएब ।

बाँझि—स्त्री० बन्ध्या ।
 बाँझी—वन्दाक १ वृक्षरोग विशेष २ ।

बाट—मार्ग ।
 बाँट—व्यक्तिक उद्देशे विभाजन ।
 बाट ताकब—क्रि० आगमनक प्रतीक्षा करब ।

बाँटव—क्रि० बाँट्+अब—व्यक्तिक उद्देशे विभाजन १ सन आदि-केँ गुणसँ युक्त करब २ ।

बाँट-बखरा—विभाजनादि ।
 बाटा—बहुत पैघ बाटी ।
 बाटाबाटी ताकब—क्रि० आतुर-तापूर्वक आगमनक प्रतीक्षा करब ।

बाटी—तीमनक पात्र ।
 बाड़ी—बाटी, उद्यान ।
 बाड़ी-भाड़ी—उद्यानादि ।
 बाढ़नि—सम्मार्जनी ।
 बाढ़व—क्रि० बाढ़्+अब—संमार्-र्जन ।

बाढ़ि—आगत जलक आग्रावन १ वृद्धि २ ।
 बात—कथा १ विषय २ देहस्थ वायु ३ ।
 बात गढ़व—क्रि० बनाओल बात बाजब ।

बातचीत—वि० वार्तालाप ।
 बातबारुन—ओषधिविशेष ।
 बाँतर—जे खएलासँ घाओ बढ़ए (यथा उरीद) ।
 वाती—वक्ति, तूरक वा नूआक टेमी १ बाँसक चीरल अनेक खण्ड २ ।

बाद—उत्तरकाल १ विवाद २ ।
 बादरि—मेघ, बदरी ।
 बादसाह—वि० अधीश्वर (मुसल-
 मान) ।
 बादसाही—वि० बादसाहक क्रिया
 १ बादसाहसम्बन्धी (गद्दी
 आदि) २ ।
 बादुर—उल्लूक, रात्रिचर पक्षि-
 विशेष ।
 बाध—धानक विस्तृत क्षेत्रसमूह १
 बाधा २ ।
 बाधकार—बाधा कएनिहार ।
 बाधवन—बाध ओ वन ।
 बाधा—प्रतिबन्ध ।
 बान—वयन ।
 बानर—सं० मर्कट ।
 बाना—वयन ।
 बाना बान्हब—क्रि० कोनो हेतु
 इष्टपूर्वक नाना प्रयत्नमे लागब ।
 बानि—वयन ।
 बान्ति—सं० वमन ।
 बान्ह—बन्धन ।
 बान्हब—क्रि० बन्धू+अब—
 बन्धन ।
 बाप—पिता ।
 बापूत—पितापुत्र ।

बाफदा—वि० वस्त्रविशेष ।
 बाबन्न—द्वापञ्चाशत् ५२ ।
 बाबन्नम—द्वापञ्चाशत्तम ।
 बाबा—पितामह मातामहादि । स्त्री०
 बाबी ।
 बाबाजी—पुं० वैरागी ।
 बाभन—उ० ब्राह्मण । स्त्री०
 बाभनि ।
 वाम—सं० सव्य, दक्षिणभिन्न
 (बाहुप्रभृति तथा भाग) १ सं०
 प्रतिकूल २ ।
 बामी—मत्स्यविशेष ।
 बाय—अ० अथवा ।
 बायु—सं० बसात तथा पेटक
 वायु ।
 बारब—क्रि० बार+अब—त्यागब ।
 बारवार—अ० पुनः पुनः ।
 बारह—द्वादश, १२ ।
 बारहम—बारहक पूर्ति कएनिहार ।
 बारहो बिरही—बहुत प्रकारक
 वस्तुजात ।
 बारि—घोड़ाक लगाम ।
 बारी—माछ मारबाक स्थानविशेष
 १ शूद्रजातिविशेष २ ।
 बारीक—भोजमे परसनिहार ।

बारी लगाएब—क्रि० माछ मार-
 बाक यन्त्र लगाएब ।
 बारुद—बन्दूक रबाइस प्रभृतिमे
 उपकारक एक विस्फोटक पदार्थ ।
 वार्त्ता—समाचार, वृत्तान्त ।
 बाल—सिकता १ सं० शिशु २ ।
 बालक—उ० सं० शिशु १ पुत्र २ ।
 स्त्री० बालिका ।
 बालग्रह—पूतनादिग्रहदोष ।
 बालबच्चा—बालप्रभृति ।
 बालविधवा—स्त्री० बाल्यावस्थामे
 मृतभर्तृका ।
 बाला—बल्य, भूषणविशेष ।
 बाल—गाछमे फड़ल अन्न तथा
 मकैक पत्राच्छादित अन्नकोष ।
 बाली—भूषणविशेष ।
 बालुम—वल्लभ, स्वामी ।
 बालुम खीरा—एक प्रकारक
 खीरा ।
 बालूसाही—मिष्टान्नविशेष ।
 बालेसरी—ढरुआ लौहकण्टक-
 विशेष ।
 वास—सं० निवास ।
 बाँस—वेणु, वंश ।
 बासट्टि—द्विषष्टि, ६२ ।
 बासट्टम—द्विषष्टतम ।
 वासन—अन्नादि रखबाक पात्र ।

बाँसफूल—धान्यविशेष ।
 बाँस बरेड़ी—धान्यविशेष ।
 वासमती—धान्यविशेष ।
 बासब—क्रि० बसू+अब—वासित
 करब ।
 बासरा—गुलाबक प्रभेद ।
 वास—पर्युषित
 वासी—सं० निवासी ।
 बाँसी—आगि फुकबाक बाँसक
 चाँगा ।
 वासी मुहे—अ० अभुक्त, विना
 किछु खएने ।
 वासुरी } —बसुली, वंशी ।
 बाँसुरी }
 बाह—अ० प्रशसाद्योतक १ बाहब
 २ ।
 बाहब—क्रि० बाहू+अब—मालक
 गर्भाधान ।
 बाहर—बाह्य ।
 बाँह—बाहु ।
 बाँही—लहठीक स्थानमे पहिरबाक
 काँसाक अलङ्करण ।
 बान्हू—रङ्गीन वस्त्रविशेष ।
 बअरि—बिल ।
 बअ हिआएब—क्रि० बिअहिअबू+
 अब—बीहनि देब ।

विअहुआ — विवाहसंबन्धी
विअहुती

विआएब — क्रि० बि+अब — गर्भ-
मोचन ।

विआन — बिआएब, प्रसव १
धान्यादिक पतुघा च०ब २ ।

विआह — विवाह ।

विआहब — क्रि० विवाह कर ।

विआहलि — विवाहित ।

विऔरी — कुम्हड़ प्रभृतिक बीआक
वटा ।

विकजी — जलपानार्थ नाना फल ।

विकट — सं० भयावह ।

विकडार — अधिक फुलाएल १ भया-
वह २ ।

विकराल — सं० विशाल, भयङ्कर ।

विकल — सं० दरिद्र, विषादयुक्त ।

विकाएब — क्रि० बिक+अब — विक्रीत
होएब ।

विकाल — वर्षाप्रयुक्त अवलाह समय ।

विकौआ — रुपैया लए जे अपना
सँ छोटमे विवाह कएने
छथि से (व्यक्ति) ।

विक्री — विक्रय, बिकाएब ।

विक्रू — विक्रय, विक्रयार्थ (वस्तु) ।

बिखाह — उ० विषयुक्त । स्त्री०

बिखाहि, अन्त प्रकोपस्व-
भावक (लाक्षणिकप्रयोग) ।

बिखिन्न — सं० दीन, दुखी, निरुद्ध ।

बिख्यात — सं० प्रख्यातनामा ।

बिगाड़ब — क्रि० विघटन ।

बिगाड़ाबिगाड़ी — परस्पर विरोध ।

बिगाहा — बीस कट्टा (भूमि) ।

बिगाड़ब — क्रि० बिगाड़+अब —
विघटन करब ।

बगाड़ — विरोध ।

बगुल — वि० वाद्यविशेष ।

बघटन — सं० सघटन मे बाधा ।

बिचलन — सं० स्खलन ।

बिचलब — क्रि० स्खलन ।

बिचला — मध्यवर्ती ।

विचार — सं० लुक्तिपूर्वक पर्यालोचन

विचारब — क्रि० पर्यालोचन करब ।

बिच्छू — वृश्चिक ।

बिछओना — आस्तरण ।

बिछाएब — क्रि० बिछब+अब —
आस्तरण करब ।

बिछाओन — आस्तरण ।

बिछिआ — भूषणविशेष ।

बिछुआ — बीछल ।

बिछुरब — क्रि० वियुक्त होएब ।

बिछोह — वियोग ।

विजयघंट — बड़का घड़ी-घंटा ।

बिजली — बिजुली, विद्युत् ।

बिजलोका — विद्युल्लता ।

बिजाती — बिजातीय, विलक्षण ।

बिजुकब — क्रि० मूहक सङ्कोचन ।

बिजुली — विद्युत् ।

बिजो — भूताद्यावेशचेष्टा ।

बिजोठ — भूषणविशेष ।

बिजोड़ — जोड़ा नाहलागल (रत्नादि)

बिजोड़ा — नेबोक प्रमेद ।

बिजो — भोजनार्थ कथन ।

बिटगरहा — एगारहसँ लए गुणापाठ

बिटण्डावाद — वितण्डावाद, स्वपक्ष-
शून्य खण्डन ।

बिटण्डी — वैतण्डक ।

बिटू } — अँगुठा ओ तजनीक
अग्रसँ उत्पीड़न ।

बिड़रो — वात्या ।

बिड़हरा — पीर टकुरी आदि रखबाक
वंशपात्रविशेष ।

बिड़ार — बीजवपनक्षेत्र ।

बिड़ारू — बिड़ारमे उपजल (बीआ)

बितब — क्रि० व्यतीत होएब ।

बितराएब — क्रि० बितर+अब —
विरल होएब ।

बितान — सं० शय्याक सोहँ उपरमे
टाढल वस्त्र ।

बिथरब — क्रि० पाएर आदिक
सरलीभाव ।

बिथारब — क्रि० बिथार+अब —
पाएर आदिक सरली-
करण ।

बिथुति — कार्यप्राप्तबन्ध ।

बिदति — बिदति, क्षेत्रादिक उपद्रव ।

बिदरब — क्रि० विदीर्ण होएब ।

बिदल — बिगोल, अन्यपक्षक लोक-
समूह ।

बिदा — प्रस्थित ।

बिदाइ — बिदाय, जएबाक कालदेव

बिदागिरी — प्रस्थान ।

बिदारब — क्रि० बिदार+अब —
विदीर्ण करब ।

विदेश — सं० देशान्तर, हिन्दुस्तानसँ
आन देश ।

विदेशी — सं० विदेशभव ।

बिदेसिआ — विदेशमे रहानहार ।

बिदति — क्षेत्रादिक उपद्रव ।

बिद्युल्लता — सं० बिजली ।

बिधकरी — स्त्री० विवाहमे लौकिक
विधि करओनिहारि स्त्री ।

विधवा — सं० बेबा ।

विधाता — सं० ब्रह्मा ।

विधार — ओषधिविशेष, त्रिवृत् ।

बिधुआएब—क्रि० बिधु+अब—
मुखक उदास होएब ।
बिधुनब—क्रि० गडबड कए वस्तु
ताकब ।
बिनती—सविनय निवेदन ।
बिनब—क्रि० वयन ।
बिनबिन करब—क्रि० जलादिमे
अधिक पीलुआदिक सचरण ।
बिनबिनाएब—क्रि० बिनबिन्+अब
—बिनबिन करब ।
बिनय—स० अनुनय, अनौदल्य ।
बिना—सं० अ० बिनु, बेत्रोक ।
बिनाश—सं० ध्वंस ।
बिनु—अ० बिना ।
बिनोट—बीनब, वयन ।
बिनोद—सं० आनन्दप्रद क्रिया ।
बिनोदी—सं० आनन्दप्रद क्रिया-
कारी ।
बिन्यास—सं० विशेषरूपेँ आयोजन
बिन्यासी—सं० बिन्यासशील ।
बिन्हकी—बिन्हनिहार बिखाइ
(चुट्टी) ।
बिपटा—छकोड़बाजी नाचमे हास्य-
रसी नर्तक ।
बिपटार—विपत्तिप्राप्त ।
बिपता } —विपत्ति ।
बिपति }

विपतिमरू—विपत्तिसँ मृत प्राय ।
विपत्ति—सं० आपत् ।
विपन—असम्पन्न, विपत्तिग्रस्त ।
विपन्न—सं० विपत्तिग्रस्त ।
विपाक—सं० पेटमे अन्नक अपच
विफल—सं० व्यर्थ ।
विवाद—सं० विरुद्ध वाद ।
विवादी—सं० विरुद्धवादकारी ।
विवाह—सं० सविधि पाणिग्रहण ।
विवाही—स्त्री० पाणिग्रहीती (भाया)
१ विवाहसम्बन्धी २ ।
विभरम } —भ्रम ।
विभ्रम }
विमन—अप्रसन्नमनस्क ।
विमल—सं० मलहीन, निर्मल ।
विमुख—सं० असम्मुख, अप्रसन्न ।
विरखी—मालक जिह्वाक रोगविशेष
विरञ्चि—कृतान्नविशेष ।
विरनफूल—धान्यविशेष ।
विरनिआ छत—अनेक मुहवाला
व्रणविशेष ।
विरनी—बामा हाथमे रखबाक कुश,
वेणी १ मधुमाछीसन छाता
लगओनिहार बिन्हनिहार
पतङ्गविशेष, वरट २ मुहल
माथक खोपा, वेणी ३ ।

विरब—क्रि० बीछब ।
विरल—सं० अघन, अल्प ।
विरलेक—अ० कदाचित् कोनहुठाम
विरस—सं० विकृतरसवाला ।
विरहरा—पीर टकुरी आदि
रखबाक पात्राविशेष ।
विरान्नब्बे—द्विनवात, ९२ ।
विरान्नब्बेस—द्विनवातितम ।
विरासी—द्व्यशीत, ८२ ।
विरासीम—द्व्यशीतितम ।
विराह—लागल जजातिमे हर
चलाएब ।
विराहब—क्रि० विराह+अब
लागल जजातिवाला खेतमे
हलकर्षण ।
विरुक्क—क्रि० विरुद्ध होएब ।
विरोजा—ओषाधाविशेष ।
विलम्ब—क्रि० विलम्ब करब ।
विलम्ब—सं० दीर्घकाल ।
विलहब—क्रि० वितरण ।
विलहा } —क्रि० वितरण ।
विलहाबाँट }
विलाएब—क्रि० बिल्+अब — वि
लीन होएब ।
विलाड़(र)—उ० २ । मार्जार स्त्री०
बिलाड़ि ।

बिलेआ—केबाड़ लगएबाक छिटकी
बिलैआकन्द—ओषधिकन्दवि-
शेष ।
बिलौ—अ० अओ, सम्बोधन ।
बिलोवन्द—प्रबन्ध ।
बिलौकी—वर ओ बरुआक भिक्षा ।
बिलौकी माँगब—क्रि० वर ओ
बरुआक भिक्षा माँगब ।
विश्राम—सं० क्रियाविरति ।
विष—सं० साहुर ।
विषबड़िआ—विषवटी, सर्पादि
विषक गोला ।
विषाह—विषवाला (जन्तु) ।
विष्टी कौपीन ।
विष्टा—सं० अन्नमल ।
विष्टी—कौपीन ।
बिसखब—क्रि० गवादिक दुग्ध-
दानक परित्याग करब ।
बिसखोपरा—जन्तुविशेष ।
बिसनाएब—क्रि० बिसन्+अब
निन्द्रामे बाजब ।
बिसनारि—जलभव ओषधिविशेष ।
बिसपिपरी—विषपिपीलिका, वि-
खाइ कीटविशेष ।
बिसविस करब—क्रि० वेदना
विशेष ।
बिसविसाएब—क्रि० बिसविस+

अब—वेदनाविशेष ।
 बिसबिसी—बिसबिसाएब ।
 बिसरब—क्रि० विस्मरण ।
 बिसरभोर } —विस्मरणशील ।
 बिसराभोर
 बिसराम—विश्राम ।
 बिसराह—उ० विस्मरणशील ।
 स्त्री० बिसराहि ।
 बिसहरा—पूज्य सर्पिणीविशेष ।
 बिसाएब—ना० विष+अब—
 भुक्तविषवत् पाछाँ अधलाह करब ।
 बिसाढ़—बिस, कमलकन्द ।
 बिसानि } —दौर्गन्धविशेष,
 बिसाइन } विस्रगन्ध ।
 बिसारब—क्रि० बिसार+अब—
 विस्मृत कराएब ।
 बिस्तार—स० विस्तीर्णता ।
 बिस्फोट—स० व्रणविशेष ।
 बिस्मय—सं० आश्चर्य ।
 बिहखारब—क्रि० बिहखार+अब—
 तकबाक हेतु टाट फाड़ब ।
 बिहँगाड़ा—मालक रोगविशेष ।
 बिहरि—विल ।
 बिहरिआ हाल—ग्रीष्ममे बिहारि-
 क सङ्ग भेल वृष्टिसँ क्षेत्रक सार्द्र

होएब ।
 बिहरोन—बिहारि हो तादृश लक्ष-
 णयुक्त समय ।
 बिहारि—तीव्र वात ।
 बिहि—विधि, ब्रह्मा ।
 बिहुँसब—क्रि० ईषदास ।
 बिहुँसी—ईषदास ।
 बिहून—विहीन ।
 बीअनि—व्यजन ।
 बीआ—बीज १ बीजवपनसँ जनमल
 रोपणीय धान्यादिवृक्ष २ ।
 बीच—मध्य १ तारतम्य, अन्तर २ ।
 बीची—तमाकूक छोट रोपणीय
 ग्राह ।
 बीछ—वृश्चिक ।
 बीछब—क्रि० बिछ+अब—मिश्रि-
 तसँ पृथक् करब, वयन करब ।
 बीजी—नकुल ।
 बीजी पुरुष—वंशक मूलपुरुष ।
 बीजू—बीजोद्भव ओ कलमसँ अन्य
 (आम्रवृक्ष) ।
 बीट—एकठाम एक टा रोपला उत्तर
 ताहिसँ जनमल अनेकवृक्ष (यथा
 बाँसक बीट, धानक बीट) १
 बिड़, लवणविशेष २ ।
 बीभ—लौहादिधातुमे बहुत दिनें
 बेसल मलविशेष ।

बीड़—ताटङ्क भूषणविशेष ।
 बीड़
 बीड़ा—नाम्बूलक प्रभेद १ तृण-
 निर्मित वस्तुल घटादिक आधार
 २ बैसबाक हेतु मध्यमे बान्हल
 तृणपुञ्ज ३ ।
 बीड़ी—पर्णवोटी १ धूमपानवोटी २ ।
 बीड़ुक—भात पसओना तृणपुञ्ज ।
 बीणा—सं० वाद्यविशेष ।
 बीत—वितस्ति, ।
 बीतब—क्रि० बित+अब—व्यतीत
 होएब ।
 बीन—बीणा, वाद्यविशेष ।
 बीनब—क्रि० बिन्+अब—वयन ।
 बानबाजा—वाद्यविशेष ।
 बीभस—सं० घृणाव्यञ्जक ।
 बीर—सं० शूर १ केराक आवि-
 सित पत्र २ ।
 बीरनफुल—धान्यविशेष ।
 बीस—विंशति २०,
 बीसम—विंशतितम ।
 बीहन—बीआक अन्न ।
 बीहनि—धान्यवृक्षादिक पंक्ति
 पृथक् करब ।
 बीहनि देब } —क्रि० न्यवृक्षा-
 बीहब } दिक पंक्तिके पृ-
 थक् करब

बीहरि—विल ।
 बुकनी—चूर्ण ।
 बुकब—क्रि० चूर्ण करब ।
 बुकौर लागब—क्रि० रोदनादिसँ
 कण्ठक रुद्धताप्राप्ति ।
 बुचकट—कनकट्टा (घैलप्रभृति) ।
 बुच्च—घोकचल अल्पावकाशक
 (कान) ।
 बुभनुक—विशेष बोद्धा ।
 बु ब—क्रि० जानब ।
 बुभब-सुभब—क्रि० ज्ञानादि ।
 बुभारति—वादीप्रतिवादीसँ विप-
 यक अवगम ।
 बुट्टी—बूट, काटल वृक्षक सीर
 लागल खण्ड १ नाँसक खण्ड २ ।
 बुड़ब—क्रि० जलमे मग्न होएब १
 नष्ट होएब २ ।
 बुड़िआएब—ना० बुड़ि+अब—
 बूड़िक सदृश होएब ।
 बुड़ित्व—मूर्खता, बुड़िबकी ।
 बुड़िधनहा—उ० निन्द्य अनादर-
 णीय बूड़ि ।
 बुड़िपन—ज्ञानशून्यता १ बूड़िक
 किया २ ।
 बुड़िबक—ज्ञानशून्य, ।
 बुड़िबकहा—उ० अनाद्रियमाण
 बूड़ि । स्त्री० बुड़िबकही ।

बुद्धिबकी—ज्ञानशून्यता १ बुद्धि
क्रिया २ ।

बुद्धिभतन } —ज्ञानशून्य ।
बुद्धिसुण्ठी }

बुद्धपन } —वार्द्धक्य ।
बुद्धारी }

बुद्धिआ—स्त्री० अनादरणीय वृद्धा ।

बुद्धिआ पाखरि—धान्यविशेष ।

बुद्धोन—वृद्धसदृश ।

बुद्धे—अ० बलें, यत्ने ।

बुद्ध—मदमत्त ।

बुद्धा—बल ।

बुद्धि—सं० ज्ञान ।

बुद्धिमान्—सं० बुद्धिशाली ।

बुद्धि—सं० दिनविशेष, रविसं चारिम
दिन

बुद्धिआर—उ० बुद्धिमान् । स्त्री०
बुद्धिआरि ।

बुद्धिआरी—बुद्धिमत्ता ।

बुद्धिबधिआ—छलसँ अनका द्वारा
अपना हेतु बाछाक अण्डच्छेद
कराएब ।

बुनका } —बिन्दु ।

बुनकी }

बुनछेक—वर्षाबिन्दुक विच्छेद ।

बुनब—क्रि० बीजवपन ।

बुनबुना—बुद्धवृद्ध ।

बुनबुनाएब—क्रि० बुनबुन+अब—
बुद्धवृद्धयुक्त होएब ।

बुनिआ—लड्डू मुंगबा प्रभृतिक
हेतु बुन्दक सन गोल गोल
घृतपक खाद्य ।

बुनिआएब—ना० बुन्नी छोड़ब,
मन्द-मन्द वृष्टि होएब ।

बुन्द—बिन्दु ।

बुन्दा

बुन्न—जलबिन्दु ।

बुन्नी

बुलब—क्रि० पर्यटन ।

बुलाकी—नासाभूषणविशेष ।

बूकब—क्रि० बुक्+अब—बूना
करब ।

बूम्—बोध

बूम्ब—क्रि० बुम्+अब—जानब ।

बूम्ब-सूम्ब—क्रि० जानब सूम्ब-
प्रभृति ।

बूम्भि—बुद्धि ।

बूट—बुट्टी, काटल वृक्षक सीरबाला
खण्ड १ हि० बदाम, अन्न-
विशेष २ ।

बूटी—औषधरूप डारिक खण्ड ।

बूड़ब—क्रि० बुद्ध+अब—नष्ट
होएब ।

बूड़ि—ज्ञानशून्य ।

बूड़—उ० वृद्ध । स्त्री० बूड़ि ।

बूनब—क्रि० बुन्+अब—बीआ
छीटब ।

बूलब—क्रि० बुल्+अब—टहलब ।

बृत्तान्त—सं० वार्ता ।

बृत्ति—सं० व्यवहार १ जीविका २ ।

बृद्ध—सं० जराप्राप्त ।

बृद्धप्रपितामह—पुं० प्रपितामह
पिता ।

बृद्धप्रपितामही—स्त्री० प्रपिताम-
हक स्त्री ।

बृद्धप्रपौत्र—उ० प्रपौत्रक अपत्य ।
स्त्री० वृद्धप्रपौत्री ।

बृद्धप्रमातामह—पुं० प्रमातामह
पिता ।

बृद्धप्रमातामही—स्त्री० प्रमाता-
महक माता ।

बृहत्—सं० पैघ ।

बृहस्पति—सं० गुरुवार ।

बेआलिस—द्राचत्वारिंशत् ।

बेआलिसम—द्राचत्वारिंशत्तम ।

बेइमान—वि० स्वार्थवश मिथ्या-
व्यवहर्ता ।

बेओरा—उपाय ।

बेकछाएब—क्रि० बेकछव+अब—
व्यक्त करब ।

बेकति—व्यक्ति ।

बेकार—निष्क्रिय, अकार्यक ।

बेकाली—दूर जाए अँगने-अँगने
क्रयविक्रयकर्त्ता ।

बेख—नाना वृक्ष ।

वेग—सं० तीव्र गति ।

वेगरता—व्यग्रता ।

वेगरताशान्ति—व्यग्रताक उप-
शम ।

वेगरतित } —व्यग्रतायुक्त ।

वेगरतू }

बेगार—भारवाहक ।

बेगारी—भारवहन, बेगारक कर्म ।

बेङ्क—भेक, मण्डक ।

बेङ्कची—बेङ्कक बच्चा ।

बेच—लवणादिक्रयणमे मूल्यस्था-
नापन्न अन्न ।

बेचब—क्रि० विक्रय ।

बेचब-बिकिनब } —क्रयवि-

बेच-बिकिन } क्रय ।

बेचारा—दीन, अप्रतिभ (परोक्ष-
चर्चामे) ।

बेजाए—अ० अधलाह, असम्यक् ।
 बेजान—अ० वि० प्राणपातान-
 पेक्ष ।
 बेञ्च—वि० बैसबाक लम्बा कुरसी ।
 बेँट—अस्त्रमे पकड़बाक हेतु लगा-
 ओल डण्टा (खुरपी कोदारि
 कुड़हरि आदिमे) ।
 बेटा—पुं० पुत्र ।
 बेटी—स्त्री० पुत्री ।
 बेठ—बेगार ।
 बेड़ी—शृङ्खला ।
 बेडोल—बैठब, कुत्सिताकारक ।
 बेढ़—बेष्टन ।
 बेढ़ब—क्रि० बेष्टन ।
 बेढ़ी—बेष्टन ।
 बेँत—वेत्र, लताविशेष ।
 बेतहा } —वेत्रनिमित्त (तराजूक
 बेतही } पल्ला प्रभृति) ।
 बेताक—कुताक ।
 बेतासा—व्याकुल ।
 बेँती नमब—क्रि० पीठ भूमि दिस
 कए हाथ-पाएर भूमिमे रोपि
 धनुषाकार नमब ।
 बेतुकार—अपमानशब्द कथन,
 रेकारसँ बाजब ।
 बेत्रेक—अ० विना ।

बेथा—व्यथा ।
 बेधुनि—असंज्ञ ।
 बेन—पठाओल पाबनिक बखरा ।
 बेनमा—दुःखी ।
 बेना—ब्योना, क्रयविक्रयमे स्थिरताक
 हेतु प्रथमतः थोड़ेक देल मूल्य ।
 बेनामक } —विना नामक
 बेनामा } (पत्रादि) ।
 बेपर्द—वि० आवरणशून्य ।
 बेपारी—व्यापारकारी (बनिआ
 आदि) ।
 बेवसाए—व्यवसाय, परिश्रम ।
 बेवसायी—व्यवसायी ।
 बेवा—स्त्री० विधवा ।
 बेवाइल } —वृथाव्यय ।
 बेवालि }
 बेवूझ—बुद्धिहीन ।
 बेमार—वि० अस्वस्थ, रोगी ।
 बेर—आवृत्ति (यथा 'दू बेर, तीन
 बेर') १ अवसर (यथा 'बेरमे
 अएलहुँ') २ दिनक चतुर्थ पहर
 (यथा 'बेरखन आएब') ३ ।
 बेर उठब—क्रि० दिन उठब, सूर्यकेँ
 उदयस्थानसँ दूर आएब ।
 बेरबाद—वृथा खर्च, नष्ट ।

बेसा—छिद्र करबाक यन्त्रविशेष ।
 बेहट—बेरुक पहरक खाद्य ।
 बेराएब—क्रि० बेरबू+अब—प्रत्यक्
 करब ।
 बेराओल—प्रत्यक् कृत ।
 बेरागन—शूद्रादिक पूजापाठ करबाक
 नियत दिन ।
 बेराबेरी—अ० पर्यायिण ।
 बेरुक—दिनक चारि अपहरम होए-
 निहार (कार्यादि) ।
 बेरुका पहर—दिनक चारिम
 पहर ।
 बेरेक—अ० कदाचित् ।
 बेरु—बित्तव ।
 बेरओना—मत्स्यविशेष ।
 बेरुकठ—बेलक गालक काठ ।
 बेलगान—करशून्य (भूमि) ।
 बेरचा—खुरपीक आकारक दीर्घ
 हथिआर ।
 बेरतोड़ी—बेलक तोड़नाइ ।
 बेरदार—उ० माटि कउनहार
 जातिविशेष । स्त्री० बेलदरानी ।
 बेरना—रोटी बेलबाक साधन-
 विशेष ।
 बेरनोती—बित्वाभिमन्त्रण, दुर्गा
 शारदपूजाक एक कर्म ।

बेलपात—बित्तवपत्र ।
 बेलब—क्रि० बेलनाक व्यापार
 आधार पर आँटाक गुलिआ
 पसारब ।
 बेलसि—निःसत्त्व ।
 बेलसूँठि—काँच बेलक सुखौ ती ।
 बेल्ला—बेलीफूलक प्रभेद १ वाद्य-
 विशेष २ ।
 बेल्लागि—अलग्न (स्तम्भादि) ।
 बेली—मल्लिका, पुष्पविशेष ।
 बेलौना—मत्स्यविशेष ।
 बेस—अ० स्वीकार १ साधु (क्रिया-
 विशेषणमे) २ ।
 बेसकिमती—हि० बहुमूल्य ।
 बेसन—तीमने मिश्रान्न आदिमे
 देवाक तण्डुलादिचूर्ण ।
 बेसबाहा—उत्तम प्रकारक ।
 बेसरि—नासाभूषणविशेष ।
 बेसरोकार—वि० असम्बन्धी ।
 बेसाती—देशान्तरसँ आबे वस्तु-
 विक्रेता ।
 बेसाह—भोजनार्थ अन्नकयण ।
 बेसाहवा—क्रि० बेसाहू+अब—
 भोजनार्थ अन्न कीनब ।
 बेसूधि—असंज्ञ, अनवधान ।
 वेश—सं० भेस, स्वरूप ।

बेहरी—चन्दा ।
 बेहला—अलि० बरिआताक मङ्गलार्थ
 घटधारीक समूह ।
 बेहलागाँट—बेहलाकेँ द्रव्यक बाँट ।
 बेहाया—वि० निर्लज्ज, दुनिवार ।
 बेहाल—वि० व्यग्र ।
 बेहोस—वि० चैतन्यहीन ।
 बेहोसी—चैतन्यहीनता ।
 बैगन—वि० भाटा, वार्ताकी ।
 बैगनी—रङ्गक प्रमेद ।
 बैठक—बैसक, बैसबाक पीठ ।
 बैठा—धोबिक उपाधि ।
 बैठाड़—बैसबाक नियत स्थान ।
 बैद—वेद ।
 बैदगिरी—वैद्यक काज ।
 बैदिक—स० अधीतवेदक ।
 बैमान—वि० स्वार्थवश धर्मत्यागी ।
 बैमानी—वि० स्वार्थवश धर्मत्याग,
 अधर्म ।
 बैर—र० शत्रुता ।
 बैरागी—विरक्त, बाबाजी ।
 बैरि—बदर, फलविशेष ।
 बैरी—स० शत्रु ।
 बैलाएब—क्रि० बैलबू+अब—नि-
 प्काशन ।
 बैशाख—स० मासविशेष ।
 बैश्य—स० तृतीय वण ।

बैस—वैश्य, जातिविशेष ।
 बैसफूखा—वैशाखसम्बन्धी (अन्न) ।
 बैसक—बैठक, बैसबाक पीठ ।
 बैसब—क्रि० उपवेशन ।
 बैसबनिआँ—जातिविशेष ।
 बैसाड़—नित्य बैसबाक स्थान ।
 बैसाड़ी—निष्क्रियता ।
 बोअब—क्रि० बो+अब—बीज-
 वपन ।
 बोआर—पैघ बोआरी ।
 बोआरी—पाठीन, मत्स्यविशेष ।
 बोकरब—क्रि० वमन ।
 बोकार—वमन १ वमनमे बहराएल
 विकार २ ।
 बोकिआएब—क्रि० बोकि+अब—
 बो बो शब्द करब ।
 बोकैआ—धान्यविशेष ।
 बोको—पृष्ठवाद्ध्य यान ।
 बोकड़ा—अधिक बएसक छागर ।
 बोच—जलीय जन्तुविशेष ।
 बोझ—जुआसँ बान्हल तृणादिपुञ्ज ।
 बोझा—उधबाक भार ।
 बोट—वि० यन्त्रयुत नौका ।
 बोड़ा—अन्नविशेष ।
 बोड़ी—कटनिहार विषयुक्त
 बोड़ी—जन्तुविशेष ।

बोतू—विना बधिआ कएल अशिशु
 छाग ।
 बोदरि—धान्यविशेष ।
 बोन—वन ।
 बोनाएब—क्रि० बोन्+अब आ-
 म्रफलक पारपाकक पूर्वरूप प्राप्त
 करब ।
 बोनि—दोनक वेतन ।
 बोनि—चूकब—बोभसँ कटबाक
 बोनि देब ।
 बोबिआएब—ना० बोब+
 अब हाथीक बाँ बाँ शब्द
 करब ।
 बोमिआएब—ना० बो+अब
 बाँ बिआएब ।
 बोर—माछ मारबाक हेतु बनसीमे
 देल खाद्य १ अमट बनएबाम
 देबाक आमक रस २ ।
 बोरब—क्रि० घोरल रङ्गमे
 डुबाएब ।
 बोरसि—माटिक अग्निपात्र ।
 बोरा—गोणी ।
 बोल—वाणी, शब्द ।
 बोल फूटब—क्रि० वाणी स्फुट
 होएब ।
 बोली—पक्षी आदिक बाजब १
 मनुष्यभाषा २ ।

बोली देब—क्रि० टिटकारी देब,
 अनुचित प्रोत्साहन करब ।
 बोह—अधिक जलप्रवाह ।
 बोहनि—प्रातःकालक प्रथमविक्रयसँ
 लाभ ।
 बोहाएब—क्रि० बोह+अब जल-
 प्रवाहमे भसिआएब, नष्ट करब ।
 बोआ—बालक (कोमलालापमे) ।
 बोआएब—क्रि० बो+अब भो-
 तिआएब ।
 बोआसिनि—स्त्री० बहुवासिनी,
 पुत्रवधूप्रभृति ।
 बौक—मूक ।
 बोड़ी—पलचतुर्थांश ।
 बौसब } —क्रि० हृष्टतापनोदन
 बौसब } करब ।
 व्यक्ति—लोक ।
 व्यक्तितारए—व्यक्तित्व, सत्यत्वा-
 दिगुणयुक्तता ।
 व्यक्तित्व—व्यक्तितारए ।
 व्यक्तिनिष्ठ—नीक व्यक्ति ।
 व्यग्र—स० आकुल ।
 व्यग्रता—स० बेगरता, आकुली-
 भाव ।
 व्यतीत—स० बीतल ।
 व्यथा—स० पीड़ा, वेदना ।

व्यवस्था—सं० निर्णय ।
व्यवहार—सं० लौकिकक्रिया ।
व्यर्थ—सं० वृथा ।
व्याकुल—सं० दुःस्थित ।
व्याधि—सं० रोग ।
व्योत—प्रबन्ध ।
व्योतव—क्रि० प्रबन्ध करब ।
व्योना—क्रयणमे स्थिरताक हेतु
क्रयणसँ पूर्व देखोइकेल मूल्य ।
व्योरा—उपाय ।
ब्रह्मपत्र—पुराणादिक अबद्ध पत्र ।
ब्रह्मा—विधि ।
ब्राह्मण—सं० विप्र ।
भ
भओक...बसातक घूमिकेँ गता-
यात ।
भओगर...अधिक भाओसँ आदेय ।
भओना करब...क्रि० कन्दन-
विशेष ।
भक...किञ्चित् अँखिभरपी ।
भकइजोत...अत्यल्प दीपादिक
प्रकाश ।
भक खाएब...क्रि० किञ्चित् भ्रममे
पड़ब ।
भकचक...विस्मय ।
भकचब...क्रि० अनुपयोगा लेखसँ

दूरि करब ।
भकड़ब...क्रि० तण्डुलादिक निः-
सार होएब ।
भकड़ा...धानकेँ सड़ाए बनाओल
(चाउर) ।
भकड़ार...समन्तात् प्रकुलित ।
भकजोगनी...खद्योत, ज्योति-
रिक्षण ।
भकभक करब...क्रि० कटु वेदना-
विशेष ।
भकभकाएब...भकभक+अब—
कटुवेदनाविशेष ।
भकभकी...कटु वेदनाविशेष ।
भक लागब...क्रि० जाग्रदवस्थामे
किञ्चित् निद्रागमवशात् वा
मदविशात् अज्ञानताप्राप्ति ।
भकसी भोँकब...क्रि० सर्वथा
उच्छिन्न करब ।
भकुआ...धानक अधिक भिजबाक
कारण गन्धयुक्त (उसिना चाउर) ।
भकुआएब...क्रि० भकु+अब...
निद्रामज्जादिवशात् अप्रसन्नता ।
भकुरमुह...उ० भाकुर मालसन
चाकर मुहबाला ।
भकोभण्ड...अरक्षित, यत्रकुत्र
अयथोचित स्थित ।
भखब...क्रि० सापण ।

भखिऔटी...भाषाक प्रयोग ।
भँगताराह...विक्षिप्तप्राय, बाधायुक्त,
असुदूर ।
भगता...जकरा देहमे देवता
आवधि ।
भगनदर...भगनदर, रोगविशेष ।
भगनर...
भगबा...कौपीन ।
भगवान्...ईश्वर ।
भँगरिआ...भृङ्गराज, ओषधिविशेष ।
भगिनजमाए...भगिनीक जमाए ।
भगिनपुतोहु...बहिनिक पुत्रस्त्री ।
भगिनमान...भागिनेयत्वेन मानार्ह ।
भगिनी स्त्री...भागिनेयी, बहि-
निक कन्या ।
भङ्घोटा...भाङ्घ घोटबाक पात्र ।
भङ्घठाह...बाधायुक्त, जाहिमे भाङ्घ
हो ।
भङ्घठी...मरम्मत ।
भङ्घपीवा...अधिक भाङ्घ पीनि-
हार ।
भङ्घतराह...असुदूर, बाधायुक्त,
विक्षिप्तप्राय ।
भङ्घरिआ...भृङ्गराज, ओषधि-
विशेष ।

भङ्गेड़ी } —अधिक भाङ्घ पीनि-
भङ्गेरी } हार ।
भङ्ग—रहस्य, निर्माणप्रकार ।
भङ्गन—सं० भगवन्नामकीर्तन,
भगवद्गीतगान १ भगवत्सेवा २ ।
भङ्गनिआ—भगवद्गीतगायक ।
भङ्गब—क्रि० भङ्ग+अब—त्व-
समानमूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ
परिवर्तित होएब ।
भङ्गाएब—क्रि० भङ्ग+अब—स्व-
समानमूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ
परिवर्तित करब ।
भङ्गार—अनुरूपताक जाँच ।
भङ्गारब—क्रि० भङ्गार+अब—अ-
नुरूपताक जाँच करब ।
भँजिआएब—ना० भँजि+अब—
भँजि ताकब ।
भङ्गीत—भङ्गाओल छोट मुद्रासभ ।
भट—भट्ट, पेटक गरेँ भूस्थित
(कपर्दकादि) ।
भटकब—क्रि० किञ्चिन्मात्र प्रत्य-
भिज्ञा करब ।
भटका—बजारब, बजरा ।
भटपुरैनि—पुरैनिक पातसन पात-
बाला ओषधिविशेष ।
भटबड़(र)—तरल भाटाक चक्का ।

भटभेर—पाकमे अशुद्धिसम्बन्ध ।
 भटमाह—उ० जकर जेठ मरि गेल छैक से (व्यक्ति) । स्त्री० भट-माहि ।
 भटरङ्ग—जाहिमे रङ्ग कर्त्तव्य कम हो से (वस्त्रादि) ।
 भटाक दए—अ० 'भट' शब्द पूर्वक ।
 भटौड़ी—भाण्टाकीवटी (व्यञ्जनमे देय) ।
 भट्टा—भण्टाको ।
 भट्टा—भाठा, कुम्हरौट माटिक ले-खनी १ पाकार्य पुञ्जीकृत इष्ट-कासमुदाय २ अप्रधान स्थान ३ ।
 भट्टी—मयालय ।
 भठिआर } —माठि दिस, जेम-
 भठिआरी } हर नदीक प्रवाह जाय १ अप्रधान स्थान २ ।
 भठोत्तर—भाटकेँ देल (भूमि) ।
 भडकब—क्रि० मालक भयसँ पड़ा-एब ।
 भडकताली—मिथ्याभयप्रदर्शन ।
 भडकी देब—क्रि० भयप्रदर्शन करब ।

भँड़(भण)कुस्सा } —चूर चूरमेल,
 भँड़(भण)कूस } बहुत फूटल ।
 भँड़(भण)छूह } —जिह्वालोलुप-
 भँड़(भण)छूहा } ताप्रयुक्त ख-
 एबामे विचार नहि कएनिहार ।
 भड़हर—धसना खसलासँ निम्न भूमि ।
 भँड़ (भण) हर—मृद्भाण्ड फेकबाक भूमि ।
 भँड़ा(भण)र—भाण्डागार ।
 भँड़ा(भण)रकोन } —वायव्य-
 भँड़ा(भण)रकोनी } कोण ।
 भँड़ा(भण)री—भाण्डागारमे नि-
 युक्त (व्यक्ति) ।
 भँड़ (भण) आ—वेश्याक दलाल,
 कुत्सितकार्यकर्ता ।
 भँड़े(भणे)र—अधिक मृद्भाण्डक स्थान ।
 भण्डा—रहस्य ।
 भण्डाफोड़—रहस्योद्घाटन ।
 भण्डार—वस्तुस्थापनागृह ।
 भण्डारा—बाबाजीक भोज ।
 भण्डारी—भाण्डागारमे नियुक्त (पुरुष) ।

भण्डारी कोन—वायव्यकोण ।
 भतखइ } —भात खएबाक व्यव-
 भतखै } हार ।
 भतबरी—असौजन्य, परस्पर भात खएबाक व्यवहारक निवृत्ति ।
 भतभुल्लुक—अत्यन्तभक्तप्रिय (नि-
 न्दामे) ।
 भतरासि—एक पाबनि ।
 भतरोइँ } —अत्यन्त छोट
 भतरोइँआँ } रोम ।
 भतलोह—मृदु लोह ।
 भतार—भर्ता, स्वामी ।
 भतिजी—स्त्री० भ्रातृजा ।
 भतोल—बूढ़ि, मूढ़ ।
 भत्ता } —डोरीक गुण ।
 भत्ती }
 भथिहान—वस्तिस्थान ।
 भदइ—भदै, भादबमे होनिहार ।
 भदवा—श्रवणादि रेवत्यन्त ।
 भदवारि } —भाद्र ओ तत्प्रा-
 भदबारी } न्त समय ।
 भदरसोख—भादबक सुखाएल खेत ।

भदेस—अधलाह देश ।
 भदै—भाद्रभव (अन्न) ।
 भनकब—क्रि० कर्णपरम्परदा किञ्चित् प्रकाशित होएब ।
 भनकी—कर्णपरम्परया किञ्चित् प्रकाश ।
 भनव—क्रि० वर्णन ।
 भनभनाएब—क्रि० भनभन+अब—मन्द मन्द अस्पष्ट शब्द बाजब ।
 भनभनी—मन्दमन्द अस्पष्ट शब्द ।
 भनसाधर } —महानसगृह ।
 भनसार }
 भनसिआ—पाककर्ता ।
 भनिता—गीतमे कविनामोल्लेख ।
 भने—अ० उत्तम रीतिसँ ।
 भफाएब—ना० भफ+अब—वाष्पो-
 द्रमन ।
 भवव—क्रि० मनःपूत होएब ।
 भभक—दौर्गन्ध्य ।
 भभकब—क्रि० दौर्गन्ध्यप्रकाशन ।
 भभठपन—आग्रह, दुराग्रह ।
 भभठिआ—दुराग्रही ।
 भभरव—क्रि० विदीण भए खसब ।
 भभाएकेँ खसब—क्रि० सशब्द खसब ।

भभाएकेँ हँसब—क्रि० सशब्द
हँसब ।

भभाएब—क्रि० पतनजन्य शब्द-
धारा ।

भमरा—भ्रमर १ पानि बहबांक हेतु
बनाओल बर्तुल पूलक अवयव २ ।

भय—स० डर, भीति ।

भयोन—भयावह ।

भर—अवलम्ब ।

भरकछ—बद्धकच्छता ।

भरकुस्सा—आघातसँ पूर्ण चूरल
गेल ।

भरखरि—पर्याप्त (फलक पाकब) ।

भरगर—सावलम्ब ।

भरती—नियुक्त १ भरल २ ।

भरदुतिआ—भ्रातृद्वितीया ।

भरथा—पक्षिविशेष ।

भरदूआ—भारद्वाज, पक्षिविशेष ।

भरन—निम्न स्थलमे बाढ़िसँ माटिक
पूर्णता ।

भरना—ऋणक आदाए पर्यन्त सूदि-
मे देल (भूमि) ।

भरनि—निम्नमे बाढ़िसँ मृत्युपूर्णता ।

भरनी—बल बिनबामे तिर्यक सूत्र ।

भरब—क्रि० पूर्ण करब ।

भरम—भ्रम ।

भरमब—क्रि० किञ्चिन्मात्र निद्रा-

युक्त होएब ।

भरसह—भारवहनमे सहायता देब ।

भरसाहा—भार सहनिहार स्तम्भ-
विशेष ।

भराइ—भरब, पूर्ण करब ।

भराएब—क्रि० भरब+अब—पूर्ण
कराएब ।

भराठ—माटि दए समतल कएल
(भूमि) ।

भरि—अ० परिमाण (यथा 'एक
भरि, मन भरि') १ यावत्,
पर्यन्त (यथा 'भरि दिन, दिन
भरि' २ पूर्णता (यथा 'भरि
घैल, भरि पेट') ३ ।

भरिआ—भारवाह ।

भरिआएब—ना० भारी+अब—
गुरुभूत होएब ।

भरिगर—अधिक भारसँ युक्त, औ-
जनमे गुरुतर ।

भरि पाएर—अ० पादानुरूप
(गमन) ।

भरि पोख—अ० शक्त्यनुसार ।

भरिसक—अ० यावच्छक्ति १
प्रायः २ ।

भरुआ—भीजल धानकेँ भूजिकेँ
बनाओल (चाउर) ।

भरेठ—माटि दए भरल ।

भरोस—भरवश, आशा ।

भल—उत्तम, नीक (हुनका भल
होइन्हि) ।

भलमनसात—उत्तम मनुष्यक
क्रिया ।

भलमन्दा—ने नीक ने अधलाइ,
मध्यम ।

भलमानुस—उत्तम व्यक्ति, नीक
छोक ।

भसब—क्रि० भसिआएब, प्रवाह-
बश भाठि दिसि गमन ।

भसम—भस्म ।

भसाठ } —जलमे भसिकेँ आ-
भसाठी } एल माटि ।

भस्म—स० छाउर ।

भहुँ—भ्रू ।

भाइ—भाए, भ्राता ।

भाउजि—स्त्री० ज्येष्ठभ्रातृवधू ।

भाउली—ओ जमीन जाहिमे आधा-
मालिकक ओ आधा रैअतिक
अंश हो ।

भाए—भ्राता ।

भाओ—विक्रयमूल्यव्यवस्था ।

भाकुर—मत्स्यविशेष ।

भाखब—क्रि० भख+अब—
बाषण ।

भाग—अश १ विभाजन २ ।

भाँग(भाङ्ग)—विजया ।

भाँग(भाङ्ग)ठ—बाधा, विलम्ब ।

भाँग(भाङ्ग)ब—क्रि० भँग(भङ्ग)+
अब—खण्ड करब ।

भागमन्त—उ० उत्कृष्टभाग्यशाली ।
स्त्री० भागमन्ति ।

भागिन—उ० भागिनेय । स्त्री०
भागिनी ।

भागी—स० सम्बन्धी ।

भाग्य—स० नीक अदृष्ट ।

भाँज—भाँजब ।

भाँजब—क्रि० भँजू+अब—हाथसँ
उठाए घुमाएब १ कौड़ीसभकेँ
हाथमे लए माटिमे खसाएब २ ।

भाँजि—गमनागमनचिह्न ।

भाट—भाठ, मागध, कबित्पाठक
जातिविशेष ।

भाँटा—वार्ताकी ।

भाँटि—क्षुपविशेष ।

भाठ—से दिशा जेमहर नदीक
प्रवाह जाए १ अप्रधान स्थान
२ मागध ३ ।

भाठा—भूमिमे लिखबाक कुम्हरौट
माटिक शलाका १ पाकार्थ

इष्टकासमूह २ ।

भाठि—नदीमे प्रवाह जाहि दिसि

जाए से (भूमि) ।
भाँड़—जाहिमे पाक कएल जाए से
 गृहभाण्ड ।
भाँड़ बहराएब—क्रि० मालक
 गर्भाशय बहराएब ।
भात—भक्त, सिद्ध तण्डुल ।
भातमसाला—तृणविशेष ।
भातिज—उ० भ्रातृज । स्त्री०
 भतिजी ।
भाथि } —भस्त्रा ।
भाथी }
भादब—भाद्रपद (मास) ।
भानस—महानस, भोजनार्थ पाक ।
भाफ—वाष्प ।
भाफब—क्रि० भस्म+अब—वाष्प-
 युक्त करब ।
भाव—स० अभिप्राय ।
भावना—सं० मानसविचार ।
भावहु—स्त्री० कनिष्ठभ्रातृवधू ।
भावी—सं० भविष्यमे होएनिहार ।
भाभट } —दुराग्रह ।
भाभठ }
भाभरी—पौखवचनसँ भयप्रदर्शन ।
भाभंस—अभ्युदय ।
भाय—भाए, भ्राता ।

भार—सं० दाब, भारी वस्तु
 आक्रान्ति १ वहनीय वस्तुसँ
 भरल दू सीकसँ युक्त स्कन्धवाद्य
 वंशदण्ड २ ।
भारतवर्ष—स० हिन्दुस्तान ।
भारदोर—भार-वेन-प्रभृति ।
भारब—क्रि० भार+अब—भीजल
 धानकेँ भूजब ।
भारा—वरण १ यानादिक वेतन २ ।
भारी—गुरुभूत ।
भालरि—सम्पूर्ण केराक पात ।
भालसरी—बकुल ।
भाला—मल्ल, भौकबाक अस्त्रविशेष ।
भास—स्वर ।
भासब—क्रि० भस्म+अब—प्रवाह
 वश गमन १ गृहादिक हुक
 हुकब २ ।
भिखमँग(मछ)नी—स्त्री० भिक्षा
 मँगनिहारि ।
भिखमङ्गा } —पुं० भिक्षा मँग
भिखारि } निहार ।
भिजब—क्रि० आर्द्र होएब ।
भिङगर—लोकसङ्कुल १ श्रम-
 साध्य २ ।
भिङ्गन्त—मुठभिराओ, सामुख्य

भिँड़िआएब } —ना० भीड़ी+
भिणिआएब } अब—भीड़ी
 बनाएब, मोड़ि
 मोड़ि एकत्रित
 करब जाहिसँ ओभराए नहि ।
भितघर—माष्टिक भित्तिवाला घर ।
भितर—अभ्यन्तर ।
भितरपेन—जकर जड़ि गृहादिक
 भीतर झुकल हो से (खाम्ही) ।
भितरिआ—आभ्यन्तरिक ।
भितरी—आभ्यन्तर ।
भिनकब—क्रि० भात आदिमे
 माछीक सम्बन्ध होएब ।
भिनभिनाएब—क्रि० भिनभिन+
 अब—मन अश्रद्धायुक्त होएब ।
भिनसर—प्रातःकाल ।
भिनसरवा(वी)राति—उपःकाल ।
भिनसरुक } —प्रातःकालिक ।
भिनसरुका }
भिनाओज—विभक्तता ।
भिरगर—भिङगर, संकुल १ श्रम-
 साध्य २ ।
भिरब—क्रि० संयुक्त होएब ।
भिलबा—उ० अनादरणीय भिल ।
 स्त्री० भिलबी ।
भिल्ल—सं० उ० बन्ध लोक ।

स्त्री० भिलनी ।
भिसिण्ड—अतिविशाल (निन्दामे) ।
भिहगर—लम्बा-चओड़ा देह-
 वाला ।
भीख—भिक्षा ।
भीखन—भीषण, भयावह ।
भीजब—क्रि० भिज्+अब—आर्द्र
 होएब ।
भीठ—धनहरसँ आन (खेत) ।
भीड़—लोकसमुदाय ।
भीड़(भीण)—पोखरिक उच्च
 मोहार ।
भीड़ी(भीणी)—भिँड़िआओल
 (डोरी) ।
भीत—कुब्ध, भित्ति १ सं० भय-
 युक्त २ ।
भीतर—अभ्यन्तर ।
भीर—भार, परिश्रम ।
भीरब—क्रि० भिर+अब—संयुक्त
 होएब ।
भील—भिलजाति ।
भुअङ्गर—फटफटार, स्पष्ट देखा
 (चानन आदि) ।
भुइआ—भूमि ।
भुइहार—उ० भूमिहार ब्राह्मण ।
भुकनी लागब—क्रि० बारंबार
 एके बात कहब ।

भुक्क—क्रि० कुरुर-गिदड़क
बाजब ।

भुकरी—तृणविशेष

भुखल—बुभुक्षित ।

भुष—ज्ञानहीन ।

भुजब—क्रि० भर्जन ।

भुजबन्द—भूषणविशेष ।

भुजबी—काँच आम्रादिक बिनु
चिबओनहु खएबाक योग्य मेही-
मेही खण्ड ।

भुजाली—दबिला, कटबाक उप-
करणविशेष ।

भुटकब—क्रि० रोमाञ्चयुक्त होएब ।

भुटका—शाकविशेष ।

भुटकुनमा—मोट ओ कम लम्बा
(मेरिचाइ आदि) ।

भुटाड़ि } —अधिक भुट्ट, वामन ।
भुटाड़ि }

भुट्ट—उ० वामन । स्त्री० भुट्टि ।

भुडरब—क्रि० साक्षात् आगिमे
लवणादिक ईषत् पाक ।

भुडभुरी—कीटोत्खात छोट-छोट
मृत्खण्डपुज ।

भुडरा—साक्षात् अग्निमे अति-
पक ।

भुडकबा—रात्रिशेषमे उगनिहार

पैघ ताराविशेष ।

भुण्डी—कतोक गहनमे लटकल
गोल अवयव १ अङ्गक मून्हीमे
पैसएबाक गोल नूओ २ ।

भुतखापड़ि—अलच्छ ।

भुतसण्पा—सर्पस्वरूप भूत ।

भुताहि—भूतकयु) गाछी) ।

भुनचट्टी—भुनी, मत्स्यविशेष ।

भुन्ना—मत्स्यविशेष ।

भुन्नी—मत्स्यविशेष ।

भुमफोड़—भूमि फाड़ि बहराएल ।

भुमहुर—सूक्ष्म-सूक्ष्म वह्निकणयुक्त
तप्त छाउर ।

भुरकुस्सा—अनेक खण्ड भए
फुटल ।

भुरचुङ्गा—छोट सुकाठक स्तम्भमे
पैसाओल बाँस ।

भुरभुरी—भुरभुङ्गी, गोमयादिमे
कीटकृत मृत्कणपुज ।

भुररी—चूर्ण, भुङ्गी ।

भुरसी—भूयसी दक्षिणा ।

भुल्ल—उ० लालिमायुक्त उजरी-
धबल (केश) १ तदयुक्त (महिसा-
प्रभृति) २ । स्त्री० भुल्लि ।

भुल्ला—मत्स्यविशेष ।

भुसकाँड़—मुस्ती रखबाक घर ।

भुसकौल—अध्ययन कएनहु मूर्ख,

असंस्कारी ।

भुसखार—भुस्सा रखबाक घर ।

भुसबा—मिष्टान्न विशेष ।

भुसभुसाह—दगलाउत्तर फूटि
गेनिहार ।

भुसहन—साधारण भूसाबाला
खाद्यान्न ।

भुसहा } —भुस्सासँ युक्त ।

भुसाह }

भस्सा } —बुस, अन्नक तुष ।

भुस्सो }

भूकब—क्रि० भूक+अब—कुरुर-
गिदरक बाजब ।

भूकमल—स्थलकमल ।

भूकम्प—सं० भूमिक डोलब ।

भूकुम्हड़ा—भूकूष्माण्ड, ओषधि-
विशेष ।

भूख—बुभुक्षा ।

भूखल—बुभुक्षित । पङ्क

भूचाप—पुष्पविशेष ।

भूजब—क्रि० भुज्+अब—भर्जन ।

भूजा—भृष्ट, भूजल (खाद्य) ।

भूत—सं० देवयोनिविशेष, प्रेत ।

भूताक्षर—भूतलिखित आखर,
पढ़बाक अयोग्य अक्षर ।

भूतासए—भूतावेश ।

भूमि—सं० धरित्री ।

भूमिहार—सं० भुईहार, ब्राह्मण-
विशेष ।

भूर—विल ।

भूरभार—विलादि ।

भूरा—चीनीक प्रभेद १ रक
प्रभेद २ ।

भृङ्ग—सं० कीटविशेष १ शाक-
विशेष २ ।

भृङ्गी—पक्षि विशेष १ वाद्य-
विशेष २ ।

भेख—वेष ।

भेज—प्रातिनिध्य ।

भेज पूरब—क्रि० प्रातिनिध्य पूरब ।

भेट } —वियुक्त साक्षात्कार १

भेंट } कटहार २ ।

भेंट घाँट—साक्षात्कारादि ।

भेटी—सलामी, भेंट करबाक
कालक उपहार ।

भेंड़(भेण)वा—अक्षरक अन्यथात्व-
सूचक चिह्न ।

भेंड़ा(भेणा)—उ० मेष । स्त्री०
भेंड़ी, भेणी ।

भेंड़ा(भेणा)री—बकरी भेंड़ी
प्रभृतिक विष्टा ।

भेंड़ि(भेणि)आ धसान—भेंड़ी-
जेका अन्धानुकरण

भेंड़ि(भेणि)हर—उ० भेंड़ीक
उपजीवी जातिविशेष । स्त्री०
भेंड़िहरनी ।

भेंड़ी(भेणी)—स्त्री० मेपी ।

भेद—सं० विशेष १ तारतम्य,
बुद्धिभेद २ रहस्य ३ ।

भेदभाव—भेदबुद्धि ।

भेम—पक्षिकीटविशेष ।

भेम्ह }

भेर—निद्राविवशात् असंज्ञ ।

भेर करब—क्रि० अनेक

भेर लागब }

भेरी करब }

मीलि एकदिन

एकगोटाक कार्य

करब दोसरादिन

दोसराक, जाहिसँ

बोनिदेय नहि हो ।

भेला—गुडक प्रभेद १ भल्लातक २ ।

भेस—भेख, वेप ।

भेसब—क्रि० भोंकब ।

भेआ—मायक सम्बोधन ।

भेआवांट }

विषम विभाजन ।

भेबट्टी }

भैसुर } —स्त्रीकें स्वामीक जेट
भैसूर } भाए ।

भोआर—भोगार, लल्लहार, वृद्धिमुख
पुष्ट (बुक्ष)

भोकन्नह—भगन्दर ।

भोकन्नर फुटब—क्रि० भगन्दरक
स्फुटता ।

भोकारि पारब—क्रि० बहुत जोर-
सँ कानब ।

भोग—सं० उपभोग ।

भोगार—भोआर, लल्लहार, उन्नति-
मुख ।

भोगी—सं० उपभोगशील ।

भोग्य—भोगयोग्य ।

भोज—अनेक निमन्त्रितक भोजन ।

भोजधरा—अनेक निमन्त्रितक
भोजनालय ।

भोजन—सं० तृप्तिक हेतु अक्षण ।

भोजनी—भोजनसामग्री ।

भोजपत—भूजपत्र ।

भोजपत्र }

भोजतै—उ० भोज कएनिहार ।

स्त्री० भोजतैनी ।

भोंट—पेटक बड़का भोंटी ।

भोंट चहकाएब—क्रि० अस्त्रसँ

भोंट फारब ।

भोंटिआ—पर्वतीय (घोटकविशेष) ।

भोंटी—अन्न ।

भोंड़(भोण)ही—माछक प्रभेद ।

भोंड़ा(भोणा)—मत्स्यविशेष ।

भोतिआएब—क्रि० भोति+अब—

भ्रमवशात् कुमार्गगमन ।

भोथ—कुण्ठित (अस्त्र) ।

भोथरब—क्रि० भोथ होएब ।

भोम्हरब—क्रि० समन्तात् दंशादि-
क्रिया ।

भोम्हा शङ्ख—वाद्यशङ्ख ।

भोर—प्रातःकाल ।

भोरगर—उषःकाल ।

भोरुक—प्रातःकालिक ।

भोरुक पहर—प्रातःकालिक प्रहर,
दिनक प्रथम प्रहर ।

भोरुका—प्रातःकालिक ।

भोरुका पहर—प्रातःकालिक प्रहर ।

भोस—केराक प्रभेद ।

भोआँ डेढ़—जकर भहुँ डेढ़ हो ।

भोकी—आवर्त ।

भोजाइ—ज्येष्ठभ्रातृजाया (सम्बो-
धनसँ भिन्नमे) ।

भोजी—ज्येष्ठभ्राताक जाया ।

भोरिआ—आवर्तवत् घुमल (केश) ।

भोरी—विक्रयार्थ परिभ्रमण १

फलविशेष जे घुरमा रोगबाला

पहिरैत अछि २ ।

भौरी करब—क्रि० घूमि-घूमि

भौरी देव } वस्तु बेचब ।

भौँह—भहुँ, भ्रू ।

भ्रम—सं० विपरीत ज्ञान ।

भ्रमाह—भ्रमजनक, अस्पष्ट (अक्ष-
रादि) ।

भ्रातृद्वितीया—सं० एक पाबनि जे
कार्तिकशुक्ल द्वितीयाकें होइत
अछि ।

म

मइमुह—माएक मुहसन मुहबाला ।

मउसी—स्त्री० मातृष्वसा, माएक
बहिनि ।

मएदान—चत्वर ।

मएना—पक्षिविशेष, सारिका ।

मओसा—पुं० माएक बहिनिक
पति ।

मकइ—मकै, अन्नविशेष ।

मकमकाएब—क्रि० मकनक+
अब—कार्यक शिथिलीभाव ।

मकब—क्रि० मालक लीलया धावन ।

मकरगोड़—मकराक आकारक टेढ़
टाछबाला (बड़द) ।

मकरा—कीटविशेष जकरा गाड़िमे

सूत लागल रहैत अछि ।
 मकरी ऐंठव—क्रि० दुष्टतासँ कार्यमे
 ओभरोठ लगाएब ।
 मकुआ—मकोआ, छड़ी प्रभृतिक
 अङ्कुशाकार अर्द्धभाग ।
 मकुआएब—ना० मकु+अब—
 मकुआजेकाँ लबब ।
 मकुट—मुकुट ।
 मकुना—बिनु देखार दातक हाथी ।
 मकोना—मकुना ।
 मकोर—वंशविशेष १ फलविशेष २
 मकखन—नवनीत ।
 मखबूल } —वि० ऋण पर
 मखमूल } देल से क्षेत्र जे
 नियमित अवधि
 धरि ऋण संशोधन नहि कए-
 लापर महाजनक भए जाए ।
 मखान—माषान्न ।
 मखोलिआ—हास्यरसी ।
 मगज—वि० मस्तिष्क ।
 मगजी—वि० दोहरि आदिक सर्वत्र
 अन्तमे स्थित शोभार्थ वस्त्रान्तर ।
 मगहा } —मगधदेशोद्भव ।
 मगहिआ }
 मगही—मगधदेशोद्भव (खेसारी ओ

पानक प्रभेद) ।
 मग्घ—मघा (नक्षत्र) ।
 मघा—सं० आइलेषोत्तर नक्षत्र ।
 मघारि—माघक समय ।
 मङ(मँग) नचन—अधिक काल
 मँगनिहार ।
 मङ(मँग)नी—अ० विना मूल्य १
 विना मूल्य देबाक हेतु याचना २ ।
 मङ(मँग)नी-चङ(चँग)नी—
 माँगब आदि क्रिया ।
 मङ(मँग)रचन—अधिक काल
 मँगनिहार ।
 मङ(मँग)रा—सभसँ उपर देबाक
 खपरा ।
 मङ(मँग)रैल—कृष्णवर्ण अश-
 विशेष, कालजीरक ।
 मङा(मँग)एव—क्रि० मङ(मँग)
 ब+अब—आनयन ।
 मङु(मँग)री—दगुर (माछ) ।
 मङ्गल—सं० कल्याण १ सोमक
 अगिला दिन २ ।
 मङ्गल पठान—क्रीड़ाविशेष ।
 मचकी—मछकी, झुलबाक साधन
 दोला ।
 मचब—क्रि० अधिक होएब ।
 मचमचाएव—क्रि० मचमच+अब
 —मचमच शब्द करब ।

मचान—मश ।
 मचिआ—कुसी ।
 मचोड़(र)—भुमाएकेँ ऐंठव ।
 मचोड़(र)व—क्रि० भुमाएकेँ
 ऐंठव ।
 मच्छर—हि० मशक, मोस ।
 मछकी—हिडोला ।
 मछखौका—अधिक काल माछ खए-
 निहार ।
 मछगर—अधिक माछबाला (पोखरि
 प्रभृति) ।
 मछगिद्धी—सर्पाकार मत्स्यविशेष ।
 मछतरा—माछ तरबाक लोहिआ ।
 मछवार—माछ मारनिहार ।
 मछवारि—माछक मारब ।
 मछरिआ—भूषणविशेष ।
 मछहट्टा—माछक हाट ।
 मछहर—गाँज, टापि आदि सँ माछ
 मारब ।
 मछाइनि—माछक गन्धयुक्त ।
 मछाडाली—धान्यविशेष ।
 मछारब—क्रि० मछार+अब—कम
 ऊँच आरि बान्हब ।
 मजर—मज्जर, मजरी ।
 मजरब—ना० मजरीयुक्त होएब ।
 मजगूत—वि० दृढ़, बलिष्ठ ।
 मजगूती—वि० दृढ़ता ।

मजहुल—वि० दब, हीनबल ।
 मजीठ—मजिष्टा, ओषधिविशेष ।
 मजीरा—तानवाद्यविशेष ।
 मजील—वि० बहुत दूर माग ।
 मजुरनी—वि० टहल कएनिहारि ।
 मजुरपट्टी—मयूरक पाँखिक पट्टा ।
 मजूर—मयूर ।
 मजूरा—हि० अजुरा पर काज कए
 देनिहार, मजदूर ।
 मजुरी—पारिश्रमिक, वेतन ।
 मज्झा—माल बन्द्वाक डोरीक
 अवयव जकरा मिलाए कड़ाम
 प्रभृति बनैत अछि १ गुड्डीक
 डोरीकेँ कड़ा करबाक लस्सा २ ।
 मभधार—धारक मध्य ।
 मभफारी—औकारक मात्रा ।
 मभ्मिआएव—ना० मभ्मि+अब—
 मभ्मिमे लेब ।
 मभ्मिआम—गामक मध्य भाग ।
 मभ्मिला—मध्यभव, मध्यम
 (पुत्रादि) ।
 मभ्मिली—स्त्री० मध्यम (पुत्री
 आदि) ।
 मञ्जूर—वि० स्वीकृत ।
 मञ्जुरी—वि० स्वीकार ।
 मटका-मटकी—कज्जलतिलक ।
 मटकी—नेत्राच्छादक घर्मे ।

मटकी मारब—क्रि० नेत्रावरण चालन ।
 मटकुड़ी(री)—दहीक मृपात्र-विशेष ।
 मटकूड़(र)—पैघ दहीक पात्र-विशेष ।
 मटर—पैघ उज्जर केराओ ।
 मटसुन—मतिशून्य, अनवधान-स्वभावक ।
 मटिआ—किरासन (तेल) १ रङ्गक प्रभेद २ हाथसँ बनाओल वस्त्रविशेष ३ ।
 मटिआएब—ना० माटि दए धोएब १ माटिसँ युक्त करब २ ।
 मटिआमेट—नेस्तनामूद, सर्वथा लुप्त ।
 मटिआर—बालसँ अमिश्रित माटि-बाला (खेत) ।
 मटिआरी—बालसँ अमिश्रित सकत माटि ।
 मटिआह—माटिसँ मिश्रित (जलादि) ।
 मटिकम—माटिक काज (माटि काटब, भरब आदि) ।
 मटिकोड़ } —माटि कोड़बाक
 मटिकोड़ा } स्थान ।

मटिगर—अधिक माटिसँ युक्त ।
 मटिसुन—मतिशून्य, अनवधान-स्वभावक ।
 मटुक—मुकुट ।
 मटुकी—मृपात्रविशेष ।
 मट्टर—मटर, उज्जर पैघ केराओ ।
 मट्टा—माठा, बलय १ मन्थनोर्व-रित नवनीतविकार २ ।
 मठ—मन्दिर, देवालय ।
 मठठ—घरक उपरका दुहु चारक सन्धि-स्थल ।
 मठब—क्रि० कोड़ो प्रभृतिक बाँसक गीरहुकेँ छीलब ।
 मठबा—शाकविशेष ।
 मड़कब—क्रि० कितञ्चित् विपन्न होएब ।
 मँड़(मण)गील—माँड़ रहि गोलासँ गील (भात) ।
 मँड़(मण)फेका—माँड़ फेकबाक बासन ।
 मँड़(मण)बा—माड़ब, मण्डप ।
 मड़मड़ाएब—क्रि० मड़मड़+अब—मड़मड़ शब्द करब ।
 मड़र } —शूहादि कतोक जातिक
 मँड़र } उपाधि १ चौठिचन्द्रक सन्ध्याकालक सिद्धान्त नैवेद्य २ ।

मँडरा—चछेरा टापि प्रभृतिक मण्डलीकृत हिड़रा ।
 मँडराएब—क्रि० मड़र+अब—मण्डलाकारेँ घूमब ।
 मड़ आ—अन्नविशेष ।
 मड़क—छोट गोलाकार बखारी ।
 मड़ैआ—ठोकबाक उपकरणविशेष ।
 मड़नि—मड़ब ।
 मड़ब—क्रि० दड़ताक हेतु अन्तमे वस्त्र धातु इत्यादिसँ आवृत करब । १ जुट्टी बनाएब २ ।
 मड़ाइ—मड़ब ।
 मणि—सं० रत्न ।
 मण्डा—मिष्टान्नविशेष ।
 मण्डल—मन्दिर, देवालय ।
 मत—सं० पक्ष, सम्मतिविषय ।
 मतत्र—क्रि० हाथीक मत्तताप्राप्ति ।
 मतल—मत्त ।
 मतामह—मातामह ।
 मतामही—मातामही ।
 मति—सं० बुद्धि ।
 मती—सर्पादिविषकेँ मन्त्रसँ हँटओ-निहार ।
 मतोना—कोदोक प्रभेद ।
 मथदुखी—माधक व्यथा ।
 मथनिआ—मन्थनपात्र ।

मथनी—चार आदिक सभसँ उपर-का भाग ।
 मथब—क्रि० मन्थन ।
 मथवायु—शिरोवेदना ।
 मथाक मोल—बुद्धिक इयत्ता (निन्दामे) ।
 मथानी—मन्थनदण्ड, रही ।
 मथासोहार—वर्णक माथपर अनुस्वारसूचक बिन्दु ।
 मद्—सं० यौवनादिजन्य गर्व १ धनागमस्थानक विभाग २ ।
 मद्ब—क्रि० बदब, वरण ।
 महति—वि० साहाय्य ।
 मही—क्रीडानियमप्रकारव्यवस्था ।
 मद्य—सं० सुरा ।
 मधु—सं० माक्षिक ।
 मधुआएब—ना० मधुसँ युक्त होएब ।
 मधुकुपी—पक्षिविशेष ।
 मधुमाछी—मधुमक्षिका ।
 मधुमाल—धान्यविशेष ।
 मधुर—मिष्ट, मिष्टान्न ।
 मधुरबा—मधुर प्रकारक ।
 मधुराई—माधुर्य ।
 मधुराँठ } —किञ्चिन्मात्र मिष्ट ।
 मधुराह }

मधुरी—बन्धूक, पुष्पविशेष ।
 मधुश्रावणी—सं० श्रावणशुक्लतृतीया ।
 मधेसिआ—मध्यदेशीय ।
 मन—अन्तःकरण १ खारी, परिमाण
 विशेष २ ।
 मनःकथा—चिन्ता ।
 मनका—द्राक्षाक प्रभेद ।
 मनखप—से खेत जकर कर
 नियतरूपे अन्ने लेल जाए ।
 मनगर—प्रसन्न मनसं युक्त ।
 मनघुटाह—उ० विमनस्क । स्त्री०
 मनघुटाहि ।
 मनजाएज—वि० अन्नक तौल ।
 मनपै—मनमे पाओ भरि ग्राह्य ।
 मन पारब—क्रि० स्मरण करब ।
 मनमोट } —वैमनस्य ।
 मनमोटाओ }

मनरञ्जन—मनोरञ्जक १ मिष्टान्न-
 विशेष २ ।
 मनरोगा—मानसिक रोग ।
 मनसठ—ऊपरसँ अनुकूल किन्तु
 मनसँ शठ ।
 मनसरा—धान्यविशेष ।
 मनसरी—धान्यविशेष ।
 मनसा—मनुष्य (स्त्रीक उत्तिमे) १
 वि० इच्छा २ ।

मनसी—मनस्वी ।
 मनसुबा—उत्साह, पौरुष ।
 मनसुबाएब—ना० मनसुब+अब—
 उत्साह करब ।
 मनसोठ—मनसठ ।
 मनहकार—निषेध, मना फरब ।
 मनहुस—हतोत्साह ।
 मना—अ० निषेध ।
 मना करब } —क्रि० निषेध
 मना देब } करब ।
 मना मानब—क्रि० निषेधक स्वी-
 कार ।
 मनि—मणि ।
 मनिआर—मणिबाला (सर्प) ।
 मनुख } —मनुष्य ।
 मनुख }

मनुखाह—उ० मनुष्यमे रीतल
 (कुकुर आदि) ।
 मनुष्य—सं० मानुष ।
 मनुस—मनुष्य ॥
 मनुसा—अनादरणीय मनुष्य ।
 मने—अ० प्रायः १ सम्भावना २ ।
 मनेजर—वि० प्रधान अधिकृत
 व्यक्ति ।
 मनोरथ—सं० इच्छा ।

मनोहर—सं० स्मरणीय ।
 मनोरी—कपड़ामे लगएबाक भूषण-
 विशेष ।
 मन्त्र—सं० फलप्रद जप्य ।
 मन्त्राएब—ना० मन्त्रब+अब—
 मन्त्रोपहित करब ।
 मन्त्रि—सं० सचिव ।
 मन्द—सं० शिथिल ।
 मन्दिर—देवालय ।
 ममरखा—शिशुक रोगविशेष १
 ममरखाक ओपधिविशेष (छड़ी
 ममरखा इत्यादि) २ ।
 ममरी—टेमीक अन्तमे उत्पन्न कज्जल
 जाहिसँ दीपक ज्योति कम भए
 जाइछ ।
 ममहर—मातृक, मामाक घर ।
 ममा—मामा, मातुल ।
 ममिआ सासु—स्त्री० पतिक
 मामि ।
 ममिऔत—उ० मामक बेटा ।
 स्त्री० ममिऔति ।
 ममोर—वैदभावविशेष ।
 ममोरब—क्रि० देहक वेदनाविशेष ।
 मयूर—सं० शिखी ।
 मयूरपङ्खी—मयूरक पाखिक
 पङ्खा ।
 मर—मरण १ मृतक २ अ०

विस्मयद्योतक ३ ।
 मरक—पेटक विपाकापन्न अन्नक
 भाग ।
 मरकछ—कृत्रिम मृतवत् चेष्टा-
 शून्यता ।
 मरकछ लाधब—क्रि० मृतवत्
 कृत्रिम चेष्टाशून्यता देखाएब ।
 मरकन—अजीर्ण अन्नक कण ।
 मरकाठी—मुरदा डाहवाक शेष
 काष्ठ ।
 मरखाह—उ० मारनिहार (माल) ।
 स्त्री० मरखाहि ।
 मरघट—मुरदा डाहवाक घाट ।
 मरचर—जाहिठाम अधिक मुर्दा
 डाहल जाए ।
 मरछिआहि—स्त्री० जकर सन्तान
 मरि-मरि जाइक ।
 मरछाउर—चिताशस्म ।
 मरतरिआ—मारिमे प्रौढ़ ।
 मरदुआर—मृतसम (वृक्षादि) जे
 छछहार नहि हो ।
 मरन—मरण ।
 मरनइ—मृतनदी, पूर्वक नदी जे
 सम्प्रति भरनिसँ प्रवाहहीन भए
 गेल हो ।
 मरब—क्रि० मरण ।
 मरम—गर्भ ।

मरमूठि—मुइलाक मूठिजेकाँ दृढ़
मुष्टि ।

मरम्मति—विघटित अवयवक
पुनर्योजन ।

मरहन्ना—मुइल अन्न, जलक अभा-
वसँ अन्नहीन (उपजा) ।

मराठी—मृतप्राय (वृक्षादि) ।

मरिचाइ—कटुवीरा, तीक्ष्णा ।

मरिच } —मरिच ।

मरीच }

मरुअनि—बाँसक उपरका त्वचा ।

मरुआएब—क्रि० मरु+अब—
पल्लवादि क मूर्च्छित होएब ।

मरुएनी—मरुआएब ।

मरेड़—तृणविशेष ।

मरोछि } —स्त्री० भूरि-
मरोछिआहि } मृतवत्सा ।

मरौसी—पैतृक (सम्पत्ति) ।

मर्म—सं० मरम, रहस्य, तात्पर्य ।

मर्यादा—सं० अलोलुपतादिगुण ।

मलकोका—कुसुदिनीप्रभेदक रक्त
पुष्पविशेष ।

मलब—क्रि० मर्दन ।

मलमल—वस्त्रविशेष ।

मलहम—व्रण छुटबाक लेप ।

मलाइ—बरकाओल दूधक सार ।

मलान—म्लान ।

मलार—मलार, रागविशेष ।

मलाह—उ० मत्स्यजीवी जाति-
विशेष । स्त्री० मलाहिनि ।

मलाही—चारकेँ नीचाँ खसबासँ
रौकबाक यन्त्रविशेष ।

मलिकाइनि } —स्त्री० स्वामिनी ।

मलिकानि }

मलिछ } —मलिन ।

मलिछन }

मलिछाह—किञ्चित् मलिन ।

मलिन—सं० मलयुक्त (वस्त्रादि) ।

मलीदा—ओढ़बाक ऊनी वस्त्र-
विशेष ।

मल्लिक—कतोक जातिक उपाधि ।

मस—मशक, मोस ।

मसक—पानि भरबाक चमड़ाक
पात्र १ वस्त्रादिक अवयवक
किञ्चित् विलचन २ ।

मसकब—क्रि० वस्त्रादिक अय-
वक किञ्चित् विचलन ।

मसकिल—वि० विपत्ति, कठिन,
मोसकिल ।

मसकूर—चौमे संलग्न मांस ।

मसदिना—मास दिन होएनिहार
(अशौचादि) ।

मसनही—मासपूर्वत्तर स्त्रीकर्तृक
स्नान ।

मसलन्द—ओँ गठबाक पैघ गेडुआ ।

मसहरी—मशकवारक स्यूत पट ।

मसहारा—वि० मासिक वेतन ।

मसान—श्मशान ।

मसान्त—मासान्त, सौर मासक
अन्तिम दिन ।

मसाल—कृत्रिम उल्का ।

मसालची—कृत्रिम उल्कासम्पा-
दनादि प्रकाश करबाक कार्य
कएनिहार ।

मसाला—हीँ गु हरदि तेजपात
प्रभृति व्यञ्जनक उपकरण १
पानक उपकरण (लवङ्ग अड़ाँची
आदि) २ ।

मसि—सं० मसी, मोसि, लेखार्थ-
द्रव ।

मसिआनी—मसीआनी, मसीपात्र ।

मसिआ सासु—स्त्री० पानक
मातृवत्सा ।

मसिऔत—उ० मासिक अपत्य ।
स्त्री० मासिऔति ।

मसिदानी—मसीआनी, मसीपात्र ।

मसुआएब—ना० मासु+अब—

भाँटा आदिक कुपाकवश मासु-
सन सकन होएब ।

मसुरी—मसूर, द्विदलान्नविशेष ।

मसुवृद्धि—देहमे पिण्डाद्याकार
मांसवृद्धि ।

मसुरामनी—मधुश्रावणी ।

मसोड़—विरल वस्त्रक घर्षणजन्य
विचलन ।

मसोड़ब—क्रि० मसोड़ व्यापार ।

मस्खरी—हँसी-ठट्टा ।

कस्तकतोड़—गृह-दोष-विशेष ।

महक—गन्ध ।

महकब—क्रि० गन्धक प्रकाशन ।

महकारी—ओषधिविशेष ।

महखर—परिवारक सर्वजनसम्बन्धी
वस्तु ।

महखरिआ—महखरक कार्य कए-
निहार ।

महग—महार्घ ।

महगी—महार्घता ।

महगोरिआ—महग बेचनिहार ।

महजीव—गुसलगावक देवपर ।

महतम—महत्तम, ख्यातिवन्त ।

महतो—महत्तम, प्रभु १ कतोक
जातिक उपाधि २ ।

महथा—वि० अधिकारविशेषनि-
युक्त ।

महन्थ—देवालयधिकारी, मठा-
धीश ।
महन्थी—देवालयप्रभुता, मठाधी-
शत्व ।
महण्पा—नरवाह्य यानविशेष ।
महब—क्रि० मन्थन ।
महमह करब—क्रि० सुगन्धिक
प्रसारण ।
महारा—चमारक उपाधि ।
महाराज—भाटक उपाधि ।
महराद—ओषधिविशेष ।
महल—प्रासादभूमि ।
महलिआएब—क्रि० महाल-महाल
फुटाएब ।
महाइ—मन्थन ।
महाउथ—इस्तिपक ।
महाजन—वणिक् १ उत्तमर्ण २ ।
महाजनी—वणिग्वृत्ति १ उत्त-
मर्णता २ ।
महाजाल—अति विशाल माछ
मारबाक जाल ।
महाफा—शिविकाविशेष ।
महावरी—सं० ओषधिविशेष ।
महामहोपाध्याय—विद्वानक
उपाधिविशेष ।
महामूड—मूढक प्रभेद ।
महाराज—सं० महान् राजा ।

महाराजी—महाराजक कार्य ।
महाल—वि० मद, विभाग ।
महाशय—सं० उदारान्तःकरण पुरुष ।
महास्वेता—पुष्पविशेष ।
महि—सम्बन्ध, लेश ।
महिआएब—क्रि० उपकरिकें
आएब ।
महिसा—पुं० महिष, पशुविशेष ।
महिसा लोट—ग्रान्यविशेष ।
महिसि—स्त्री० महिषी, पशुविशेष ।
महिसिवार—महिषीवारक, महिसिक
चरबाह ।
महिसिवारि महिसिवारक क्रिया
१ ओकर वेतन २ ।
महिसिमोढ़—अत्यन्त मोट बुद्धि-
बाला ।
महीसि—महिषी, पशुविशेष ।
महु—मधुक, वृक्षविशेष ।
महुआ—महल (दूध तकर दही) ।
महुआएब—क्रि० महु+अब—रस-
संयुक्त होएब ।
महुथवार—इस्तिपक ।
महुथवारि—इस्तिपकक क्रिया ।
महुली सौफ—शीतहा; छत्रक ।
महुवक—वृक्षविशेष ।
महेसबानी—महादेवक तिरहुति

गीत ।
महोपाध्याय—विद्वानक एक
उपाधि ।
महोर—अत्यन्त पक्क ।
माइ-धी—स्त्री० माता तथा पुत्री ।
माउगि—जनी, स्त्रीलोक ।
माउगि-मेहर—स्त्री० स्त्री वर्ग ।
माउसि—स्त्री० मातृध्वसा ।
माए—स्त्री० माता, माय ।
माख—आभ्यन्तर क्रोध ।
माखब—क्रि० माख+अब—
विष्ठादि अस्पृश्यवस्तु अज्ञानतः
स्पर्श ।
मांग(माड)ब—क्रि० माँग् (मङ्)+
अब—याचना ।
मांगु(माड)र—मदुर, मत्स्यविशेष ।
माघ—पौषक अगिला मास ।
माघी—माघक (पूर्णिमा) ।
माछ—मत्स्य ।
माछी—मक्षिका ।
माजब—क्रि० मज्ज+अब—मार्जन,
मर्दनसँ स्वच्छ करब ।
माजूफल—फलविशेष ।
माभ—मत्स्य ।
माभकारी—औंकारक माता, पौ ।
माभिल—क्रि० मत्स्यम । स्त्री०
म. भर्ता

माट—माटिक पैघ पात्र ।
माटि—मृत्तिका ।
माटिमङ्गल } —उपनयनक पूर्व
माटिमांगर } मङ्गल दिनक
लौकिक विधि-
विशेष ।
माठ—मिश्राजविशेष १ पैघ तण्डु-
लादि रखवाक मृत्पात्रविशेष २ ।
माठा—वलय ।
माँड } —मण्ड ।
माण }
माँडब—मण्डप ।
माडबारी—माडबार देशभव ।
माँडरि—सूर्य ओ चन्द्रमाक समन्तात्
मण्डल, परिवेष ।
माँडी—कृत्रिम मण्ड ।
माढ़—भूजल चीन ।
माणिक्य—सं० मणि ।
मातदिल—वि० अल्प उष्ण
(घृतादि) ।
मातवर—वि० धनिक ।
मातबरी—वि० धनिकत्व ।
मातल—मत्त ।
माता—प्रसू जननी १ शीतला २
मातामह—क्रि० पुं० गानाक पिता
मातामही—स्त्री० माताक

माता ।
 मातु—सतरजक हार ।
 मातृकापूजा—विवाहादिक अङ्ग-
 तथा आभ्युदयिकसं पूर्व गौरी
 प्रभृति सोलह देवीक पूजा ।
 मात्रा—सं० औषध खाएबाक परि-
 माण १ व्यजनोत्तर इकरादि
 स्वरक चिह्न २ ।
 मात्रिक—माताक पितृशृङ्खला ।
 मात्सर्य—स्नेह (संस्कृतमे द्वेष) ।
 मात्सर्यी—स्नेही (संस्कृतमे द्वेषी) ।
 माथ—मस्तक ।
 माथ भुकाएब—क्रि० बहुत वृथा
 बजाएब ।
 मादए } —अ० प्रसङ्ग ।
 मादे }
 माधवसिंही—माधवसिंहक चला-
 ओल जलपानपात्रविशेष ।
 माधवी—पुष्पविशेष ।
 मान—श्रुपविशेष १ नहक आच्छा
 दक त्वचा २ सं० आदर ३
 रुष्टता ४ ।
 मानटीका—मस्तकक भूषणविशेष ।
 मानब—क्रि० मान्+अब—स्वी-
 कार करब १ आदर करब २ ।
 मानमिसाने—ओकारक मात्रा ।

मानर—मर्दल, वाद्यविशेष ।
 मानसिंही—मिश्रात्रविशेष ।
 मानि—मान्यता ।
 मानिक—माणिक्य १ औषधविशेष,
 मानिकरस २ ।
 मानिकचन्दी—मुपारीक प्रभेद ।
 मानिकथम्ह—धरतिक उपरका
 स्तम्भ ।
 मानिकरस—औषधविशेष ।
 मानिजन—मान्यजन, शूद्रक सामा-
 जिक व्यवस्थाक एक नेता ।
 मानुख } —मनुष्य ।
 मानुस }
 माफ—वि० सहन, क्षमा ।
 माफी—क्षमा ।
 माम—पुं० मातुल (असम्बोधनमे;
 सम्बोधनमे मामा) ।
 मामा—पुं० मातुल ।
 मामि—स्त्री० मातुली (असम्बो-
 धनमे; सम्बोधनमे मामी) ।
 मामी—स्त्री० मातुली ।
 माय—स्त्री० माए, माता ।
 मार—मारब, ताड़न ।
 मारपीट—ताड़नादि ।
 मारब—क्रि० मार्+अब—मारण
 १ ताड़न २ ।

मारि—ताड़न १ अ० बहुत २ ।
 मारि खाएब—क्रि० ताड़नप्राप्ति ।
 मारि-पीट—ताड़नादि ।
 मारुक—धानक (स्थान) ।
 माल—गोमहिष शूकरादिपशु १ चर-
 खामे टाकुकेँ धुमओनिहार डोरी
 २ कृषिकर ३ ।
 मालक—उबेर ।
 मालकोस—रागविशेष ।
 मालगुजारी—करग्रहण ।
 मालजाल—गोमहिषीप्रभृति ।
 मालती—सं० पुष्पविशेष ।
 मालदह—आम्रविशेष ।
 मालपूआ—उत्तम अपूप, पक्वान्न-
 विशेष ।
 मालभोग—केरा ओ धानक प्रभेद ।
 माला—सं० सक् ।
 मालि—उ० मालाकार जातिविशेष ।
 स्त्री० मालिनि ।
 मालिक—वि० उ० प्रभु । स्त्री०
 मलिकाइनि ।
 मालिकाना—मालिकक मओजे ।
 मालिस—वि० अभ्यङ्ग ।
 मालिस्त—
 माली—तैलादिक छोट पात्रविशेष ।
 मास—सं० त्रिंशद्दिनाभक्त समय ।

मांस—से भूमि जकर माल स्वाधीन-
 राजा पाबधि ।
 मांस—सं० देहक धातुविशेष,
 मासु ।
 मांसमसाला—तृणविशेष जे मांसक
 मसाला होइत अछि ।
 मासा—माषप्रमाण ।
 मासादि—सं० सौर मासक प्रथम
 दिन ।
 मासान्त—सं० सौर मासक अन्ति-
 म दिन ।
 मासिक—सं० मासभव (वेतनादि) ।
 मासी—मासिक, अ० प्रतिमास ।
 मासु—मांस ।
 मासुल—वि० यानक वेतन ।
 माह—वि० मास ।
 माहबारी—वि० अ० प्रत्येक मास
 मे ।
 माही—मालिकक पत्रस्थ स्वचिह्न-
 विशेष ।
 माहीमोहर—माहीसहित मोहर ।
 माहुर—वि० अजङ्गम विष (यथा
 डकहा प्रभृति) ।
 मिमर—मिश्रित ।
 मिभराएब—क्रि० मिभर्+अब—
 मिश्रित होएब ।
 मितारए—मिश्रालय १ मिश्रता २ ।

मिथिला—सं० तीरभुक्ति ।

मिनट—वि० अढ़ाए पल, होराक
साठिम भाग ।

मिनती—सविनय निवेदन ।

मिनहा—मोजर ।

मिरखी—अन्नकण ।

मिरगी—अपस्मार ।

मिरजइ } —हि० अज्ञाक प्रभेद ।

मिरजै }

मिरमिराएब—क्रि० मिरमिर+
अब—मन्द-मन्द अस्पष्ट बाजब ।

मिरहन्नी } —अपुष्ट अन्न ।

मिरहिन्नी }

मिलब—क्रि० मिलान होएब १
सदश होएब २ ।

मिलान—अविरोध, मेल, सादृश्य ।

मिलुआ—सं० मिश्रित ।

मिश्र—सं० श्रेष्ठ, ब्राह्मणक उपाधि ।

मिश्रित—सं० मीलल, मिश्र ।

मिसर—मिश्र ।

मिसरी—खण्ड, संशोधित सिता-
खण्ड ।मिसिआ—स्त्रीक दन्तशोभाभजन,
मीसी १ अन्नविशेष २ ।

मिस्री—मिसरी ।

मीआँ—मुसलमानक उपाधि ।

मीड़ब—क्रि० मिड़+अब—मर्दन ।

मीत—मित्र ।

मीमा—तृणविशेष ।

मीलब—क्रि० मिल्+अब—मिलब,
मिलान होएब १ सदश होएब २ ।मीलब-जूलब—क्रि० मिलान-
प्रभृति ।

मीस—वि० मेला ।

मीस पड़ब—वि० क्रि० मेला
लागब ।

मीसी—दन्तशोभाभ मञ्जनविशेष ।

मुइल—मृत ।

मुकिआएब—ना० मुकि+अब—
मुकासँ मारब ।

मुकुट—सं० शिरोभूषणविशेष ।

मुक्का—मुष्टि, मूका ।

मुक्कामुक्की—परस्पर मुक्कासँ मारब ।

मुक्कीसूगी—सूगाक प्रभेद ।

मुख—सं० मुह ।

मुखपात—वस्त्रप्रान्तशोभाधायक
वस्त्र ।मुखड़ा—मुहमे लगाएबाक कृत्रिम
मुख ।

मुखिआ—मुख्य, संघश्रेष्ठ ।

मुगदर } —मुदल ।

मुँग(मुङ)रदन }

मुँग(मुङ)रा } —ढेप फोड़ब
मुँग(मुङ)री } आदिक साधन-
विशेष ।मुँग(मुङ)बदाम—मेबाविशेष,
चिनिआ बदाम ।मुँग(मुङ)बा—पैघ दुनिआसँ बना-
ओल मिष्ठान्नविशेष ।

मुँगे(मुङेरिआ—मुङेरनगरभव ।

मुजैली—लताविशेष १ मुजनिमित
छोट पथिआ २ ।

मुटमुर—तृणविशेष ।

मुट्टी—मूठि, मुष्टि ।

मुठबार—कागतक मूठि ।

मुठबाँसी—मुष्टिमेय पातर बाँस ।

मुठभिराओ—अतिनिकट युद्ध ।

मुठमुर—तृणविशेष ।

मुठरा—मुट्टीरँ बद्ध पिण्ड ।

मुठिआ—मुष्टिमेय (बड़दक सिंह) १
मुष्टिमित अन्न २ ।मुठिआ सिंह—बड़दक ओ सिंह
जे मुष्टिमेय हो ।

मुडन—मुण्डन, प्रथम कचकर्तन ।

मुड़ब—क्रि० मुण्डित करब (लक्ष-

णया, ठकि लेब) ।

मुड़री—विना केशक माथ ।

मुड़हा—अतिनिन्द्य, मूढ़, अधम ।

मुड़ी—मुण्ड ।

मुड़ी हानब—क्रि० इतस्ततः मुख-
चालन ।

मुण्ड—मुड़ी ।

मुण्डी—तृणविशेष ।

मुतना—अधिक मूत्रत्यागी ।

मुतब—क्रि० मूत्रत्याग करब ।

मुनना—मुनबाक साधन ।

मुनब—क्रि० मुदण, बन्द करब ।

मुनहारि साँभ—अप्रकाश सन्ध्या-
समय ।मुनही—मुण्डी पैसएबाक गोलाकार
वस्त्र ।मुनिगा—सौभाजनप्रभेदक वृक्ष-
विशेष ।मुहिआएब—क्रि० मुहि+अब—
उन्मुख होएब ।मुन्ही—ओ फनकी जाहिमे मुण्डी
पैसाओल जाए ।मुरगा—उ० कुक्कुट । स्त्री०
मुरगी ।

मुरल्लब—क्रि० अस्त्राग्रक कुण्ठन ।

मुरदघट्टी—जलतटस्थ शवदाह-

स्थान ।
 मुरदा—वि० शव ।
 मुरदारी—शवदाहावशिष्ट (इदृश-
 नादि) ।
 मुरदाशङ्ख—औषधविशेष, उपधातु-
 विशेष ।
 मुरभब—क्रि० मूर्च्छित (कुण्ठित)
 होएब ।
 मुरबड़—मूरक बड़ ।
 मुरमुर—दाँतसँ सशब्द भङ्गयोग्य ।
 मुरहन—पुष्ट प्रथमगृहीत अन्न ।
 मुरही—तण्डुलस्फोट, चाउरक
 लाबा ।
 मुरेठा—शिरोवेष्टन ।
 मुरौड़ी—मूरक वटी ।
 मुर्दघट्टी—शवदाहक घाट ।
 मुर्दा—शव ।
 मुलकी—सार्वत्रिक ।
 मुलह—सजातीय पक्षीकेँ बभ्राएबा-
 मे उपकारक मूलभूत बुलबुल
 प्रभृति ।
 मुलहकी } —मूलभूत गुणतत्व ।
 मुलहट्टी }
 मुलहन—मूलधन, पूजी ।
 मुललह—मुलइ ।

मुसकाँड़ी } —मूस बभ्राएबाक
 मुसकाणी } कल
 मुसर } मुसल ।
 मुसरा—मुसलाकार प्रधान सीर
 आदि ।
 मुसरी—छोटका मूस ।
 मुसलमान—म्लेच्छ ।
 मुसलमानी—म्लेच्छसम्बन्धी ।
 मुसली } —कन्दविशेष ।
 मुसलीकन्द }
 मुसहर(ड़)—उ० जातिविशेष ।
 स्त्री० मुसहर ङ)नी ।
 मुसहरी—मुसहरक टोल ।
 मुसुकाएब } —क्रि० मुसुक्-
 मुसुकिआएब } (कि)+अब—
 मन्द हास ।
 मुसुकी—मन्द हास ।
 मुह—मुख ।
 मुहखर—उ० मुहक तीव्र, बजबामे
 अप्रतिबद्ध (निन्दामे) । स्त्री०
 मुहखरि ।
 मुहगर—उ० बजबामे प्रौढ़ । स्त्री०
 मुहगरि ।

मुहचुरन } —बजबामे अप्रौढ़ ।
 मुहचूर }
 मुहचोर }
 मुहछुट्टा—निःसंकोच बजनिहार
 अनादरणीय व्यक्ति (निन्दामे) ।
 स्त्री० मुहछुट्टी ।
 मुहछुट्ट—निःसंकोच बजनिहार
 आदरणीय (निन्दामे) ।
 मुहजोर—उ० बजबामे प्रौढ़ ।
 स्त्री० मुहजोरि ।
 मुहठान—अन्य मुखाकृति ।
 मुहठाह—अप्रतिभ (कार्यक असि-
 द्विप्रयुक्त) ।
 मुहठी—आम आदिक मुखस्थान ।
 मुहड़ा—स्थानक अग्रभाग ।
 मुहतक्की—परामिप्रायज्ञानार्थ मुख-
 वीक्षण ।
 मुहतोड़—उत्तरानर्ह कथन ।
 मुहथरि—पोखरि आदिक बाहाक
 मुखस्थान ।
 मुहदु(ब्व)र—उ० दीन, बजबा-
 मे अप्रौढ़ । स्त्री० मुहदुब-
 (ब्व)रि ।
 मुहदुस्सी—पक्षिविशेष ।
 मुहदेखना } —मुह देखबाक
 मुहदेखाओन } पारितोषिक ।

मुहनि—कोलुक एक अङ्ग ।
 मुहपुरुष—वक्ता प्रधान पुरुष ।
 मुहपोछना—मुह पोछबाक वस्त्र ।
 मुहफट(ट्ट)—विना धाख बजनि-
 हार ।
 मुहवउ—अधिक काल व्यादित-
 मुखक ।
 मुहवजाओन—संलाप करहबाक
 पारितोषिक ।
 मुहबौआ—विदीर्णमुखक ।
 मुहबौक—अप्रौढ़ ।
 मुहलग } —मुह लागल गप
 मुहलगुआ } कएनिहार ।
 मुहसच्छ(छ)—उ० स्तब्ध, अप्रौढ़ ।
 स्त्री० मुहसच्छि (छि) ।
 मुहाबज्जी—परस्परभाषणव्यवहार ।
 मुहाँमुही—मुखोत्तर, संमुख्य ।
 मुहिआएब—क्रि० मुहि+अब—
 पूर्वरूपप्राप्ति ।
 मुहूर्त—० दण्डद्वयात्मक काल ।
 मूका—मुष्टि ।
 मूकामूकी—मुष्टीमुष्टि, परस्पर
 मूकाक प्रहार ।
 मूँग(मूङ्)—मुद्र ।
 मूँगा(मूङ्गा)—प्रवाल ।
 मूठि—मुष्टि ।

गूठि भाँजब—क्रि० क्रीडामे कौड़ी हाथमे लए नीचाँ खसाएब ।

गूठि लेब—क्रि० देवपित्रार्थ प्रथम धान्यच्छेदन ।

गूड़—मुण्ड ।

गूड़न—मुण्डन ।

गूड़ब—क्रि० गूड़+अब—माथक केश काटब, (लक्षणया, ठिक लेब) ।

गूड़ा—भौँ कसँ रहित (कोठा) ।

गूड़ी—मुण्ड ।

गूत—गूत ।

गूतब—क्रि० गूत+अब—गूत त्याग ।

गूनब—क्रि० गून+अब—मुद्रण, बन्द करब ।

गूनल—मुद्रित, बन्द ।

गूर—मूलक १ मूलधन २ ।

गूर्य—स० अज्ञ ।

गूचर्चा—सं० अकस्मात् चैतन्य-शून्यता ।

गूस—गूषिक ।

गूसनि—गूसक माटि ।

गूसब—क्रि० गूस+अब—गोषण, चोराएब ।

गूसर—गुशल ।

गूसाकानी—आखुपणी, ओषधि-

विशेष ।

गूह—मुख ।

गूह दुसब—क्रि० अपमानजनक मुखचेष्टा ।

गूह बनाएब—क्रि० नानाविध मुखचेष्टा ।

गूह बिजुकाएब—क्रि० बिजुकव+अब—मुखसँकोचन ।

गृग—सं० हरिणवि ।

गृगछाला—हरिणचर्म ।

गृदङ्ग—सं० वाद्यविशेष ।

गृदङ्गिआ—मार्दङ्गिक, गृदङ्ग

गृदङ्गी—बजओनिहार ।

मेआन—म्यान, खड्गकोष ।

मेकचओँ—बाधा, असुद्धता ।

मेघउनार—वृष्ट्यनमेघक समय ।

मेघओन—किञ्चिन्मेघयुत समय ।

मेघडम्बर—वंशनिर्मित छाता ।

मेघदिनाए—मेघक समयमे उत्पन्न होएनिहार वदु ।

मेघाओन—मेघओन

मेच—भोक, निर्यक कषण ।

मेचब—क्रि० जोरसँ घुमोएब ।

मेजन—एक खालमे मिलएबाक दोसर खाल ।

मेट—नर्तकगणक प्रधानपुरुष ।

मेटाएब—क्रि० मेट+अब—लुप्त होएब १ मेटव+अब—लुप्त करब २ ।

मेटिआ—मेट, दलपति ।

मैठनि—वारंवार एक बातक बाजब वा एक क्रियक करब ।

मेथी—सं० मेथिका ।

मेद—वृक्षविशेष ।

मेदा—जैक परम सूक्ष्म कूर्ण ।

मेधा—सं० स्मरणशक्ति १ सलाह, ऐकमत्य २ ।

मेधा पटुआ—पटुआसागक प्रभेद ।

मेन—क्षुपविशेष १ आटामे देय घृत २ ।

मेनदार—आटामे घृत मिलाए बनाओल (सोहारी) ।

मेनसिल—मनःशिला ।

मेनहर—कण्टकी क्षुपविशेष ।

मेबा—दाख किसमिस प्रभृति शुष्क फल ।

मेमिआएब—ना० मेमि+अब—मेमे शब्द करब, अजभाषण ।

मेर—नटुआ आदिक मण्डली ।

मेराएब—क्रि० मेरब+अब—मिलाएब, दोहराओल डोरीमे तेसर प्रभृति डोरी पैसाएब ।

मेरिआ—एक मण्डलीक व्यक्ति ।

मेरिचाइ—तीक्ष्णा ।

मेल—मिलान, ऐकमत्य, सादृश्य ।

मेल खाएब—क्रि० मेल समुचित होएब ।

मेल पाँच—मिटानपूर्वक समावेश ।

मैला—बहुलोकसंगुलीभाव, जनसम्मर्द ।

मेह—मेध, धान दाउनक खुदा ।

मेहतर—हि० हेला ।

मेहनति—वि० परिश्रम ।

मेहनतिआ—वि० परिश्रमी ।

मेहदी—वृक्षविशेष ।

मेहब—क्रि० मन्थन ।

मेहमान—वि० पाहुन ।

मेहिआँ—मेहीँ प्रकारक (तण्डुलादि) ।

मेहिआएब—ना० मेहीँ करब ।

मेहीँ—सूक्ष्म ।

मेहौती(थी)—मेहक डोरी जाहिमे कड़ाब बान्हल जाइछ ।

मैआँ—माएसँ श्रेष्ठ स्त्री ।

मैआ

मैथिल—सं० उ० मिथिलाभष (ब्राह्मणारि) । स्त्री० मैथिलानी ।

मैल—मल १ मलिन २ ।

मैलछन—किञ्चिन्मलिन ।

मैलमूह—मलिन मूहवाला ।
 मैलाह—मैलसँ युक्त, मलिन ।
 मोआर—पैघ विवर ।
 मोआर फुटब—क्रि० पैघ विल
 स्फुटित होएब ।
 मोकड़(र)—विवर ।
 मोकड़(र) फुटब—क्रि० विवर
 स्फुटित होएब ।
 मोकब—औषधिविशेष ।
 मोकब—क्रि० गरदनि आदिके
 नीचाँ दिस दबाएब ।
 मोकरी—वि० निश्चितकरक भूमि ।
 मोकूफ—वि० दासतासँ निष्का-
 सित ।
 मोकूफी—वि० नोकरीसँ हटाएब,
 पदच्युति ।
 मोख—टाटक प्रान्तभाग ।
 मोख मारब—क्रि० मोखमे खड़ही
 दए बान्हब ।
 मोगल—वि० मुसलमान जाति-
 विशेष ।
 मोगलान—वि० मोगलक स्थान ।
 मोगली—सतरजक एक प्रकारक
 खेड़ि ।
 मोचण्ड—तीव्रस्वभावक बुड़ि ।

मोचण्डपना } —मोचण्डक
 मोचण्डी } क्रिया ।
 मोचना(नी)—बहुत छोट सूक्ष्माग्र
 चूटा ।
 मोचरब—क्रि० घुमाएब, ऐँठब ।
 मोचरस—औषधिविशेष ।
 मोछ—श्मश्रु, नाकक निचला केश १
 कटहरक ओ बन्ध्य फल जाहिमे
 को नहि होइछ २ ।
 मोछाएब—क्रि० मोछ (बन्ध्यफल)
 सँ युक्त होएब ।
 मोजर—मिनहा ।
 मोजूद—वि० वर्तमान, स्थित ।
 मोट—उ० स्थूल । स्त्री० मोटि ।
 मोटका—उ० स्थूलप्रभेदक ।
 स्त्री० मोटकी ।
 मोटगर—उ० अधिक मोट । स्त्री०
 मोटगरि ।
 मोटधना—मोट धान ।
 मोटबन्हना—मोटा बन्हवाक
 वस्त्र ।
 मोटरा—पैघ मोटा ।
 मोटरी—छोट मोटा ।
 मोटा—वस्त्रबद्ध (अनेक वस्त्रादि) ।
 मोटाइ—स्थूलता ।
 मोटाएब—ना० मोट+अब-

स्थूल होएब ।
 मोटामोटी—अ० स्थूल हिसाबै ।
 मोटिआ—मोट प्रभेदक (धान्यादि) ।
 मोटैत—मोटा उघनिहार ।
 मोड़—वक्रता १ वक्रभावै शिरामे
 आघात २ ।
 मोड़ब—क्रि० वक्रीकरण ।
 मोड़ा—मोटक ।
 मोढ़—पैघ मोड़ी १ मूढ़तम २ ।
 मोढ़ा—काष्ठखण्ड ।
 मोड़ी—स्थूल इन्धन ।
 मोताद—भोजनार्थ नियत देय ।
 मोति—मुक्ता ।
 मोतिआ बिन्दु—नेत्ररोगविशेष ।
 मोतिआ बेली—मल्लिकापुष्पक एक
 प्रभेद ।
 मोतीचूरक लड्डू—मिष्टान्नविशेष ।
 मोतीभावा—पुष्पविशेष ।
 मोथा—मुस्तक ।
 मोथी—दीर्घमुस्तक जकर पटिआ
 बनाओल जाइछ ।
 मोन—खारी, परिमाणविशेष १
 चित २ ।
 मोनकह—वि० स्थिरीकरण ।
 मोन पड़ब—क्रि० स्मरण होएब ।
 मोन पाड़ब—क्रि० स्मरण करब,

ध्यान ।
 मोनही—मोन परिमाणक बटि-
 खारा १ एक मोन अँटबाक
 योग्य (बौरा डाकी प्रभृति) २ ।
 मोनासिब—वि० उचित ।
 मोनि—नदीक अतिगम्भीर प्रदेश ।
 मोफत } —वि० बिना मूल्य
 मोफ्त } लब्ध ।
 मोम—बरकाओल मधुमक्षिकागृह ।
 मोमआता—मोमसँ निश्छिद्रीकृत
 वस्त्रक छत्र ।
 मोमजामा—मोमसँ निश्छिद्रीकृत
 वस्त्रविशेष ।
 मोमबत्ती—मोमक बत्ति ।
 मोर—मयूर ।
 मोरब—क्रि० मोड़ब, वक्रीकरण ।
 मोराबा—पागल धात्रीप्रभृतिफल ।
 मोरि—धान रखबाक तरकालनिमित्त
 तृणपात्र ।
 मोरी—बद्ध जलनिर्गममार्ग ।
 मोल—क्रयण ।
 मोलमोलाइ—क्रयमूल्यविवाद ।
 मोलाएब—ना० मोल+अब—
 मूल्यनिर्णय करब ।
 मोलामा—उपरसँ चढाओल सोनाक
 पानि प्रभृति ।

मोस—मशक ।

मोसकिल—वि० उपद्रवसंपात,
कठिन ।

मोसब्बर—औषधविशेष ।

मोसम्मात—स्त्री० श्विनु स्वामीक
स्वतन्त्र स्त्री ।

मोसाफिर—वि० पान्थ ।

मोसाहेब—वि० राजाक सहचर ।

मोसिआनी—मसीधानी, मसि-
पात्र ।

मोस्ताएद—वि० तपर ।

मोह—सं० मूढ़ता ।

मोहनभोग—मिष्टान्नविशेष ।

मोहनमाला—मध्य-मध्यमे मूंगा
देल सोनाक माला ।

मोहर—मुद्रा, नामादिमुद्रणयन्त्र ।

मोहस्सिल—वि० आदेयग्रहणार्थ
प्रेषित जन ।

मोहार—भीड़, उच्च जलतट ।

मौगिआह—स्त्रौण ।

मौगिआही—केवल स्त्रीक उपभो-
गयोग्य (वस्तु) ।

मौगी—स्त्री० स्त्री ।

मौनाह—उ० अल्पभाषी । स्त्री०
मौनाहि ।

मौनी—छोट पात्रविशेष ।

मार—कोदिलाक अलङ्कारविशेष ।

मौसा—मातृष्वसृपति ।

मौसी—स्त्री० मातृष्वसा ।

म्याद—वि० कारावास १
अवधि २ ।

यान—मेभान, खडगहो ।

य

यजमान—सं० यज्ञादिकर्ता ।

यज्ञ—सं० याग ।

यज्ञोपवीत—सं० जनौ ।

यतन } —सं० प्रयास ।

यत्न }

यथा—यन १ सं० अ० जेता २ ।

यथेष्ट—सं० इच्छानुरूप, पर्याप्त ।

यथोचित—सं० उचितानुरूप ।

यदि—सं० अ० जँ ।

यद्यपि—सं० अ० प्रकान्तविरोध-
शोक ।यन्त्र—भूषणविशेष १ सं० तान्त्रिक
प्रयोगविशेष २ कल ३ ।

यम } —सं० यमुनाक भाए,

यमराज } वैवस्वत ।

यमुना—सं० नदीविशेष ।

यव—सं० जओ ।

यश—सं० कीर्ति ।

याग—सं० यज्ञ ।

याचक—सं० मँगनिहार, भिक्षुक ।

यात्रा—सं० प्रस्थान ।

यात्री—सं० पथिक ।

यावत्—सं० अ० यावत्कालपर्यन्त ।

युग—सं० कलियुगादि ।

युक्त—सं० उचित, सङ्गत ।

युक्ति—सं० हेतु, सधन ।

यूप—सं० यागीय काष्ठविशेष ।

योग—सं० संबन्ध १ चित्तक
निरोध २ ।योगाभ्यास—सं० योगक्रियाक
अभ्यास ।

योगाभ्यासी—सं० योगाभ्यासकर्ता ।

योगी—सं० योगाभ्यासी, विरक्त ।

योग्य—सं० समर्थ, योग्यताशील ।

योग्यता—सं० उत्कृष्टगुणवत्ता १
सम्भवविषयता २ ।

र

रइता—रँची ओ दही दए बना-
ओल तीमन ।

रइनि—राति ।

रए—अ० नीच पुरुषक सम्बोधन ।

रओ—अ० नीच पुरुषक सम्बो-
धन ।

रकतकौँए—रक्तोत्पल, क्रोकनद ।

रकतचानन—लाल चन्दन ।

रकता साग—ललका साग ।

रकवा—वि० भूमिक परिमाण ।

रकम—अन्न ।

रकसा—तृणविशेष ।

रक्षक—सं० रक्षाकारक ।

रक्षा—सं० पालन, उपद्रवसँ वैचाओ ।

रखना—रखबाक पात्र ।

रखवार—उ० रक्षक । स्त्री० रख-
बारनी ।

रखवारि—रक्षकत्व ।

रखाओँत—स्वार्थ रक्षित तृण-
भूमि ।रखौली—धरबी, रत्यर्थ निमुक्त
परस्त्री ।

रगड़—घर्षण ।

रगड़व—क्रि० घर्षण ।

रगड़ा—घर्षण ।

रँग(रङ्ग)—रङ्गक द्रव्य १ क्रम,
स्थिति २ ।

रँग(रङ्ग)व—क्रि० रङ्गन ।

रँग(रङ्ग)रेज—रङ्गक जातिविशेष ।

रँग(रङ्ग)साज—भतमे चित्र-
लेखक ।

रँगो(रङ्ग)रङ्ग—सर्वश रङ्ग ।

रचबा बोआर—मस्यविशेष ।

रङ्ग—सं० रङ्गकद्रव्य १ क्रम,
स्थिति २ ।

रङ्गबिरङ्ग—अनेक रङ्गक ।	निहार पक्षी ।
रचना—सं० निर्माण १ ओषधि- विशेष २ ।	रतुका—रात्रिभव ।
रचब—क्रि० निर्माण ।	रतौन्ही—रात्र्यन्धता ।
रच्छक—रक्षक ।	रत्ती—रक्तिका ।
रच्छा—रक्षा ।	रथ—सं० बग्गी ।
रजगिद्ध—गुणविशेष ।	रथयात्रा—सं० रथपर भगवानक यात्रा ।
रजन्ती—शाकविशेष ।	रदा—रादा, भीतपर द्वितीयादि बेर चढ़ाओल माटि ।
रजपूत—उ० क्षत्रिय जातिविशेष । स्त्री० रजपूतनी ।	रही—वि० बेकार, कार्यानिर्ह (वस्तु) ।
रजभाट—मुसलमानक भाट ।	रनरनाएब—क्रि० रन-रन शब्द करब ।
रजला—धान्यविशेष ।	रनिवास—रानीक वासस्थल, अन्तःपुर ।
रजाइ—दोलाइ, दोहरि ।	रन्ना—तकथा आ द छीलिके सम करबाक यन्त्रविशेष ।
रतनी—तृणविशेष ।	रन्हुआ—रन्हिके बनाओल (चाउ- रक रोटी प्रभृति) ।
रटब—क्रि० बारंवार पढ़ब ।	रपट—अधिक दौड़ ।
रँड़(रण)खेप खेपब—क्रि० रँड़ (विधवा) जेकाँ काल बिताएब, कष्टपूर्वक कालक्षण ।	रपटब—क्रि० अधिक दौड़ब ।
रडधूमस—राड़जेकाँ धूमस करब ।	रप्ता—वि० अभ्यास ।
रडपोख—राड़(शूद्र)केँ पोसनिहार, रड़ाह ।	रबड़—वृक्षविशेषक लस्सा ।
रड़ाह—राड़क योग्य ।	रबाइस—अग्निचित्र ।
रड़ाह—राड़क सन क्रिया कए- निहार ।	रबाएब—क्रि० ठें गाप्रभृतिक स्वतः विदलन ।
रतिगर—अधिक राति, पहरसँ अधिक रात्रिक भाग ।	रबाना—वि० प्रस्थित ।
रतिचर—रात्रिचर, रात्रिमे चर-	

रबानी—शिविकावाही जाति- विशेष ।	रहटि(ठि)—अरघट्ट, पानि भरबाक घिरनीवाला यन्त्र ।
रवि—सं० सूर्य १ शनिक अगिला दिन २ ।	रहव—क्रि० स्थिति, गतिनिवृत्ति ।
रविआती—रब्बी (अगहनीक अगिला) अन्न ।	रही—मन्थनदण्ड ।
रमण्डर—क्रीड़ाविशेष ।	रहु—रोहित, मत्स्यविशेष ।
रमचकरा—कृतावविशेष ।	रहुआ बोआर—सामुद्रिक पैघ मत्स्यविशेष ।
रमना—चत्वर ।	राइ—राजिका, रैंची ।
रमानी—रबानी ।	राउटी—एकहारा पटगृहविशेष ।
रस—सं० इच्छा १ खेतक गुण- विशेष २ पत्रादिक जल्लीय अंश ३ ।	राए—वि० राय, संमति ।
रसओँ—दूरसँ किञ्चित् आगिक ताप ।	राकस—उल्कामुख प्रेत ।
रसगुल्ला—मिष्टान्नविशेष ।	राखी—खेतक रक्षाक वेतन १ रक्षिका, मङ्गलसूत्र २ ।
रसनचौकी—वाद्यविशेष ।	राँग—रङ्ग सं०, धातुविशेष ।
रसपीपरि—पिप्पलीक प्रभेद ।	राँगो—धान्यविशेष ।
रसाएब—ना० रस+अब—खेतक रससँ युक्त होएब ।	राज—इष्टका जोड़निहार कारीगर १ राजा २ राज्य ३ ।
रसायन—सं० रस, स्वर्णभस्मादि ।	राज-काज—राजकीय कार्य ।
रसिआ—सरस व्यक्ति ।	राजकीय—सं० राजसम्बन्धी ।
रसिक—सं० सरस व्यक्ति ।	राज-दरबार—वि० राजसभा ।
रसीद—वि० द्रव्यप्राप्तिप्रमाणपत्र ।	राजपाट—राज्यादि ।
रसौती—हालक रससँ बाओग ।	राजपूत—क्षत्रिय जातिविशेष ।
रस्सा—डोरी ।	राजमहल—राजाक प्रासाद ।
रस्सी—डोरी ।	राजस—बलात् उपद्रव ।
	राजसिंहासन—सं० राजगद्दी ।
	राजसी—नृपोचित ।
	राजा—सं० नृपाल ।

राजा-दैव — राजदैवप्रयुक्त बाधा ।
 राजासाही — लोटाक प्रभेद ।
 राजी — वि० सहमत, प्रसन्न, अवि-
 रुद्ध ।
 राजीनामा — परस्पर मेलक स्वी-
 कारपत्र ।
 राटन — वि० तौलबाक यन्त्रविशेष ।
 राड़ — उ० शूद्र । स्त्री० राड़िनि ।
 राड़(राण) — स्त्री० रण्डा, विधवा ।
 राताराती — अ० दिनक अस्पर्श-
 पूर्वक रातिमे ।
 रात्रि ।
 रातिबिराति — राति तथा वर्षादि
 उपद्रवसँ युक्त राति ।
 रातिम — उपनयनसँ चारिम रातिक
 कृत्यविशेष ।
 रातुक — रात्रिसम्बन्धी ।
 रादा — रद्दा, भीतपर एक दिनमे
 चढ़ाओल माटि ।
 रानी — राज्ञी ।
 रान्ह — प० क ।
 रान्हब — क्रि० रन्ह+अब—रन्धन,
 पाकक्रिया ।
 राब — चोनीक साधक इक्षुविकार ।
 राबड़ी — छाह्दी मिसरीसहित दूध ।
 राबा — धातुक छोट-छोट बिन्दु ।
 रामकेरी — फलविशेष ।

रामचकरा — कृताञ्चविशेष ।
 रामभिँगु(भिङ्गु)नी — व्यञ्जन-
 विशेष ।
 रामदतमनि — कण्टकलताविशेष ।
 रामदाना — अञ्चविशेष ।
 रामदुलारी — धान्यविशेष ।
 रामनी — धान्यविशेष ।
 रामरुचि — व्यञ्जनविशेष ।
 राय — वि० राए, विचार, संमति ।
 राल — धूमनसँ बनाओल लस्सा ।
 रास — चृत्यविशेष १ पुञ्ज, राशि २ ।
 रासधारी — रास कएनिह ।
 रासि — रश्मि, घोड़ाप्रभृतिक डोरी ।
 रास्ता — वि० मार्ग ।
 राहठ — राहड़िक सुखाएल वृक्ष ।
 राहड़ि — आढ़की, द्विदल अञ्चविशेष ।
 रिआइत-खिआइत — अ० खर्च
 होइत-होइत ।
 रिकवी — वि० छोट भोजन पात्र ।
 रिकाब — वि० घोड़सवारक पाएरक
 अवलम्बन ।
 रिट्टी — हैँ ठीक फलत्वक ।
 रितब — क्रि० रीतब ।
 रिन्ती-छिन्ती — छितिर-बितिर, अश्रे-
 णीबद्ध, यत्र-कुत्र विकीर्ण ।
 रिनिआ — अधमर्ण, कृण लेनिहार ।
 रिन्दुका — निरय प्रातःकालक सिद्धा -

नभोज्य ।
 रिबरिब — मुखमे वेदनाविशेषजगक
 (ओल आदि) ।
 रिबरिबी — ओल आदिक भक्षण-
 जन्य मुखक वेदनाविशेष ।
 रिसाल — मालिकक ओतए पठाओल
 नगद वा अन्न ।
 रीढ़ — पीठक बिचला हाड़ ।
 रीतब — क्रि० रित्+अब—नेनाक
 अनुरक्त होएब ।
 रीन — कृण ।
 रील — तागक प्रभेद ।
 रीस — रैथ्या ।
 रुख(ख) — उ० क (माटि आदि) ।
 रुखान — क ॥ रक इथिआरविशेष ।
 रुखानी — ओट रुखान ।
 रुखिगर — रुखि (अगिला प्रकाश)
 बोला ।
 रुचब — क्रि० खएबामे नीक लागब ।
 रुचि — सं० इच्छा, भोजनेच्छा ।
 रुचिगर — भोजनमे परम प्रिय ।
 रुपैआ — रूप्यक, राजतमुद्रा ।
 रुपैगर — अधिक रुपैआबाला ।
 रुसना — उ० अधिक रुसनिहार ।
 स्त्री० रुसनी ।
 रुसाफुली(लली) — रुष्टता तत्कृत
 मुखमालिन्यादि ।

रुआ — प० इक चतुर्थांश ।
 रुखि — आगामि प्रकाश ।
 रूप — सं० आकार, स्वरूप १ रजत २ ।
 रूपकरन — वृक्षविशेष ।
 रूपमञ्जरी — पुष्पविशेष ।
 रुसब — क्रि० रुस्+अब—रुष्ट
 होएब ।
 रुसा-फूली — रुष्टता तत्कृत मुख-
 मालिन्यादि ।
 रेकब — क्रि० शिशुक धावन ।
 रेका-तोकी — 'रे' 'तो' शब्दोच्चारण-
 पूर्वक कलह ।
 रेकार — 'रे' शब्दे सम्बोधन ।
 रेकार-तुकार — रेका-तोकी ।
 रेखा — सं० डँड़ि, सरल चिह्न ।
 रेंगनी — कण्टकारी ।
 रेंगब — क्रि० एक पाएरें कुदैत
 चलब ।
 रेघा — रेखा, चिह्न ।
 रेजरेजा } — महाश्रम ।
 रेजरेजीस }
 रेजा — उ० राजक सङ्ग काज कए
 निहार । स्त्री० रेजो ।
 रेठान — बारंवार गमन ।
 रेड़ — अनेक लोकक धक्का ।
 रेड़य — क्रि० थलैत भक्का गोरब ।

रेडम-बहेडम—अनेक लोकक सं-
कुलताप्रयुक्त धका ओ घोल ।

रेत—स्रोतस्, प्रवाह ।

रेतब—क्रि० रेतीसँ छीलब ।

रेती—घर्षणसँ लोह आदिक तक्षण-
यन्त्र ।

रेबा—मत्स्यविशेष ।

रेबाज—वि० सदासँ भए आएल
चालि, सम्प्रदाय ।

रेबाड़—पाछाँसँ खेहाड़ब ।

रेबाड़ब—क्रि० पाछाँसँ खेहाड़ब ।

रेल—वि० धूमयानमार्ग १ रेल-
गाड़ी २ ।

रेल-गाड़ी—धूमयान ।

रेस—वि० तीव्रगति, वेग ।

रेसब—क्रि० भ्रम धातुपात्रक सं-
न्धान ।

रेसम—पाट ।

रेसमी—पट्टरचित (वस्त्र) ।

रेह—रेखा ।

रेहल—जितद बान्हल पुस्तक रख-
बाक आधारपट्ट ।

रैअति—वि० प्रजा ।

रैची—राजिका ।

रैता—रैची ओ दहीक व्यञ्जन-
विशेष ।

रैनि—रजनि, राति ।

रोआब—वि० रोब, अलङ्घनीय
आज्ञा ।

रोआबी—वि० रोबदार, अलङ्घनीय
आज्ञावाला ।

रोइआँ—रोम ।

रोइउपाड़—रोमोत्पादनत्रण ।

रोक—अवरोध ।

रोक-टोक—अवरोधादि ।

रोकब—क्रि० अवरोधन ।

रोकाबट—हि० अवरोध ।

रोग—सं० व्याधि ।

रोगहा—उ० अनादरणीय रोगाह ।
स्त्री० रोगही ।

रोगाएब—ना० रोग+अब—रोग-
संयुक्त होएब ।

रोगाह—उ० रोगयुक्त । स्त्री०
रोगाहि ।

रोगी—सं० अलि० रोगयुक्त ।

रोच—धाख, भाषणादिमे भय ।

रोज—हि० दिन ।

रोज उतारब—क्रि० दण्डन ।

रोजगार(री)—वाणिज्य ।

रोजनामचा—प्रतिदिनक खचोंटा ।

रोजहा—दैनिक वेतनपर कार्यार्थ
नियुक्त अनादरणीय ।

रोट—पैघ मोट रोटी ।

रोटी—मोट सोहारी, शङ्कुली ।

रोड़—अधिक उलाओल (दालि) ।

रोड़ा—पजेबाक छोट-छोट टुकड़ा ।

रोड़ी—छोट रोड़ा ।

रोदात—वि० मुखोत्तर न्याय-
प्रवर्तन ।

रोप—गाछक रोपण ।

रोपब—क्रि० रोपण ।

रोब—वि० रोआब ।

रोबकारी—रोदात, मुखोत्तर न्याय-
प्रवर्तन ।

रोमब—क्रि० मनुष्यभिन्नक वारण ।

रोल—वि० गोल शलाका ।

रोस—क्रोध, क्रोधजन्य आवेग ।

रोसनी—वि० दीपादिप्रकाश ।

रोसाह—उ० क्रोधी । स्त्री०
रोसाहि ।

रोहनि—रोहिणी नक्षत्र ।

रोहनिआ—रोहिणीमे होएनिहार ।

रोहिनी } —रोहिणी नक्षत्र ।

रोहीनि }

रौद—आतप ।

रौदमुहाँ—अ० आतपाभिमुख ।

रौदाएब—ना० रौद+अब—रौदसँ
तप्त होएब ।

रौदिआह—आतपप्रधानक (वर्षा-
समय) ।

रौदी—अनावृष्टि ।

रौला-रौली—नृत्यविशेष ।

ल

लइ—पिष्ट तण्डुलादिक लस्सा ।

लए—अ० निमित्त १ ग्रहणकए २ ।

लओठा—पैघ (हर) ।

लकड़ी—हि० काष्ठ ।

लकवा—वातरोगविशेष ।

लकलक पातर—उ० अत्यन्त
कृश । स्त्री० पातरि ।

लखौरी—खपराक प्रभेद ।

लग—समीप ।

लँग—लवङ्ग ।

लँगटा—उ० अनादरणीय लङ्गट ।

स्त्री० लँगटी ।

लँगटाह—उ० किञ्चित् लङ्गट ।

स्त्री० लँगटाहि ।

लँगड़ा—उ० अनादरणीय नाँगड़ ।

लगता(ति)—कोनो कार्यमे समस्त
खर्च ।

लगन—लग्न, शुद्ध समय ।

लगनी—गीतविशेष ।

लगभग—अ० किछु कम वा
अधिक ।

लगले—अ० तुरन्त ।

लगले-लागल—अ० अव्यवधानेन
पुनःपुनः ।

लगाहर—गङ्गलार्थ पूर्णकलश ।
 लगाहरि—दूध रेनिहारि (गाय
 आदि) ।
 लगाही—लघुशङ्का, मूत्रत्याग ।
 लगातार—अ० निरन्तर ।
 लगान—पत्रारूढ़ कर ।
 लगानी—सूदिपर द्रव्यादिप्रदान ।
 लगाम—बोड़ाक रश्मि, प्रग्रह ।
 लगामी—गलफड़क घाओ ।
 लगार—लागि कएनिहार, मादक ।
 लगारि—लागिकेँ पड़निहार, दृढ़-
 संकल्प १ अधिक उपजनिहार
 (धान) २ ।
 लगिचाएब—ना० लगीच+अब—
 समीप होएब ।
 लगीच—लग, समीप ।
 लगुआ—दासभिन्न आश्रित व्यक्ति ।
 लगौटा(टी) } —कौपीन ।
 लगौटा(टी) }
 लगौरी—जोड़ल (चार आदि) ।
 लगौरी-अस्सगन्ध—ओषधिविशेष ।
 लग्गा(ग्गी)—पातर लम्बा वंशदण्ड ।
 लगन—सं० मेघवृषादि ।
 लङ्—लँग, लवङ्ग ।
 लङ्गटा—उ० अनादरणीय लङ्गट ।
 स्त्री० लङ्गटी ।

लङ्गटाह—उ० किञ्चित् लङ्गट ।
 स्त्री० लङ्गटाहि ।
 लङ्गडा—अनादरणीय पङ्गु ।
 लङ्गोटा(टी) } —कौपीन ।
 लङ्गौटा(टी) }
 लङ्ग लेब—क्रि० पड़ाएकेँ लुकाएब ।
 लङ्गट—उ० बदमास, बद्द,
 उत्पाती । स्त्री० लङ्गटि ।
 लङ्गूर—पैघ लाङ्गू लबाला बानर ।
 लचकब—क्रि० पटे प्रभृतिक भार-
 वश आन्दोलन ।
 लचका—वंशनिर्मित सेतु ।
 लचलच करब—क्रि० लचकब ।
 लचलचाएब—क्रि० लचलच्+
 अब—लचकब ।
 लचलची—लचकब ।
 लच्छन—लक्षण ।
 लछमी—लक्ष्मी ।
 लछुमन भोग—धान्याविशेष ।
 लछुमना—जड़ीक प्रभेद ।
 लजकोटर—उ० अत्यन्त लजाशील
 (निन्दामे) । स्त्री० लजकोटरि ।
 लजबिज्जी } —लजावती, क्षुप-
 लजबीजी } विशेष ।
 लजाएब—ना० लाज+अब—

लाजसँ युक्त होएब ।
 लजति—तरब, सारांश ।
 लट—केशक अग्रभाग १ संलग्नता,
 संगति २ ।
 लटकन—मालक भूषणविशेष ।
 लटकब—क्रि० उपर र'बद्ध भए
 भूमिदिस नम्र होएब ।
 लटकेना—नाना वस्तुक छोट
 (दोकान) ।
 लटपट—शुष्क भोरबाला (तीमन)
 १ अस्तव्यस्त, पर्याकुल (वस्त्रा
 दि) २ ।
 लटपटाएब—क्रि० लटपट्+अब—
 स्खलन ।
 लटपटाह—उ० स्खलनशील ।
 स्त्री० लटपटाहि ।
 लटपटिआ—लेन-देनमे कमे-
 लिआ ।
 लटपटी—लेन-देनमे कमेल ।
 लटब—क्रि० दुर्बल ओ पातर
 होएब ।
 लटबा—गुलीक ताग लपटएबाक
 साधन ।
 लटबेल—चारु कातमे बान्हू ।
 लटबौरा—अनर्गल कएनिहार,
 दुलारू, आग्रही ।
 लट लागब—क्रि० पूर्वापरक

संगति ।

लटाइ—लटबा ।
 लटाढम } —प्रणयजन्य
 लटारहम } शिशुक आग्रह ।
 लटुआएब—क्रि० लटु+अब—
 रोगादिकृत आबल्यसँ अक्षम
 होएब ।
 लट्टा—चूड़ामे सटल चूड़ा १ मत्स्य-
 विशेष २ चलबाक काल पाएरमे
 पाएर सटब ३ जटा ४ ।
 लट्टोपट्टो—नेनाक एक खेलओना ।
 लठिआएब—ना० लाठी+अब—
 लाठीसँ मारब ।
 लठिधर—युद्धार्थ यष्टिधारी ।
 लडका—लड़ाक, युद्धदक्ष ।
 लडन्त—लड़ाइ, युद्ध ।
 लडब—क्रि० युद्ध करब ।
 लडाइ—युद्ध ।
 लडाक—योद्धा ।
 लडुबी—मिष्टान्नविशेष ।
 लडुब्बा—गोल पैघ (आम) ।
 लडुब्बी—गोल छोट (आम) ।
 लडू—लड्डुक, मिष्टान्नविशेष ।
 लण्ठ—मूर्ख अविचारी ।
 लत—निम्न (तुलाभाग), तराजूक
 एक पल्लासँ नम्र भेल (दोसर

पल्ला) ।	लद(ध)हा	—हर लधवाक
लतखुर्दन—लतमर्दन, लातसँ धागब ।	लधा	डोरी ।
लतखोरा—लात पोछबाक साधन ।	लप—एक प्रसृतहस्तपरिमाणक ।	
लतमर्दन—लतखुर्दन ।	लपकब—क्रि० अतिवरया ग्रहण ।	
लतमारा—लतखोरा ।	लपटन—मल्लयुद्धविशेष ।	
लतरब—क्रि० लताक प्रसरण ।	लण्टब—क्रि० शिक्षार्थ मल्लयुद्ध ।	
लता—सं० लती ।	लपसी—लप्सिका, शाकविशेष ।	
लताम—फलविशेष, अमरुद हि० ।	लपौड़ी—मिथ्या अतिप्रशंसा ।	
लति—स्वभाव ।	लफन्दर—बहुमिथ्याभाषी ।	
लतिआएब—ना० लात+अब—	लवङ्ग—सं० लँग ।	
न मारब ।	लवङ्गलता—सं० पुष्पलताविशेष ।	
लतिआहा—लताबाला ।	लवङ्गी—मेरिचाइक प्रभेद ।	
लत्तहिँ—पत्तहिँ—अ० अतिशीघ्र ।	लवनी—तारी चुबएबाक पात्र ।	
लत्ता—कपट, जीर्ण छोट वस्त्रखण्ड ।	लबब—क्रि० झुकब, नमब ।	
लत्ती—लता ।	लबलबाएब—क्रि० लबलब+अब—	
लथराह—उ० लथार मारनिहार	अनवसरक भाषण (निन्दामे) ।	
(पशु) । स्त्री० लथराहि ।	लबलबी—काकलक, कण्ठविवरस्थ	
लथार—मालक पादप्रहार ।	मांसपिण्डविशेष ।	
लदना—पीठपर लादिके वस्तु उघ	लबर—उ० मिथ्या बहुभाषी ।	
निहार (घोड़ाप्रभृति) ।	स्त्री० लबरी ।	
लदफदाएब—क्रि० लदफद्+अब—	लबर-लबर बाजब—क्रि० झट-	
धोती आदिक स्खलन ।	झट बहुभाषण (निन्दामे) ।	
लदबद—स्त्री० पूर्णगर्भभोराक्रान्त ।	लबरा—उ० अनादरणीय लबर ।	
लदबदाएब—क्रि० लदबद्+अब—	स्त्री० लबरी ।	
पूर्णगर्भसँ युक्त होएब ।	लबाठी—लाबामे बिनु फूटल अब ।	
	लवान—नम्रीभाव ।	

लबै—तितीरक प्रभेद ।	ललचाएब—क्रि० ललचू+अब—
उमका—लाम प्रभेदक ।	गुध्रु होएब, लोभाएब ।
लय—सं० गीतक स्वर १ लाए,	ललबौआ—पुं० दुलोरु ।
हेतु २ ।	ललित—सं० सुन्दर ।
लयगर—नीक स्वरबाला ।	ललितगर—उ० अति सुन्दर ।
लरकब—क्रि० शिथिल भए नीचाँ	स्त्री० ललितगरि ।
दांस नमब ।	ललोन—किञ्चित् लाल ।
लरगुज—अत्यन्त कोमल ओ	लह—लल, अन्नवस्त्रादिविकल ।
शिथिल ।	लसकर—वि० सैन्य ।
लरताडर—शक्तिहीनतासँ अक-	लसलस—लस्साजेकाँ सटनिहार ।
र्मण्य ।	लसलसाएब—क्रि० लसलस+अब—
लरब—क्रि० शिशुक प्राथमिक	लसलस होएब ।
गमन ।	लसलसी—सचनशीलता ।
लरबर—शिथिलावयवक ।	लसि—सम्पर्क ।
लरबराएब—क्रि० लरबर+अब—	लसिगर—परस्पर सटबाक योग्य
शिथिलावयवक होएब ।	(भातप्रभृति) ।
लरोना—क्रि० नेनाक चलब सिख-	लसून—लशुन ।
बाक (गाड़ी) ।	लस्सा—निर्यास ।
लल—लल, अन्नवस्त्रादिक	लहक—धधराक अग्रभाग ।
विकल ।	लहकब—क्रि० अग्निसंयोगाधिक्य-
ललकब—क्रि० क्रोधेँ जोरसँ	सँ अल्प जरब ।
बाजब ।	लहका—बिनु तड़ेराक माछ मार-
ललका—लाल प्रभेदक ।	बाक छीप ।
ललकारब—क्रि० क्रोधवश उ० च-	लहटगर—रगणीय ।
स्वरेँ कथन ।	लहटन—पल्लीसदृश जन्तुविशेष ।
ललका-ललकी—क्रोधवश परस्पर	लहतोरो—पक्षिविशेष ।
जोरसँ भाषण ।	लहठी—लाक्षालङ्करण ।

लहना—सूदि पर लागल रूपैआ ।
 लहब—क्रि० सफल होएब ।
 लहरब—क्रि० प्रज्वलित होएब ।
 लहरि—ज्वाला १ जोह, तरङ्ग २ ।
 लहसन—कचिन् शरीरस्थ पैघ कारी चिह्न ।
 लहसुन—लशुन ।
 लहसुनिआ—भूषणविशेष ।
 लहुक—छोट, हल्लुक, लघु ।
 लहेरि—उ० लाक्षालङ्करणकार जातिविशेष । स्त्री० लहेरिनि ।
 लहेरिआ बाजू—बाहुक भूषणविशेष ।
 लहेरिआ बान्हू—बान्हूक प्रभेद ।
 लाएब—क्रि० लब्+अब—आनयन ।
 लाएल—आनीत ।
 लाख—लक्ष ।
 लाखपति—लक्षेश ।
 लाखराज—सम्प्रादसँ निवर्तित करबाला (भूमि) ।
 लागन—लाङ्गल, हरक ओ अवयव जे जोतबाक काल हाथसँ पकड़ल जाइछ ।
 लागब—क्रि० लग्+अब—संबद्ध होएब १ पन्हाएब २ (परि, हाथ इत्यादिक सङ्ग एकर

अनेक अर्थ) ।
 लागल—लग्न, सम्बद्ध ।
 लागल-लागल—अ० शनैःशनैः ।
 लागि—शीतज्वर १ निसाँ, मद २ सम्बन्ध ३ ।
 लाँघ—लङ्घन, बाहबाक काल मालपर मालक चढ़ब ।
 लाँघब—क्रि० लँघ्+अब—लङ्घन ।
 लाडड़—उ० नाडड़, खड्ड । स्त्री० लाडड़ि ।
 लाडड़ि—नाडड़ि, लाङ्गल ।
 लाज—लज्जा ।
 लाट—अवसर ।
 लाठालाठी—परस्पर लाठीक प्रहार ।
 लाठी—यष्टि, पैघ ठेँगा ।
 लाठी-लठौबलि—लाठालाठी ।
 लाढ़—सानुनय इठ ।
 लाढ़ि—पानिपर होएनिहार तृणविशेष ।
 लाथ—छल, अपलाप ।
 लाद—गाड़ी आदिपर वस्तुक आरोपण ।
 लादब—क्रि० लद्+अब—गाड़ी प्रभृतिपर वस्तुस्थापन ।
 लाधब—लध्+अब—चिरकालेँ सम्पाद्य क्रियाक आरम्भ ।
 लाफु—शाकविशेष ।

लावन—माटिक दीपाधारविशेष ।
 लावा—लाज सं०, भृष्टधान्यस्फोट ।
 लावा-दूआ—शाकादिक्रयणमे स्वीकृतसँ किछु अधिक वस्तुक दान ।
 लाभ—सं० प्राप्ति ।
 लाभ—उ० लम्ब । स्त्री० लामि ।
 लायक—वि० योग्य, बुधिआर ।
 लार—संचालन, लारब ।
 लार-चार—संचालनादि, प्रचार ।
 लारना—संचालनक साधन दर्वी-प्रभृति ।
 लारनि—लारना ।
 लारब—क्रि० लार+अब—संचालन ।
 लारुवातू—अत्यन्त शिथिल ।
 लाल—रक्तवर्ण ।
 लालकी—शिबिकाविशेष ।
 लालच—हि० गृध्रुता, उत्कट लोभ ।
 लालची—गृध्रु, अत्यन्त लोभी ।
 लालटेम—वि० दीपपात्रविशेष ।
 लालटेस } —अत्यन्त रक्त ।
 लालबुन्द }
 लालभुजुङ्ग }
 लालसर—जलचर पक्षिविशेष ।
 लाल-सिमरिफ—सिमरिफसन

लाल ।

लालिमा } —रक्तता ।

लाली }

लास—वि० मुर्दा, शरीर ।

लाह—लाक्षाविकार ।

लाहट(ठ)—मोहर उखड़बाक लाह ।

लाहब—क्रि० फूटल लहठीकेँ

धिपाए संलग्न करब ।

लाही—लाक्षा ।

लिखब—क्रि० लेखन ।

लिखा—लिखित कुशलादिपत्र ।

लिखा-पढ़ी—लिखब-पढ़बप्रभृति ।

लिखिआ—छोटका (बनसी) ।

लिखुआ } —हस्तलिखित ।

लिखोट }

लिच्छोपलिच्छ—अत्यन्त शुद्ध ।

लिट्टी—साक्षात् अग्निपक्क स्थूल

रोटी ।

लिट्टिआह—लीढसँ युक्त (पोखरि) ।

लिही—हाथी घोड़ाप्रभृतिक विष्टा ।

लिधुरिआ—छोट नेना ।

लिधुर—रुधिर, रक्त ।

लिलकण्ठ—नीलकण्ठ ।

लिलोह—निराश ।

लीक—गाड़ीक पक्षिआक चिह्न ।

लीख—लिखा, केशक कीटविशेष ।
 लीखब—क्रि० लिख्+अब—
 लेखन ।
 लीखा—लिखा, कुशलादिपत्र ।
 लीखा-पट्टी—लिखब पदबप्रभृति ।
 लीची—फलविशेष ।
 लीढ़—पृष्ठवंश, पीठक बिचला हाड़
 १ जलक उपरमे मोट भए जन-
 मल तृणविशेष २ ।
 लील—नीली, क्षुपविशेष १ ओहि-
 सँ बनाओल रङ्ग २ ।
 लीलपट्टी—चारु कात नील ओ
 मध्यमे लाल (साड़ी) ।
 लुकलुक—भिन्नएबापर उद्यत
 (सीपादि), अस्तप्राय (सूर्यादि) ।
 लुकलुकाएब—क्रि० लुकलुक+अब—
 लुकलुक करब ।
 लुकठी—अग्निमुख काठी ।
 लुकड़—असद्वृत्तिक (व्यक्ति) ।
 लुकस—फलविशेष ।
 लुकसी—गाछपर चढ़निहार चतु-
 ष्पद जन्तुविशेष ।
 लुगता—नीचता, जघन्यता ।
 लुचकड़—लुचलुच कएनिहार ।
 लुचलुच करब—क्रि० सञ्च नहि
 रहब, वृथा हस्तादिव्यापार करब
 (निन्दामे) ।

लुचिआ—स्त्री० लुची (गारिमे) ।
 लुचा—पुं० अनादरणीय लुचकड़ ।
 लुच्ची—स्त्री० अस्थिर अनादर-
 णीय स्त्री० ।
 लुभब—क्रि० लुम्ब ।
 लुटब—क्रि० लुण्ठन ।
 लुटकब—क्रि० गड़कब ।
 लुतुक—लति, अभ्यास, प्रकृति ।
 लुत्ती—चिनगी १ मशकाकार की-
 टविशेष २ ।
 लुदुर-लुदुर—अ० शिशुक मन्द-
 मन्द (चलब) ।
 लुधकब } —क्रि० एकमे अनेकक
 लुबुधब } योग ।
 लुरिगर—उ० लुरिबाला, क्रिया-
 दक्ष । स्त्री० लुरिगरि ।
 लुलुआएब—क्रि० लुलु+अब—
 खिसिआएब ।
 लुलुहाएब—क्रि० लुलुहब+अब—
 नीरोग पत्रपुष्पादिसँ युक्त होएब ।
 लुलुहार—सम्पन्न शाखापत्रादिसँ
 युक्त ।
 लुलह—उ० एक हाथसँ शून्य ।
 स्त्री० लुलिह ।
 लुलहुआ—मणिबन्ध ।
 लू—वि० सूर्यक घातक तीव्र किरण ।

लूमब—क्रि० लुम्ब+अब—कौआक
 हठात् लोलसँ लेब ।
 लुटब—क्रि० लुट्+अब—लुण्ठन ।
 लुटि—लुण्ठन ।
 लूरि—अवगति, दक्षता ।
 लूलूथू—अत्यन्त तिरस्कारपूर्वक
 परास्त ।
 लेआएब—क्रि० लेअब+अब—
 बजाए लाएब, सादर निमन्त्रण ।
 लेआओन—सादर ता कार्य रह-
 बाक निमन्त्रण ।
 लेखा—गणना, हिसाब ।
 लेखँ—अ० गणनासँ, विचारँ, बुद्धिक
 अनुसार ।
 लेटाएब—क्रि० लेट्+अब—भूमिमे
 समन्तात् संघर्षण ।
 लेढब, } —क्रि० लेढ्+
 लेढाएब } अब, लेढ्+अब,
 लेढिआएब } लेढि+अब—
 कर्दमादिमे स-
 मन्तात् संघर्षण ।
 लेध—कर्दमसहिते उपड़निहार (धान
 आदिक बीआ) ।
 लेधुरिआ—स्वयं स्वकार्याक्षम नेना ।
 लेन—आदेय ।
 लेप—सं० लिम्पन ।

लेपटाएब—क्रि० लेपट्+अब—
 चारु कातसँ वस्त्रकर्दमप्रभृतिक
 सम्बद्ध होएब ।
 लेपब—क्रि० लिम्पन ।
 लेब—लेबाइ १ क्रि० ल्+अब—
 ग्रहण ।
 लेबब—क्रि० जलमिलित मृत्तिकासँ
 टाट भीतप्रभृतिक मोट लेप ।
 लेबा—भित्त्यादिमे मोट लिप्त माटि ।
 लेबाइ—लेबब ।
 लेवाल—ग्राहक ।
 लेभडब—क्रि० समन्तात् लिप्त
 होएब ।
 लेर—लाला, मुखद्रव ।
 लेराह—उ० लेर खसबाक स्वभाव-
 बाला । स्त्री० लेराहि ।
 लेरू—गाएक बच्चा ।
 लेसब—क्रि० दीपप्रज्वालन ।
 लेहू—शोणित ।
 ले—गोधूमादि चूर्णक लस्सा ।
 लोइआ—पिण्ड ।
 लोक—सं० जन ।
 लोकगर—अधिक लोकसँ युक्त ।
 लोकवेद—लोकादि ।
 लोकलीन—स्त्री० कन्याक सङ्ग
 गेनिहारि स्त्री ।
 लोकारण—अधिक लोकक स्थिति ।

लोखण्ड—हजामप्रभृतिक स्वस्वकार्यक
उपकरण ।

लोखण्डा—गाछक विदलित
त्वचा ।

लोटफी—बहुत छोट छोटा ।

लोटन—परबाक प्रभेद ।

लोटपोट—परास्त ।

लोटा—जलपानपात्रविशेष ।

लोटाएब—क्रि० भूमिपतित भए
उनटब-पुनटब ।

लोडहब—क्रि० धानक कटलापर
छुटल धानक सीस बीछब ।

लोडहा—शिलवृत्ति, लोडहब ।

लोडही—शिलापुत्रक, सिलौटपर
पिसबाक साधन छोट पाथर ।

लोदनि—लोडहा ।

लोदब—क्रि० लोडहब ।

लोदा—लोडहा ।

लोदी—लोडही ।

लोथ—सव्वारायोग्य ।

लोथराह—अधिक भारी (लोटा-
प्रभृति) ।

लोध—वृक्षविशेष ।

लोन—नोन, लवण ।

लोभ—सं० लाभेच्छा ।

लोभाएब—ना० लोभ-अब—
लोभयुक्त होएब ।

लोमान—धूपविशेष ।

लोरि } —गीतविशेष ।

लोरिक }

लोल—चञ्चु ।

लोला—नमरल निरर्थक अवयव ।

लोली—हाउ, बालबिभीषिका ।

लोह—सं० लौहधातु ।

लोहकट—सिकस्त काटल जाहिमे
अवशिष्ट कटबाक हेतु कुडहरि
नहि जाए सकए ।

लोहकम—लोहक उपकरण ।

लोहखंड—लोखण्ड ।

लोहङ्गाड—लोहक पैघ छड ।

लोहछब—क्रि० पिपासादिवश
सक्रोध भाषण ।

लोहभाम—लौहकिट, अति पुरा-
तन लौह ।

लोहराइन } —दुर्गन्धविशेष ।

लोहरानि }

लोहागढ़—धान्यविशेष ।

लोहार—उ० लौहकार, कर्मकार ।
स्त्री० लोहारनि ।

लोहारि—बिखाह ललका चूटी ।

लोहारी—लोहारक वृत्ति ।

लोहिआ—लौहकटाह ।

लौका—सज्जनिक प्रभेद जकर
तुम्बा बनैत अछि ।

लौल—लौल्य ।

श

शक्ति—सं० सामर्थ्य ।

शक्य—सं० साध्य ।

शङ्का—सं० समाधेय प्रश्न ।

शङ्ख—सं० कम्बु ।

शङ्खद्राव—सं० नेबोक प्रभेद ।

शनि—सं० रविक पूर्व दिन ।

शत्रु—सं० वैरी ।

शत्रुता—सं० वैर ।

शर—सं० बाण ।

शशिलता—सं० लतापुष्पविशेष ।

शाखा—सं० डारि ।

शान्त—सं० शमयुक्त, निचेन १
उपरत, मृत २ ।

शान्ति—सं० उपशम ।

शासन—सं० प्रजाक निग्रहानुग्रह ।

शिखा—सं० टीक ।

शिवरात्रि—सं० फाल्गुनशुक्ल चतु-
र्दशीक पर्वविशेष ।

शिवालय—सं० शिवक मठ ।

शिवोत्तर—सं० महादेवक प्रीत्यर्थ
उत्सृष्ट भूमि ।

शीघ्र—अ० द्रुत, अविलम्ब ।

शीघ्रता—सं० त्वरा ।

शीत—सं० ठण्डा १ हिम, ओस २ ।

शीतल—सं० ठण्डा ।

शीतला—सं० भगवतीविशेष ।

शील—सं० स्वभाव ।

शुक्र—सं० बृहस्पतिक, अगिला दिन ।

शुद्ध—सं० निर्दोष, पवित्र ।

शुभ—सं० सङ्गल, कल्याण ।

शुभाशिप्—सं० शुभकामना ।

शूद्र—सं० चतुर्थ जाति । स्त्री०
शूद्री ।

शूर—सं० वीर ।

शोक—सं० खेद ।

शोणित—सं० रक्त ।

शोथ—सं० फूलब, रोगविशेष ।

शोभा—सं० सौन्दर्य ।

शौच—सं० शुद्धि, पुरीषोत्सर्गोत्तर
संशोधन ।

श्याम—सं० कारी ।

श्र

श्रद्धा—सं० आदरबुद्धि ।

श्रद्धेय—सं० श्रद्धाकरबा योग्य ।

श्रम—सं० मेहनति ।

श्राद्ध—सं० पितरक उद्देशे श्रद्धा-
पूर्वक दान ।

श्री—सं० शोभा ।

श्रेष्ठ—सं० उत्तम ।

श्रोत्रिय—सं० कर्तव्य ब्राह्मणक

उपाधि ।
 श्लोक—सं० पद्य ।
 ष
 षट्पास—छबो रससं युक्त (भोजन) ।
 षट्पाग—नियम-निष्ठा (निन्दामे) ।
 षष्ठी—सं० छठम तिथि १ जन्मोत्तर
 छठम दिनमे पूज्य देवी, षष्ठिका २ ।
 स
 सङ्—अप्रकाश अभिप्राय ।
 सईस—सहीस, घोड़ाक पालक ।
 सए—शतसंख्यक ।
 सएरदिवाल—प्राचीर, समन्तात्
 आवासवेष्टनभित्ति ।
 सओदा—विक्रय्य वस्तु ।
 सओदागर—विक्रेता, व्यापारी ।
 सक—शक्ति १ वि० सन्देह २ ।
 सकचून(र)—सर्वथा चूर्णित ।
 सकत—दढ़, कठोर ।
 सकदम—वि० भयसं स्तब्ध ।
 सकनाचूर—सर्वथा चूर्णित ।
 सकब—क्रि० शक्त होएब ।
 सकवेध—दढ़ वेष्टन ।
 सकवेधब—क्रि० दढ़वेष्टन करब ।
 सकरकन—अलहुआ (बाबाजीक
 भाषामे) ।
 सकरब—क्रि० कृतकार्य होएब ।
 सकरांति—संक्रान्ति ।

सकरौड़ी—बुनिया दए बनाओल
 दूध ।
 सकल—वि० स्वरूप १ समस्त २ ।
 सकलारिष्ट—निखिलदोषशान्त्यथ
 दान ।
 सकलुची—अलि० खुरलुची, स्थिर
 नहि रहि उकठ कएनिहार(नेना) ।
 सकसकाएब—क्रि० सकसक+अब—
 सन्देह वा आलस्यसं तारतम्य
 करब ।
 सकसब—क्रि० अनवकाश होएब ।
 सकाँद—सिकस्त स्थान ।
 सकार—स्वीकार ।
 सकारब—क्रि० सकार+अब—
 स्वीकार करब ।
 सकाल—सबेर, से समय जखन
 सूर्य उगिकेँ थोड़ दूर आएल होथि ।
 सकुचब—क्रि० संकुचित होएब ।
 सकुत्थ—सं० दसम पुरुषसँ अगिला
 पुरुषक अपत्य ।
 सकेल—संकीर्णस्थान ।
 सक—सक, शक्ति १ वि० सन्देह २ ।
 सकत—सकत, दढ़, कठोर ।
 सकी—वि० सन्देही ।
 सख—वि० इच्छा, मनोरथ ।
 सखारी—वस्तुजात रखबाक, पैघ
 समतल पौती ।

सखी—सं० वयस्या, सहेली हि० ।
 सखुआ—साँखु, शाल, वृक्षविशेष ।
 संगतुरिआ—अलि० सङ्गी, जकरासँ
 समवयस्कताक व्यवहार हँसी-
 ठट्टा हो ।
 सगतोडनी—स्त्री० साग तोड़-
 निहारि ।
 सगबग करब—क्रि० किञ्चित् इत-
 ततः संचलन ।
 सगबगाएब—क्रि० सगबग+अब—
 सगबग करब ।
 सगबगी—सगबगाएब ।
 सगर—सम्पूर्ण, साग्र ।
 सगही—स्त्री० सगाइवाली (स्त्री) ।
 सगाइ—सम्बन्ध, पतिभिन्नकेँ पति-
 रूपेँ वरण ।
 सँगिता—सङ्गिता, समवयस्कताक
 व्यवहार हास्यादि ।
 सगुन—शकुन १ ज्योतिर्विद वैद्य
 आदिकेँ मङ्गलार्थ देय द्रव्य २ ।
 सगुनवान्ह—बरीपर ठाठ चढ़वाक
 बाद देबाक प्रथम बन्धनविशेष ।
 सगुनिआ—मङ्गलप्रद ।
 सगून—सगुन ।
 सँगोर—सङ्गेर, वस्तु वा लोकक
 संग्रह ।
 सङ्गुरिआ—सँगुरिआ ।

सङ्गिता—सङ्गिता ।
 सङ्गेर—सँगोर ।
 सङ्गेच—लज्जा ।
 सङ्गा—परतानक छिद्रक अन्तराल ।
 सङ्गिआ—विषविशेष ।
 सङ्ग—सं० साहित्य, मेल, सामीप्य ।
 सङ्गम—सं० मेल ।
 सङ्गमर्मर—श्वेत पाषाणविशेष ।
 सङ्गमूसा—कृष्ण पाषाणविशेष ।
 सङ्गी—सङ्ग रहनिहार ।
 सङ्गीत—सं० वाद्यादिसँ युक्त गीत ।
 सङ्गह—सं० सञ्चय ।
 सङ्गही—सं० सञ्चयी ।
 सङ्गतन—सं० ओरिआओन ।
 सचढ़—चरफर, शीघ्र कार्यकर्ता ।
 सचार—दोनामे सँठल व्यञ्जन ।
 सचेत—सावधान ।
 सजनी—सखी ।
 सजब—क्रि० सुसज्जित करब ।
 सजबी—शुद्ध अनुद्धृतसार दूधक
 (दही) ।
 सजमनि—अलावू, कद्दू हि० ।
 सजाए—वि० दण्ड ।
 सजाबट—हि० सजीकरण ।
 सजाय—वि० कारावासादि दण्ड ।
 सजौड़ी—सजमनिक भुजबी दए
 बनाओल बटी ।

सज्जित—सं० सज्ज, दुहस्त ।

सज्जीखार—सर्जदार, साजीखार ।

सँभाएब—ना० सन्ध्यासमयस-
म्प्राप्ति ।

सम्भिता—साम्नी, अविभक्त, अनेक-
स्वामिक ।

सम्भिला—उ० चारिमे तेसर (भाए,
पुत्र इत्यादि) । स्त्री० सम्भिली ।

सँभौत—सन्ध्याकालक दीप ।

सन्ध्व } —स्थिर ।

सन्ध्व-मन्ध्व }

सन्ध्वर—स्तोत्रादिपाठमे अन्यत्र
पठनीयक भ्रमवश अन्यत्र पाठ ।

सञ्ज्ञाफ—वस्त्रप्रान्तमे शोभार्थ यो-
जनीय वस्तुविशेष ।

सटकन—पातर दण्ड ।

सटकब—क्रि० सङ्कुचित होएब १
भयसँ नुकाएब २ ।

सटका—पातर दण्ड ।

सटब—सक्त होएब १ स्पृष्ट होएब २

सटसट करब—क्रि० रोच नहि
राखि प्रौढ़तापूर्वक बाजब (नि-
न्दामे) ।

सटिआ—मिलुआ, एक दलक ।

सट्टा—घरसँ बाहरक से खुदा जकर
शिखरपर भार नहि रहए ।

सट्टा—साठि हाथक (पाग) १ साठि
वर्षक (पुरुष) २ ।

सठअ क्रि० निघटब, निःशेष
होएब ।

सडक—राजमार्ग ।

सडब—क्रि० निःसार होएब १ फ-
लादिक दौर्गन्ध्यादिविकारसँ युक्त
होएब २ ।

सँडवाहि—वृषोत्सर्गश्राद्ध (नीचक
उक्तिमे) ।

सडर—सरल सं०, वृक्षविशेष ।

सडल—निःसार, विकृत ।

सडलाइनि } —सडल वस्तुक
सडलानि } गन्धसदृश गन्ध-
बाला ।

सडसी—सरसी, तप्त बटुक आदि
पकड़वाक साधन विशेष ।

सडाइनि } —सडवाक गन्ध ।
सडानि }

सडारि—पक्षिविशेष ।

सण्ठी—शणयष्टि ।

सत—सत्य ।

सतगजा—सात गज परिमाणक
(धोतीप्रभृति) ।

सतघरा—क्रीडाविशेष ।

सतधरी—स्त्री० सपरनीपुत्री ।

सतजुग—सत्ययुग ।

सतपुतहु—स्त्री० सपत्नीपुत्रवधू ।

सतपुतिआ—भाँटाक प्रभेद ।

सतमसिआ } —अलि० सात

सतमसू } मासक जनमल
(नेना) ।

सतमाए(य)—स्त्री० माताक स-
पत्नी ।

सतरकी—शीघ्रता ।

सतरह—सप्तदश ।

सतरहम—सतरहक पूर्तिकर्ता ।

सतरा—धान्यविशेष ।

सतरिआ—धान्यविशेष ।

सतनरिआ—पक्षी मारनिहोर
व्याध ।

सतसङ्ग—सरसङ्ग ।

सतभट्टि—सतपाठ ।

सतसट्टिम—सप्तपठितम ।

सतसासु—स्त्री० सासुक सपत्नी ।

सतहत्तरि—सप्तसप्तति ।

सतहत्तरिम—सप्तसप्ततितम ।

सताएब—क्रि० सतव+अब—
शातन, दुःख देब ।

सतावन(न्न)—सप्तपञ्चाशत् ।

सतावन(न्न)म—सप्तपञ्चाशत्तम ।

सताबरी—शतावरी ।

सतारब—क्रि० सतार+अब—शी-
घ्रतासँ कार्य सम्पन्न करब ।

सतारि—सप्ताहव्यापक वृष्टि ।

सतारि लाधब—क्रि० सप्ताहव्या-
पक वृष्टिक आरम्भ ।

सतालुक—फलविशेष ।

सतासी—सप्ताशीति ।

सतासीम—सप्ताशीतितम ।

सती—स्त्री० स्वामीक सङ्ग दग्धा १
सं० पतिव्रता २ अ० प्रतिनिधि ३ ।

सतीत—प्रमाणित ।

सतुआ—सातु ।

सतुआइनि—सातु खएबाक पाबनि,
मेष संक्रान्ति ।

सत्त—सत, सत्य ।

सत्तरि—सप्तति ।

सत्तरिम—सप्ततितम ।

सत्ता—सामर्थ्य १ तासक सातम
फर्द २ ।

सत्ताइस—सप्तविंशति ।

सत्ताइसम—सप्तविंशतितम ।

सत्ती—सती, अ० प्रतिनिधि ।

सत्य—स० तथ्य, यथार्थ ।

सत्यवादी—सं० सत्य बजनिहार ।

सत्यानास—सर्वथा विनाश ।

सदत—सतत ।

सदबद—अल्प जल मिलाए राखल

(तीमन) ।

सदा—सं० अ० सर्वदा ।

सदाए—उ० मुसहर जातिक

उपाधि । स्त्री० सदाइनि ।

सदाबर्त—सदाव्रत, प्रतिदिन सब

अभ्यागतके खोएबाक

व्रत ।

सदाबर्ती—सदावर्त कएनिहार ।

सदाय—मुसहरक उपाधि ।

सदिआम—लताम ।

सदिखन—अ० सर्वदा ।

सदुल—पक्षिविशेष ।

सद्—सद, सहनशील, अनुपद्रवी ।

सद्दो-बद्दो—सबस्त्र खूब तीतल ।

सद्धम-सद्ध—लेन-देनक सम्पन्न संशोधन ।

सधब—क्रि० सठब, निःशेष होएब ।

सधवा—सं० जीवदमर्तुका ।

सधम-सध—लेन-देनक सम्पन्न संशोधन ।

सधाएब—क्रि० सधब+अब—निःशेष करब ।

सधान—निःशेषीभाव ।

सधोरि—गुर्विणीक हेतु भार ।

सन—शण, वृक्षविशेष जकर छालसँ डोरी आदि बनेछ १ आम्रवी-जादिमे लागल सूक्ष्म तन्तु-

समुदाय २ ।

सनक—विक्षेप १ सक्रोध हठात्

प्रवृत्ति २ ।

सनकब—क्रि० विक्षिप्त होएब १

सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २ ।

सनकाह—उ० विक्षिप्तप्राय । स्त्री०

सनकाहि ।

सनकिरवा—कीटविशेष ।

सनकी—विक्षेप १ सक्रोध हठात्

प्रवृत्ति २ ।

सनखेसरा—कीटविशेष ।

सनगोहि—गोधाकार स्थलचर

जन्तुविशेष ।

सनगिद(ह)—सद्दो-बद्दो, समस्त

अत्यन्त तीतल ।

सनठी—सण्ठी, शणयष्टि ।

सन दए—सन-सन शब्दपूर्वक ।

सनपत—श्यानाक, वृक्षविशेष ।

सनपटुआ—शणवृक्षविशेष ।

सन-सन करब—क्रि० सन-सन शब्द करब १ सक्रोध सामर्थ्य-प्रकाशन २ ।

सनसनाएब—क्रि० सनसन्+अब—

सनसन करब ।

सनसनी—सन-सन शब्द १ जोरसँ

सामर्थ्यप्रकाशन २ ।

सनहकी—यवनक भोजन-पाक ।

सनहुल—सोनहुल, पुष्पविशेष ।

सनाए—सनाय, रेचक ओषधिविशेष ।

सनातन—सं० अनादिकालप्रवृत्त ।

सनाय—सनाए ।

सनाह—सनसँ युक्त (आम्रादि) ।

सनीप—समीप ।

सनेस—सनेहीक प्रति उपहार ।

सनै—सनइ, शण, क्षुपविशेष ।

सनैचरी—प्रत्येक शनिमे नित्य

सभसँ आदेश द्रव्य ।

सनोह—सनोहब ।

सनोहब—क्रि० दूहिकेँ दूधक

परिमाण जानब ।

सन्तति—सं० सन्तान ।

सन्तनत—वि० सुविधान, प्रबन्ध ।

सन्ताँ—अ० सत्तामे १ तत्काल

(यथा, देखैत सन्ताँ) २ ।

सन्तान—सं० अपत्य ।

सन्तानबे—सन्तनवति ।

सन्तानवेम—सन्तनवतितुम ।

सन्तोला—मिष्ट जम्बीरविशेष ।

सन्तोष—सं० यथालाभप्रसन्नता ।

सन्तोषी—सं० यथालाभ प्रसन्न ।

सन्देश—सनेस, उपहार ।

सन्देह—सं० संशय ।

सन्न—भयसँ स्तब्ध ।

सन्न दए—अ० तीव्रतापूर्वक ।

संन्यास—सं० चारिम आश्रम ।

संन्यासी—सं० यती ।

सन्दिआएब—क्रि० सन्दि+अ-

ब—अभ्यन्तर मे पैसब ।

सपटा—शणनिर्मित अतिस्थूल

पट ।

सपठब—क्रि० मिलब, मेल होएब ।

सपटैती—आनक बड़दक सङ्ग आन-

क बड़दक नित्य बहबामे मेल ।

सपत—शपथ ।

सपत खाएब—क्रि० शपथग्रहण ।

सपत देव—क्रि० शपथ कराएब ।

सपत-सपतान—परस्पर शपथ ।

सपता-विपता—पूज्यदेवताविशेष ।

सपथ—शपथ ।

सपधरू—अलि० सर्पदष्ट ।

सपन (ना)—स्वप्नदर्शन, निद्रामे मानसज्ञान ।

सपनाएब—ना० स्वप्नदर्शन ।

सपना देखब—क्रि० सपनाएब ।

सपनौती—स्वप्नमे लब्ध (सन्नादि) ।

सपनौर—नकुल ।

सपरतिभ—सप्रतिभ (निन्दाभे) ।

सपहरब—क्रि० सर्पविषयुक्त होएब

सपहरिआ—सर्पहर्ता जातिविशेष ।

सपहा—सर्पविषहत ।

सपाट्ट—फलविशेष ।
 सपिण्ड—सं० सप्तपुत्रान्तर्गत ।
 सपूत—हि० सपुत्र ।
 सपेत—वि० श्वेत ।
 सपेता—आम्रविशेष ।
 सप्तमी—सं० सप्ताम तिथि ।
 सप्ताह—सात दिनक समूह ।
 सफगोल—इसफगोल, अन्नविशेष ।
 सफर—वि० विदेशभ्रमण ।
 सफरिआ—सफरिआ १ ५५५
 उपकारक २ ।
 सफरी कटहर—रुठविशेष ।
 सफल—सं० सार्थक ।
 सफा—वि० साफ, स्वच्छ ।
 सफाइ—वि० नैर्मल्य १ फरिछोट २
 सफाचट—वि० लोमनाशक ।
 सब—सर्व, सकल ।
 सब जना—सभजना, परिवारक
 सर्वजन सम्बन्धी (निमन्त्रण) ।
 सबजी—वि० दूर्वाच्छादित भूमि ।
 सबतरि—अ० सर्वत्र ।
 सबदिना—प्रतिदिन भेनिहार ।
 सबरङ्ग } —अनेक रङ्गवाला ।
 सबरङ्गा }
 सबरब(बी)—भूषणविशेष ।
 सबो—सपाद (संख्या वा परि-

माण) ।

सबाइ—पादाधिक प्रत्यर्पणक व्यव-
 स्थापर गृहीत वा दत्त अन्नक
 ऋण ।
 सबार—वि० यानारुढ़, आरोही ।
 सबारिस—नीक समय, सुभिक्ष ।
 सबारी—यान ।
 सबिष—सर्वाङ्ग सर्पविषव्याप्त ।
 सबूत—वि० प्रमाण ।
 सँभरम—सम्भ्रम ।
 सबेर—सकाल ।
 सबैआ—पादाधिक ।
 सबैएँ—अ० चतुर्थीश बदने ।
 सभ—सब, सर्व, निखिल ।
 सभजना—सबजना ।
 सभागाछी—वैवाहिक सभाक
 गाछी ।
 सभैती—सभामे कर्तव्य ।
 सम—शम, न्यूनता १ सं० तुल्य २ ।
 समइआ—सामर्थिक ।
 समगरए—ठाठक समुचित उच्चता ।
 समङ्गर—उ० अधिक सभाङ्ग
 युक्त । स्त्री० समङ्गरि ।
 समचा—सामग्री ।
 समच्छ—सांमुख्य, सामक्ष्य ।
 समझोता—हि० मिलान, सन्धि ।
 समेटब—क्रि० प्रस्तुतक एकत्री-

समतूल

* मिथिलाभाषाकोषः * समेटब ३२७

करण ।

समतूल—तुलासँ समीकृत, बराबरि ।
 समथरि—समतलस्थली ।
 समदाउनि—कन्याक सासुर जए-
 बाक कालक उपदेशक गीत ।
 समदिआ—अलि० संवाद
 कहनिहार ।
 समधान—सावधान ।
 समधि—उ० कन्यापुत्रप्रभृतिक श्व-
 शुरादि । स्त्री० समधिनि ।
 समधिआउर—समधिक आलय ।
 समधिआरए—समधिक व्यवहार ।
 समधौत—पुं० समधिक अपत्य ।
 समय—सं० काल ।
 समयसतरा—समयपर अपन कार्य
 सम्पन्न कए लेनिहार ।
 समरथ—उ० युवा । स्त्री० समरथि ।
 समरथ-सकरथ—उ० समर्थ ओ
 क्रियादक्ष । स्त्री० समरथि-
 सकरथि ।
 समर्थ—उ० तरुण । स्त्री० समर्थि
 १ सं० दक्ष, शक्त ।
 समर्थाइ—तारुण्य ।
 समशाख—सं० एक वेदशाखाक ।
 समसब—क्रि० किञ्चित् आर्द्र होएब ।
 समसम—किञ्चित् आर्द्र ।
 समसरही—अल्प करवाला (खेत) ।

समसान—श्मशान ।

समाइत—वि० सङ्गत ।
 समाएब—क्रि० सम्+अब—अँटब ।
 समांग } —पुं० समीपी एक-
 समाङ्ग(ङ्ग) } परिवारक बन्धु ।
 समाचार—सं० वार्ता ।
 समाज—सं० समीपवासी जनसमूह ।
 समाठ—मुशल ।
 समाद—संवाद, मौखिक वार्ता ।
 समान—सं० तुल्य १ आनक वेष
 बनओने २ ।
 समाप्त—सं० सम्पूर्ण १ नष्ट २ ।
 समार—एक दिसेँ जोतलकेँ
 दोसर दिसेँ जोतब ।
 समारब—क्रि० समार+अब—
 समार करब ।
 समारोह—सं० सम्भारपूर्वक अनेक
 मील पैघ कार्यक आरम्भ ।
 समाहब—क्रि० समाह+अब—
 जेतिकेँ बड़दक परीक्षा करब ।
 समुच्चा—सम्पूर्ण, अखण्ड ।
 समुद्र—सं० पारावार ।
 समुद्रफेन—सं० समुद्रक शुष्क फेन ।
 समूचा—समुच्चा, समस्त ।
 समेटब—क्रि० प्रस्तुतकेँ एकत्र
 करब ।

समेटि-बटोरि—अ० समेटव प्रभु-
निकिया काए, सर्वसंकलनपूर्वक ।
समेना—सामिआना, पट्टण्विशेष ।
समै—दुग्धप्रधानक भक्ष्यविशेष ।
समैआ—समयभव ।
समैल—पालोक मफिका खुट्टी ।
समोधव—कि० सम्यक् बोधन,
मुक्ताए अनुकूल करब ।
सम्पत्ति—सं० धन ।
सम्पन्न—सं० सिद्ध १ समृद्ध २ ।
सम्पर्क—सं० सम्बन्ध ।
सम्पत्नी—यानविशेष ।
सम्प्रति—सं० अ० एखन, इदानीम्
१ आइ-काहि २ ।
सम्बन्ध—सं० संसर्ग १ यौन सम्ब-
न्ध, पितृत्वादि २ ।
सम्बन्धिक—अलि० यौनसम्बन्ध-
बाला ।
सम्भव—सं० शक्यता, आशा ।
सम्भ्रम—सं० हड़बड़ी, कार्यव्या-
कुलता ।
सम्मत—सं० अनुमत, स्वीकृत ।
सम्मति—सं० अनुमति ।
सम्मुख—सं० अभिमुख, प्रत्यक्ष ।
सम्हरव—कि० शक्तिसँ सम्पादित
होएब ।
सम्हार—कार्यक भारवहनपूर्वक सं-

म्पादन ।

सम्हारव—कि० सम्हार+अव—
शक्तिसँ सिद्ध करब ।
सय—सए, शत ।
सयम—सएम, शततम ।
संयत्त—सह, अनुपद्रवी, स्थिर ।
संयम—सं० पथ्य, दोषकारक
त्याग ।
संयमी—सं० संयमशील ।
संयोग—सं० मिलान १ दैवी
घटना २ ।
सर—शर ।
सरकट—सरकण्डा, तृणविशेष ।
सरकव—कि० जलादिक पीबामे
कण्ठस्खलनजन्य अन्यथावद्वति ।
सरकस—वि० शरीरादिक कौतुक-
जनक क्रिया ।
सरका—बड़दक गरदनिक सिराक
सङ्कोच ।
सरकार—वि० प्रधान, राजा ।
सरकारी—मालिकी, राजकीय ।
सरकी—वंशकृत आवरणविशेष ।
सर-कुटुम्ब—कुटुम्ब तथा अपे-
क्षित ।
सर-कुटुमैती—कुटुम्ब तथा अपे-
क्षितक व्यवहार ।
सरङ—स्वर्ग, आकाश ।

सरङ-पताली—एक ऊर्ध्वमुख ओ
दोसर अधोमुख सिंह, मालक दोष ।
सरङ—सरलवृक्ष ।
सरदर—वि० समग्र ।
सरदार—वि० मुख्य ।
सरदिआह—सरदीसँ युक्त ।
सरदी—शैत्यजन्य रोग ।
सरधा—श्रद्धा ।
सरन—शरण ।
सरनरिआ—सरनरसँ पक्षी बन्त-
ओनिहार व्याधविशेष ।
सरपत—तीक्ष्णपत्रक, खड़्गहीसन
तृणविशेष ।
सरफौका—शरपुङ्ख, ओषधिविशेष ।
सरबघौट—मालक दोषविशेष ।
सरबत—वि० प्रपाणक पेयमिष्टद्रव ।
सरबती—नेबोक प्रभेद ।
सरबन—पागक प्रभेद ।
सरबव—कि० अल्प छिद्रादिद्वारा
जलादिक मन्द-मन्द सवण ।
सरबस—सर्वस्व ।
सरबसोख—बड़दक जिह्वामे श्याम-
ताचिह्न, बड़दक दोषविशेष ।
सरबस्ता—आगत अनागत सभक
बिदाइबाला न्योत ।
सरवा—शराव, माटिक पात्रविशेष ।
सरवेटा—पुं० श्यालपुत्र ।

सरभोज—श्यालभोज्य, सार सभक
भोज ।
सरम—वि० लज्जा ।
सरस—सं० रसिक १ आधासँ
अधिक अंश २ रसयुक्त ३ ।
सरसरी—हि० अतिशीघ्रता ।
सरसी—धीपल बटुक आदि पकड़-
बाक लौहयन्त्र ।
सरस्वती—सं० वाग्देवता ।
सरह—देबाक सम्प्रदाय ।
सरहँच—सारस पक्षी ।
सरहँची(ची)—शाकविशेष ।
सरही—विना मेनक (सोहारी) १
सामान्य (दही) २ बीजभव
(आम) ३ ।
सरहोजि—स्त्री० श्यालपत्नी ।
सराड़ि—पक्षिविशेष ।
सराध—श्राद्ध ।
सराप—शाप ।
सरापव—ना० सराप+अव—शाप
देब ।
सरासरी—वि० अ० अतिशीघ्रता-
पूर्वक ।
सराहव—कि० सराहू+अव—
प्रशंसा करब ।
सरि—समतल, अनुच्चावच ।
सरिआएब—ना० सरि+अव—

सरि (समतल) करब १ सुस्थित
करब २ ।
सरिआती—कन्यागत, विवाहादिमे
कन्याक पक्षक लोक ।
सरिआम—समतल स्थान ।
सरिबन—शालिपर्णी ।
सरिसओ(ब)—सर्पप ।
सरी—लोहाक छर ।
सरीफा—फलविशेष ।
सरुआरी—तृणविशेष ।
सरुकी—छोट सारक, जलीय कन्द-
विशेष ।
सरैआ—एक प्रकारक छोट थारी ।
सरैला—साछ मारवाक बांसक पात्र-
विशेष ।
सरोकार—वि० सम्बन्ध, अधिकार ।
सरोकारी—वि० सम्बन्धिक ।
सरोज—वाद्यविशेष ।
सरोत—तृणसँ छारलक उपर देल
बाती ।
सरोता—शङ्कुला, सुपारी कटवाक
अख ।
सरौनी—मेनाक प्रभेद ।
सर्त—वि० व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।
सर्वजया—सं० पुण्यविशेष ।
सर्वनेजा—नैवेद्यार्थ एकत्रित सकल
खाद्यसामग्री ।

सर्वेकत्वे—अ० सभ मिलाए ।
सल—सारभाग, शक्ति ।
सलका मारब—भूमिक अभ्यन्तरसँ
सार्दना प्राप्ति ।
सलग—संलग्न ।
सलगा—दोहरि, शीतवारक दोह-
राओल वस्त्र ।
सलमसाही—लोटाक प्रभेद ।
सलसलाएब—क्रि० सलसल+अब—
अभ्यन्तरसँ सार्द होएब ।
सलसलाह—अभ्यन्तरसँ सार्द
भूमि ।
सलहाल—भूमिक पूर्ण सार्दता ।
सलाइ—हि० शलाका, दीआसलाइ ।
सलाम—वि० प्रणाम, दूरसँ नति-
विशेष ।
सलामी—वि० प्रणामी, प्रणाममे
देवाक द्रव्य ।
सलार(रि)—उच्चावच क्षेत्रादिमे
जलक समता ।
सलाह } —वि० अविरोध,
सलुक } मिलान ।
सलौनी—श्रावणी (पूर्णिमा) ।
सल्लाह—सलाह ।
ससरफानी—बन्धनविशेष ।
ससरब—क्रि० सरण संसर्पण, ।

ससारब—क्रि० ससार+अब—
पेटक वायु वा स्थानच्युत सिरा
आदिक बैसएवाक हेतु अङ्गपर
हाथक घर्षणपूर्वक सञ्चालन ।
ससि—शस्य ।
ससुर—पुं० श्वशुर ।
ससुराड़ि—श्वशुरकुलगृह ।
ससुहथ—सामुक हेतु भार ।
संस्कार—विद्याग्रहणशक्ति १ विवा-
हादिकर्म २ ।
सस्त—स्वल्पमूल्यवत्, समर्थ ।
सह—सङ्ग, अवरोध १ सतरजमे
बादशाइके विपक्ष पात्रक सामुल्य ।
सहज—साहाय्यद्रव्य १ अनैमित्तिक,
स्वभावसिद्ध २ ।
सहजोर—पूर्ण सम्पन्न (धान्यादि) ।
सहटब—क्रि० सुस्त होटब ।
सहटुल—सह, नीक प्रकृतिक, मि-
लनसार ।
सहड़ी—छागर आदिक सामुक भो-
रक हाड़ ।
सहथ—अन्नविशेष ।
सहन—वि० समभूमि १ सं०
मर्षण २ ।
सहनाइ—वाशविशेष १ मर्षण २ ।
सहब—क्रि० सहन, क्षमा करब ।
सहमदी—धान्यविशेष ।

सहमित्ठ—अधिक सङ्ग होएवाक
कारण मिलनसार ।
सहर—वि० पैद बजार ।
सहरगञ्जा—साधारण ।
सहरजमीन—वि० विवादभूमि ।
सहरफौका—शरपुङ्ख, क्षुपविशेष ।
सहरू—सहरक निवासी ।
सहलोल—बूड़ि, बकलेल ।
सह-सह करब—क्रि० पीलुसर्पा-
दिक सञ्चलन ।
सहसहाएब—गा० सह-सह करब ।
सहसा—सहस्र मत (आम्र दि) १
सं० अ० हठात् २ ।
सहसौल—सहस्रदल कपल ।
सहाज—सह्य ।
सहाजिक—स्वाभाविक ।
महाय—सं० सङ्गदेनिहार, सहायक ।
सहिआ—सखी ।
सहआएब—क्रि० सहिआर+अब—
सम्हारब ।
सही—वि० हस्ताक्षर १ गृहादिक
शोधन २ ।
सहीस—सईस, अश्वपालक ।
साँइ(ए)—पुं० स्वामी, पति ।
साओन—श्रावणमास ।
साकट(ठ)—शाकत ।
साँकर—सकीण (स्थल), छोट

(पात्रादि) ।
 सांख्य — शङ्खक औंठी ।
 सांख्यर — सर्पविशेष ।
 सांख्यु — शालवृक्ष ।
 साग — शाक, शाखापत्रसहित खाद्य
 भेन्दारी प्रभृति ।
 सागमान — वृक्षविशेष ।
 साग-मसाला — क्षुपविशेष ।
 सागह — गुहादिनिर्माणसामग्री ।
 सागरह — संग्रह, सङ्ग्रह ।
 सांगि — शक्ति, अस्त्रविशेष ।
 सांगी — केश कट्वाक तरे नापित-
 कं देल भूमि ।
 साङह — गुहादिनिर्माणसामग्री ।
 साङरह — संग्रह, सङ्ग्रह ।
 साङि — शक्ति, अस्त्रविशेष ।
 साङी — सांगी ।
 साँच — चित्रविशेष वा आकृति-
 विशेषसंयुक्त से आभार जाहि-
 पर दबने वा गलल धातु आदि
 छारने निमित्त वस्तुमे आधार
 स्वरूप चित्र वा आकृति बनि
 जाइछ ।
 साँची — पानक प्रभेद १ पहिरल
 धोनीक आगामे खोँ सल अंश २ ।
 साज — भाँड़ रखबाक माटिक पैघ
 आधारपात्र ।

साजब — क्रि० सज्ज+अब—सजित
 करब ।
 साजी — फुलतोड़ा, वंशपात्रविशेष ।
 साजीखार — रजिका सं० ।
 साँझ — सन्ध्या ।
 साँझ खन — अ० सन्ध्याकालमे ।
 साँझ पड़ब — क्रि० सन्ध्याक
 सम्प्राप्ति ।
 साभिल — उ० चारिम तृतीय (पु-
 त्रादि) । स्त्री० साभिलि ।
 साभी — अविभक्त, अनेकस्वामिक ।
 साँझुक — सन्ध्याकालिक ।
 साट — मेल, सङ्ग ।
 साटब — क्रि० लस्सा आदिसँ कागत
 आदि रसक्त करब ।
 साटि — गुप्त सङ्ग ।
 सा(साँ)ठब — क्रि० स(सँ)ठ्ठ+अब—
 पात्रादिमे वस्तुक स्थापन ।
 साठा — साठ हाथक पाग १ साठि-
 वर्षक (मनुष्य) २ ।
 साठि — षष्ठसंख्यक ।
 साठिम — षष्ठिनम ।
 साड़ब — सङ्ग+अब—विकृत वा
 निःसार करब ।
 साड़हू — साड़, पत्नीक बहिनिक
 पति ।
 साड़ी — शाटी, स्त्रीक परिधानवस्त्र ।

साँड़ — श्राद्धमे उत्सृष्ट वृषभ ।
 साँड़नी — स्त्री० ऊँटक स्त्री ।
 साँड़ — पत्नीक बहिनिक पति ।
 साँड़े — सार्ध ।
 सात — सप्त ।
 सातम — सप्तम ।
 सातु — सक्तु ।
 सातोकरमा — धान्यविशेष ।
 साधव — क्रि० साधु+अब—देवा-
 एव, शासन करब ।
 साधु — सं० वैरागी, योगी, ब्राह्मजी ।
 साधुबान्ह — बन्धन-विशेष ।
 सान — शाण १ सोडव २ ।
 सानदार — सीटल, सुसजित,
 उत्तम ।
 सानदारी — सिटनाइ, केवल उत्तम
 वस्तुमात्रसँ व्यवहार, उत्तमता ।
 साना — श्राणा, चोखा ।
 सानी — पानिमे सानल गुड़ाप्रभृति
 मालक खाद्य ।
 साप — उ० सर्प । स्त्री० सापनि ।
 साफ — वि० स्वच्छ, स्पष्ट ।
 साफल — सफल ।
 साबण(य) — बलवज, जौर बँटबाक
 तृणविशेष ।
 साबधान — सं० सतर्क, दतचित्त ।
 साबा — सपाद (संख्या वा परि-

माण) ।
 साबिक — वि० पूर्वकालिक ।
 साबुजदाना — साबूदाना, अन्न वा
 फलक प्रभेद ।
 साबुन — तैलादिमे पिण्डाकार बना-
 ओल साफ करबाक क्षारवस्तु ।
 साबूदाना — साबुजदाना ।
 साम — श्यामाक, अन्नविशेष ।
 सामग्री — सं० सकल साधक वस्तुक
 समुदाय ।
 सामरथ — सामर्थ्य ।
 सामरि नोन — लवणविशेष ।
 सामा — शास्त्रोदित पक्षिणीविशेष
 जनिक पूजा कार्तिकपूर्णिमामे
 होइछ ।
 सामान्योत्सर्ग — एकादशह श्राद्ध-
 दिनक काम्यदान ।
 सामिल } — वि० अविभक्त,
 सामिलात } साभी ।
 सामी — तृणविशेष १ मूसर आदिक
 मुहमे देबाक लौहवलय २ ।
 साम्याना — वि० पटगृहविशेष ।
 साम्हर — मृगविशेष ।
 साम्हरि — लवणक प्रभेद ।
 साँय — साँए, स्वामी, पति ।
 सार — पु० श्याल, स्त्रीभ्राता ।

सारङ्गी—वाद्यविशेष ।
 सारदा—फलविशेष ।
 सारभाजा—मिष्टान्नविशेष ।
 सारा—मृत्तिकाबद्ध मृतकदाहस्थान् ।
 सारि—पत्नीक छोटी बहिन ।
 सारिल—काष्ठक सारभाग ।
 सारुक—जलीय खाद्य कन्दविशेष ।
 साल—माटिम गाड़ल जीर्ण स्तम्भा-
 दिक भाग १ वि० वर्ष २ ।
 सास—स्वास ।
 सासु—स्त्री० श्वश्रू ।
 सासुर—श्वशुरालय ।
 साहखर्ची—अधिक व्यय कए-
 निहार ।
 साहब—वि० श्रेष्ठ ।
 साहबुलबुल—बुलबुलक प्रभेद ।
 साहरोँच—सारस पक्षी ।
 साहस—सं० सहसा (हठात्) प्रवृत्ति,
 अति कठिन यत्न ।
 साहसी—साहसस्वभावक ।
 साहित्य—साहाय्य, सहायता ।
 साहिबा—वि० स्त्री० श्रेष्ठा ।
 साहि लागब—क्रि० एक क्रियामे
 बारंबार प्रवृत्ति ।
 साही—शलकी, कण्टकमय जन्तु-
 विशेष ।
 साहु—बनिभाक उपाधि ।

साहेब—वि० श्रेष्ठ ।
 साहोड़—शाखोटवृक्ष ।
 सिअनि—सीअब, स्यूत ताग ।
 सिअ(आ)—सीता ।
 सिआइ—सूचीक्रिया १ तकर
 वेतन २ ।
 सिआर—शृगाल, गीदड़ ।
 सिउव—क्रि० सिव+अब—सिआइ,
 सूचीकर्म ।
 सिकठि—क्षुपविशेष ।
 सिकड़ी—भूषणविशेष १ तेनाक
 सीरक विचलन रोग २ ।
 सिकड़ी लागब—क्रि० सिकड़ी रोग
 सम्प्राप्त होएब ।
 सिकमी—वि० से खेन जाहिमे
 आधा मालिकक ओ आधा
 कर्षकक अंश हो ।
 सिकस्त—वि० संकीर्ण (स्थल) १
 वि० दरिद्र २ कृपण ३ ।
 सिकस्ती—संकीर्णता १ दारिद्र्य २
 कर्मण्य ३ ।
 सिकहर—अधिक मीकवाला घर ।
 सिकार—वि० मृगया ।
 सिकारी—वि० मृगयापटु ।
 सिक्का—राजमुद्रा ।
 सिखव—क्रि० शिक्षण ।
 सिखाबुद्धी—गुप्त शिक्षित

सन्धाना ।
 सिंगरबात—शृङ्गाकार बाती, टाट
 ओ टाटक उपर भागक तिर्यक
 बाती ।
 सिंगरहार—शृङ्गारहार, पुष्प-
 विशेष ।
 सिंगार—शृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
 सिंगारी—शोभार्थरचनाक साधन ।
 सिंगिआ—विषविशेष ।
 सिंघट्टा—उ० भग्नशृङ्गक ।
 स्त्री० सिंघट्टी ।
 सिंघवास—मालक सिंहमे बान्धल
 डोरी ।
 सिंघौटी—मालक सिंहक आकार ।
 सिङरवात—सिंगरबात ।
 सिङरहार—शृङ्गारहार ।
 सिङार—शृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
 सिङारी—शोभार्थ रचनाक साधन ।
 सिङिआ—विषविशेष ।
 सिङ्गा—वाद्यविशेष ।
 सिङ्गाट—मत्स्यविशेष ।
 सिङ्गार—शृङ्गार ।
 सिङ्गारहार—शृङ्गारहारपुष्प ।
 पिङ्गी—शृङ्गी, मत्स्यविशेष ।
 सिच्चा—छिचा, सेक ।
 सिङ्ही—सीढ़ी, सोपान ।
 सिङ्दी—सीढ़ी, सोपान ।

सितलचीनी—पानक एक मसाला ।
 सितलपाटी—पटिआक प्रभेद ।
 सिताएब—ना० सोत+अब—सीत-
 सँ युक्त होएब ।
 सितार—तन्त्री, वाद्यविशेष ।
 सितारा—वाद्यविशेष ।
 सिताहल—सीतसँ भीजल ।
 सितुआ—शुक्ति ।
 सिद्ध—सं० सीभल, पक्व १ सम्पन्न २ ।
 सिद्धान्त—पञ्जीकारक द्वारा विबोहक
 निश्चय १ सं० निर्णय, निष्कर्ष २ ।
 सिधा—दैनिक भोजनार्थ परिमित
 अपक्व अन्न ।
 सिधाइ—सिद्धिरस्तुपूर्वक स्वरवर्ण-
 माला ।
 सिनुआरि—सिन्दुवार वृक्ष ।
 सिनुरिआ—पकलापर रक्त वर्ण
 (आम) ।
 सिनूर—सिन्दूर ।
 सिन्दूर—सं० कपारक अलङ्करण-
 साधक रङ्ग ।
 सिन्धुक—पैघ काष्ठमञ्जुषा ।
 सिन्धुकचा—छोट सिन्धुक ।
 सिन्ह—सन्धि, चोरकृत घर पैस-
 बाक सोन्हि ।
 सिपहिगिरी—वि० सिपाहीक
 क्रिया ।

सिसवनी—वि० पदार्थ ।
 सिसवनी—दूध, दूध, दूध ।
 सिसवनी—शिवरात्रि ।
 सिसवनी—कोष्ठक प्रभेद ।
 सिसवनी—हिन्दु, धातु विशेष ।
 सिसवनी—किञ्चित् आद्र ।
 सिसवनी—अल्प आद्र ।
 सिसवनी—सौन्दर्य ।
 सिसवनी—सिर ।
 सिसवनी—सीर-सहित उपाङ्ग ।
 सिसवनी—सुराह ।
 सिसवनी—बरकाओल चीनी वा
 सिसवनी ।
 सिसवनी—लवणमुख प्रवृत्त ।
 सिसवनी—कि० सृष्टि करब, उत्पा-
 न ।
 सिसवनी—गरदनिक तरका स्थान ।
 सिसवनी—अङ्गाक प्रभेद ।
 सिसवनी—शिरःसंचालनमे व्य-
 याजक सिराक रोग ।
 सिसवनी—गेहवा, उपधान ।
 सिसवनी—सुखलार्थ शिरःस्थापित
 चर्मलपट ।
 सिसवनी—धमनी नस हि० ।
 सिसवनी—कि० सिर-अव-
 रत-भोगात् वस्त्रादिक रोग-आण्ड ।

सिराह—हरिचन्द्रास जपन
 सिराह—नलाकार खाँडा ।
 सिराह—शोणितसावजनक सिराह
 युक्त (दांत) ।
 सिरिस्ता—वि० सुहस्र ।
 सिरिस्ता—शरीष, पुष्पवृक्ष विशेष ।
 सिरिस्ता—जन्मकालमे तेनाक सा-
 थक प्रथम उद्गमन ।
 सिरिस्ता—निरक्षर, सुव ।
 सिरिस्ता—वि० रजतसदृश धातु
 विशेष ।
 सिरिलि—वि० क्रम ।
 सिरिलि—वि० क्रमवद्ध ।
 सिरिलि—हाथीक प्रभेद ।
 सिरिलि—शिला, प्रस्तर ।
 सिरिलि—शिलाजतु ।
 सिरिलि—करोँ छ शुक्लवर्णक (गाए-
 बड़द) ।
 सिरिलि—मत्स्यविशेष ।
 सिरिलि—पिसवाक आधार शिला
 पट्ट ।
 सिरिलि—जलचर पक्षिविशेष ।
 सिरिलि—ओसाओल धानक प्रयोग ।
 सिरिलि—क्षुभविशेष ।
 सिरिलि—वि० निगूढीक साधक
 वेनाक प्रतिबन्ध ।

सिसवनी—सीसोक वन ।
 सिसवाडि—सीसोक वन ।
 सिसिआएब—कि० सिसि+अब—
 सीत्कार ।
 सिसोहव—कि० अङ्गुलाग्र वा दन्ता-
 दिसँ रसादिक आकर्षण ।
 सिहकव—कि० अङ्गुल किञ्चित् शैत्य-
 युक्त होएब १ वातक अतिम-
 न्द गमन २ ।
 सिहन्ता—इच्छा, मनोरथ ।
 सिहरव—कि० देहक किञ्चित् जाड्य
 युक्त होएब ।
 सिंह—उ० मालक शृङ्ग १ सं० मृगेन्द्र
 २ । स्त्री० सिंहिनि ।
 सिहराशि—विजयी ।
 सिहाचोर—सन्निच्छेदक घरपैसा
 चोर ।
 सिहासन—सं० राजाक उच्चासन ।
 सिहुलिआ—नयमे रक्तवर्णक (लताम)
 सिहुली—देहपर उजर-उजर विन्दु,
 चर्मरोगविशेष ।
 सीअनि—सीअब, स्यूत ताग ।
 सीअब—कि० सिब+अब—सूची-
 क्रिया ।
 सीउव—कि० सिब+अब—सूची-
 क्रिया ।
 सीक—शिक्य ।

सीकी—इषीका, तृणविशेष ।
 सीखव—कि० सिख+अब—शिक्षण ।
 सीड—मालक शृङ्ग ।
 सीचव—कि० सिच्+अब—सेचन ।
 सीचा—छिन्ना, सेचन ।
 सीभव—कि० सिभ+अब—भात
 आदि पक्व होएब, सर्वथा
 विक्रिस्ति ।
 सीटव—कि० सिट+अब—सौन्द-
 र्यार्थ यथावद् विन्यास ।
 सीढी—सोपान ।
 सीतलगढ़—छाता मोरम्मति कए-
 निहार ।
 सीताभोग—भेँड़वा मालदह राजा-
 भविशेष ।
 सीना—वि० वक्षःस्थल ।
 सीप—हि० शुक्ति ।
 सीम—लताशिम्बी, तरकारीक फल-
 विशेष ।
 सीमर—शात्मली वृक्ष ।
 सीमा—सं० क्षेत्रादिक अवधिचिह्न ।
 सीर—मस्तक १ गोसाउदिक उच्च
 स्थान २ गाछक मूल ३ भोजना-
 दिक प्रधान स्थान ४ नदीक से
 स्थान जेमहरसँ जल आबए ५ ।
 सीरक—दोहरि, तूबाला मोट
 ओढ़ना ।

सीरपथमी—वसन्तपथमी ।
 सीस—कणिश, धान्यादिक गुच्छ ।
 सीसा—सीसक धातु १ काच २ ।
 सीसी—सीसाक छोट पात्र ।
 सीसो—शिशपावृक्ष ।
 सुअन्न—सदन्न ।
 सुआसिनि—स्त्री० यामि, सुवा-
 (सिनी), पितृगृहस्थ विवाहिता कन्या ।
 सुइ } —सूची, सीबाक साधन ।
 सुइआ }
 सुइकतार—क्रीडाविशेष ।
 सुकठी—सुखाएकें चोकउल ।
 सुकरब—क्रि० नाकसँ कफक निःसा-
 रण ।
 सुकरम—नीक कर्म ।
 सुकराती(ति)—सुखरात्रि, कार्तिकक
 अमावास्या ।
 सुकुमार—सं० कोमलाङ्ग ।
 सुकुमालकी—अक्लेशे सम्पादन ।
 सुकुर—सुकुर, अनायाससाध्य ।
 सुक्खी—विना घृते पकाओल (सो-
 हारी) ।
 सुख—सं० आनन्द ।
 सुखठी—सुकठी ।
 सुखराति—सुखरात्रि ।
 सुखाएब—क्रि० सुख+अब—शुष्क
 होएब ।

सुखाओन—सुखएलासँ तौलमे
 कमी ।
 सुखित—० सुखसँ युक्त ।
 सुखी—सं० सुखसँ युक्त ।
 सुखौत—सुखाओल शाकादि ।
 सुखौती—आतपशुष्क ।
 सुगन्धबाला—बालक, ओषधि-
 विशेष ।
 सुगन्धि—सं० सौरभयुत १
 सौरभ २ ।
 सुगन्धि-खेसारी—खेसारीक प्रभेद ।
 सुगन्धित—सुरभीकृत (तैलादि) ।
 सुगवा—सापक ओ बेंगक प्रभेद ।
 सुगरकोन(ना, नी)—नैर्कर्त
 कोण ।
 सुगरजङ्ग—सुगरक जाँषक बराबर
 (धान्यादि) ।
 सुँघब—क्रि० आघ्राण ।
 सुँघनी—सुँघब ।
 सुङ्ग—शक, सूड ।
 सुच्चा—शुद्ध, अमिश्रित (तैलादि) ।
 सुजनो—दुइ दिससँ लग-लग स्यूत
 (तुरदार अङ्गाप्रभृति) ।
 सुजाक(ख)—वि० उपदंश रोग ।
 सुभक्त—दृष्टिगोचर होएब ।
 सुम्भाएब—क्रि० सुम्भब+अब—
 लेल वस्तुक प्रत्यर्पण ।

सुटकब—क्रि० सङ्क चिताङ्क
 होएब ।
 सुटपु(सु)ट करब—क्रि० लोभ-
 भयादिवश इतस्ततः करब ।
 सुटिआएब—क्रि० सुटि+अब—
 सुट-सुट करब ।
 सुठाम—नीक स्थान ।
 सुठिआएब—ना० सूटिसन शुष्क
 होएब ।
 सुठौड़ा—प्रसूताक शुष्ठीप्रधानक
 औषध ।
 सुडरब—क्रि० तोनी (अङ्गुष्ठाग्र)सँ
 आकर्षण ।
 सुडरा—लगातार ।
 सुडाह—सर्वथा दग्ध ।
 सुँडाह—सुँडासँ युक्त ।
 सुँदिआएब—क्रि० सुँदि+अब—
 सिद्ध युन्मुख होएब ।
 सुतना—अधिक शयनशील ।
 सुतब—क्रि० सूतब, शयन ।
 सुतरब—क्रि० सफलीभवन ।
 सुतरी—शणरज्जु ।
 सुतार—आयाससाफल्य ।
 सुतारब—क्रि० सुतार+अब—स-
 फल करब ।
 सुतारी—जूता सीबाक टाकु ।
 सुतिआएब—ना० कोड़ोकें सूतिसँ

युक्त करब १ सूतसन पातर
 होएब ।
 सुतुरसुर्ग—पक्षिविशेष ।
 सुथनी—खाद्यकन्दविशेष ।
 सुदि—शुष्कपक्ष ।
 सुदिन—सं० शुभाशायक दिन ।
 सुदिनि—स्त्री० क्रीतदासी ।
 सुधरब—क्रि० दोषत्यागपूर्वक नीक
 दिस प्रवृत्ति होएब ।
 सुधारब—क्रि० सुधार+अब—दो-
 षत्यागपूर्वक नीक दिस प्रवृत्ति
 कराएब ।
 सुधि—स्मरण ।
 सुधि-बुधि—स्मरण ओ विवेक ।
 सुनगब—क्रि० आगिक मन्द-मन्द
 पजरब ।
 सुनभाएब—क्रि० सुनम्भब+अब—
 प्रत्यर्पण ।
 सुनता—श्रु ।
 सुनब—क्रि० श्रवण ।
 सुनबाहि—श्रुत वचनपर आस्था ।
 सुनहट(टि, ट्री)—जनशून्यता ।
 सुनहेर—तृणविशेष ।
 सुन्दर—सं० रमणीय ।
 सुन्न—शय ।
 सुन्ना—अक्षरक समीप बिन्दु ।
 सुपती—बासक शूर्पाकार बल्कल ।

सुपहा—सूपसं पाथल (चिपड़ी) ।
 सुपारी—पूगीपल, गूआ ।
 सुफल—नीक फल १ गयादिक क-
 र्मान्तमे पण्डाक आशीर्वाद २ ।
 सुफाँटि—पचेसी खेड़िमे निर्मय-
 स्थानमे प्राप्त (गोटी) ।
 सुबरना—द्विसुख पानपात्रविशेष ।
 सुबरनी—छोट सुबरना ।
 सुबानि—ठाठ आदिक अदुष्ट बन्धन
 वा वयन ।
 सुविधा—सं० सौकर्य ।
 सुबुक—कोमल ।
 सुभा—वि० सन्देश ।
 सभीता—सुविधा, सौकर्य ।
 सुमरन—स्मरण ।
 समिरता—स्मरण ।
 सुर—स्वर ।
 सुरकव—क्रि० नासादिवायुद्वारा
 द्रववस्तु अन्तःप्रवेशन ।
 सुरखी—पक्षेष्टकाचूर्ण ।
 सुरङ्ग(ज्)—तरहरा ।
 सुरङ्गव—क्रि० अङ्ग छतर्जनीक अङ्ग-
 सँ आकर्षण ।
 सुरतरङ्ग—वाद्यविशेष ।
 सुरता—स्मरण ।
 सुरति—समाचार, वृत्तान्त ।
 सुरफुर—चरफर, सचद, कार्यदक्ष ।

सुरफुराएव—क्रि० सुरफुर+अव—
 लोभवश अनुचितरूपेँ प्राप्त्यर्थ
 उःमुख होएब ।
 सुरमा—सौवीराजन ।
 सुरसा—जिङ्गीर लगएबाक सच्छिद्र
 लौहशङ्कु ।
 सुरसुर—द्रव वस्तु खएबाक मुख-
 ध्वनि ।
 सुरसुरी—छिका ओ उकासीक उत्पा-
 दक तीव्र गन्धविशेष ।
 सुराक—वि० परकीय वस्तुक स्थि-
 तिस्थानादिक ककरहु द्वारा गुप्त
 रूपेँ ज्ञान ।
 सुराह—एकस्वरक, जाहि विषयमे
 लगलहुँ ताहीमे अति तत्पर ।
 सुराही वि० माटिक जलपात्र-
 विशेष ।
 सुरकव—क्रि० सुरकव ।
 सुरङ्ग—सोभ ऊर्ध्वमुख (वृक्षादि) ।
 सुरेव—मुन्दर आकारक ।
 सुरक्षण—सं० शुभ लक्षण ।
 सुरच्छन—सुरक्षण ।
 सुरफा—तीक्ष्णाम्र वंशशङ्कु ।
 सुरबाहि—अमांसए, शूलपूर्वक वा-
 रंवार मलयाग ।
 सुसिद्ध—सं० नीकजेकाँ, सीमल
 (भात आदि) ।

सुसुआएव—क्रि० सुसु+अव—सू-
 शब्द करव, मुहुःसूकाण ।
 सुसुक—सरल, अकठिन ।
 सुसुम—ईषदुष्ण ।
 सुस्त—सुस्थ, धनपूर्णतया सुखित १
 स्वस्थ २ मन्द ३ ।
 सुस्ताएव—क्रि० सुस्त+अव—श्र-
 मापनोदनार्थ क्रियाविराम ।
 सुस्तेँ—अ० शनैःशनैः ।
 सुहबा—स्त्री० सधवा ।
 सुहिआ—संकुचितमुख ओ चओड़ा ।
 सूआ—पैव सुआ जाहिसँ बोरा
 आदि सिअल जाइछ ।
 सूआ गरए—ठाठक उचितसँ अधिक
 उचना, अनिपलवता ।
 सूगर—शुकर ।
 सूगा—उ० शुक्र । स्त्री० सूगी ।
 सूगाठोर—चासकात लाल सूगापङ्खी
 (साड़ी) ।
 सूगापङ्खी—कानमे आन रङ्गक
 (साड़ी) ।
 सूघ—शुक्र ।
 सूघव—क्रि० सूघ+अव—आप्राण ।
 सूड—शुक्र ।
 सूभब—क्रि० सुभ+अव—दृष्टिगो-
 चर होएब ।
 सूक्ति—विचार शक्ति ।

सूक्ति पड़व—क्रि० विचारस्थ होएब ।
 सूँठि—शुण्ठी ।
 सूँडि—शौण्डिक, जातिविशेष ।
 सूँढ—शुण्डा ।
 सूँडि—एकक्रियामे साग्रह पुनः पुनः
 प्रवृत्ति ।
 सूत—सूत्र, ताग, तन्तु ।
 सूत काटव—क्रि० तन्तुनिर्माण ।
 सूति—स्वस्तिक, ग्रीवाक भूषण-
 विशेष ।
 सूती—कार्पाससूत्रनिर्मित (वस्त्र) ।
 सूदि—कृष्णवृद्धि १ शुक्लपक्ष २ ।
 सूधि—ज्ञान, संज्ञा, होस ।
 सून—शून्य ।
 सूनव—क्रि० सुन+अव—श्रवण ।
 सूनमसान—श्मशानसदृश जनशून्य
 (स्थान) ।
 सूप—शुर्प ।
 सूर—शूर, वीर १ स्वर, लय २ ।
 सूरी—दण्डशूल, मृदुदण्डविशेष ।
 सूर्य—सं० दिनकर ।
 सूर्यमुखी—पुष्पविशेष ।
 सूर्यास्त—सूर्यक अस्तगमन ।
 सूर्योदय—सं० दिनकरक उदय ।
 सूहा—मत्स्यविशेष ।
 सूहा—छोट सूहा ।
 सृष्टि—सं० निर्माण ।

से—गः, सा, तत् सं० ।
 सेआख—नेमटेम, नियम-निष्ठा
 (निन्दा मे) ।
 सेआखी—सेआखबाला ।
 सेआह—हि० स्याह, कारी ।
 सेउती—शतपत्री, गुलाबक प्रभेद ।
 सेओ—स्थो, फलविशेष ।
 सेन्नी—वि० जात्यभिमान ।
 सेज—शय्या ।
 सेजपाट—पट्टिआ गेडुआ प्रभृति
 सर्वाङ्गपूर्ण शय्या ।
 सेजबन्द—शय्याबन्दबाक डोरी ।
 सेठि—उ० धनाढ्य शौण्डिक, सैँडिक
 उपाधि । स्त्री० सेठिनि ।
 सेडर—क्रिण, वर्षणजन्य दृढ़ मांस ।
 सेँतालिस—सप्तचत्वारिंशत् ।
 सेँतालिसम—सप्तचत्वारिंशत्तम ।
 सेद—सेदब ।
 सेदब—क्रि० अग्निक समीप राखि
 तप्त करब ।
 सेव—टेढ़ कएल (कोदारि) ।
 सेवब—क्रि० सेवन ।
 सेवा—सं० सेवन, दास्य, परिचर्या ।
 सेमार—शैवाल ।
 सेर—सेटक, परिमाणविशेष ।
 सेरपहुँ—अ० सरय, सरिपहुँ ।
 सेरही—एक सेर परिमाणक (तामा

प्रभृति) ।

सेराएब—क्रि० सेर+अब—उष्णता-
 सँ हीन होएब ।
 सेरी—प्रति मनमे आदेय एक सेर ।
 सेहन्ता—सिहन्ता, मनोरथ ।
 सेहवाना—धान्यविशेष ।
 सेहला—पागपर पहिरबाक माला ।
 सेहा—सेआहा, स्मारक लेख ।
 सै—सह, स्वरस, आन्तरिक अभिप्राय ।
 सैँतब—क्रि० ओरिआएकँ राखब ।
 सैन—शमीवृक्ष १ व्रणविशेष २ ।
 सैन्धव—सं० लवणविशेष ।
 सैला—सएला, व्याघ्रविशेष ।
 सो—सोह, पृथ्वीक अभ्यन्तरसँ
 जलागम ।
 सोअदगर—अधिक स्वादु ।
 सोआ—शाकविशेष ।
 सोआइत—आल्पमूल्यलभ्य, सस्त
 १ अ० अकारण नहि २ ।
 सोआद—स्वाद, स्वादुत्व, रस ।
 सोएम—दोएमसँ अपकृष्ट, तृतीय
 कक्षाक (दही प्रभृति) ।
 सोख—शुष्कता १ ढीठ २ ।
 सोग—शोक ।
 सोँगर—कान्हबाला वंशखण्ड ।
 सोडर

सोच—शोक ।
 सोचब—क्रि० शोक करब १ विचार
 करब २ ।
 सोचरि नोन—लवणविशेष ।
 सोभ—सरल ।
 सोभका—सरलप्रभेदक ।
 सोभबारा—सरल प्रकारक ।
 सोभराएब—क्रि० सोभर+अब—
 जटिलतावा प्रस्थिसँ हीन होएब,
 लउपटीक त्याग ।
 सोभौ—अ० सम्मुख ।
 सोभौ—सोभौ—अ० परस्पर सा-
 म्युल्यमे ।
 सोट—अति स्थूल विना मकोआक
 यष्टि ।
 सोटब—० चिक्कणताजनक
 घर्षण ।
 सोटा—स्थूल छोट यष्टि ।
 सोटा चन्द—अतिमूख ।
 सोड़ह—षोडश सोलह ।
 सोड़हम—सोलह संख्याक पूरक ।
 सोड़हा—सोलह सोड़हि ।
 सोड़हि—षोडशसंख्यापरिमित
 (बोभ इत्यादि) ।
 सोतपन—सह, सौम्य (माल) ।
 सोति—उ० श्रोत्रिय, ब्राह्मणविशेष ।
 स्त्री० सोतिआइनि ।

सोतिआइ—श्रोत्रियक व्यवहार ।
 सोतिआएब—ना० सोति+अब—
 श्रोत्रियत्वप्रदर्शन ।
 सोतिपुरा—श्रोत्रियगणक वास-
 स्थान ।
 सोधब—क्रि० संशोधन ।
 सोन—स्वर्ण ।
 सोनपत—स्थोनाक वृक्ष ।
 सोनही—कन्दविशेष ।
 सोनहुल—पुष्पविशेष ।
 सोनहुला—रङ्गक प्रभेद ।
 सोनाडुब्बी—जलक्रीड़ाविशेष ।
 सोनामाखी—स्वर्णमाक्षिक ।
 सोनामूँग(मूङ्ग)—मुद्रविशेष ।
 सोनार—उ० स्वर्णकार जाति-
 विशेष । स्त्री० सोनारनी ।
 सोनारी—सोनारक कर्म १ ओकर
 वेतन २ ।
 सोनित—शोणित, रुधिर ।
 सोनी—तृणविशेष ।
 सोन्ह—सुगन्धविशेष १ युक्त १
 अर्द्धाचोलवद्वादि मसाला २ ।
 सोन्हाइ—गन्धविशेष ।
 सोन्हान—मालक औषध ।
 सोन्हि—भूविवर ।
 सो(सोँ)पब—क्रि० भार देब १
 समर्पण करब २ रवित्रतादिक

निस्तार ३।

सोपाएब—क्रि० सोप्+अब—भाँ-
टाप्रभृतिक पाकवैगुण्यप्रयुक्त
कठोरता।

सौ फ—शतपुष्पा।

सोबर्ना—जलपानपात्रविशेष।

सोबर्नी—छोट सोबर्ना।

सोम—वि० कृपण १ सं० चन्द्र-
दिवस २।सोमबारी—सोमवती अमावास्याक
व्रत।

सोर—आह्वान।

सरठ(ठा)—छन्दविशेष।

सोर पारब—क्रि० आह्वान।

सोर-पोर—अ० समस्त सीर
सहित (उखड़ब)।

सोर-सरबा—आह्वानादि।

सोरा—सौवर्चल, लवणविशेष।

सोरि—प्रसवगृह।

सोलकन्ह—सोढ़स्कन्ध, शूद्र।

सोलह—षोडश १ वि० सन्धि,
मैत्री २।

सोलहनामा—वि० सन्धिपत्र।

सोलहम—षोडशसंख्याक पूरक।

सोल्ह—शोधित, मौजर कएल
(कृणादि)।

सौ स—नक।

सोसनी—रङ्गविशेष।

सौ सिआएब—ना० सौ सि+अब—
सौ सौ शब्द करब।सोह—पृथ्वीक अभ्यन्तर देगे जलक
आगमन।सोहगौली—काठक सिन्दूरपात्र-
विशेष।

सोहदा—वि० दुराचारी, वृद्धि।

सोहन—शोभमान।

सोहनि—धान आदि कमाएब।

सोहब—क्रि० फलादिकेँ खचास
मुक्त करब।

सोहर—जन्मसम्बन्धी गीतविशेष।

सोहरब—क्रि० बहुत कीटादिक
समन्तात् सम्प्राप्ति।सोहाएब—क्रि० सोह+अब—
नीक लागब।

सोहाओन—शोभमान, सुन्दर।

सोहाग—सौभाग्य।

सोहागा—टङ्कण।

सोहागिनि—स्त्री० सौभाग्यवती,
सधवा।सोहागी—चारु कान अन्य रङ्गमे
रंगल (साड़ी) १ सौभाग्या-
शीवादिमे देय २।

सोहागीबङ्का—भूषणविशेष।

सोहारी—शङ्कुली।

सोह्रांस—शपुस, खीरा।

सौख—सौख्य।

सौजन—सौजन्य, परस्पर भात
खएबाक व्यवहार।सौजनिआ—परस्पर भात खए-
निहार।

सौतिनि—स्त्री० सपत्नी।

सौतिनिआ डाह—सपत्नीक अ-
न्योन्य असूया।

सौथि—सीमन्तप्रदेश।

सौर—दू ओढ़नाक समग्र संयोजन।

सौरबचबा—सौरा माछक बच्चा।

सौरा—मत्स्यविशेष।

सौराठी—छोट सौरा।

सौस—समग्र, अखण्ड।

सुम्बुल—गुलाबक प्रभेद।

स्थिति—सं० रहब १ परिस्थिति,
धिति २ विशेष धन ३।

थान—सं० जगह।

याख—सेआख।

याखी—सेआखवाला।

याह—वि० कारी।

यो—सेओ, फलविशेष।

यो ती—शतपत्र, गुलाबक प्रभेद।

वदेश—सं० अपन देश।

वदेशी—स्वदेशभव।

वभाव—सं० अपन संस्कार।

स्वरस—अभिप्राय।

स्वरूप—सं० आकार।

स्वाद—सोआद, रस।

स्वादब—क्रि० स्वाद+अब—स्वाद
बुझब, चीखब।

स्वादिष्ट—सं० अति स्वादु।

स्वामी—सं० पति।

ह

हँ—अ० स्वीकार।

ह—अ० खेद।

हइ—अ० वारण।

हउआ—बाल-बिभीषिका।

हए—अ० स्त्रीकर्तृक अनतिनीच
सम्बोधन १ पुरुषकर्तृक अनति-
नीच स्त्रीसम्बोधन २।हओ—अ० पुरुषकर्तृक अनतिनीच-
पुरुषसम्बोधन

हक—वि० अंश, अधिकार।

हकन्न कानब—क्रि० जोरसँ कानब।

हकबाहिलागब—क्रि० एके बाक्य
बजबा मे वारंवार प्रवृत्ति होएब।

हकलागब—अत्यन्त प्रयासा जागब।

हँकरब—क्रि० अति क्रन्दन, रोग
प्रभृतिसँ कनबाक असामर्थ्येतर

क्लेशसूचक शब्द करब।

क I-पथिआ—भारक पनपथिआ।

हक-हक करब—क्रि० श्रमसँ अधिक

हकमब ।

हकहकाएब—क्रि० हकहक+अब—

हकमलजेकाँ होएब ।

हकहकी—किञ्चिन्मात्र श्वासप्रश्वास ।

हकार—पूजादि देखबाक आकरण ।

हकारब—क्रि० हकार देब ।

हकासल पिआसल—अत्यन्त श्रम
ओ पिपासासँ युक्त ।हकुलाह—उ० असन्तोषी । स्त्री०
हकुलाहि ।

हक—वि० हक, अंश ।

हगब—क्रि० पुरीषोत्सर्ग ।

हगामा—सकल-साधारण, अनेक
गामक लोक ।

हजरा—दुसाधक उपाधि ।

हजाम—नापित, नौआ ।

हजार—सहस्र ।

हजारीगेना—सबसँ बड़कागेनाक फूल ।

हटब—क्रि० पृथक् होएब, स्थान-
त्याग ।

हटब—क्रि० भर्त्सन, वारण ।

हट्टा—हर बहबाक स्थान ।

हठ—सं० आग्रह ।

हठी—सं० आग्रही ।

हड़कम्प—हाड़क कपनी ।

हड़कम्प कापब—क्रि० हाड़पर्यन्त-

मे कम्पयुक्त होएब ।

हड़काहु—काहुक प्रभेद ।

हड़कौड़ी—कौड़ीक प्रभेद ।

हड़गर—उ० मोट हाड़बाला ।

स्त्री० हड़गरि ।

हड़गोरब—क्रि० मालकेँ पाएर
लगाए गरदनिमे बान्हब ।हड़जोड़बा—तृणविशेष, अस्थि-
संहारी ।

हड़जोड़ा—हड़जोड़बा ।

हड़बड़—कार्यमे शीघ्रता ।

हड़बड़ाएब—क्रि० हड़बड़+अब—
हड़बड़ करब ।

हड़बड़ी—कार्यमे शीघ्रता ।

हड़मुड़हा—उ० अलच्छ । स्त्री०
हड़मुड़ही ।हड़मुड़ाह—उ० अलच्छ । स्त्री०
हड़मुड़ाहि ।

हड़रो-विड़रो लागब—क्रि०

नाना उपद्रव संप्राप्त होएब ।

हड़रोगा—हाड़क रोगवत् अनिवार्य
स्वभाव ।

हड़ा दरिद्र—नितान्त दरिद्र ।

हड़ासङ्ग—अलच्छ ।

हड़िआ—हड़ि, पाकपात्रविशेष ।

हड़िरा—पहिरल धोतीक डाँठमे
भिँड़िआओल प्रान्त ।

हडुबी—तरक भूमि ।

हड़ोखरि—हाड़ फेकबाक स्थान ।

हड़ोरब—क्रि० दुहू बाँहिसँ एकत्रित
करब ।

हड़डी—हि० हाड़, अस्थि ।

हतब—क्रि० हत्या करब ।

हताश—सं० आशाहीन ।

हत्था—केराक हस्ताकार गुच्छ ।

हत्थाबाँही—परस्पर हाथ-बाहिँ
पकड़ि मारि ।

हत्था-हत्थी—परस्पर हाथ पकड़ब ।

हथकट—थोड़ देनिहार, कृपण ।

हथकड़ी—हाथमे बद्ध शृङ्खला ।

हथगर—उ० अधिक परसनिहार,
अधिक देनिहार, उदार ।हथछुट्टू—अत्पापछाथहुमे हाथसँ
मारि देबाक स्वभावबाला ।

हथजौर—हाथसँ बाँटल रज्जु ।

हथधरी—विवाहस्वीकारार्थ परस्पर
हस्तग्रहण ।

हथना—नेनाक हाथक भूषणविशेष ।

हथनो(न्यो)त—साक्षात् निमन्त्रण,
हाथ पसारि नोत देब ।हथपैच—विना लेखक ओ विना
सूदिक कृपण ।हथकेर(री)—एकसँ लए दोसराक
कृपणशोधन ।

हथरस—पसएबामे उपकारक पात

हथरा—जाँत चकरीक उपरका
हस्ताकार काष्ठ ।हथलगू—अधिक काल हाथमे
व्यवहार्य (छड़ीआदि) ।हथलपक—हाथसँ लपकि लेबाक
स्वभावबाला ।

हथसङ्कड़—हाथक भूषणविशेष ॥

हथहड़—शृङ्गार, द्विमुख जलपान-
पात्रविशेष ।

हथहड़ी(री)—छोट हथहड़ ।

हथिआ—हस्तनक्षत्र ।

हथिआएब—ना० खानगी रूपआ
आदि जमा करब, हस्तगत करब ।

हथिआर—अन्न, उपकरण ।

हथिगन—क्षुपविशेष ।

हथिनी—स्त्री० हस्तिनी ।

हथिसार—हस्तिशाला ।

हथोरब—क्रि० हाथसँ समेटब १
हाथकस्पर्शसँ अन्वेषण करब २ ।

हथोरा(डा)—मड़ेआ ।

हथोरिआ—अन्हार वा जलमे हस्त-
चालन ।हथोरिआ देब—क्रि० अन्हार वा
जलमे हस्तचालन ।

हथौटी—हाथसँ कार्याभ्यास ।

हथौड़ी(री)—छोट देबाक लौह-

यन्त्राविशेष, मड़ेआ ।	हबक—दाँतसँ काटब ।
हृद—वि० अन्त, अवधि, सीमा ।	हबकब—क्रि० दाँतसँ दबाएब ।
हृदमदाएब—क्रि० हृदमद्+अब— धमनोपस्थितिशङ्कासँ युक्त होएब ।	हबकाह—दाँतकट्टा, दाँतसँ कटबाक स्वभावबाला (कुकुरप्रभृति) ।
हृदमदी—धमनोपस्थितिशङ्का ।	हबर-हबर—अ० भट-भट ।
हृदिआएब—ना० 'हाधिक' बाजब, दैत्ययुक्त होएब ।	हबेली—अन्दर, अन्तःपुर ।
हृद—हृद ।	हबोडकार—अ० अश्रुधाराप्रवाह- पूर्वक ।
हृनब—क्रि० मारब १ डोलाएब २ ।	हम—अहम् सं० ।
हृनहृन-पटपट करब—क्रि० मालक मारबाक चेष्टा करब ।	हमाम—वि० स्नानक जलपात्र विशेष ।
हृनहृनाएब—ना० हृनहा शब्द करब ।	हर—हल १ शिव २ ।
हृ(हृ)पसब—क्रि० घास-भुरसा आदि अधिक-अधिक लएकेँ खाएब ।	हरकठ—हरक ओ काठ जाहिमे फार ठोकल जाइछ ।
हृफब—क्रि० बड़दक मारबाक चेष्टा- मात्र करब ।	हरकब—क्रि० मालक संघ-बद्ध भए हँटब ।
हृफाह—उ० मारबाक चेष्टामात्र कएनिहार (बड़द आदि) स्त्री० हृफाहि ।	हरकारब—क्रि० हरकार+अब— मालक समूहकेँ एक दिस हटाएब ।
हृफिआएब—ना० जृम्भण, हाफी करब ।	हरकारा—म गर्मे आगाँ-आगाँ लोककेँ हटओनिहार भूय ।
हृफिमची—नित्य हृफीम खए- निहार ।	हरककति—वि० हर्ज, क्षति ।
हृफीम—अहिफेन, मादक वस्तु- विशेष ।	हरखरा—वृषभरहित हर ।
	हरजाइ—स्त्री० निर्लज्जा स्त्री ।
	हरदम—वि० अ० सतत ।
	हरदा—पक्षिविशेष ।
	हरदाहरदी—क्रीड़ाविशेष ।
	हरदि—हरिद्रा ।

हरदिआह—हरिद्राभागयुक्त ।	हरी० हरिअरकी ।
हरफा—लवली फल ।	हरिअरी—हरितता ।
हरफोड़—अ० हलकर्षणपूर्वक ।	हरिताल—सं० धातुविशेष ।
हरब—क्रि० हरण ।	हरिताली—सं० व्रतविशेष ।
हरबाह—हलवाहक ।	हरिन—हरिण ।
हरबाहि—हरबाहक क्रिया, कर्षण १ ओकर वेतन २ ।	हरिनकेलि—धान्यविशेष ।
हरमजदगी—वि० बदमासी, दुष्टता ।	हरिना—हरिणक नर ।
हरमजादा—वि० बदमास ।	हरिना-खुरी—हरिणक खुरक समा- नाकार बन्धनविशेष १ मालक तादृश खुर २ ।
हरमाद—वि० बाधा, अपकार ।	हरिना निन्द—हरिणवत् निद्रा, आधा आँख मूनि सूतब ।
हरमोट(ठ)—स्थूलकाय, मूर्ख ।	हरिफ—वि० बड़ ।
हरलधा—हर लधवाक डोरी ।	हरिबेचनी—स्त्री० हारी बेचनि- हारि ।
हरहरा—सर्पविशेष १ कटिभूषण- विशेष २ ।	हरिस—हरक ओ अङ्ग जाहिमे पालो बान्हल जाइछ, हलीषा ।
हरही-सुरही—अगण्य, तुच्छ, (लोक) ।	हरिसेँ—ह्रस्व मात्रा ।
हरान—वि० परिश्रान्त ।	हरिसो—एक पाबनि ।
हरानी—वि० श्रम ।	हरी—बेड़ी, निगड़ ।
हरारति—वि० थाकनि ।	हरीक हर—वर्षमे विना मूल्य मा- लिककेँ दातव्य हर ।
हराह—उ० अधिक काल पलायन- शील (बड़द प्रभृति) । स्त्री० हराहि ।	हरीड़—हरोतकी ।
हराहरी—अ० औसतन हि० ।	हरीस—हरिस, हलीषा ।
हरिअर—हरित ।	हरुबी—पृथ्वीकअधिक तरक भूमि ।
हरिअर-कचोर—अत्यन्त हरिता ।	हरुसा—फलविशेष ।
हररिका—उ० हरितप्रभे दक ।	हरोत—बाँसक प्रभेद ।

हर्ज(जा)—वि० क्षति ।
 हर्जाइ—स्त्री० निर्लेजि, बह ।
 हर्ष—सं० आनन्द ।
 हलकारव—क्रि० हलकार+अब—
 पशुक संघके प्रेरित करव ।
 हलगर—पूर्ण हालसँ युक्त (भूमि) ।
 हलचल—कार्यार्थ चलप्रचल ।
 हलचली—चलप्रचलता, सम्भ्रम ।
 हलतलबी—शीघ्रकर्तव्यता ।
 हलदिली—वि० उन्माद ।
 हलबलिआ—अलि० हड़बाए कार्य-
 कर्ता ।
 हलवली—चाखल्यपूर्वक कार्यकरण ।
 हलसब—क्रि० हर्षयुक्त होएब ।
 हलार(ल)खोर—उ० पएखाना
 साफ़ कएनिहार जातिविशेष ।
 स्त्री० हलार(ल)खोरनी ।
 हलुआ—मोहनभोग, कृतज्ञविशेष ।
 हलुआइ—उ० मिष्टानादि बनओ-
 निहार जातिविशेष । स्त्री०
 हलुआइनी ।
 हलुक—हलुक, लघु, जे भारी नहि
 हो ।
 हलुकधना—शीघ्र पकनिहार धान
 (राँगी प्रसूति)
 हलुमानी—मधुरक अगाँओ ।
 हल्ला—हि० झोल ।

हल्लुक—लघु, भारीसँ भिन्न ।
 हंस—रं० पक्षिविशेष ।
 हसनमुह—उ० प्रसन्नमुखाकृति-
 वाला । स्त्री० हसनमुहि ।
 ह(हँ)सव—क्रि० हसन ।
 हँसमुह—उ० हसनमुह । स्त्री० हँस-
 मुहि ।
 हँसारति—जनतोपहास, लोकनिन्दा ।
 हँसी—हास्य ।
 हँसी-ठट्टा—हास्यादि विनोद ।
 हँसुली—भूषणविशेष ।
 हँसेरिआ—हँसेरीक लोक ।
 हँसेरी—लोक-संघ ।
 हँसोथब—क्रि० हाथसँ समटब ।
 हस्तगत्ता—सम्बद्ध मोड़ल पुस्तक
 रखबाक गत्ता ।
 हस्ताक्षर—सं० हस्तलेख, दस्तखत ।
 हहरव—क्रि० हास होएब ।
 हा—अ० शोक ।
 हाँ—अ० वारण ।
 हाँ-हाँ—अ० सम्भ्रमपूर्वक वारण ।
 हाँइ-हाँइ—अ० शीघ्रतापूर्वक ।
 हाए—अ० हा, शोक ।
 हाए-हाए करव—धन बढ़बाक
 अधिक चेष्टा करव ।
 हाक—उच्चैः सम्बोधन ।
 हाकव—क्रि० हँक्+अब—पशुक

प्रेरण, गाड़ीक चालन ।
 हाकिम—वि० न्यायाधिकृत ।
 हाँज—पक्षीक संघ ।
 हाजिर—वि० उपस्थित ।
 हाजिरी—वि० उपस्थिति ।
 हाट—दृष्ट, अस्थायी आपणविशेष ।
 हाड़—अस्थि ।
 हाँड़ी—हण्डी, पात्रविशेष ।
 हाता—खेतक सीमापर लम्बाकार
 उच्च कएल माटि ।
 हाथ—हस्त, कर ।
 हाथर—जाँतक उपरका हस्ता-
 कार काष्ठ ।
 हाथा—हत्था, हस्ताकार कदलीफ-
 लगुच्छ ।
 हाथा-वाँही—भगड़ामे परस्पर हाथ
 बाँधि पकड़ब ।
 हाथाहाथी—परस्पर जौरसँ हाथ
 पकड़ब ।
 हाथी—उ० हस्ती, गज । स्त्री०
 हथिनी ।
 हानव—क्रि० हन्+अब—दृढ़
 करब ।
 हानि—सं० क्षति ।
 हापुस—तृणविशेष ।
 हाफी—मुखजृम्मा ।
 हाबर—मशकाकार कीटविशेष ।

हाबा—वि० बसात, वायु ।
 हाबादार—वि० जाहिठाम बसात
 आवए ।
 हाबुस—तृणविशेष ।
 हार—हारि १ मण्यादिसालार ।
 हारव—क्रि० हार+अब—पराजित
 होएब ।
 हारा—हारा ममरखा, तृणविशेष ।
 हाराहरी—अ० औसतन हि०,
 मध्यम मानक अनुसारें अवयव-
 गत विषम मान सभसँ समुदा-
 यक मान बहार कए पुनः प्रति
 अवयवपर ओहि मानकेँ समान
 रूपेँ बँटलापर ।
 हारि—पराजय ।
 हारी—हार बनएबाक काचक छिद्र-
 युक्त गुलिका ।
 हाल—खेतक अभ्यन्तरमें आद्रताक
 सम्बन्ध १ वि० स्थिति २ ।
 हाँस—पक्षिविशेष ।
 हास—सं० हँसी ।
 हासा—शुद्ध, एकवर्ण ।
 हाँसिनि—स्त्री० सुन्दरी ।
 हासिल—वि० अजित ।
 हासिल-कर्वगी—वि० स्वीपाजित
 भूमि ।
 हाँसू—काता ।

हास्य—सं० हँसी ।

हाह-मूह—मेघक जलबिन्दु ।

हा-हा—अ० खेद ।

हाहाकार—सं० हाहा शब्दक उच्चारण ।

हाहाकार मचब—क्रि० समन्तात् 'हा' 'हा' शब्द होएब ।

हाहि बहब—क्रि० बसातक जोर-सँ बहब ।

हाहृति(ती)—असन्तोष, गृध्रुना ।

हाह्वेरबा—आपद्, उपद्रव ।

हिआएब—क्रि० खूब अवधानसँ देखब ।

हिआ हारब—क्रि० नाभरोस होएब ।

हिकमति—वि० भेद, कौशल, मञ्ज ।

हिकमती—वि० हिकमतिके वेत्ता ।

हिकाहु—अक्लेश जएबा योग्य स्थान ।

हिक्का—सं० अन्तिम समयक हिचकी ।

हिं गु (हिङ्) राएब—क्रि० हिं गु-रब-अब-चपरासँ रङ्ग करब ।

हिङ्ग—सं० हीं गु ।

हिचकब—क्रि० हिचकिचाएब ।

हिचकिचाएब—क्रि० हिचकिच-अब-असामर्थ्यादिवश अप्र-

वृत्तिक अभिप्राय प्रकट करब ।

हिचकी—उदरस्थ वायुक साघात निर्गम, हिका सं० ।

हिं छब—क्रि० हिचकब ।

हिङ्गु(डो)ला—दोला, मछकी, पालना ।

हित—सं० गुणदे १ मित्र २ ।

हितकर—सं० उपकारक ।

हिफाजति—वि० सुरक्षा ।

हिरामन—सूगाक प्रभेद ।

हिलकोर—तरङ्ग ।

हिलकोरब—क्रि० तरङ्गित करब ।

हिलब—क्रि० डोलब, कम्पन ।

हिलस—मनोरथ, आवेस ।

हिलस लागब—क्रि० मनोरथ होएब ।

हिलसा—मत्स्यविशेष ।

हिलि-मिलि—अ० परस्परमेलकए ।

हिलोर—तरङ्ग ।

हिलोरब—क्रि० अचादिकेँ सूपमे लए चक्राकार तरङ्गित करब ।

हिसख—अभ्यास ।

हिसाब—वि० गणना, लेखा ।

हिसाबी—वि० लेखापट्ट १ मित-व्ययी २ ।

हिस्सा—अंश ।

हिहिं आएब—ना० घोड़क हँ

हाह-मूह—मेघक जलबिन्दु ।
हा-हा—अ० खेद ।
हाहाकार—सं० हाहा शब्दक उच्चारण ।
हाहाकार मचब—क्रि० समन्तात् 'हा' 'हा' शब्द होएब ।
हाहि बहब—क्रि० बसातक जोर-सँ बहब ।
हाहृति(ती)—असन्तोष, गृध्रुना ।
हाह्वेरबा—आपद्, उपद्रव ।
हिआएब—क्रि० खूब अवधानसँ देखब ।
हिआ हारब—क्रि० नाभरोस होएब ।
हिकमति—वि० भेद, कौशल, मञ्ज ।
हिकमती—वि० हिकमतिके वेत्ता ।
हिकाहु—अक्लेश जएबा योग्य स्थान ।
हिक्का—सं० अन्तिम समयक हिचकी ।
हिं गु (हिङ्) राएब—क्रि० हिं गु-रब-अब-चपरासँ रङ्ग करब ।
हिङ्ग—सं० हीं गु ।
हिचकब—क्रि० हिचकिचाएब ।
हिचकिचाएब—क्रि० हिचकिच-अब-असामर्थ्यादिवश अप्र-

हिलकोर—तरङ्ग ।
हिलकोरब—क्रि० तरङ्गित करब ।
हिलब—क्रि० डोलब, कम्पन ।
हिलस—मनोरथ, आवेस ।
हिलस लागब—क्रि० मनोरथ होएब ।
हिलसा—मत्स्यविशेष ।
हिलि-मिलि—अ० परस्परमेलकए ।
हिलोर—तरङ्ग ।
हिलोरब—क्रि० अचादिकेँ सूपमे लए चक्राकार तरङ्गित करब ।
हिसख—अभ्यास ।
हिसाब—वि० गणना, लेखा ।
हिसाबी—वि० लेखापट्ट १ मित-व्ययी २ ।
हिस्सा—अंश ।
हिहिं आएब—ना० घोड़क हँ

हिलकोर—तरङ्ग ।
हिलकोरब—क्रि० तरङ्गित करब ।
हिलब—क्रि० डोलब, कम्पन ।
हिलस—मनोरथ, आवेस ।
हिलस लागब—क्रि० मनोरथ होएब ।
हिलसा—मत्स्यविशेष ।
हिलि-मिलि—अ० परस्परमेलकए ।
हिलोर—तरङ्ग ।
हिलोरब—क्रि० अचादिकेँ सूपमे लए चक्राकार तरङ्गित करब ।
हिसख—अभ्यास ।
हिसाब—वि० गणना, लेखा ।
हिसाबी—वि० लेखापट्ट १ मित-व्ययी २ ।
हिस्सा—अंश ।
हिहिं आएब—ना० घोड़क हँ

छोटब — क्रि० छुट + अब — मुक्त होएब ।

छूटि — आधिक्य ।

छूतव — क्रि० छुन + अब — दु स्पर्शसँ कर्मानह होएब ।

छूति — अस्पृश्यसँ स्पर्ष ।

छूरा — छुरिका, अन्नविशेष ।

छूरी — छोट छूरा, चक्कू ।

छेआ नब्बे — ९६, षण्णवति ।

छेआ नबेम — षण्णवतितम ।

छेआलीस — ६, षट्चत्वारिंशत् ।

छेआलीसम — षट्चत्वारिंशत्तम ।

छेआसट्ठि — ६६, षट्षष्टि ।

छेआसट्ठिम — षट्षष्टितम ।

छेआसी — ८६ षडशीति ।

छेआसीम — षडशीतितम ।

छेआहिबेयाहिं — बहुत ठाम छिन्न

छेक — अवरोध, अश्वबन्धन ।

छेक

छेकब — क्रि० अवरोध करब ।

छेकब — अदृढ़ बन्धन २ ।

छेगाएब — क्रि० छेग + अब — क्रिया

में अनुभूतदोषक होएब ।

छेद — वेध ।

छेदब — क्रि० वेध करब ।

छेरनाति — पु० नातिक बेठा, प्रपौत्र

छेरनातिनि — स्त्री० नातिक बेटी,

प्रपौत्री ।

छेला — सोना (क एक हथिआर ।

छेहगर — पृथक् पृथक् स्थित

छेहर (धान्यबीजादि) ।

छेहत्तरि — षट्सप्तति ।

छेहत्तरिम — षट्सप्ततितम ।

छैनी — लोहादि कट्वाक लोहाक कील

छैनीकाट — थारीक प्रभेद ।

छोआ — इत्तुक विकार, राबस

त्याजित रस ।

छोट — लघु, ह्रस्व ।

छोटका — छोट प्रभेदक ।

छोटकीअड़ाँची — गुजराती एला ।

छोटपन — नीचता, छोट लोक

छोटपना — क्रिया ।

छोटपनी

छोटाइ — कालप्रमाणकृत कनिष्ठता ।

छोटाह — उ० छोट प्रकृतिक । स्त्री०

छोटाहि ।

छोटीमाइ — ओषधिविशेष ।

छोड़ब — क्रि० त्याग ।

छोप — उपरसँ काटब १ अपु

भित्तिक पश्चात् पोषण २

छोपब — क्रि० उपरसँ काटब ।

छोपी — विना दण्डक छत्र ।

छोभ — क्षोभ, मानस दुःख ।

छोर — परम्परा १ मालक पैघ डोरी

छोरब — क्रि० खट्ट काटब ।

छोलगादिआ पुं० मूर्ति निर्माता

कुम्हार ।

छोलदारी — वस्त्रगृहविशेष ।

छोलना — छोलबाक साधन (सिनुआ-

प्रभृति) ।

छोलनी — व्यञ्जन लारबाक द्रव्यक

दवाँ ।

छोलब — क्रि० घर्षणसँ त्वचाविमो-

चन ।

छोह — आवृत्ति (ई छोह बीआ-

खसल) ।

छोहका — बहुत शीघ्र विक्रयादि ।

छोहाड़ा — मेबाविशेष, खजरप्रभेद ।

छौक — फोड़न मिलाएब ।

छौकब — क्रि० उपर सँ फोड़न देब ।

छौँ किआएब — ना० छौँ की + अब =

छौँ कीसँ मारब ।

छौँ की — पातर दण्ड ।

छौँड़ी — स्त्री० अनादरणीय बालिका

छौर — छौर ।

ज

जँ — अ० यदि ।

जइ — यवानी, यवाकार अन्न ।

जइओ — अ० यद्यपि ।

जइती — अ० जयबाक कालमें ।

जइधी — स्त्री० पतिभ्राताक पुत्री ।

जउआँ — जौआँ, एक गर्भसँ-

सहोपन्न १ जोटल कदली

फलादि २ ।

जओ यव, अन्नविशेष ।

जकजिआर — प्रकाश ।

जकड़ब — क्रि० सर्वावयवसँ सम्बन्ध,

दृढ़ सम्बन्ध ।

जकथक — आरब्ध अप्रचलित

(कार्य) ।

जकथकाएब — क्रि० जकथक + अब =

प्रारब्ध भए अप्रचलित होएब ।

जकाँ — अ० तुल्य ।

जकीरा — लगलग लगाओल

रोपणीय वृक्ष ।

जखन अ० यदा, जाहि क्षणमें ।

जखनुक — जाहि क्षणमें भेल ।

जखनुका

जगति — कृपादिक बद्ध कुट्टिम ।

जगदम्बा — पक्षिरूपा भगवती ।

जगन्नाथिआ — जगन्नाथक्षेत्रयात्री ।

जगन्नाथ — सं० पुरीमें स्थापित

कृष्ण ।

जगन्नाथी — जगन्नाथक्षेत्रयात्री ।

जगमोहन — कौठार्क बाबा कोष्ठक

कुट्टिम ।